Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1215/170-179/છ, તા. 23-3-2016 – થી મંજૂર

हिन्दी

(प्रथम भाषा)

कक्षा 9

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है ।
सभी भारतवासी मेरे भाई–बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परंपरा पर गर्व है।
मैं हंमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता–पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा–एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

तमसो मा ज्योतिर्गमय

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेकटर 11–ए, गांधीनगर–382 010

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है। इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय परामर्शन

डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह

लेखन-संपादन

डॉ. किशोरीलाल कलवार (कन्वीनर)
श्री राजेन्द्रपालसिंह राणा
श्री विजयकुमार तिवारी
डॉ. शान्तिबहन शर्मा
डॉ. नंदिता शुक्ला
डॉ. हसमुख बारोट
श्री जे. पी. चोहान
डॉ. हसुमतीबहन पटेल
डॉ. पारुलबहन दवे

समीक्षा

डॉ. नयना डेलीवाला
डॉ. चंद्रकांता शाक्य
डॉ. प्रेमसिंह क्षत्रिय
श्री पी. एच. मारु

संयोजन

डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 9 हिन्दी (प्रथम भाषा)** की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक की हस्तप्रत निर्माण की प्रकिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रख कर तैयार की है। एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रसिद्ध करने से पहले इसी विषय के विषय निष्णांतों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों की ओर से सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रकिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।

नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य है, इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खूबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सीखें, इस लिए भाषा-अभिव्यक्ति एवं लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।

एच. एन. चावडा
नियामक

डॉ. नीतिन पेथाणी
कार्यवाहक प्रमुख

दिनांक : 03-03-2016 गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2016

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, विद्यायन , सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से एच. एन. चावडा, नियामक

मुद्रक :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह – *

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ;ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं ;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे ;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे ;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;

(झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले ;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

---

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

1. दोहे और पद	(मुक्तक)	कबीर	1
2. बड़े घर की बेटी	(कहानी)	प्रेमचंद	4
3. नीति के दोहे	(मुक्तक)	वृंद	10
4. तर्क और विश्वास	(निबंध)	बालकृष्ण भट्ट	12
5. भूतल को स्वर्ग बनाने आया	(महाकाव्यांश)	मैथिलीशरण गुप्त	15
6. दिल बहादुर दाज्यू	(संस्मरण)	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	18
7. प्रथम रश्मि	(कविता)	सुमित्रानंदन पंत	23
8. गरीबी नंबर दो	(कहानी)	मधु काँकरिया	27
9. लीक पर वे चलें	(कविता)	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	30
10. श्रम देवता की उपासना	(निबंध)	विनोबा भावे	33
11. पानी में घिरे हुए लोग	(कविता)	केदारनाथ सिंह	38
12. नदियों में फिर प्राण प्रतिष्ठा करें	(लेख)	अमृतलाल वेगड़	42
13. महाराजा का इलाज	(कहानी)	यशपाल	47
14. दो ग़ज़लें	(ग़ज़ल)	सुल्तान अहमद	51

(द्वितीय सत्र)

15. भारतीय संस्कृति	(निबंध)	हजारीप्रसाद द्विवेदी	53
16. बिहारी के दोहे	(मुक्तक)	बिहारी	57
17. अपना-अपना भाग्य	(कहानी)	जैनेन्द्र कुमार	60
18. श्रीकृष्ण भक्ति	(सवैया)	रसखान	65
19. सादगी और स्वच्छता	(आत्मकथांश)	मोहनदास करमचंद गाँधी	67
20. बहुत दिनों के बाद	(कविता)	नागार्जुन	71
21. दर्द की पृष्ठभूमि में	(यात्रा-वर्णन)	मीरा सीकरी	73
22. दो कविताएँ	(कविता)	केदारनाथ अग्रवाल	78
23. वीर बादल	(कहानी)	आचार्य चतुर्सेन शास्त्री	81
24. बिरसा मुंडा	(जीवनी)	संकलित	86
25. सन्नाटा	(कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	90
26. सिद्धार्थ का गृहत्याग	(एकांकी)	नरेश मेहता	94
27. नीलकंठ : मोर	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा	98
28. देख चिड़िया	(कविता)	राजेश जोशी	105
29. सहानुभूति	(कहानी)	हरिशंकर परसाईं	107

- व्याकरण 112
- रचना
- प्रयोजन मूलक हिन्दी

(पूरक वाचन)

1. सच्चा प्रेम	(खंड काव्यांश)	रामनरेश त्रिपाठी	141
2. प्रतिदिन तीन मिनट दौड़िए	(लेख)	संकलित	143
3. ठुकरा दो या प्यार करो	(कविता)	सुभद्राकुमारी चौहान	145
4. भूकंप	(संस्मरण)	रामवृक्ष बेनीपुरी	146

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रथम सत्र

1 दोहे और पद

कबीर

(जन्म : सन् 1398 ई . निधन : सन् 1518 ई.)

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि है। उनका जन्म काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ। अनंतदास द्वारा रचित कबीर परचई के अनुसार कबीर जन्म से जुलाहे थे। किन्तु किंवदंतियों ने उन्हे विधवा ब्राह्मण के गर्भ से पैदा हुआ बतलाया गया है। उन्होंने रामानंद को अपना गुरु माना । कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे परंतु उनके पास अनुभव से प्राप्त अथाह ज्ञान था। कबीर ईश्वर के अवतार, मूर्तिपूजा, उपवास, आडम्बर एवं कर्मकांड में विश्वास नहीं करते थे। वे तो सदाचार, क्षमा, दया, प्रेम, अहिंसा और सहनशीलता के समर्थक थे। उनका मन भेदभावपूर्ण समाज व्यवस्था के कारण व्यथित था। अत: तत्कालीन समाज में अन्तर्विरोधों को देखकर उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से उनपर खुलकर तीखा प्रहार किया।

वे मानवतावादी थे और मानव को मानव की दृष्टि से देखने के पक्षपाती थे- प्रेम के क्षेत्र में राजा, प्रजा, ऊँच-नीच, जाति-वाँति का भेद उन्हें सहन नहीं था । उनका दृढ़ विश्वास था कि सहज समाधि सहज प्रेम से ही सिद्ध होती है । वे कागद की लेखी के बजाय, आँखिन की देखी को अधिक प्रामाणिक मानते थे। उनकी आत्मा में सच्चाई और वाणी में विश्वास था। कबीर ने निर्गुण ब्रह्म का चिंतन किया । कबीर की वाणी का संग्रह बीजक नाम से प्रसिद्ध है । इसके तीन भाग हैं - साखी सबद और रमैनी। उनकी भाषा को सधुक्कड़ी कहा जाता है । उनकी कविता जीवनानुभवों तथा जीवनोपयोगी उपदेश से भरी होने कारण हृदय को छूती है।

दोहे

सुमिरन से सुख होत है , सुमिरन से दुख जाय ।
कह कबीर सुमिरन किए , साईं मांहि समाय ॥ 1 ॥

वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने , साधुन धरा सरीर ॥ 2 ॥

रुखा सूखा खाइ के , ठण्डा पानी पीव ।
देख पराई चूपड़ी , मत ललचावै जीव ॥ 3 ॥

कबिरा संगति साधु की, हरै और की व्याधि ।
संगति बुरी असाधु की, आठौं पहरि उपाधि ॥ 4 ॥

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढे बन माहिं ।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं ॥ 5 ॥

सबद (पद)

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में ॥
ना मैं देवल ना मैं मसजिद , ना काबे कैलास में ॥
ना तो कौने क्रिया-करम में, नहीं योग बैराग में ॥
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं , पल भर की तालास में ॥
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वांसों की स्वांस में ॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शव्दार्थ-टिप्पणी

सुमिरन स्मरण **सांई** ईश्वर **मालिक** माँहि में **वृच्छ** पेड़ **भखैं** खाना **संचै** संचय, एकत्रकरना **नीर** पानी **चूपड़ी** घी लगी हुई रोटी **साधु** सज्जन **उपाधि** कष्ट, विघ्न **मोको** मुझको **देवल** मंदिर **बैराग** वैराग्य, विरक्ति **व्याधि** पीड़ा

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कबीर के मतानुसार दु:ख कैसे दूर होता है ?
(2) कौन अपना फल कभी नहीं खाता है ?
(3) सज्जन लोग शरीर क्यों धारण करते है ?
(4) सज्जनों की संगति से क्या लाभ होता है ?
(5) बुरे लोगों की संगति का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
(6) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ते हैं ?
(7) कबीर ने परमात्मा का वास कहाँ बताया है ?

2. दो-तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) ईश्वर स्मरण से कौन-कौन से लाभ होते हैं ?
(2) वृक्ष और नदी का दृष्टान्त देकर कबीर ने सज्जनों के विषयों में क्या कहा ?
(3) कबीर के मतानुसार परमात्मा कहाँ पर निवास नहीं करते ?
(4) कबीर ने परमात्मा को ढूँढ़ने की कौन सी सलाह दी है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) कबीरदास ने निराकार ब्रह्म के निवास के बारे में क्या कहा है?
(2) आत्मसंतोष के विषय में कबीरजी क्या कहते हैं ?
(3) कबीरदासजी संगतिके विषय में क्या कहते हैं ?
(4) कस्तूरी और मृग का दृष्टांत देकर कवि ने परमात्मा के बारे में क्या कहा है ?
(5) कबीर के मतानुसार सज्जनों में कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए ?

4. काव्य पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।
(2) संगति बुरी असाधु की, आठौं पहरि उपाधि ।

5. मुहावरे के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) आठौं पहरि उपाधि ।   (2) जीव ललचाना ।

6. तद्भव शब्दोंके तत्सम रूप लिखिए :

वृच्छ	तुरतै
भखैं	मिलिहौं
मोको	तलास

7. समानार्थी शब्द लिखिए:

नीर, व्याधि, देवल, मृग, वन

8. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

साधु, संगति, संयोग, दूर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए :

(1) मृग के शरीर में कस्तूरी कहाँ होती है ?

(A) नाभि में (B)हृदय में (C) आँख में (D) पैर में.

(2) असाधु की संगति से क्या प्राप्त होता है ?

(A) धन (B) ज्ञान (C) वैभव (D) व्याधि

(3) रूखा-सूखा खाकर ठंडा पानी पीने का क्या तात्पर्य है ?

(A) लोभ करना (B) संतोष करना (C) आलस्य करना (D) फेशन करना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र कबीरजी के दोहों को कंठस्थ करें और कक्षा में सस्वर गान करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कबीरदासजी के नीति विषयक दोहों का संकलन करवायें ।
- कक्षा में दोहों की अन्ताक्षरी करवायें ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 बड़े घर की बेटी

प्रेमचंद

(जन्म : **सन्** 1880 ई . निधन : **सन्** 1936 ई.)

प्रेमचंद हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। आपका जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर लमही नामक गाँव में हुआ था- आपकी प्रारंभिक शिक्षा लमही में हुई, मौलवी साहब से आपने उर्दू और फारसी पढ़ी - आप हिन्दी साहित्य के महत्त्वपूर्ण कहानीकार एवं उपन्यासकार हैं। हिन्दी से पूर्व आप उर्दू में नवाबराय के नाम से लिखते थे। हिन्दी जगत आपको उपन्यास सम्राट से जानता है ।

प्रेमचंद के नाम से लिखी 'बड़े घर की बेटी' आपकी पहली कहानी है। आपकी रचनाओं में भारतीय ग्रामीण एवं कृषक जीवन जीवंत हो उठा है। मानसरोवर के आठ भागों में आपका सम्पूर्ण कहानी-साहित्य संग्रहीत है। नमक का दरोगा , पंच परमेश्वर, सुजान भगत, और कफन आपकी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं। आपके आगमन से हिन्दी उपन्यास को एक नई ऊँचाई प्राप्त हुई, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, गबन और गोदान आपके महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं। अपने समकालीन जीवन के यथार्थ चित्रण के कारण उनकी रचनाएँ अपने युग का दस्तावेज बन गई हैं।

'बड़े घर की बेटी' ग्रामीण संयुक्त परिवार से सम्बन्धित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में आदर्शवादी धरातल पर संयुक्त कुटुम्बप्रथा एवं उच्च संस्कारों का चित्रण हुआ है। आनंदी का देवर लालबिहारी शिकार करके घर में चिड़िया लाता है, उससे व्यंजन बनाते समय घी की समस्या पर देवर भाभी में घर्षण के चित्रण से शुरू होता है, आगे बढ़कर भाई-भाई में मनमुटाव हो जाता है । श्रीकंठसिंह और उनकी पत्नी आनंदी मर्यादावादी हैं, इसलिए घर छोड़ने को तत्पर पश्चाताप ग्रस्त लालबिहारी सिंह को गले लगा लेते हैं। इसमें आनंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो व्यक्तिगत मान प्रतिष्ठा को दर किनार कर परिवार के हित में निर्णय करती है। देवर लालबिहारी सिंह से अपमानित होने के बावजूद आनंदी उसे क्षमा कर देती है, जिससे परिवार टूटने से बच जाता है। अपने संस्कारों के चलते 'बड़े घर की बेटियाँ ' दु:ख, अपमान सहकर भी परिवारों को टूटने से बचा लेती हैं।

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार और नंबरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन-धान्यसंपन्न थे ।गाँव का पक्का तालाब और मंदिर जिनकी अब मराम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्तिस्तंभ थे। कहते हैं, इस दरवाजे पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीर में पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था। पर दूध शायद बहुत देती थी, क्योंकि एक-न-एक आदमी हाँडी लिए उसके सिर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधवसिंह अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे। उनकी वर्तमान आय एक हजार वार्षिक से अधिक न थी। ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। उन्होंने बहुत दिनों तक परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफतर में नौकर थे। छोटा लड़का लालबिहारीसिंह दोहरे बदन का सजीला जवान था-मुखड़ा भरा हुआ, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजा दूध वह सबेरे उठ पी जाता था। श्रीकंठसिंह की दशा उसके विलकुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होने बी.ए. के दो अक्षरों पर न्योच्छावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने उनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। इसी से वेधक ग्रंथों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। साँझ-सबेरे उनके कमरे से प्राय:खरल की सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनाई दिया करती थी। लाहौर और कलकत्ते के वैद्यों से बड़ी लिखा-पढ़ी रहती थी.

श्रीकंठ इस अंग्रेजी डिग्री के अधिपति होने पर भी अंग्रेजी सामाजिक प्रथाओं के विशैष प्रेमी न थे, बल्कि वे बहुधा बड़े जोर से उनकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे। इसीसे गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। दशहरे के दिनों में वे बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी-न-किसी पात्र का पार्ट लेते। गौरीपुर में रामलीला के वे ही जन्मदाता थे। प्राचीन हिंदू सभ्यता का गुणगान उनकी धार्मिकता का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुंब प्रथा के तो वे एकमात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों की कुटुंब में मिल-जुलकर रहने की ओर जो अरुचि होती है, उसे वे जाति और देश के लिए बहुत ही हानिकर समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएँ उनकी निंदक थीं। कोई-कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थीं। स्वयं उन्की पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था। वह इसलिए नहीं कि उसे अपने सास, ससुर,देवर, जेठ से घृणा थी, बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत कुछ सहन करने और तरह देने पर ही परिवार के साथ निर्वाह न हो सके तो आए दिन के कलह से जीवन के नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकाई जाए।

आनंदी एक बड़े घर की लड़की थी। उसके बाप एक छोटी-सी रियासत के ताल्लुकेदार थे- विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, बहली, शिकरे, झाड़-फानूस, आनरेरी मैजिस्ट्रेट और ऋण जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकोदार के योग्य पदार्थ है,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वे सभी यहाँ विद्यमान थे। भूपसिंह नाम था। बड़े उदारचित्त, प्रतिभाशाली पुरुष थे। पर दुर्भाग्यवश लड़का एक भी नहीं था। सात लड़कियाँ हुई और देवयोग से सब की सब जीवित रही। पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोलकर किए, पर जो पंद्रह-बीस हजार का कर्ज सिर पर हो गया तो आँखेंखुलीं, हाथ समेट लिया-आनंदी चौथी लड़की थी-अपनी सब बहिनों , अधिक रुपवती और गुणशीला थी- इसी से ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे- सुंदर संतान को कदाचित उसके माता-पिता भी अधिक चाहते हैं- ठाकुर साहब बड़े धर्मसंकट में थे कि इसका विवाह कहाँ करें- न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढ़े और न यही स्वीकार था कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पड़े- एकदिन श्रीकंठ उनके पास किसी चंदे का रुपया मांगने आए। शायद नागरीप्रचार का चंदा था- भूपसिंह उनके स्वभाव पर रीझ गए- और धूमधाम से श्रीकंठसिंह का आनंदी के साथ विवाह हो गया।

आनंदी अपने नये घर में आई तो यहाँ का रंग-ढ़ंग कुछ और ही देखा। जिस टीम-टाम की उसे बचपन से ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाम मात्र को भी न थी- हाथी-घोड़ों की तो बात ही क्या, कोई सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। रेशमी स्लीपर साथ लाई थी, पर यहाँ बाग कहाँ ? मकान में खिड़कियाँ तक न थी, न जमीन पर फर्श, न दीवार पर तस्वीरें। यह एक सीधे-सादे देहाती गृहस्थ का मकान था- किंतु आनंदी ने थोड़ा ही दिनो में अपने को इस अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलास के सामान कभी देखे ही न थे ।

एक दिन दोपहर के समय लालबिहारी सिंह चिड़िया लिए हुए आया और भावज से कहा-जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है- आनंदी भोजन बनाकर इनकी राह देख रही थी- अब यह नया व्यंजन बनाने बैठी- हाँडी में देखा तो घी पाव भर से अधिक न था- बड़े घर की बेटी किफायत क्या जाने-उसने सब घी माँस में डाल दिया- लालबिहारी खाने बैठा तो दाल में घी न था, बोला-दाल में घी क्यों नहीं छोड़ा ?

आनंदीने कहा घी सब माँस में पड़ गया- लालबिहारी जोर से बोला-अभी परसों घी आया है, इतनी जल्दी उठ गया ?

आनंदीने उत्तर दिया-आज तो कुल पाव भर रह गया होगा- वह सब मैंने माँस में डाल दिया।

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य जरा-जरा सी बात पर तिनक जाता है।

लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई- तिनककर बोला-मैंके में तो चाहे घी की नदी बहती है।

स्त्री गालियां सह लेती है, मार भी सह लेती है, पर मायके की निंदा उससे सही नहीं जाती- आनंदी मुँह फेरकर बोली। हाथी मरा भी तो नौ लाख का, वहाँ इतना घी नित्य मामूली नौकर खा जाते है ।

लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर पटक दी और बोला-जी चाहता है जीभ पकड़कर खींच लूँ । आनंदी को भी क्रोध आया। मुँह लाल हो गया, बोली-वे होते तो आज इसका मजा चखा देते ।

अब अपढ़ उजड्ड ठाकुर से रहा न गया । उसकी स्त्री एक साधारण जमींदार की बेटी थी । जब जी चाहता उसपर हाथ साफ कर लिया करता था । उसने खड़ाऊ उठाकर आनंदी की ओर जोर से फेकी और बोला - जिसके गुमान पर फूली हुई हो, उसे भी देखूँगा और तुम्हें भी ।

आनंदी ने हाथ से खड़ाऊँ रोकी, सिर बच गया, पर अँगुली में बड़ी चोट आई । क्रोध के मारे हवा से हिलते हुए पत्ते की भाँति काँपती हुई अपने कमरे में आकर खड़ी हो गई । स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है । उसे अपने पति के बल और पुरुषत्व का घमंड होता है । आनंदी लोहू का घूँट पीकर रह गई ।

श्रीकंठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे। बृहस्पति को यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनंदी कोपभवन में रही। कुछ खाया न कुछ पिया, उनकी बाट देखती रही । अंत में शनिवार को वे नियमानुकूल संध्या समय घर आए और बैठकर कुछ इधर-उधर की बातें, कुछ देश और काल संबंधी समाचार, तथा कुछ नए मुकदमों आदि की चर्चा करने लगे । यह वार्तालाप दस बजे तक होता रहा । गाँव के भद्र पुरुषों को इन बातों में ऐसा आनंद मिलता था कि खाने पीने की भी सुधि न रहती थी । श्रीकंठको पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था । यह दो-तीन घंटे आनंदी ने बड़े कष्ट से काटे । किसी तरह भोजन का समय आया, पंचायत उठी । जब एकांत हुआ तब लालबिहारी ने कहा - भैया, आप जरा घर में समझा दीजिएगा कि मुँह सँभालकर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जाएगा ।

बोनीमाधव सिंह ने बेटे की ओर से साक्षी दी - हाँ बहू-बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं की पुरुषों के मुंह लगें ।

लालबिहारी-वह बड़े घर की बेटी है तो हम लोग भी कोई छोटे नहीं है ।

श्रीकंठ ने चिंतित स्वर से पूछा - आखिर बात क्या हुई ?

लालबिहारी ने कहा - कुछ भी नहीं, यों ही आप-ही-आप उलझ पड़ीं। मैके के सामने हम लोगों को तो कुछ समझती ही नहीं ।

श्रीकंठ खा-पीकर आनंदी के पास गए । वह भरी बैठी थी । हजरत भी कुछ तीखे थे । आनंदी ने पूछा-चित्त तो प्रसन्न है ?

श्रीकंठ बोले-बहुत प्रसन्न है, पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आनंदी की तेवरियों पर बल पड़ गए और झुँझलाहट के मारे बदन में ज्वाला-सी दहक उठी। बोली -जिसने तुम्हें आग लगाई है, उसे पाऊँ तो मुँह झुलस दूँ ।

श्रीकंठ-इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो ।

आनंदी-क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है । नहीं तो एक गँवार छोकरा जिसका चपरासीगिरी करने का भी ढंग नहीं, मुझे खड़ाऊँ से मारकर यों न अकड़ता ।

श्रीकंठ-सब साफ-साफ हाल कहो तो मालूम हो, मुझे तो कुछ पता नहीं ।

आनंदी-परसों तुम्हारे लाडले भाई ने मुझसे माँस पकाने को कहा । घी हाँडी मे पाव भर से अधिक न था । वह सब मैंने माँस में डाल दिया । जब खाने बैठा तो कहने लगा, दाल में घी क्यों नहीं ? बस, इसपर मेरे मैके को भला-बुरा कहने लगा । मुझसे न रहा गया, मैंने कहा कि वहाँ इतना घी तो मामूली नौकर खा जाते हैं और किसी को जान भी नहीं पडता । बस, इतनी सी बात पर अन्यायी ने मुझपर खड़ाऊँ फेंककर मारी । यदि हाथ से न रोक लेती तो सिर फट जाता । उसी से पूछो कि मैंने जो कुछ कहा है वह सच है या झूठ ।

श्रीकंठ की आँखें लाल हो गईं । बोले-यहाँ तक हो गया । इस छोकरे का यह साहस ।

आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं । श्रीकंठ बड़े धैर्यवान और शांत पुरुष थे । उन्हे कदाचित ही कभी क्रोध आता था, पर स्त्रियों के आँसू पुरुषों की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते है । रात भर करवटें बदलते रहे । उद्विग्नता के कारण पलक तक नहीं झपकी । प्रात:काल अपने बाप के पास जाकर बोले-दादा, अब इस घर में मेरा निर्वाह न होगा ।

इसी तरह की विद्रोहपूर्ण बातें कहने पर श्रीकंठ ने कितनी ही बार अपने कई मित्रों को आड़े हाथों लिया था । परंतु दुर्भाग्य, आज उन्हें स्वयं वही बात अपने मुँह से कहनी पड़ी । दूसरों को उपदेश देना भी कितना साहस है।
बेनीमाधव सिंह घबड़ाकर उठे और बोले-क्यों, क्यों ?

श्रीकंठ-इसलिए कि मुझे भी अपनी मान-प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में अब अन्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर-सम्मान करना चाहिए वे उनके सिर चढ़ते हैं। मैं दूसरे का चाकर ठहरा, घर पर रहता नहीं यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाउँ और जूतों की बौछारें होती है। कड़ी बात तक की चिंता नहीं, कोई एक की दो कह ले, यहाँ तक मैं सह सकता हूँ। किंतु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात, घूँसे पड़ें और मैं दम न मारुँ।

बेनीमानव सिंह कुछ जवाब न दे सके। श्रीकंठ सदैव उनका आदर करते थे। उनके ऐसे तेवर देखकर बूढ़े ठाकुर अवाक रह गए। केवल इतना ही बोले-बेटा, तुम बुद्धिमान होकर ऐसी बातें करते हो ? स्त्रियाँ इसी तरह घर का नाश कर देती हैं। उनको बहुत सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।

श्रीकंठ-इतना मैं जानता हूँ। आपके आशीर्वाद से ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। आप स्वयं जानते हैं कि मेरे ही समझाने-बुझाने से इसी गाँव में कई घर सँभल गए। पर जिस स्त्री की मान प्रतिष्ठा का मैं ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उस,के साथ ऐसा घोर अन्याय और पशुवत् व्यवहार मुझे असह्य है। आप सच मानिए , मेरे लिए यही कुछ कम नहीं है कि लालबिहारी को कुछ दंड नहीं देता।

अब बेनीमाधव सिंह भी गरमाए। ऐसी बातें और न सुन सके। बोले-लालबिहारी तुम्हारा भाई है, उससे जब कभी भूल हो, उसके कान पकड़ो लेकिन...

श्रीकंठ-लालबिहारी को मैं अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव सिंह-स्त्री के पीछे ?

श्रीकंठ-जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

दोनों कुछ देर चुप रहे। ठाकुर साहब लड़के का क्रोध शांत करना चाहते थे लेकिन यह नहीं स्वीकार करना चाहते थे कि लालबिहारीने कोई अनुचित काम किया है। इसी बीच में गाँव के और कई सज्जन हुक्का-चिलम के बहाने से वहाँ आ बैठे। कई स्त्रियोंने जब यह सुना कि श्रीकंठ पत्नी के पीछे पिता से लड़ने पर तैयार हैं तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। दोनों पक्षों की मधुर वाणियाँ सुनने के लिए उनकी आत्माएँ तलमलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति पर मन-ही-मन जलते थे। वे कहा करते थे, श्रीकंठ अपने बाप से दबता है इसीलिए वह दब्बू है। उसने इतनी विद्या पढ़ी इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाधव सिंह उनकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों की शुभकामनाएँ आज पूरी होती दिखाई दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखाने के बहाने आ-आकर बैठ गए। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे, इन भावों को ताड़ गए। उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरंत कोमल शब्दों में बोले-अब तो लड़के से अपराध हो गया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इलाहाबाद का अनुभवरहित झल्लाया हुआ ग्रेजुएट बातों को न समझ सका। उसे डिबेटिंग क्लब में अपनी बात पर अड़ने की आदत थी, इन हथकंडों की उसे क्या खबर! बाप ने जिस मतलब से बात पलटी थी वह उसकी समझ में न आई, बोला–लालबिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।

बेनीमाधव–बेटा, बद्धिमान लोग मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो भूल हुई है उसे तुम बड़े होकर क्षमा कर दो।

श्रीकंठ– उसकी इस दुष्टता को मैं कदापि नहीं सह सकता, या तो वही घर रहेगा या मैं घर रहूँगा। आपको यदि वह अधिक प्यारा है तो मुझे बिदा कीजिए , मैं अपना भार आप सँभाल लूँगा। बस, यही मेरा अंतिम निश्चय है।

लालबिहारी सिंह दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस नहीं हुआ था कि श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाए, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का भी वह इतना मान न करता था। श्रीकंठ का भी उसपर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक नहीं था। जब इलाहाबाद से आते तो उसके लिए कोई–न–कोई वस्तु अवश्य लाते। मुग्दर की जोड़ी उन्होंने बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपने से डयोढे जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़े में जाकर उसे गले लगा लिया था। पाँच रुपये के पैसे लुटाए थे। ऐसे भाई के मुँह से आज ऐसी हृदयविदारक बात सुनकर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई, वह फूट–फूटकर रोने लगा। इसमें संदेह नहीं कि वह अपने किए पर पछता रहा था। भाई के आने से एक दिन पहले से ही उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ भैया क्या कहते हैं। मैं उनके सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँखें उनके सामने कैसे उठेगीं। उसने समझा था कि भैया मुझे बुलाकर समझा देंगे। इस आशा के विपरीत आज उसने उन्हें निर्दयता की मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्ख था, परंतु उसका मन कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकंठ उसे अकेले में बुलाकर दो–चार कड़ी बातें कह देते, इतना ही नहीं, दो–चार तमाचे भी लगा देते तो कदाचित उसे इतना दु:ख न होता। पर भाई का यह कहना कि अब मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालबिहारी से न सहा गया। वह रोता हुआ घर में आया। कोठरी में जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछी , जिससे कोई न समझ सके कि रोता था। तब आनंदी के द्वार पर आकर बोला– भाभी , भैया ने निश्चय किया है कि वे मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। वे अब मेरा मुँह नहीं देखना चाहते। इसलिए मैं अब जाता हूँ , उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा । मुझसे जो कुछ अपराध हुआ हो उसे क्षमा करना।

यह कहते–कहते लालबिहारी का गला भर आया।

जिस समय लालबिहारी सिंह सिर झुकाए आनंदी के द्वार पर खड़ा था उसी समय श्रीकंठ सिंह भी आँखें लाल किए बाहर से आये। भाऊ के वहाँ खड़ा देखा तो घृणा से आँखें फेर लीं और कतराकर निकल गए मानो, उसकी परछाईं से भी दूर भागना चाहते थे।

आनंदी ने लालबिहारी की शिकायत तो की थी लेकिन अब मन में पछता रही थी। वह स्वभाव से दयालु थी। उसे इसका तनिक भी अंदेशा न था कि बात इतनी बढ़ जाएगी। वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि वे इतने गरम क्यों हो जाते हैं। उस पर यह भय भी लगा रहा था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहेंगे तो कैसे क्या करूँगी। इसी बीच जब उसने लालबिहारी को दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ क्षमा करना, तो उसका रहा–सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मन का मैल धोने के लिए नयनजल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकंठ को देखकर आनंदी ने कहा ,“ लाल बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।”

श्रीकंठ बोले, “ तो मैं क्या करूँ?”

आनंदी बोली, “भीतर बुला लो । मेरी जीभ में आग लगे। मैंने कहाँ से यह झगड़ा उठाया। ”

श्रीकंठ ने प्रतिवाद किया, “मैं नहीं बुलाऊँगा।”

आनंदी बोली, “पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो रही है, ऐसा न हो, कहीं चल दें।”

श्रीकंठ न उठे। इतने में लालबिहारी ने फिर कहा, “भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते इसलिए मैं भी अपना मुँह उन्हें नहीं दिखाऊँगा।”

लालबिहारी इतना कहकर लौट पड़ा और शीघ्रता से दरवाजे की ओर बढ़ा। अंत में आनंदी कमरे से बाहर निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालबिहारी ने पीछे फिरकर देखा और आँखों में आंसूभरे बोला, “मुझे जाने दो, भौजी?”

आनंदी ने पूछा, “कहाँ जा रहे हो?”

लालबिहारी वोला, “जहाँ कोई मेरा मुँह न देखे। ”

आनंदी बोली, “मैं न जाने दूँगी।”

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लालबिहारी बोला, , ''मैं तुम लोगों के साथ रहने योग्य नहीं हूँ।''

आनंदी बोली, ''तुम्हें मेरी सौगंध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।''

लालबिहारी ने कहा, ''जब तक मुझे यह मालूम न हो जाए कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ हो गया है तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा।''

आनंदी बोली, ''मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं है।''

अब श्रीकंठ का हृदय पिघला। उन्होंने बाहर आकर लालबिहारी को गले लगा लिया। दोनों भाई खूब फूट-फूटकर रोए। लालबिहारी ने सिसकते हुए कहा, ''भैया ! अब कभी मत कहना कि मैं तुम्हारा मुँह न देखूँगा। इसके सिवाय आप जो भी दंड देंगे उसे मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।''

श्रीकंठ ने भर्राये स्वर में कहा, ''लल्लू ! उन बातों को बिल्कुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा तो ऐसा अवसर फिर न आयेगा।''

बेनीमाधव सिंह बाहर से अन्दर आ रहे थे। दोनों भाइयों को गले मिलते देख आनंद से पुलकित हो उठे और बोले, ''बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ घर सँवार लेती हैँ।''

गाँव में जिसने इस वृतांत को सुना, उसीने इन शब्दों में आनंदी की उदारता को सराहा, ''बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।''

शब्दार्थ--टिप्पण

कीर्तिस्तम्भ यश के प्रमाण **किफायत** बचत **अधिपति** स्वामी, मालिक **घुड़कना** धमकी के स्वर में डाँटना **तालुक्केदार** जमींदार **अंदेशा** आशंका **हार्दिक** दिल से **हजरत** महाशय **पाश्चात्य** पश्चिमी **गुमान** मिथ्याभिमान, घमंड **कुटिल** बुरे स्वभाव का **टीम-टाम** तड़क-भड़क **तिनकना** झल्लाना **बहली** सवारी के काम आनेवाली बैलगाड़ी **मुग्दर** व्यायाम करने का एक साधन **लगान** भूमिकर **वृतांत** घटना का प्रारभ्भ से अंत तक का वर्णन **कदापि** बिलकुल नहीं **हथकंडा** षडयंत्र **शऊर** ढंग,तमीज

मुहावरे

अपनी खिचडी अलग पकाना अलग रहना **आँखे खुलना** सही स्थिति का ज्ञान होना **करवटें बदलना** बेचैन रहना **तालीबजाना** खुश होना **तेवरियों पर बल पड़ना** क्रोधित होना **पानी-पानी होना** लज्जित होना **पिंड छुड़ाना** छुटकारा पाना **लोहू का घूँट पीना** गुस्सा सह लेना **हाथ समेटना** कम खर्च करना **हाथ साफ करना** पीटना

कहावत

हाथी मरा तो भी नौ लाख का-कीमती वस्तु के अनुपयोगी होने पर भी उसका मूल्य बना रहता है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए:

(1) बेनीमाधव किस गाँव के जमींदार थे ?

(2) श्रीकंठने किस प्रकार शिक्षा-दीक्षा ग्रहण की ?

(3) आनंदी किस प्रकार के परिवार की बेटी थी ?

(4) गाँव के लोगों ने आनंदी को क्या कहकर सराहा ?

(5) लालबिहारी को अपनी भाभी आनंदी से किस बात को लेकर विवाद हो गया था ?

(6) श्रीकंठ ने अपने पिताजी के पास जाकर क्या कहा ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) बेनीमाधव के कितने बेटे थे ? कौन-कौन ?

(2) गाँव के लोग श्रीकंठ का सम्मान क्यों करते थे ?

(3) श्रीकंठने पिताजी से घर छोड़ने की बात क्यों कही ?

(4) श्रीकंठ और लालबिहारी किस प्रकार बिलकुल विपरीत थे ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) श्रीकंठ के निर्णय से लालबिहारी की क्या दशा हुई ?

(2) परिवार को टूटने से किसने बचाया ? कैसे ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।' स्पष्ट कीजिए ?

(4) आनंदी ने अपने को नए घर के अनुकूल कैसे बनाया ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ''जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है उसी तरह क्षुधा से बावला व्यक्ति जरा-सी बात पर तुनक जाता है।''

(2) ''स्त्री का बल और साहस , मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व पर गर्व होता है।''

5.सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) यह मेरे भाग्य का फेर है। यह कथन किसका है ?

(A) श्रीकंठ (B) क्षुधा (C) लालबिहारी (D) भूपसिंह

(2) बुद्धिमान लोग मूर्खोंकी बात पर ध्यान नहीं देते । यह वाक्य किसने कहा ?

(A) श्रीकंठ (B) लालबिहारी (C) बेनीमाधवी (D) आनंदी

(3) ....से बावला मनुष्य जरा-सी बात पर तिनक जाता है।

(A) क्रोध (B) क्षुधा (C) कर्ज (D) चिंता

(4) मन का मैल धोने के लिए...............से उपयुक्त कोई वस्तु नहीं है ?

(A) शुद्धजल (B) शीतल जल (C) नयन जल (D) गंगा जल

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

संतान, निर्बल, परिश्रम, सहज, प्रतिष्ठा, क्रूर, अवसर, घृणा, ललना, स्नेह

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

सम्मान, दुर्भाग्य, गृहस्थ, बाहर, यश, गाँव, उदार, स्वीकार, मूर्ख, नीति, हर्ष, शत्रु, आशा, आदर, क्षमा

8. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

हाथ समेटना, आँखे खुलना, मुँह लगना, करवटें बदलना

9. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए :

(1) ठाकुर साहब का दो बेटे थे ।

(2) आपका आशीर्वाद से में ऐसा मूर्ख नहीं हूँ ।

(3) बड़े घर की बेटी पाठ का साहित्यिक विद्या कहानी है ।

विद्यार्थी -प्रवृत्ति

- 'जहाँ चाह, वहाँ राह' का दस पंक्तियों में विचार-विस्तार कीजिए ।

शिक्षक - प्रवृत्ति

- ऊषा प्रियंवदा द्वारा लिखित 'वापसी' कहानी बच्चों को सुनाएँ ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 नीति के दोहे

वृंद

(जन्म: सन् 1643 ई ., मृत्यु : सन्, 1723 ई. :)

कवि वृंद का पूरा नाम था-- वृंदावन- उनके पूर्वज बीकानेर से मेडते (दोनों राजस्थान में) में आकर बसे थे, वहीं पर इनका जन्म हुआ था । काशी में रहकर उन्होंने व्याकरण, साहित्य, वेदान्त दर्शन तथा गणित का अध्ययन किया । वे राजस्थान में जोधपुर किशनगढ बंगाल और उड़ीसा के शासकों के राज्याश्रय में रहे ।

इनकी रचनाओं में अलंकार का प्राचुर्य है, कल्पना की उड़ान कम है । नीति श्रृंगार और भक्तिवार्ता इनकी रचनाओं की मुख्य आधारभूमि है । सरलता और सरसता के साथ ही वाक्य विदग्धता इनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ है। इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं-- भाव पंचाशिका, यमक सतसई, नयनपचीसी एवं श्रृंगार शिक्षा यहाँ संकलित दोहे लोक व्यवहार की दृष्टि से उपयोगी होने के साथ ही जीवन जगत के पथदर्शक हैं ।

कठिन कलाहू आइ है, करत करत अभ्यास ।
नट ज्यों चालत बरत पर, साधे बरस छः मास ॥ 1॥

अति परिचय तैं होत है, अरुचि अनादर भाय ।
मलयागिरि की भीलनी, चंदन देत जलाय ॥ 2॥

पीछै कारज कीजिए, पहिलै जतन बिचार ।
बडे कहत हैं बांधिये, पानी पहिले पार ॥ 3 ॥

कहा बड़े छोटे कहा जहाँ हित तहाँ चित लागि ।
हरि भोजन किय बिदुर घर दुरजोधन को त्यागि ॥ 4 ॥

ज्यौं सुबरन तैं होत है, भूषन भाँत अनेक ।
त्यौं सु-बरन के अरथ बहु सबद होत है एक ॥ 5॥

शब्दार्थ-टिप्पण

बरत रस्सी **सु-बरन** स्वर्ण, अच्छे शब्द, सुंदर रंग **जतन** यत्न, प्रयत्न

मुहावरा

बाँधिये पानी पहिले पार -पानी आने से पहले पाल बाँधना संकट आने से पहले ही उसके निराकरण के उपाय करना ।

स्वाध्याय

1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) कठिन काम कैसे सिद्ध होते हैं ?

(2) अति परिचय से क्या हानि होती है ?

(3) दुर्योधन- विदुर के दृष्टांत से वृंद क्या कहना चाहते हैं ?

2. सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) सुबरन के अनेकार्थ को उदाहरण देकर समझाइए ।

(2) कार्य और उपाय के बारे में कवि वृंद ने क्या कहा है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. भाव समझाइए :

(1) मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जलाय ।

(2) बड़े कहत हैं बाँधिये पानी पहिले पार ।

4. दोहे में प्रयुक्त निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्समरूप लिखिए :

जतन, अरथ, सबद, भूषन, दुरजोधन, परिचें

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) ....महाभारत का पात्र नहीं है ।

(A) दुर्योधन (B) भीष्म (C) लक्ष्मण (D) युधिष्ठिर

(2) बरत का अर्थ है .... ।

(A) व्रत (B) बुनना (C) व्यवहार (D) रस्सी

(3) कठिन कलाहू आइ है करत-करत अभ्यास में कौन-सा अलंकार है ?

(A) अनुप्रास (B) उपमा (C) रुपक (D) श्लेष

(4) भीलनी का पुल्लिंग ....है ।

(A) भीम (B) भील (C) भीती (D) भीष्म

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रहीम के नीति पर के दोहे ढूँढ़कर पढ़िए ।
- नीति परक अन्य रचनाएँ संग्रहित कीजिए ।
- विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में ऐसे दोहों का गान कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- वर्ग में ऐसे दोहों का सस्वर गान करवाइए ।
- विद्यार्थियों को पुस्तकालय में ले जाकर अन्य कवियों की नीतिपरक रचनाएँ खोजने में सहायक हों ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 तर्क और विश्वास

बालकृष्ण भट्ट

(जन्म : सन 1844 ई निधन : सन 1914 ई)

पं. बालकृष्ण भट्ट का जन्म इलहाबाद- उत्तरप्रदेश में हुआ था । पिता बड़े व्यापारी थे, पर भट्टजी का मन पैतृक व्यवसाय में नहीं लगा, उन्होंने अपना पूरा जीवन साहित्य सेवा में अर्पित कर दिया। भारतेन्दु युग के साहित्यकारों में आप महत्वपूर्ण निबंधकार और पत्रकार रहे हैं । आत्मपरकता और व्यक्ति व्यंजकता उनके निबंधों की महत्वपूर्ण पहचान है। आलोचक उन्हें हिन्दी का एडिसन मानते हैं। आपने 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्रिका का संपादन कार्य लगातार बत्तीस वर्षों तक किया।

आपके निबंधों का संचयन 'भट्ट निबंधावली' के नाम से प्रकाशित है। 'नूतन ब्रह्मचारी', तथा सौ अनजान एक सुजान आपके मुख्य उपन्यास हैं। 'दमयंती स्वयंवर', 'चंद्रसेन', 'शिशुपाल वध', तथा 'रेल का विकट खेल', आपके महत्वपूर्ण नाटक हैं। आपने संस्कृत और बंगला भाषा से अनुवाद कार्य भी किया है। 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादन में भी आपने अपना सहयोग दिया है।

प्रस्तुत निबंध में निबंधकार ने तर्क और विश्वास को संसार की दो अद्भूत शक्तियों के रूप में चित्रित किया है। पर मनुष्य उसका प्रयोग विवेक से करें तब। सबके तर्क एक समान नहीं होते यह भिन्नता ही विविध बाद या सम्प्रदाय की जन्मदात्री है। एक और प्रकार के लोग हैं जो सच्ची नीयत से विश्वास के पोषण में तत्पर और सत्य के अन्वेषण में उद्यत हैं ; पर सच तो यह है कि विश्वास और तर्क दोनों एक दूसरे के इतना विरुद्ध हैं कि तर्क विश्वास के लिए कुलाढ़ा है। विश्वास को जब तक चित्त में स्थान न देंगे , तर्क की श्रृंखला कभी दूर होगी ही नहीं।

तर्क और विश्वास दोनों संसार के चलाने की ऐसी अद्भुत शक्तियाँ हैं कि जिनके न रहने से मनुष्य के मनुष्यत्व में अन्तर पड़ जाता है। जब तक आदमी का होशहवास दुरुस्त है, तब तक तर्क और विश्वास दोनों भरपूर काम देते हैं। विक्षिप्त या पागल में ये दोनों रहते तो हैं ; परन्तु इनका प्रयोग यथावत पागल मनुष्य नहीं कर सकता।

अब इन दोनों के यथावत काम देने पर विचार होता है कि इन दोनों का आपस में क्या सम्बन्ध है। कर्म-इन्द्रियाँ अर्थात् हाथ-पाँव आदि के द्वारा इनके सम्बन्ध का ज्ञान किसी तरह हो ही नहीं सकता, क्योंकि इनके सम्बन्धका ज्ञान-स्थल इन्द्रियों से कोई सरोकार नहीं रखता। अब रही ज्ञान-इन्द्रियाँ, उनमें तर्क बुद्धि का धर्म है और तर्क अहंकार की विविध शक्तियों में एक शक्ति है। जब किसी स्थूल वा सूक्ष्म पदार्थ का ज्ञान, कर्म या ज्ञान-इन्द्रियों से मन के द्वारा अहंकार होता है, तब बुद्धि अपनी तर्क शक्ति से निश्चय करती है कि यह ज्ञान वास्तव में सत्य है या झूठ। सच-झूठ के निश्चय के उपरान्त अहंकार उस पर विश्वास लाता है। इससे प्रकट हुआ, तर्क और विश्वास में सेवक स्वामी का-सा सम्बन्ध है।

अब प्रश्न उठ सकता है कि जब दोनों में इस प्रकार का सम्बन्ध है, तो संसार के मनुष्यों के तर्क और विश्वास में क्यों इस तरह का अन्तराय है, उचित था कि सम्पूर्ण मनुष्यमात्र का एक-सा विश्वास होता। इसका सुगम उत्तर यह है जिसे हर एक मनुष्य थोड़े ही परिश्रम में जान सकते है ; पक्षपात छोड़ वादी के तर्क करने के तरीके को देखें और तब उससे अपना अनुमान निकालें। ऐसा करने से जल्द प्रकट हो जायगा कि संसार के सब मनुष्य क्यों एक विश्वास के नहीं होते।

कारण इसका यह है कि सब लोग एक ही तरह का तर्क नहीं करते बल्कि लोगों के तर्क करने का प्रकार भिन्न-भिन्न है। एक प्रकार के तर्क करनेवाले वे है, जो तर्क करने में ऐसे आलसी होते हैं कि अपनी बुद्धि को थोड़ा भी परिश्रम नहीं देना चाहते, अपने गुरु या बड़े लोगों के किये हुए तर्क पर जल्द विश्वास कर लेते है। ऐसे मनुष्यों की तर्क करनेकी शक्ति प्रतिदिन कुण्ठित होती जाती है। ऐसों का विश्वास नही रहेगा, जैसा उनके बाप-दादों के समय से चला आता है। बाप-दादों का विश्वास चाहे कैसा ही पोच हो ; पर वे लकीर के फकीर बने ही रहेंगे। ऐसे लोगों से यदि पूछा जाय कि तुम अपनी बुद्धि को क्यों नहीं काम में लाते, तो ये पट से यही जवाब देगें कि क्या हमारे बाप-दादे मूर्ख और नासमझ थे, क्या हम उनसे अधिक बुद्धिमान हैं। हिन्दुस्तान में तो ऐसे लोगों की इतनी अधिकाई है कि 100 में 90 से कम न होंगे ; किन्तु थोडे या बहुत ऐसे मनुष्य तो हर एक जाति और देश में पाये जाते है। इसीलिये संसार में इतने तरह के अलग-अलग मत है और एक-एक मत में अलग-अलग बहुत से जुदे-जुदे सम्प्रदाय हैं, जिन्हें बड़े-बडे लोगों ने अपना-अपना मतलब गाँठने को या अपने देश की भलाई या उन्नति के लिये जुदे-जुदे देशों में फेलाये और अब तक फैलाते जाते हैं। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के इस आजादगी के जमाने में अँगरेजी शिक्षा के प्रभाव से अब उन भिन्न-भिन्न मत, धर्म या सम्प्रदायों की कोई आवश्यकता नहीं है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दूसरे प्रकार के पुरुष वे हैं, जो अपने रोजमर्रा के काम में ऐसी तीखी बुद्धि रखते हैं और तर्क को इतना काम में लाते हैं कि बहुत कम लोग चालाकी बुद्धिमान और न्यायपूर्वक विचार में उनकी बराबरी कर सकते हैं, परन्तु जब किसी ऐसे विश्वास को तर्क के द्वारा शुद्ध करने की आवश्यकता पड़ती है, तर्क के बदले क्रोध करने लगते हैं, यहाँ तक कि न अपनी बात कहते हैं, न दूसरों की सुनते हैं । क्रोध में इतना आग-बबूला हो जाते हैं कि मानों उठाकर निगल जायेंगे और यही समझते हैं कि यह हमारा गुस्सा ही तर्क का पूरा काम दे देगा और हमारे विश्वास की पुष्टता हो गई; पर ऐसे काम के लिये बड़ा चालाक आदमी चाहिये और इस तरह के चालाक बहुत कम पाये जाते हैं। ऐसे लोगों से समाज का काम तो भरपूर निकल सकता है **;** परन्तु सत्य का पोषण नहीं हो सकता, इसीलिए कि उनका विश्वास भी गुस्से की रंगत पकड़ लेता है।

एक प्रकार के पुरुष और भी हैं, जो सच्ची नीयत से विश्वास के पोषण में तत्पर हैं और सत्य के अन्वेषण में भी उद्यत है **;** किन्तु बुद्धि-वैभव में इतने पूर्ण नहीं है कि तर्क के द्वारा अपने विश्वास को सत्य के पास तक पहुँचा सकें। तर्क तो करते हैं, किन्तु उनका तर्क एकदेशीय है, इसलिये सत्य का होना पूरा निश्चय नहीं कर सकते और बिना पूरा निश्चय के जो विश्वास हो वह कच्चा विश्वास है, इत्यादि। कई प्रकार के तर्क करनेवाले यहाँ दिखलाये गये ; पर सच तो यह है कि विश्वास और तर्क दोनों एक दूसरे के इतना विरुद्ध है कि तर्क विश्वास के लिये कुलाढ़ा है। विश्वास को जब तक चित्त में स्थान न दोगे , तर्क की श्रृंखला कभी टूटे गी ही नहीं।

शब्दार्थ-टिप्पण

विक्षिप्त बैचेन **सरोकार** संबंध, मतलब, **अंतराय** दुराव, अंतर, **,कुण्ठित** कुंद , **आजादगी** आजादी, **जुदा** अलग , **सुगम** आसान, **दुरुस्त** ठीक, **वादी** पक्षवाला, **प्रतिवादी** विपक्षी, **कुलाढा** कुल्हाडी

मुहावरे

लकीर का फकीर होना बने बनाये ढर्रे पर बिना सोचे चलना **आग बबूला होना** गुस्सा होना **रंगत पकड़ना** उसके जैसा होना

स्वाध्याय

1. **एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए:**
   (1) किन शक्तियों के अभाव से मनुष्य के मनुषत्व में अंतर पड़ सकता है ?
   (2) तर्क किन इंद्रियो का धर्म है ?
   (3) कैसा व्यक्ति तर्क और विश्वास का उपयोग नहीं कर सकता ?
   (4) लकीर के फकीर लोग किनका विश्वास कर लेते हैं ?
   (5) लेखक ने कच्चा विश्वास किसे कहा है ?
   (6) तर्क की श्रृंखला कब तक नहीं टूटेगी ?

2. **दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**
   (1) संसार में सम्प्रदायों की भिन्नता का क्या कारण है ?
   (2)बुद्धि किसी ज्ञान के सही-गलत का निश्चय कैसे करती है ?
   (3) लेखक ने तर्क को विश्वास का कुलाढ़ा क्यों कहा है ?
   (4) तर्क और विश्वास के बीच किस प्रकार का संबंध है ?

3. **सविस्तार उत्तर कीजिए :**
   (1) तर्क की दृष्टि से लेखक ने मनुष्यों के कौन-कौन से प्रकार बताए हैं ?
   (2) सत्य होने का पूरा निश्चय कब होता है ?
   (3) लकीर के फकीर लोग तर्क न करने के क्या-क्या कारण देते हैं ?
   (4) संसार के मनुष्यों के तर्कों में अंतर के क्या कारण हैं ?

4. **आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) तर्क अहंकार की विविध शक्तियों में एक शक्ति है।
   (2) हमारा गुस्सा ही तर्क का पूरा काम दे देगा और विश्वास की पुष्टता हो गई।
   (3) तर्क और विश्वास का संबंध-सेवक स्वामी का है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :**
सुगम, न्याय, बुद्धिमान, कर्मठ, पवित्र, वादी

6. **समानार्थी शब्द दीजिए :**
बुद्धिमान, अहंकार, सच, गुस्सा

7. **वर्तनी शद्ध कीजिए :**
श्रृंखला, पुरुष, प्रतिवादी, अन्वेशण

विद्यार्थी - प्रवृत्ति

- बालकृष्ण भट्ट का कोई एक निबंध पढ़कर उसका सार लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को निबंध की विशेषताएँ एवं प्रकार समझाइए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 भूतल को स्वर्ग बनाने आया

मैथिलीशरण गुप्त

(जन्मः सन् 1886 ई.; निधन- सन् 1964 ई.)

द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि और हिन्दी के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी का जन्म चिरगाँव, जिल्ला झाँसी, उत्तरप्रदेश में हुआ था। इनके पिता भी कवि थे। इसीलिए बचपन से ही इनकी रुचि काव्य-सर्जन में थी इस काव्यरुचि को रामभक्ति ने पल्लवित किया और आचार्य महावीरप्रसाद ने प्रोत्साहित किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से आपने कविताएँ लिखना शुरु किया और खड़ीबोली के प्रसिद्ध कवि के रूप में ख्याति प्राप्त की। आधुनिक युग के सफल प्रबन्धकार एवं कविता में खड़ीबोली के प्रतिष्ठाता के रूप में गुप्तजी का योगदान अमूल्य है। इन्होंने भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों को आधार बनाकर राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविता का सृजन किया। भारतीय संस्कृति के प्रति अन्नय श्रद्धा और गांधीवादी मानवतावाद में अटूट आस्था इनके काव्य की विशेषता हैं।

अंग्रेजी शासन के खिलाफ भारतीय जनता को प्रेरित करने में इनका विशेष योगदान रहा-'भारत-भारती', इसका प्रमाण हे। नारी के प्रति सह्दयता ने गुप्तजी को हिन्दी साहित्य और समाज की उपेक्षित नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रणकर उन्हें लोकप्रिय बनाया- उर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया, कैकेयी आदि इसके प्रमाण हैं ।

मैथिलीशरण गुप्तजी की कुछ प्रमुख रचनाओं में 'रंग में भंग', 'भारत-भारती,' 'जयद्रथ-वध', 'प्लासी का युद्ध', 'सिद्धराज' , 'जयभारत' , द्वापर , कुणाल, यशोधरा, पंचवटी, काबा-कर्बला, विष्णुप्रिया, नहुष, और साकेत हैं। इसके अतिरिक्त आपने 'तिलोत्तमा'और 'चरणदास' नामक दो नाटक भी लिखे हैं।

भारतीय संस्कृति के अमरगायक होने के कारण इन्हें राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ। ये राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे और राष्ट्र कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

प्रस्तुत काव्यांश गुप्तजी के महाकाव्य 'साकेत' के आठवें सर्ग से लिया गया है। राम-सीता संवाद के माध्यम से श्रीराम इस पृथ्वी पर अपने आने का मूल कारण बताते हैं। वे बताते हैं कि मर्यादा की रक्षा करने हेतु, भक्तों की श्रद्धा की रक्षा हेतु तथा इस पृथ्वी को स्वर्ग-सा बनाने के लिए ही मैं आया हूँ। कविता की भाषा बड़ी ही सरल सीधी-सादी और सहज है।

"तुम इसी भाव से भरे यहाँ आए हो ?
यह घनश्याम-तनु धरे हरे, छाए हो ?
तो बरसो, सरसै, रहे न भूमि जली-सी,
मैं पापपुंज पर टूट पड़ूँ बिजली-सी।"

हाँ , इसी भाव से भरा यहाँ आया मैं,
कुछ देने ही के लिए प्रिये, लाया मैं।
निज रक्षा का अधिकार, रहे जन-जन को,
सबकी सुविधा का भार, किंतु शासन को।
मैं आर्यो का आदर्श, बताने आया,
जन सम्मुख धन को, तुच्छ जताने आया।

सुख-शांति हेतु मैं क्रांति मचाने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया।
मैं आया उनके हेतु , कि जो तापित हैं,
जो विवश, विकल, बलहीन, दीन, शापित हैं।
हो जाएँ अभय वे जिन्हें कि भय भासित हैं ,
जो कौणपकुल से मूक सदृश्य शासित हैं।
मैं आया, जिसमें बनी रहे मर्यादा,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बच जाए प्रलय से, मिटे न जीवन सादा।
सुख देने आया, दुख झेलने आया,
मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया ।
मैं यहाँ एक अवलंब छोड़ने आया ,
गढ़ने आया हूँ , नहीं तोड़ने आया।

भव में नववैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

शब्दार्थ-टिप्पण

पापपुंज पाप का समूह **निज** अपना **सम्मुख** सामने **विकल** परेशान, व्याकुल **भूतल** धरती **कौणप** राक्षस **अवलंब** सहारा **मूक** जो बोल न सके, गूंगा **सदृश्य** समान

अभ्यास

*** एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए:**

(1) कवि के राम किसको स्वर्ग बनाने आए है ?
(2) जन-जीवन में सुख-शांति किस प्रकार प्राप्त होगी ?
(3) गुप्तजी का जन्म कहाँ पर हुआ था ?
(4) कवि के राम तोड़ने नहीं बल्कि क्या करने आए हैं ?
(5) गुप्तजी को कौन-कौन से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जन-जन के पास क्या अधिकार रहना चाहिए ?
(2) साकेत के अलावा गुप्तजी की अन्य दो रचनाओं के नाम लिखिए।
(3)' मैं पापपुंज पर टूट पडूँ बिजली-सी ' कौन। किससे कहता है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया ' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
(2) नर को ईश्वरता किस प्रकार प्राप्त होगी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छ: वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि में राम का आदर्श क्या है ?
(2) 'इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया 'का आशय स्पष्ट कीजिए ।
(3) कवि की कल्पना के रामराज्य की क्या विशेषता होगी ?

4. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(1) 'जन सम्मुख धन को, तुच्छ जताने आया।'
(2) 'गढ़ने आया हूँ , नहीं तोड़ने आया।'

5. निम्निलिखित के विलोम शब्द लिखिए :

सुविधा, प्रत्यक्ष, भय, स्वर्ग, संयोग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. प्रत्येक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पुष्प, नीर, सदैव, विवश, अवलंब

7. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) मैं पापपुंज पर टूट पड़ूँ .... सी ।

(A) विद्युत (B) बिजली (C)चपला (D) दामिनी

(2) संपत्ति शब्द का समानार्थी शब्द चुनकर लिखें ।

(A) सुमति (B) संगतू (C) विपत्ति (D) धन

(3) मैं आया उनके हेतु, कि जो .... हैं ।

(A) दीन (B) तापित (C) मजबूर (D) दु:खी

(4) ....यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया ।

(A) संदेश (B) सूचना (C) खबर (D) समाचार

(5) जन सम्मुख ....को तुच्छ जताने आया ।

(A) धन (B) अर्थ (C) संपत्ति (D) भंडार

योग्यता -विस्तार

विद्यार्थी -प्रवृत्ति

- 'धरती को स्वर्ग कैसे बनाया जा सकता है ' इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए ।
- पाठयक्रम में आदि हुए महाकाव्यांश के आगे-पीछे का संदर्भ ज्ञात करें ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को ' राष्ट्रकवि' की संकल्पना समझाने का प्रयत्न करें ।
- ' साकेत 'महाकाव्य का संक्षेप में कथानक बताते हुए इसकी विशेषता का उल्लेख करें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 दिलबहादुर दाज्यू

फणीश्वरनाथ रेणु

(जन्म: सन् 1928 ई. ; निधन : सन् 1977 ई.)

प्रमुख आँचलिक कथाकार रेणुजी का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना नामक गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में और उच्च शिक्षा वाराणसी में हुई। इन्होंने-भारतीय स्वाधीनता और नेपाल के राजाशाही विरोधी स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। कुछ समय तक आकाशवाणी पटना में कार्य किया। लोकनायक जयप्रकाशजी के जन आंदोलन में भी वे सक्रिय रहे। भारत-सरकार ने उन्हें **'पद्मश्री'** से सम्मानित किया था। वे जनता के बड़े पक्षधर थे इसलिए सरकार की जनविरोधी गतिविधियों के कारण सरकार की ओर से प्राप्त **'पद्मश्री'**की उपाधि उन्होंने लौटा दी थी ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में रेणुजी खासतौर से आंचलिक उपन्यासकार और नई कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। रेणुजी ने भारतीय ग्राम जीवन को उसकी समग्रता में आलेखित करने का सन्निष्ठ प्रयास किया है। उनके कथा साहित्य में लोक-जीवन और लोक संस्कृति का लोकभाषा के जरिये बड़ा ही सटीक एवं अर्थपूर्ण चित्रण हुआ है। मैला आँचल तथा परती-परिकथा उनके प्रमुख उपन्यास हैं। ठुमरी, एक आदमी रात्रि की महक, अग्निखोर, तथा एक श्रावणी दोपहरी की धूप इनके कहानी संग्रह हैं। ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रांति कथा तथा समय की शिला पर इनके रिपोर्ताज संग्रह हैं। इनकी प्रसिद्ध कहानी **'तीसरी कसम'**और **'मैला आँचल'** उपन्यास पर फिल्म और टी.वी. धारावाहिकों का निर्माण हो चुका है। प्रयोग, परम्परा और आधुनिकता का सार्थक समन्वय रेणु की सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रस्तुत संस्मरणात्मक लेख में लेखक ने 1942 के जन आंदोलन के अनुभवों के आधार पर एक नेपाली युवक का परिचय दिया है। जो अपने एक परिचित से हिन्दुस्तान और पलटन की नौकरी की तारीफ सुनकर, रुपये कमाने अपने गाँव से निकला है। अपनी सरलता के चलते वह सिपाहियों के हत्थे चढ़कर जेल पहुँच जाता है। अन्याय या अत्याचार के खिलाफ वह आपे से बाहर हो जाता है। जेल में बंद स्वातंत्र्य सेनानियों को पुलिस बिना कारण पीटती है। तब दिलबहादुर पुलिस को ही पीट देता है और बाकी कैदियों को मार से बचा लेता है। वह लेखक से प्रश्न करता है कि ये सुराज क्या है ? संयोग से 1947 के नेपाल के मजदूर आंदोलन में पकड़े जाने और पूर्णिया जेल के उसी वोर्ड में आने पर उन्हें दिलबहादुर का पुन : स्मरण हो आता है।

''अभी उस दिन फिर दिलबहादुर की याद आ गयी। आँखों के आगे उसकी सूरत हँस गयी। और दिलबहादुर की 'नेपाली हँसी'।

जिस दिन उसको पहली बार देखा-जैसी मुस्कुराहट उसके ओंठों पर थी, वही सब दिन बनी रही।

1942 के जन-आंदोलन के समय की बात है। दिन भर में दर्जनों बार जेल का लौह कपाट झनझनाकर खुलता-गिरोह के गिरोह घायल लोग अंदर दाखिल होते। सुबह का आया हुआ आदम शाम तक पुराना हो जाता। हर गिरोह के साथ ताजा खबर-नये लोग । यह रोज की बात थी, फिर भी लोहे के फाटक के झनझनाते ही जेल के सभी प्राणियों की निगाह उधर मुड़ जाती। नारे लगते, 'हो-हुल्लड़' भी मच जाता कभी-कभी। आगन्तुक दल के घायलों की मरहम-पट्टी होती, उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया जाता। इसी तरह के एक झुण्ड में एक दिन दिलबहादुर को दर्शन हुआ। सबसे पहले उसी पर आँखें गयीं, मानो वह उस गिरोह का दसवाँ या पन्द्रहवाँ व्यक्ति नहीं, पहला व्यक्ति हो! खाकी हाफ-पैंट,'कैला ' (गोरा नहीं, चरका रंग का) रंग, बगैर भौंहें और पपनियों वाली कौड़ी जैसी आँखें और ओठों पर 'नेपाली हँसी' ! रामलीला में ' मुखड़ा' के मुँह पर जैसी अर्थ-भाव-हीन मुस्कुराहट रहती है-वैसी ही हँसी!

भोटिया, पहाड़िया, मोरंगिया, नेपलिया, परबतिया, किरवा और न जाने किन-किन नामों से उसे लोग पुकारते-वह हमेशा की तरह मुस्कुराकर जवाब देता या टाल देता। एकदम लापरवाह! लेकिन, 'भूत' कहने से वह चिढ़कर 'अगिया बैताल' हो जाता था। वह कब बिगड़ता है, गुस्सा होने पर उसकी मुद्रा और मुखाकृति कैसी होती है-यह समझना बड़ा कठिन काम है। प्लास्टर की तरह चेहरा चिपटा है-कुछ समझा भी जाये तो कैसे ? इसलिए कई बार लोगों के 'कपाल' पर उसकी थाली ने दूज के चाँद की तरह दाग जड़ दिये थे। वह अचानक टूट पड़ता था-जंगली बिल्लियों की तरह। उछल-उछलकर वह हमले पर हमले करता जाता और मुँह से ' फियूँ-फियूँ या छिउँ-छिउँ!' आवाज निकलता। खौफनाक आवाज! उसके तेज नाखून जहरीले थे। मेरे एक मित्र को पाँच महीने तक मरहम-पट्टी करवानी पड़ी थी!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धीरे-धीरे ऐसा हुआ कि दिलबहादुर को लोगों ने 'बायकाट' जैसा कर दिया। 'तरकारी में कीड़ा है, इसलिए तरकारी बायकाट किया जाय' की तरह। जेल-कमेटी में कोई 'प्रस्ताव-उरस्ताव' तो पास नहीं हुआ था-लेकिन यह सभी चाहते थे कि दिलबहादुर से कोई बातें नहीं करे। दिलबहादुर पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। दोपहर को जब हम, सोये होते या तास खेलते रहते तो वह वार्ड से बाहर पेड़ के नीचे बैठकर आसमान की ओर एकटक निहारता। एक बार मैंने देखा कि पेड़ पर बैठकर चहकती हुई चिड़िया को वह मुँह चिढ़ा रहा है। चिड़िया बोलती-कूँई-कू-कू-कूँई! और दिलबहादुर अपनी भोंडी आवाज में जवाब देता-हू-हूं-हू-हू!```` मुझे उसकी इस हरकत को गौर से देखते देखकर पास खड़े वार्डर साहब ने कहा था-''ससुर पगला गया है!''

''हूँ! पगला गया है!`` बात करना नहीं जानते ?'' -न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा कि वार्डर ने मुझे ही गालियाँ दीं।``` दूसरा कोई होता तो उस दिन फिर 'पगली घंटी' बजकर ही रहती!

और जिस दिन किसी वजह से पगली घंटी बजी !

हजारों-हजार बागियों को एक जगह रखने का मतलब ही है- महीने में एक-दो बार 'पगली घंटी'! जेल-अधिकारियों की तरह, हम भी इसके लिए पहले से ही तैयार रहते थे।

''टू-टू टू-टू !!'' पहले जेल के अन्दर से सीटी बजती है।

''ढन-ढन, ढनांग-ढनांग'' फिर बाहर की घण्टी घनघनाती है।

''खच्-खटाक्!''```जेल का लौह-कपाट झनझनाया!

'रे-ऐ-ठ-,बो-ओ-ठन्!'

'किक-मा-र्च !!'-कर्कश कंठ की आवाज!

-फट्-फट्, धड़-धड़ ````! एक हाथ में राइफल और दूसरे हाथ में बेंत लेकर सिपाही लोग दौड़े।

`` एक-एक कर सभी वार्ड के फाटकों को पहले ही बन्द कर दिया गया है। प्रत्येक वार्ड की खिड़की पर बन्दूक ताने एक सिपाही खड़ा है। ````खड़-खड़ाक ````बारी-बारी से वार्ड के फाटक खुलते हैं, सिपाही लोग घुसकर मारते हैं। चीख, कराह, आह और नारों के साथ ऑफिसरों की भद्दी-अश्लील गालियाँ दूसरे वार्डों तक पहुँचती। दिलबहादुर मेरे ही वार्ड में रहता था। हम सभी अपने कम्बलों पर गुरुकुल के विद्यार्थियों की तरह,' सन्ध्यावंदन' की मुद्रा में-पंक्तियों में बैठे थे। बहुतों के चेहरे बन रहे हैं-बिगड़ रहे हैं। मेरी बगल में एक वृद्ध सज्जन थे, उन्हें मैंने बेवजह पचासों बार अपनी नाक मलते देखा। और मैं दिलबहादुर पर नजर गड़ाये बैठा था-मानो उसका चेहरा ताकत का खजाना हो ! उसके चेहरे पर वही मुस्कुराहट थी। वह कभी-कभी उठकर इधर-उधर टहलना चाहता, लेकिन एक ही साथ सबों की हल्की डाँट सुनकर बैठ जाता-''ऐ ! बहादुर ! सिस ! दिलबहादुर का मुझसे हमेशा अच्छा ही रिश्ता रहा था। इसलिए मैंने उसे अपने पास बुला लिया। उसने 'फिक' से मुस्कुराकर पूछा- ''के हुन्छ ?' क्या होगा ?

मैंने इशारे से कहा : ''मारेगा!''

''मारेगा तो हम पनि (भी) मारेगा !!'' -दिलबहादुर ने बहुत सरल ढंग से जवाब दिया।

'' उसे समझाइये नहीं तो मुफ्त में जान`` !'' कहनेवाले की बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि हमारा फाटक झनझना उठा-कच्-खटाक् !!

मुझे याद है, मैंने फिर भी अंतिम चेष्टा की थी -''दिलबहादुर दाज्यू, एस्तो न गर!''(दिलबहादुर, भाई, ऐसा मत करो !)

``` लेकिन मारपीट शुरु हो चुकी थी। फिर बेतों की आवाज, आह, कराह, चीख-पुकार, नारे और ऑफिसरों की भद्दी-अश्लील गालियाँ ```!

'फोंय-फोंय, छिऊँ-छिऊँ !!' यह क्या ? ```दिलबहादुर लड़ रहा है ?

या तो मार-पीट के लय में कोई साज बेसुरा बज गया। अचानक गति रुक गइ!```सबों की निगाह दिलबहादुर पर थी। वह एक सिपाही को दबोचकर उसकी छाती पर बैठा मुँह से -'फोंय-फोंय, छियूँ-छियूँ ' आवाज निकाल रहा था। मैं कह सकता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com
```

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हूँ कि वह उसकी **'अट्टहास'** की मुद्रा थी। महाभारत में दु:शासन की छाती पर बैठकर रक्त पीते हुए भीम की जैसी तस्वीर है– वैसा ही दृश्य !

``सारे वार्ड के कैदियों के हिस्से की मार अकेला ही खाकर, स्ट्रेचर पर लेटकर मुस्कुराता हुआ दिलबहादुर अस्पताल में दाखिल हुआ।

दिलबहादुर से मैं 'खास कुर' (खास भाषा नेपाली)में बातें करता, इसलिए उसे जब कुछ पूछना या कहना होता तो मेरे पास आ जाता। दोपहर को जब हम तास खेलते रहते तो वह बगल में बैठकर, कटी हुई पत्तियों को बिखेर देता और बीच-बीच में फिक् से हँसकर कहता-'थीरी सपेड नो बीड!'

दिलबहादुर अपने को 'तीन नम्बर पहाड़' का रहनेवाला बतलाया था।```गाँव के सभी नौजवान एक-एक कर 'तलड्ड्```मधेश तिर' (नीचे हिन्दुस्तान की ओर) चले आये। उसके गाँव के भक्तबहादुर ने कहा था- साथ ले चलेंगे-लखलौं । दिलबहादुर की माँ बीमार पड़ गयी थी, इसलिए वह उसके साथ नहीं आ सका। माँ जब आराम हुई तो एक दिन दिलबहादुर- 'तलड्ड् मधेश तिर' चला। जहाँ बगैर तेल की रोशनी जलती है, रेलगाड़ी, जहाज और हवाई जहाज जहाँ कोई काम नहीं करना पड़ता है, हाथ में बंदूक लेकर दिन भर खड़े रहो। रात में पहरा दो और ठीक महीना के पहली गते (तारीख)को इंडियन क्रेन (इंडियन क्वाइन) गिन लो-हाथ-पैर की उँगलियों को मिलाकर जितना होता है, उससे भी ज्यादे !`` पलटन में यदि नाम लिखा गया तो फिर क्या कहना मौज ही मौज है पलटन में रोज खस्सी और रक्सी (शराब)``` सूबेदार बाबू हर साल गाँव में आते हैं और गाँव के नौजवानों को पलटन की मौज की कहानियाँ सुनाते हैं- **"**सिर में थोड़ा भी दर्द हो, अस्पताल चले जाओ। वहाँ मेम``` खाँटी मेम के हाथ की मीठी दवा खाओ। कुछ काम नहीं **खाओ-पीओ और परेड करो।**`` पैसा? एक ही साल में बत्तीसों दाँतो में सोने न मढवा लो तो कहना गाँव तो सिर्फ बूढ़े-बुढ़ियों, जवान , औरतों और बच्चों को रहने की जगह है। जवान आदमी भी भला घर में रहेगा ?``` खुकरी भिडेर काँच्छा जानू पर्छ जर्मन को धावे मां (खुकरी से लैश होकर जर्मनी के मोर्चे पर जाना होगा) और, गाँव में रखा ही क्या है ? पाँच मन भारी सुंतुला का 'बोको' दिन भर ढोओ तो एक 'पचन्नी' मिलेगी। घर से निकलो और अंग्रेज सरकार का इन्दरजाल देखो```

धन-धन अंगरेजी सरकार,
पानी माँ जहाज चलाये को
आकाश माँ जहाज उड़ाये को!''

यानी पानी और आकाश में जहाज चलाने वाली अंग्रेजी सरकार- धन्न है, धन्न है।

```तीन दिन, तीन रात दिलबहादुर पहाड़ी रास्तों पर चलता रहा। पट्टियों पर रात काटता, पके हुए जंगली गलूर खाता और झरनों का पानी पीता हुआ वह एक दिन जोगबनी पहुँचत गया। शाम को जब जूट मिल का भोंपा बज उठा तो दिलबहादुर का कलेजा 'धक धक' करने लगा था और उसका बाथ खुकरी के बेंट पर स्वयं ही पहुँच गया था। और, जब हजारों-हजार बिजली के बल्ब के बल्ब एक ही साथ जल उठे तो उसकी आँखे मारे खुशी के बंद हो गई थीं। स्टेशन के प्लेट्फ्रार्म पर लेटा हुआ वह बारम्बार आँखों को मूँदता और खोलता-'झिलिमिली, झिलिमिली झिल्को **!**' रात भर उसे नींद नहीं आयी थी।

``गाँव के बड़े-बूढ़ों ने कहा था-पहले ही पड़ाव पर की खूबसूरती पर भूल मत जाना। जितना आगे बढ़ोगे, उतना ही अच्छा। दिलबहादुर जब कटिहार आया तो उसे एक 'भकचकी' लग गई। सैंकड़ों इंजन-पूरब-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन-चारों ओर जाती है। वह किधर जाये? बाद में मालूम हुआ-लखलौ, कलकत्ता सब जगह जानेवाली गाड़ी खराब हो गई है। रात में, कटिहार धर्मशाला के मैनेजर ने उसे धर्मशाला में ही रहने के लिए कहा। उसने पूछा- ''दरबानी करेगा?''

''ऊँ -हूँ, नहीं करेगा, पलटन मां जायेगा-लखलौ।''

''अच्छा-अच्छा। जाना लखलौ। अभी रात में इसी ओसारे पर सो रहो ।''

सुबह को उसकी आँखे खुलीं तो चारों ओर पलटन-ही-पलटन !! धर्मशाला के सभी यात्रियों को पकड़कर रस्सी से बाँधा जा रहा है।

दिलबहादुर से **'दोरंग'** (दारोगा को वह दोरंग ही कहता)ने पूछा-**"**रेल लैन काटा?''

दिलबहादुर ने जवाब दिया-हूँ ! जोगबनी में परि (भी) काटा, यहाँ पनि काटेगा।**"**



Downloaded from https:// www.studiestoday.com
```

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गप के बीच में ही मैंने टोक दिया था– ''क्यों ऐसा कहा ?''

दिलबहादुर की आँखें मानो गुड़क उठीं–''किन ? जोगबनी मां एक कम्पनी (एक रुपया) तीरेर लैन कटायें।'' (क्यों ? जोगबनी में एक रुपया देकर जो रेल–लैन कटाया, सो ?)

रेल टिकट की बात वह कह रहा था ॥

उसे अपनी गिरफ्तारी का जरा भी दुख नहीं था । उसे आदमी के स्वभाव पर अचरज होता–(''खुकुरी भी ले लिया, पैसा भी सब ले लिया और जेल में भी डाल दिया ।... कैसा मुजी है दोरंग ? '')

एक दिन, दोपहर को लेटकर बातें करते समय उसने पूछा–''होय न यो सुराज भन्ने क्या हो साथी ?''

मैंने उसे सुराज का अर्थ समझाने के सिलसिले में कहा था –''हमारे देश के सुराज की लड़ाई में तुमने साथ दिया है । तुम्हारे देश में जब सुराज की लड़ाई होगी तो हम भी साथ देंगे । क्यों ? त्यसो न भये, फेरि कस्नो साथी । ''

''हुन्छ ।'' दिलबहादुर ने गर्दन हिलाकर सम्मति दी थी–हुन्छ । – अर्थात् पक्की बात ।.. बस ''हुन्छ'' कह देने के बाद और कोई सवाल नहीं पैदा होता । हुन्छ तो हुन्छ !!

और इसे क्या कहियेगा... कि १९४७ में जब विराटनगर (नेपाल) मजदूर आन्दोलन के समय नेपाली मिलेटरी के संगीनों से घायल होकर और भारत सरकार द्वारा गिरफ्तार होकर जब पूर्णिया जेल पहुँचा तो हमें वही वार्ड मिला, जिसमें हम 1942 में थे ।'''' दिलबहादुर की याद आयी थी और मैंने मन–ही–मन उसे 'संदेशा' भेजा था– ''दिलबहादुर दाज्यु मैंने कहा था न, तुम्हारे देश की लड़ाई में मैं भी साथ दूँगा ।''

पता नहीं, दिलबहादुर कहाँ है । किन्तु, किसी भी पहाड़ी को देखते ही उसकी याद आ जाती है । वही मुस्कुराहट ॥

पिछले महीने की बात है : काठमांडू के एक होटल में बैठकर चाय पी रहा था । अकेला मैं और बड़ा सा टेबिल ! होटल के सभी टेबिल भरे हुए थे, किन्तु कोई मेरे टेबिल के चारों ओर खाली कुर्सियों पर नहीं बैठा । मुझे देखते ही दूसरे टेबिल की ओर बढ़ जाते । उनमें से एक नौजवान के मुँह से निकल ही गया – ''यो मुजी हिन्दुस्तानी हरु..'' (इन कम्बख्त हिन्दुस्तानियों ने...)

उस नौजवान को मेरी सूरत से चिढ़ पैदा हुई, मेरा क्या कसूर ? झगड़े से मैं हमेशा दूर भागने की कोशिश करता हूँ । कहने को तो बहुत सी बातें कह सकता था लेकिन मुझे अचानक दिलबहादुर की याद आ गई । उसके दिल में मेरे प्रति कोई बदगुमानी नहीं आई होगी–यह मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ । होटलों में बैठकर बहस करनेवाले नेपाली नौजवानों में और तीन नम्बर पहाड़ी के दिलबहादुर में बहुत अन्तर है न !

दिलबहादुर होता तो हँसकर कहता–''भने की कुरा असल हो साथी !''
(साथी ! तुमने जो बात कही–सही है, सही है ।)

शब्दार्थ–टिप्पण

बायकाट सामाजिक या व्यावसायिक बहिष्कार, नाता तोडना **बागी** विद्रोही या बगावत करनेवाला **भोंडी** भट्टापन, भद्दी **खौफनाक** भयानक **अश्लील** लज्जाजनक, फूहड़ **अट्टहास** जोर की हँसी **धन्न** धन्य **सुराज** स्वराज **टेबिल** टेबल

स्वाध्याय

1. एक–एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) किसी भी पहाड़ी को देखते ही -रेणुजी- को किसकी याद आ जाती है ?

(2) जेल के सभी प्राणियों की निगाह किधर मुड़ जाती थी ?

(3) दिलबहादुर किस नाम से बुलाने पर चिढ़ जाता था ?

(4) लेखक उससे किस भाषा में बात करते थे ?

(5) दिलबहादुर पेड़ पर बैठकर किसे चिढ़ाता था ?

2. दो–तीन वाक्यो में उत्तर लिखिए :

(1) दिल बहादुर किन–किन नामों से पुकारा जाता था ?

(2) दिलबहादुर का लोगों ने क्यों बायकाट कर दिया ?

(3) वह मुस्काराता हुआ अस्पताल में क्यों दाखिल हुआ ?

(4) गहने न पहनने के लिए नारी पुरष को क्या तर्क देती है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) लेखक को दिलबहादुर का चेहरा ताकत का खजाना क्यों लगता था ?

(2) सिपाही लोग कैदियों के साथ क्या जुल्म करते थे ?

(3) हर रविवार को मुलाकातियों की भीड़ क्यों रहती थी ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) महाभारत में दु:शासन की छाती पर बैठकर रक्त पीते हुए भीम की जैसी तस्वीर है, वैसा ही दृश्य ।

(2) "कुछ काम नहीं, खाओ-पीओ और परेड करो ।....पैसा ?"

5. विकल्प पूरा कीजिए :

(1) सूबेदार बाबू गाँव के___________ को कहानियाँ सुनाते हैं ?

(A) नौजवानों (B) बच्चों (C) सैनिकों (D) ग्रामीणो

(2) कुछ काम नहीं, खाओ-पीओ और ___________

(A) परेड करो (B) आराम करो (C) सो जाओं (D) भजन करो

(3) दिलबहादुर होता तो हँसकर क्या कहता ?

(A) आपने जो बात कही गलत है।.

(B) तुमने जो बात कही सही है।

(C) मेरा कोई कसूर नहीं है।

(D) जिओ और जीने दो।

(4) भक्तबहादुर उसके साथ गाँव क्यों न जा सका ?

(A) उसकी माँ बीमार थी ?

(B) उसके पास पैसे न थे।

(C) उसके पास टिकट न था ।

(D) उसका पैर टूट गया था ।

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

निगाह, दर्द, साल, गिरोह, चाँदनी, बहादुर

7. विलोम शब्द लिखिए :

एक, कर्कश, सज्जन, वृद्ध , ताजा, गुरू

8. भाववाचक संज्ञा बताइए :

मुस्कराना, सज्जन, सरल, धन्य, गुनगुनाना, तन्मय, मित्र, अश्लील

9. सामासिक शब्दों का विग्रह करके समास के नाम लिखिए :

जन-आंदोलन, मरहम-पट्टी, रामलीला, सन्ध्यावंदन, इधर-उधर, मार-पीट, हाथ-पैर

10. समानार्थी शब्द लिखिए :

लापरवाह, दर्द, निगाह, बहादुर, गिरोह, चाँदनी

11. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :

दूज का चाँद होना, जी धक धक करना, रास्ता पकड़ना

विद्यार्थी प्रवृति

- 'मेरे जीवन का यादगार दिन' - विषय पर विचार-विस्तार लिखिए ।

शिक्षक प्रवृति

- फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7 प्रथम रश्मि

सुमित्रानन्दन पंत

(जन्म : सन् 1900 ई०, निधन : सन् 1977 ई०)

प्रकृति के इस सुकुमार कवि का जन्म उत्तरांचल में प्रकृति की मनोहारी और शोभामयी भूमि अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था ।इनके जन्म के केवल छ : घण्टे बाद ही इनकी माताजी की मृत्यु हो गई ।अत:वे मातृ सुख से सदैव वंचित रहे ।इनकी प्रारंम्भिक शिक्षा कौसानी में हुई । मैट्रिक उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई के लिए पहले वाराणसी फिर प्रयाग गए ।१९२१ में महात्मा गाँधी के साथ असहयोग आन्दोलन में जुड़ गए और पढ़ाई छोड़ दी । बाद में इन्होंने संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी का स्वत: अध्ययन किया ।वे हिन्दी परामर्शदाता के रूप में आकाशवाणी में कार्य करते रहे ।इन्होंने 'रुपाभ'नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया ।प्रकृति के चतुर चितेरे इस कवि के काव्य में प्रकृति के विविध रंगी चित्र अंकित हुए हैं ।काव्य के प्रति उनकी अभिरुचि विद्यार्थी काल से ही थी। उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ प्रकृति-प्रेम से संबधित हैं ।पंतजी की कविता समय-समय पर नये मोड़ लेती हुई नई-नई दिशाओं का अन्वेषण करती रही है । आरम्भ में कवि का झुकाव छायावाद की ओर था, बाद में प्रगतिवाद की ओर मुड़े और जीवन के संध्याकाल में अरविंद-दर्शन की ओर आकृष्ट हुए ।छायावाद की बृहस्पति में पंतजी की गणना प्रसाद और निराला के साथ की जाती है ।

पंतजी ने विपुल काव्य-सृजन किया है ।'ग्रंथि', 'पल्लव', 'ग्राम्या', 'युगान्त', 'युगवाणी', 'स्वर्ण किरण', 'स्वर्णघूलि' इत्यादि इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं ।'कला और बूढ़ा चाँद' पर इन्हें साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त हुआ है ।'लोकायतन' पर 'सोवियत लैण्ड नेहरु सम्मान' तथा 'चिदम्बरा' पर आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है ।सन 1961 में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया है ।

'प्रथम रश्मि' कविता में कवि ने सुबह की प्रथम किरण के साथ ही साथ प्रकृति में होने वाले स्वाभाविक बदलाव का बड़ा ही सटीक और मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है ।प्रथम रश्मि के आने से पहले जैसे पूरा विश्व स्तब्ध था, मूर्च्छित था, जड़ चेतन सब एकाकार थे, एक जैसे थे, पूरे विश्व में जैसे शून्यावकाश था इसमें सिर्फ सांसों का आना जाना था लेकिन अब चेतना जाग गई है ।कवि इस परिवर्तन को कुतूहल से देखता है। उसे आश्चर्य होता है कि चिड़ियों को सुर्य के आने का पता कैसे चल जाता है। कवि जिज्ञासु बनकर उनसे प्रश्न पूछ रहा है।

प्रथम रश्मि का आना रंगिनि
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ, कहाँ हे बाल-विहंगिनि !
पाया,तूने यह गाना ?

सोई थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर,
झूम रहे थे, घूम द्वार पर,
प्रहरी-से जुगुनू नाना !
शशि किरणों से उत्तर-उतरकर
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिखा रहे थे मुसकाना !
स्नेहहीन तारों के दीपक,
श्वास-शून्य में तरु के पात,
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में,
तम ने था मंडप ताना !

कूक उठी सहसा तरुवासिनि,
गा तू स्वागत का गाना
किसने तुमको अंतर्यामिनि,
बतलाया उसका आना ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निकल सृष्टि के अंध गर्भ से
छाया तन बहु छायाहीन
चक्र रच रहे थे खल निशिचर
चला कुहुक, टोना माना

छिपा रही थी मुख शशि बाला
निशि के श्रम से हो श्रीहीन,
कमल क्रोड में बंदी था अलि,
कोक शोक से दीवाना !
मूर्च्छित थीं इन्द्रियाँ, स्तब्ध जग
जड़ चेतन सब एकाकार
शून्य विश्व के उर में केवल
साँसों का आना-जाना !

तूने ही पहले बहु दर्शिनि,
गाया जागृति का गाना,
श्री सुख सौरभ का नभ चारिणि,
गूँथ दिया ताना-बाना !

निराकार तम मानो सहसा
ज्योति-पुंज में हो साकार,
बदल गया द्रुत जगत्-जाल में
धर कर नाम रूप नाना !
सिहर उठे पुलकित हो द्रुम दल,
सुप्त समीरण हुआ अधीर,
झलका हास कुसुम अधरों पर
हिल मोती का-सा दाना !
खुले पलक, फैली सुवर्ण छवि,
जगी सुरभि, डोले मधु बाल,
स्पंदन कंपन औ 'नव जीवन'
सीखा जग ने अपनाना :

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि,
तूने कैसे पहचाना ?

कहाँ-कहाँ हे बाल-विहंगिनि
पाया यह स्वर्गिक गाना ?

शब्दार्थ-टिप्पण

रंगिनि रंगवाली, विनोदिनी **रश्मि** किरण **प्रहरी** पहरेदार **नभचर** आकाश में विचरण करने वाला पक्षी **तरू** पेड़ **पात** पत्ते **अवनि** पृथ्वी **तम** अंधकार **तरुवासिनि** पेड़ पर रहने वाली **खल** दुष्ट, नीच **निशिचर** रात मे घूमने वाला **टोना करना** जादूकरना **अलि** भौंरा, सखी **क्रोड** गोद **सौरभ** सुगंध **ज्योतिपुंज** प्रकाश का समूह **द्रुत** तेज **सिहरना** काँपना **द्रुमदल** पेड़ों का समुह **स्पंदन** धड़कन **कोक** चकवा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि प्रथम रश्मि के आनेकी बात किससे पूछते हैं ?

(2) जुगुनू क्या क्या कर रहे थे ?

(3) स्वागत का गान किसने गाया था ?

(4) शून्य विश्व के उर में किसका आवागमन जारी है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कामरुप नभचर क्या कर रहे थे ?

(2) कवि ने बालविहंगिनि को किन-किन नामों से संबोधित किये हैं ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) 'प्रथम' रश्मि काव्य का भाव सविस्तार अपने शब्दों में लिखिए।

(2) रात्रि की स्तब्धता का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(3) प्रस्तुत काव्य के आधार पर प्रात:कालीन प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(1) ''शशि किरणों से उतर-उतरकर
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृद मुख
सिखा रहे थे मुसकाना''

* * *

(1) मूर्च्छित थीं इन्द्रियाँ, स्कन्ध जग
जड़ चेतन सब एकाकार
शून्य विश्व के उर में केवल
साँसों का आना-जाना

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) श्वास शून्य हो जाना

(1) पुलकित होना

6. (1) समानार्थी शब्द लिखिए :

शशि, भू, तरु, तम, निशि, नवल

(2) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

जड़, ज्योति, निशि, तम

7. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) ------में बंदी था ।

(A) नीड़ (B) पिंजड़े (C) कमलक्रोड (D) पत्तों

(2) शून्य विश्व के--------में केवल साँसों का आना जाना ।

(A) मुख (B) उर (C) तन (D) आँखों

(3) रंगिणि के द्वार पर प्रहरी की तरह ------घूम रहे थे ?

(A) भौंरे (B) कीट-पतंगे (C) जुगुनू (D) खल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र काव्य को कंठस्थ करें तथा सस्वर कक्षा में सुनाएँ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत जी के प्रकृति सौंन्दर्य की अन्य कविताओं का संकलन करवायें।
- प्राकृत्तिक सौंदर्य पर निबंध लिखें ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8 गरीबी नंबर दो

मधु काँकरिया
(जन्म : सन् 1947)

मधु काँकरिया का लेखन उनके सामाजिक सरोकार की उपज है। पर्यावरण और आदिवासी जीवन के साथ उनका जुड़ाव सर्व विदित है। जीवन के क्षेत्र में संघर्षरत लोग उनकी रचनाओं में स्थान पाते हैं ; फिर वे बदनाम बस्तियों के लोग हो, नक्सलवादी, नशेबाज, या रिक्शेवाले। 'बीते हुए, भरी दोपहरी के अंधेरे, और 'अंत में ईशु आपके महत्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं । जिसमें संघर्षरत आम आदमी की जड़ो जहद है। 'खुले गगन के लाल सितारे,' 'सलाम आखिरी,' 'पत्ताखोर,' और 'सेज पर संस्कृत' आपके चर्चित उपन्यास हैं। मार्क्सवादी झुकाव और नक्सल सहानुभूति असल में आदिवासियों के प्रति लेखकीय प्रतिबद्धता का परिणाम है।

प्रस्तुत कहानी में गरीबी के दो रुपों का आलेखन किया गया है। एक गरीबी वह होती है जो जीवन के उन मूलभूत अभावों के कारण, देखने को मिलती है जहाँ रोटी भी नसीब नहीं होती। भारत के कई आदिवासी क्षेत्र इससे बुरी तरह पीड़ित हैं। लेखिका ने ऐसी ही एक गरीब आदिवासी युवती के सारू साग के पत्ते तोड़ते समय पैर फिसलने पर उसकी मृत्यु होने की बात की है। पर यह उसकी मजबूरी है । उनके पास कोई विकल्प नहीं है ।

गरीबी का दूसरा रूप है– जो हमारी मानसिक दिवालियापन की कोख से उपजा है। यहाँ लेखिकाने एक परिचित एक परिवार का वर्णन किया है जिसने मेहनत से एक फर्म तैयार की है अच्छा खाता-पीता परिवार है। जो बेटे को पढ़ाई के लिए विदेश भेजता है। वहाँकी चकाचौंध और जीवन शैली से आकर्षित युवक वहीं का बनकर रह जाता है और यहाँ अधेड़ उम्र के दम्पति अकेलापन का दर्द सहने के लिए मजबूर हैं। यह उनकी नियति बनकर रह जाता है। जीवन की अमूल्य चीज, जिंदगी की उष्मा उनके हाथों से सरक जाती है। यह आधुनिक युग में गरीबी का एक नया चेहरा गरीबी नं. दो।

एक होती है अभावों से उपजी जैविक गरीबी। जीवन की मूलभूत अपर्याप्तताओं की कोख से उपजी वह जानलेवा दरिद्रता, जिसकी तह में रोटियों का गणित, खाली पेट का हाहाकार, ललाट से बहता पसीना और थके पैरों की दास्तान होती है। झारखंड के आदिवासी जिले गुमला में एक आदिवासी युवती के मुंह से एक लोकगीत सुना था। गीत के बोल इस प्रकार थे:

'विपद नहीं बिसरे, वन वने लोराएं सारू साग
भैय, विपद मारो नहीं बिसरे
एक वन में ढूंढे, दुई वन ढूंढे, विपद मोरे नहीं बिसरे
वन वने लोराएं सारू साग, विपद नहीं बिसरे।'

तब गरीबी के तापमान का नयी तरह से अहसास हुआ कि लोकगीत में भी प्रेम नहीं, प्रकति नहीं, स्वप्नों के राजकुमार की आहट नहीं... हैं सिर्फ सारू साग के पत्तों की खोज में वन-वन भटकती युवा आदिवासी औरत के थके पैरों की दास्तान। और यह भी एक संयोग है कि जिस दिन सिरका गांव (गुमला जिला, विशुनपुर प्रखंड) पहुंचना हुआ, ठीक उसी के सप्ताह भर पूर्व घरघरी प्रपात की फिसलन भरी चिकनी चट्टान के ऊपर झूलती पेड़ की लता पर लगे साग के पत्तों को तोड़ने की चेष्टा में एक आदिवासी युवती फिसल कर गिरी ओर मर गई थी। बहरहाल, ये गरीबी के वे दर्दनाक झटके हैं, जिन्हें ऐन अपने सीने पर झेलने के लिए वे हर रोज मजबूर हैं, क्योंकि उनके पास कोई विकल्प नहीं है। बंगाल के कवि सुक्रांत भट्टाचार्य की एक पंक्ति है : कविता तोमाके दिलाम छुट्टी / पुर्णिमार चांद जेमन झुलसानो रुटि यानी कवि को पूर्णिमा के चांद में रोटी की झलक दिखाई देती है।

पिछले दिनों गरीबी का एक दूसरा रूप भी देखा, पर वह एक अलग किस्म की रोमानी-सी गरीबी थी, जो अभावों की कोख से न निकल कर मानसिक दरिद्रता की कोख से उपजी थी या यों कहिए, वह हाथ उठाकर मांगी हुई गरीबी थी। वाकया यों था। सालों बाद अपनी किसी परिचिता के यहां जाना हुआ। यद्यपि उम्र उसकी विशेष नहीं थी। पैंतालीस के लगभग, पर वह अपनी उम्र से काफी अधिक नजर आ रही ती. विशाल चकमक फ्लेंट में उसकी उपस्थिति किसी अभिशप्त रानी सी लग रही थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सामान से भरा घर इन्सानों से वीरान था। आधे से ज्यादा कमरे बंद थे। स्वप्नविहीन उस घर में इन्सानों से ज्यादा सेवक थे। उसकी परिचिता ने बताया कि वर्ष भर में यह फ्लैट सिर्फसात दिनों के लिए तब गुलजार होता है, जब उसके पुत्र एवं पुत्रवधू अपने ढाई वर्षीय पोते के साथ कैलिफोर्निया से स्वदेश आते हैं।

'तो बेटा कैलिफोर्निया में है, किसी विशेष ज्ञान की खोज में या अज्ञात की खोज में या...**'** मुझे जिज्ञासा हुई ।

'नहीं नौकरी के लिए गया है।'
'सिर्फ नौकरी के लिए ?'

और उसका संयम से साधा हुआ बांध ढह कर टूट पड़ा, हां सिर्फ नौकरी के लिए, जबकि उसे नौकरी की भी जरूरत नहीं थी। उसके पिता की बहुत बड़ी चार्टर्ड फर्म थी। विदेश तो सिर्फ इसलिए भेजा था कि वहां से मैनेजमेंट की डिग्री उसके प्रोफेशन में चार चांद लगा कर उसे औरों से अलग बना देगी। स्वप्न भी यही देखा था कि वह घर की फर्म को ही नंबर एक फर्म बनाएगा।

नहीं, स्कॉलरशिप भी कहां मिली थी, घर से बीस लाख रुपये लगाकर उसे अपने खर्च पर ही भेजा, पर वहां जाकर न सिर्फ उसे डिग्री मिली, बल्कि हाथों-हाथ नौकरी भी मिल गई। उसने पहली बार तो पूछा भी कि दो साल और रह जाऊं ? फिर वही दो साल खिंचते-खिंचते आज आठ साल हो गए अब और अब तो उसने वहीं की नागरिकता भी ले ली है। अब वह कभी नहीं लौटेगा, उसका बेटा बेबी केअर में पल रहा है, जिसका बाप कभी गोदी से नहीं उतरा। और वह फिर हिचकियों में खो गई।

थोड़ी देर बाद ही गृहस्वामी भी आ गए थ। आते ही उन्होंने आदतन स्टीरियो चलाया और फिर कंप्यूटर पर गेम खेलने लगे। परिचिता ने बताया कि सांय-सांय करते घर के सन्नाटे को सह नहीं पाने के कारण वे आते ही स्टीरियो ऑन कर देते हैं, जिससे स्टीरियों की गुरुवाणी पूरे फ्लैट को गुंजा दे। बात ही बात में गृहस्वामी ने भी उदासी बिखेरते हुए कहा जी, गलती हमारी ही थी। जीवन से ज्यादा जीविका को प्यार किया। तब तत्काल की चकाचौंध में इस मर्म को नहीं समझ पाया, पर अब समझा हूं पुरखे यों ही नहीं कह गए थे, जिस गांव जाना नहीं उसका रास्ता ही क्यों पूछना। विदेश का रास्ता तो मैंने ही दिखाया था।

लौटते वक्त भी दोनों पति-पत्नी की वीरान आंखें जाने कब तक पीछा करती रहीं। जीवन की जाने कितनी अच्छी चीजें उनके पास थी, पर इन्हीं अच्छी चीजों को बटोरने की चाह में शायद जीवन की सबसे अमूल्य चीज, जिंदगी की गरमाहट उनके हाथों से खिसक गई थी।

शब्दार्थ-टिप्पण

जैविक जीव से संबंधित **दास्तान** कहानी, कथा **अपर्याप्त** सभी प्रखंड ब्लोक **प्रपात** तेज बहनेवाला झरना **रोमानी** भावुक्तापूर्ण, काल्पनिक **अभिशप्त** शापित, शाप झेलरहा **गुलजार** रौनक **बेबी केयर**-शिशुओं की देखभाल करनेवाली संस्थाएँ **जीविक** जीने का साधन, नौकरी या व्यवसाय

मुहावरे

चार चांद लगाना-सम्मान बढ़ाना **हाथों से खिसकना**-खो जाना, दूर हो जाना, सरकना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) जैविक गरीबी किसे कहा गया है ?
(2) आदिवासी युवती के गीत में किसकी दास्तान थी ?
(3) लेखिका ने गरीबी नं.2 किसे कहा है ?
(4) कवि सुकांत की काव्य पंक्ति का अर्थ लिखिए ।
(5) परिचिता का बेटा कैलिफोर्निया क्यों गया था ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) गरीब आदिवासी युवती अपना गुजारा कैसे करती थी ?

(2) युवती की मृत्यु कैसे हुई ?

(3) गृहस्वामी की स्वीकारोक्ति अपने शब्दों में लिखिए ।

3. निम्नलिकित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) उक्त कहानी का शीर्षक गरीबी नंबर दो क्यों दिया गया है ?

(2) लेखिका की परिचिते के घर में उदासी क्यों छाई थी ?

4. पंक्ति का भावार्थ समझाइए :

(1) 'गलती हमारी ही थी। जीवन से ज्यादा जीविका को प्यार किया।'

(2) 'सामान से भरा घर इन्सानों से वीरान था।'

5. जोडे मिलाइए :

(1) आदिवासी युवती	पौंतालीस साल की उम्रवाली स्त्री।
(2) गृहस्वामी	आदिवासी जिले गुमला में रहनेवाली युवती।
(3) लेखिका की परिचिता	कवि को पूर्णिमा के चाँद में रोटी की झलक दिखाना।
(4) सुकांत भट्टाचार्य	इनकी बहुत बड़ी चार्टर्ड फर्म थी।

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

गरीब, युवती, मजबूर, वीरान

7. विरोधी शब्द लिखिए :

गाँव, परिचित, अमीर, सेवक

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत कहानी का नाट्य रूपांतर कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- धन के पीछे अंधी दौड़ में बिना सोचे समझे भागने से होनेवाले दुष्परिणामों की चर्चा कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9 लीक पर वे चलें

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(जन्म : सन् 1927 ई.,निधन: सन् 1983 ई .)

बहुमुखी व्यक्तित्व वाले रचनाकर सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ था। प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. करके आपने अध्यापक के पद पर कार्य किया परन्तु कुछ दिन बाद आकाशवाणी दिल्ली के समाचार विभाग में कार्य करने लगे। इन्होंने बहुत समय तक 'दिनमान ' साप्ताहिक के सम्पादकीय विभाग में भी कार्य किया उनके काव्य में चिंतन, विचार , और भावना की एक सूत्रता पाई जाती है।

कवि के रूप में उनकी रचनायात्रा का एक सिरा नई कविता के आंदोलन से जुड़ा रहा, तो दूसरा सिरा प्रगतिशील-जनपक्षधर काव्यांदोलन से। सर्वेश्वरजी नई कविता के प्रमुख कवि हैं। ये मुख्यरूप से कवि एवं नाट्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी कविताओं में आधुनिक जीवन की विडंबना, विषम स्थिति में भी व्यक्ति की जिजीविषा आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है। इन्होंने लोकजीवन के सत-असत पक्षों का उद्‌घाटन बड़ी निर्ममता से किया है। 'जंगल का दर्द ' 'कुआनो नदी''गर्म हवाएँ ''खूंटियों पर टंगे लोग''क्या कह कर पुकारूँ''कोई मेरे साथ चले'आदि इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। इनकी रचनाएँ 'तीसरा सप्तक'में भी संकलित हैं। 'बतूता का जूता ' इनकी बाल कविताओं का अनूठा संग्रह है। इनकी रचनाओं का चेक, पोलिश, रूसी तथा जर्मन भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया हे।

प्रस्तुत कविता में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने लीक से हटकर मतलब की परम्परा से हटकर कुछ करने की बात कही है। किसी के पीछे-पीछे वे चलें जो कमजोर हों, दुर्बल हों या फिर वो जो हारे हुए हों। किसी का अनुकरण न करते हुए नई राह, नये मार्ग निर्मित करने की बात की गई है। जोश और विश्वास से भरे हुए कवि कुछ नया करने को प्रोत्साहित करते हैं।

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।
साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट,
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसीसे लिपटे हुए सपने हमारे हैं।
शेष जो भी हैं-
वक्ष खोले डोलती अमराइयाँ ;
गर्व से आकाश थामे खड़े
ताड़ के ये पेड़
हिलती क्षितिज की झालरें ;
फलों से मारती
खिलखिलाती शोख अल्हड़ हवा ;
गायक-मंडली-से थिरक्ते आते गगन के मेघ,
वाद्य-यंत्रों-से पड़े टीले,
नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अँजुरी जल;
सभी, बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हममें
बस उसी सहारे हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लीक पर वे चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं,
हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

लीक पुरानी परम्परा **दुर्बल** कमजोर **झुरमुट** पास पास उगे पेड़ जिनकी डालियाँ मिलकर कुंज-सा-बना-रही हो, समूह **अमराई** आम की बगिया **क्षितिज** वह स्थान जहाँ आकाश और धरती मिले हुए दिखाई देते हों **अल्हड़** बालोचित सरलता के साथ मस्त और लापरवाह, **मेघ** बादल

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लीक पर किस प्रकार के लोग चलते हैं ?
(2) हमें कैसे रास्ते पर चलना चाहिए ?
(3) पीले बाँस किसके लिए कहा गया है ?
(4) गर्व से आकाश थामे का क्या तात्पर्य है ?
(5) गगन के मेघ किस तरह थिरकते हैं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि के स्वप्न किससे लिपटे हुए है ?
(2) नदी बनने की प्रतीक्षा में कौन और कैसी दशा में है ?
(3) हवा से हिलते ताड़ के वृक्ष कैसे लगते हैं ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) प्रस्तुत काव्य का भाव अपने शब्दों में लिखिए ।
(2) सुबह के दृश्य के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण अपने शब्दों में लिखिए ।

4. काव्य-पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) साक्षी हों राह रोके खड़े
पीले बाँस के झुरमुट
कि उनमें गा रही है जो हवा
उसीसे लिपटे हुए सपने हमारे हैं।

(2) हमें तो हमारी यात्रा से बने
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं ।

(3) सभी बन रहा है कहीं जो विश्वास
जो संकल्प हम में
बस उसी के सहारे हैं ।

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

(1) लीक पर चलना
(2) वक्ष खोलकर चलना

6. सामानार्थी शब्द लिखिए :

राह, दुर्बल, शुष्क

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

विश्वास, गगन, सहारे, अनिर्मित

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. वर्तनी सुधारिए :

झूरमूट, क्षीतीज, मंडलि, थीरकते

9. सही विकल्प चुनकर वाक्यांश पूरा कीजिए :

(1) वक्ष खोले डोलती.............................

(A) अमराइयाँ (B) अंगड़ाइयाँ (C) तनहाइयाँ (D) रुबाइयाँ

(2) खिलखिलाती शोख अल्हड़.....................

(A) हवा (B) वेल (C) वृक्ष (D) लड़कियाँ

(3) शुष्क नाले में नाचता एक.......................

(A) अंजुरी जल (B) भालू (C) पक्षी (D) मोर

विद्यार्थी प्रवृति

- सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का काव्य संकलन पुस्तकालय से खोजकर पढ़ें ।
- प्राकृतिक सौंदर्य के अन्य काव्यों का संकलन तैयार करें ।

शिक्षक प्रवृति

- परिश्रम ही सफलता की कुंजी है । विचार विस्तार करवाएँ ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10 श्रम देवता की उपासना

विनोबाभावे
(जन्म : 1894, निधन: 1982)

विनोबा भावे ने भारत में सर्वोदय तथा भूदान आंदोलन के द्वारा अहिंसक क्रांति का मार्ग दिखाया है। बहुभाषाविद् विनोबाजी ने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा माना और उसके प्रचार प्रसार का कार्य किया।
उनकी-प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं: गीता-प्रवचन, उपिनषदों का अध्ययन, शांतियात्रा, जीवन और शिक्षण, भूदान-गंगा,गीता आदि-
प्रस्तुत निबंध में मानव श्रम के महत्व का निरुपण किया गया है।

हमारे यहाँ प्राचीन काल से श्रम का विशेष महत्व रहा है। लेकिन यह श्रम और ज्ञान के बीच सामंजस्य नहीं बैठा पाये जिसके परिणाम स्वरूप की हम श्रम को हेय मानने लगे। हम श्रमिकों-कारीगरों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने पैतृक व्यवसाय को अपनाएँ। लेकिन क्या हम उनके द्‌वारा उत्पादित चीजों का उपयोग करना पसंद करते हैं कि जो आदमी कम-से-कम परिश्रम करता है वह बुद्धिमान एवं चतुर माना जाता है।

विनोबाजी के विचार से हमें पुन: श्रम की प्रतिष्ठा करनी होगी, तभी हमारी पाचेन्द्रिय ठीक होंगी, हमारा बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य सुधरेगा। गांधीजीने भी श्रम की महत्ता समझी और अपने रोजमर्रा के कार्यक्रम में श्रम को प्रमुख स्थान दिया गया। आज हमें गाँधीजी एवं विनोबाजी के विचारों को कार्यान्वित कर जीवन को सार्थक बनाना होगा।

प्राचीन काल में हमारे यहाँ कला कम नहीं थी। लेकिन पूर्वजों से मिलने वाली कला एक बात है और उसमें दिन-प्रति-दिन प्रगति करना दूसरी बात। आज भी काफी प्राचीन कारीगरी मौजूद है। उसको देखकर हमें आश्चर्य होता है। आश्चर्य करने का प्रसंग हमारे सामने क्यों आने चाहिए ? उन्हीं पूर्वजों की तो हम संतान हैं न ? तब तो उनसे बढ़कर हमारी कला होनी चाहिए। लेकिन आज आश्चर्य करने के सिवा हमारे हाथ में और कुछ नहीं रहा। यह कैसे हुआ ? कारीगरों में ज्ञान का अभाव और हममें परिश्रम-प्रतिष्ठा का अभाव ही इसका कारण है।

प्राचीन काल में ब्राह्मण और शूद्र की समान प्रतिष्ठा थी। जो ब्राह्मण था वह विचार-प्रवर्तक, तत्वज्ञानी और तपश्चर्या करनेवाला था। जो किसान था वह ईमानदारी से अपनी मजदूरी करता था। प्रात:काल उठकर भगवान का स्मरण करके सूर्यनारायण के उदय के साथ खेत में काम करने लग जाता था, और सायंकाल सूर्य भगवान जब अपनी किरणों को समेट लेते तब उनको नमस्कार करके घर वापस आता था। ब्राह्मण में और इस किसान में कुछ भी सामाजिक, आर्थिक या नैतिक भेद नहीं माना जाता था।

हम जानते हैं कि पुराने ब्राह्मण 'उदर-पात्र' होते थे, यानी उतना ही संचय करते थे जितना कि पेट में अंटता था। यहाँ तक उनका अपरिग्रही आचरण था। आज की भाषा में कहना हो तो ज्यादा-से ज्यादा काम देते थे और बदले में कम-से-कम वेतन लेते थे। यह बात प्राचीन इतिहास से हम जान सकते हैं। लेकिन बाद में ऊँच-नीच का भेद पैदा हो गया। कम-से-कम मजदूरी करनेवाला ऊँची श्रेणी का और हर तरह की मजदूरी करनेवाला नीची श्रेणी के माना गया। उसकी योग्यता कम, उसे खाने के लिए कम, और उसकी प्रगति, ज्ञान प्राप्त करने की व्यवस्था भी कम।

प्राचीन काल में न्यायशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, वेदांतशास्त्र इत्यादि शास्त्रों के अध्ययन का जिक्र हम सुनते हैं। गणितशास्त्र, वैद्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, इत्यादि शास्त्रों की पाठशालाओं का भी जिक्र आ जाता है। लेकिन उद्योगशाला का उल्लेख कहीं नहीं आया है। इसका कारण यह है कि हम वर्णाश्रम धर्म माननेवाले थे, इसलिए हरेक जाति का धंधा उस जाति के लोगों के घर-घर में चलता था और इस तरह हरेक घर उद्योगशाला था। कुम्हार हो या बढ़ई, उसके घर में बच्चों को बचपन ही से उस धंधे की शिक्षा अपने पिता से मिल जाती थी। उसके लिए अलग प्रबंध करने की आवश्यकता न थी। लेकिन आगे क्या हुआ कि एक ओर हमने यह मान लिया कि पिता का ही धंधा पुत्र को करना चाहिए, और दूसरी ओर बाहर से आया हुआ माल सस्ता मिलने लगा, इसलिए उसी को खरीदने लगे। मुझे कभी-कभी सनातनी भाइयों से बातचीत करने का मौका मिल जाता है। मैं उनसे कहता हूँ कि वर्णाश्रम-धर्म लुप्त हो रहा है। इसका अगर आपको दु:ख है तो कम-से-कम स्वदेशी धर्म का तो पालन कीजिए। बुनकर से तो मैं कहूँगा कि अपने बाप का धंधा करना तुम्हारा धर्म है, लेकिन उसका बनाया हुआ कपड़ा मैं नहीं लूंगा तो वर्णाश्रम-धर्म कैसे जिंदा रह सकता है ? हमारी इस वृत्ति से उद्योग गया और उद्योग के साथ उद्योगशाला भी गई। इसका कारण यह है कि हमने शरीर-श्रम को नीच मान लिया। जो आदमी कम-से-कम परिश्रम करता है वही आज सबसे अधिक बुद्धिमान और नीतिमान माना जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आज ही सुबह बातें हो रही थी। किसी ने कहा, ''अब विनोबाजी किसान-जैसे दीखते हैं '', तो दूसरे ने कहा, ''लेकिन जबतक उनकी धोती सफेद है तबतक वे पूरे किसान नहीं हैं।'' इस कथन में एक दंश था। खेती और स्वच्छ धोती की अदावत है, इस धारण में दंश है। जो अपने को ऊपर की श्रेणीवाले समझते हैं उनको यह अभिमान होता है कि हम बड़े साफ रहते हैं, हमारे कपड़े बिलकुल सफेद बगले पर जैसे होते है। लेकिन उनका यह सफाई का अभिमान मिथ्या और कृत्रिम है। उनके शरीर की डाक्टरी जाँच--में मानसिक जाँच की तो बात ही छोड़ देता हूँ-- की जाय और हमारे परिश्रम करनेवाले मजदूरों के शरीर की भी जाँच की जाय और दोनों परीक्षा-ओं की रिपोर्ट डॉक्टर पेस करे और कह दे कि कौन ज्यादा साफ है! हम लोटा मांजते हैं तो बाहर से । उसमें अपना मुँह देख लीजिए। लेकिन अंदर से हमें मलने की जरुरत ही नहीं जान पड़ती। हमारे लिए अंदर की कीमत ही नहीं होती। हमारी स्वच्छता केवल बाहरी और दिखावटी होती है। हमें शंका होती है कि खेत की मिट्टी में काम करनेवाला किसान कैसे साफ रह सकता है। लेकिन मिट्टी में या खेत में काम करनेवाले किसान के कपड़े पर जो मिट्टी का रंग लगता है वह मैल नहीं है। सफेद कमीज के बदले किसीने लाल कमीज पहन लिया तो उसे रंगीन कपड़ा समझते हैं। वैसे ही मिट्टी का भी एक प्रकार का रंग होता है। रंग और मैल में काफी फर्क है। मैल में जन्तु होते हैं, पसीना होता है, उसकी बदबू आती है। मृत्तिका तो 'पुण्यगंध' होती है। गीता में लिखा है, पुण्योगंधः पृथिव्यांच'। मिट्टी का शरीर है, मिट्टी में ही मिलनेवाला है, उसी मिट्टी का रंग किसान के कपड़े पर है। तब हम मैला कैसे हैं ? लेकिन हमको तो बिलकुल सफेद, कपास जितना सफेद होता है उससे भी बढ़कर सफेद कपड़े पहिनने की आदत पड़ गई है। मानो 'व्हाइट वाश' ही किया है। उसे हम साफ कहते हैं। हमारी भाषा ही विकृत हो गई है।

हममें से कोई गीता-पाठ, भजन और जप करता है या कोई उपनिषद् कंठ कर लेता है तो वह बडा भारी महात्मा बन जाता है। जप, संध्या, पूजा-पाठ ही धर्म माना जाता है। लेकिन दया, सत्य, परिश्रम में हमारी श्रद्धा नहीं होती। जो धर्म बेकार, निकम्मा, अनुत्पादक हो उसी को हम सच्चा धर्म मानते हैं। जिससे पैदावार होती है, वह भला धर्म कैसे हो सकता है ? भक्ति और उत्पत्ति का भी कहीं मेल हो सकता है ?

हिन्दुस्तान की संस्कृति इस हद तक गिर गई, इसी कारण से बाहर के लोगोंने इन ऊपरी लोगों को हटाकर हिन्दुस्तान को जीत लिया। बाहर के लोगों ने आक्रमण क्यों किया ? परिश्रम से छुटकारा पाने के लिए। इसलिए उन्होंने बड़े-बड़े यंत्रों की खोज की। शरीर-श्रम कम-से-कम करके बचे हुए समय में मौज और आनन्द करने की उनकी दृष्टि है। इसका नतीजा आज यह हुआ है कि हरेक राष्ट्र अब यंत्रों का उपयोग करने लगा है। पहली मशीन जिसने निकाली उसकी हकूमत तभी तक चली जब तक दूसरों के पास मशीन नहीं ती। मशीन से सम्पत्ति और सुख तभी तक मिला जबतक दूसरों ने मशीन का उपयोग नहीं किया था। हरेक के पास मशीन आ जाने पर स्पर्धा शुरू हो हई।

आज यूरोप एक बड़ा 'चिड़याखाना' ही बन गया है। जानवरों की तरह हरेक अपने अलग-अलग पिंजड़े में पड़ा है। और पड़ा-पड़ा सोच रहा है कि एक-दूसरे को कैसे खा जाऊँ ; क्योंकि वह अपने हाथों से कोई काम करना नहीं चाहता। हमारे सुधारक लोग कहते हैं-- ''हाथों से काम करना बड़ा भारीकष्ट है, उससे किसी-न-किसी तरकीब के छूट सकें ता बडा अच्छा हो। अगर दो घंटे काम करके पेट भर सकें तो तीन घंटे क्यों करें ? अगर आठ घंटे काम करेंगे तो कब साहित्य पढ़ेंगे और कब संगीत होगा ? कला के लिए वक्त ही नहीं बचता।''

भर्तृहरि ने लिखा है- साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः -जो साहित्य-संगीत-कला से विहीन है वह बिना पुच्छविषाण (पूंछ और सींग)का पशु है। मैं कहता हूँ--''ठीक है, साहित्य-संगीत-कला-विहीन अगर पुच्छविषाणहीन पशु है, तो साहित्य-संगीत-कलावाला पुच्छविषाणवाला पशु है।'' भर्तृहरि के लिखने का मतलब क्या था यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन उस पर से मुझे यह अर्थ सूझ गया। दूसरे एक पंडित ने लिखा है- ''काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम'' --- बुद्धिमान लोगों का समय काव्य-शास्त्र-विनोद में कटता है। मानो उनका समय कटता ही नहीं, माने वह उन्हें खाने के लिए उनके दरवाज पर खड़ा है। काल तो जाने ही वाला है। उसके जाने की चिन्ता क्यों करते हो ? वह सार्थक कैसे होगा यह देखो। शरीर-श्रम को दु:ख क्यों मान लिया है, यही मेरी समझ में नहीं आता। आनन्द और सुख का जो साधन है उसी को कष्ट माना जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक अमेरिकन श्रीमान से किसी ने पूछा, ''दुनिया में सबसे अधिक धनवान कौन है ?'' उसने जवाब दिया--''जिसकी पाचनेन्द्रिय अच्छी है, वह।'' उसका कहना ठीक है। सम्पत्ति खूब पड़ी है। लेकिन दूध भी हजम करने की ताकत जिसमें नहीं है उसको उस सम्पत्ति से क्या लाभ ? और पाचनेन्द्रिय कैसे मजबूत होती हैं ? काव्यशास्त्र से तो ''कालो-गच्छति''। उससे पाचनेन्द्रिय थोड़े ही मजबूत होनेवाली है। पाचनेन्द्रिय तो व्यायाम से, परिश्रम से मजबूत होती है। लेकिन आजकल व्यायाम भी पन्द्रह मिनिट का निकला हैं। थोड़े ही समय में एकदम व्यायाम करने की जो पद्धति है उससे स्नायु (मसल्स)बनते है, नसें नही

बनतीं। और अमरबेल जिस प्रकार पेड़ को खा जाती है, वैसे ही स्नायु आरोग्य को खा जाते हैं। नसें आरोग्य को बढ़ाती है। धीरे-धीरे और सतत जो व्यायाम मिलता है उससे नसें बनती हैं और पाचनेन्द्रिय मजबूत होती है। चौबीस घंटे हम लगाँतार हवा लेते है ; लेकिन अगर हम यह सोचने लगें कि दिनभर हवा लेने की यह तकलीफ क्यों उठाएँ, दो घंटे में ही दिनभर की पूरी हवा मिल जाय तो अच्छा हो, तो यही कहना पड़ेगा कि हमारी संस्कृति आखिर दर्जे तक पहुँच गई है। हमारा दिमाग इसी तरह से चलता है। पढ़ते-पढ़ते आँखे बिगड़ जाती हैं तो हम ऐनक लगा लेते हैं। लेकिन आँखें न बिगड़े इसका कोई तरीका नहीं निकालते।

हमारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है, भेदभाव बढ़ गया है और हम पर बाहर के लोगों का आक्रमण हुआ है--इस सबका कारण यही है कि हमने परिश्रम छोड़ दिया है।

यह तो हुआ जीवन की दृष्टि से। अब शिक्षण की दृष्टि से परिश्रम का विचार करना है।
और बाहर से तपश्चर्या की धूप मिले तो हम भी पेडों के जैसे हरे-भरे हो जायें। हम ज्ञान की दृष्टि से परिश्रम को नहीं देखते, इसलिए उसमें तकलीफ मालूम होती है। ऐसे लोगों के लिए भगवान का यह शाप है कि उनको आरोग्य और ज्ञान कभी मिलने ही वाला नहीं।

रोटी बनाने का काम माता करती है। माता का हम गौरव करते हैं। लेकिन माता का असली मातापन उस रसोई में ही है। अच्छी-से अच्छी रसोई बनाना, बच्चों को प्रेम से खिलाना--इसमें कितना ज्ञान और प्रेम-भावना भरी है ? रसोई का काम यदि माता के हाथों से ले लिया जाय तो उसका प्रेम-साधन ही चला जायगा। प्रेम-भाव प्रकट करने का यह मौका कोई माता छोड़ने के लिए तैयार न होगी। उसीके सहारे तो वह जिन्दा रहती है। मेरे कहने का मतलब कोई यह न समझे कि किसी-न-किसी बहाने मैं स्त्रियों-पर रोटी पकाने का बोझ लादना चाहता हूँ। मैं तो उनका बोझ हलका करना चाहता हूँ। इसीलिए हमने आश्रम में रसोई का काम मुख्यत: पुरुषों से ही कराया है। मेरा मतलब इतना ही था कि जैसे रसोई का काम माता छोड़ देगी तो उसका ज्ञान-साधन और प्रेम-साधन न चला जायगा , वैसे ही यदि हम परिश्रम से घृणा करेगें तो ज्ञान-साधन ही खो बैठेंगे। इसलिए मुख्य दृष्टि यह है कि शरीर-श्रम की महिमा को हम समझें। हमारा ज्ञान किताबी होता है। हम उसे व्यवहार में नहीं लाते। जबतक हम प्रत्यक्ष उद्योग नहीं करते तबतक उसमें प्रगति और वृद्धि नहीं होती।

शरीर के साथ मन का निकट सम्बन्ध है। आजकल मनोविज्ञान (मानस-शास्त्र)का अध्ययन करनेवाले हमें बहुत दिखाई देते हैं। पर बेचारों को खुद अपना काम-क्रोध जीतने का तरीका मालूम नहीं होता।

शरीर-वृद्धि के साथ मनोवृद्धि होती है। लड़कों की मनोवृद्धि करनी है, उनको शिक्षा देनी है, तो शारीरिक श्रम कराके उनकी भूख जाग्रत करनी चाहिए। परिश्रम से भूख बढ़ेगी। जिसको दिनभर में तीन बार अच्छी भूख लगती है उसे अधिक धार्मिक समझना चाहिए। भूख जिंदा मनुष्य का धर्म है। जिसे दिनभर में एक ही दफा भूख लगती है, संभवत: उसका जीवन अनीतिमय होगा। भूख तो भगवान का संदेश है। भूख न होती तो दुनिया बिलकुल अनीतिमान और अधार्मिक बन जाती। फिर नैतिक प्रेरणा ही हमारे अंदर न होती। किसी को भी भूख-प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता ? सामने यह खम्भा खड़ा है। इसका हम क्या सत्कार करेंगे ? इसको न भूख है, न प्यास । हमें भूख लगती है, इसलिए हमारे पास धर्म है।

एक आदमीने मुझसे कहा, गांधीजीने पीसना, कातना, जूते बनाना वगैरह काम खुद करके परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। मैंनें कहा, मैं ऐसा नहीं मानता। परिश्रम की प्रतिष्ठा किसी महात्मा ने नहीं बढ़ाई। परिश्रम की निज की ही प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी। आज हिन्दुस्तान में गोपाल-कृष्ण की जो इतनी प्रतिष्ठा है वह उनके गो-पालन ने उन्हें दी है। उद्योग हमारा गुरुदेव है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दुनिया की हरेक चीज हमको शिक्षा देती है।एक दिन मैं धूप में घूम रहा था। चारों तरफ बड़े-बड़े हरे वृक्ष दिखाई देते थे। मैं सोचने लगा कि ऊपर से इतनी कड़ी धूप पड़ रही है, फिर भी ये वृक्ष हरे कैसे हैं ? वे वृक्ष मेरे गुरु बन गयें। मेरी समझ में आ गया कि जो वृक्ष ऊपर से इतने हरे-भरे दीखते हैं उनकी जड़ें जमीन में गहरी पहुँची हैं और वहाँ से उन्हें पानी मिल रहा है। इस तरह अन्दर से पानी और ऊपर से धूप , दोनों की कृपा से यह सुन्दर हरा रंग मिला है।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रतिष्ठा सम्मान **अपरिग्रही** संचय न करने वाला **वृत्ति** स्वभाव **अदावत** दुश्मनी **मृत्तिका** मिट्टी **निकम्मा** बिना काम का, **आरोग्य** स्वास्थ्य **मौका** अवसर **अभाव** कमी **प्राचीन** पुराना **अभिमान** घमण्ड **हुकूमत** शासन **अमरबेल** परोपजीवी वनस्पति

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

(1) किसान अपना कार्य किस प्रकार करता था ?

(2) पुराने ब्राह्मण उदारपात्र क्यों थे ?

(3) मृत्तिका में किस प्रकार की गंध होती है ?

(4) हमारी श्रद्धा किन-किन गुणों में नहीं होती है ?

(5) आज के समय में धर्म किसे माना जाता है ?

(6) परिश्रम से बचने के लिए किसकी खोज हुई ?

(7) बुद्धिमान लोगो का समय किस प्रकार करता हैं ?

(8) अमरबेल की क्या विशेषता है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) किसान की दिनचर्या संक्षेप में लिखिए .

(2) वर्णाश्रम धर्म किस प्रकार लुप्त हो रहा है ?

(3) ऊँची श्रेणी वाले लोगों को क्या अभिमान था ?

(4) आज यूरोप एक चिड़ियाखाना कैसे बन गया है ?

(5) दुनियाँ में सबसे धनवान किसे माना गया है ? क्यों ?

(6) धार्मिक किसे समझा जा सकता है ? क्यों ?

(7) गाँधीजी ने परिश्रम की प्रतिष्ठा किस प्रकार बढ़ा दी ?

3. विस्तार पूर्वक उत्तर दीजिए :

(1) प्राचीनकाल में उद्योगशाला का उल्लेख क्यों नहीं मिलता था ?

(2) रंग और मैल में क्या फर्क है ?

(3) माता का गौरव कब स्पष्ट होता है ?

(4) परिश्रम की स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(5) भूख का महत्व समझाइए ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) आज यूरोप एक बड़ा चिड़ियाखाना ही बन गया है।

(2) **“**काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम**”**।

(3) भूख जिन्दा मनुष्य का धर्म है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) किसान--------था ?

(A) ईमानदार, (B) बेईमान (C) चतुर (D) चालाक

(2) --------तो व्यायाम से परिश्रम मजबूत बनती है।

(A) आँख (B) पाचनेन्द्रिय (C) रक्त (D) धर्म

(3) रोटी बनाने का काम-------------करती है।

(A) बहन (B) भाभी (C) बहू (D) माता

(4) -----------जिंदा मनुष्य का धर्म है।

(A) भूख (B) इच्छा (C) पब्यास (D) भ्रमण

(5) भूख ---------का संदेश है।

(A) भगवान (B) मनुष्य (C) देवता (D) राक्षस

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- **'**शरीर श्रम का महत्त्व**'** विषय पर 20 वाक्य लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों को आचार्य विनोबाभावे के विषय में अधिक जानकारी दें।
- शिक्षक विद्यार्थियों को उचित आहार-विहार का महत्त्व समझाएँ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11 पानी में घिरे हुए लोग

केदारनाथ सिंह
(जन्म : सन् 1934 ई.)

केदारनाथ सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया नामक गाँव में हुआ था। व्यवसाय से वे अध्यापक रहे, लेकिन कविता और समीक्षा उनके प्रिय विषय रहे हैं। सन् 1960 में प्रकाशित तीसरा सप्तक में इनकी रचनाओं को पहलीबार प्रकाशन का अवसर मिला। हिन्दी कविता के समकालीन परिदृश्य में इनकी कविता की अपनी अलग पहचान है। इनके अनुभव का क्षेत्र व्यापक है। इनकी कविता में गाँव और हर, लोक संस्कृति और शिष्ट संस्कृति दोनों ही निरुपति हैं। देश और धरती के रंग इनकी कविताओं में बिखरे पड़े है। अपनी धरती और अपने लोगों की गहरी पहचान से निर्मित इनकी कविताएँ बेहद आत्मीय नजर आती है।

केदारनाथ सिंह की कविता में जनजीवन के यथार्थ का कलात्मक चित्रण के साथ ही साथ मानवता की संवेदनात्मक गहरी तलाश भी दृष्टिगोचर होती है । प्रगतिवादी चिंतन के प्रति इनका गहरा लगाव है । कविता के साथ-साथ संगीत तथा अकेलापन इन्हें बेहद प्रिय है । अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस आदि इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ है । अकाल में सारस के लिए केदारनाथ को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हुए है।

प्रतिनिधि कविताएँ से उद्धत यह कविता कवि की श्रेष्ठ कविताओं में से है । इस कविता में उन लोगों की मूक व्यथा को स्वर मिला है जो प्रत्येक वर्ष बाढ़ की चपेट में आकर अपना सब कुछ गवाँ बैठते हैं । इतना सब कुछ सहने के बाद भी वे अपना गाँव, अपनी जमीन, अपना खेत, अपनी जगह छोड़कर सदा के लिए चले नहीं जाते हैं । इस कविता के माध्यम से कवि ने उनकी उत्कट जिजीविषा और आत्मविश्वास की कभी न बुझनेवाली आग का बड़ा ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है ।

पानी में घिरे हुए लोग
प्रार्थना नहीं करते
वे पूरे विश्वास से देखते हैं पानी को
और एक दिन
बिना किसी सूचना के
खच्चर बैल या भैंस की पीठ पर
घर-असबाब लादकर
चल देते हैं कहीं और

यह कितना अद्‌भुत है
कि बाढ़ चाहे जितनी भयानक हो
उन्हें पानी में
थोड़ी-सी जगह जरुर मिल जाती है
थोड़ी-सी धूप
थोड़ा-सा आसमान

फिर वे गाड़ देते हैं खम्भे
तान देते हैं बोरे
उलझा देते है मूँज की रस्सियाँ और टाट
पानी में घिरे हुए लोग
अपने साथ ले आते हैं पुआल की गन्ध
वे ले आते हैं आम की गुठलियाँ
खाली टिन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भुने हुए चने
वे ले आते हैं चिलम और आग
फिर बह जाते हैं उनके मवेशी
उनकी पूजा की घंटी बह जाती है
बह जाती है महावीर जी की आदमकद मूर्ति
घरों की कच्ची दीवारें
दीवारों पर बने हुए हाथी-घोड़े
फूल-पत्ते
पाट-पटोरे
सब बह जाते हैं

मगर पानी में घिरे हुए लोग
शिकायत नहीं करते
वे हर कीमत पर अपनी चिलम के छेद में
कहीं न कहीं बचा रखते हैं
थोड़ी-सी आग

फिर डूब जाता है सूरज
कहीं से आती हैं
पानी पर तैरती हुई
लोगों के बोलने की तेज आवाजें
कहीं से उठता है धुँआ
पेड़ों पर मँडराता हुआ
और पानी में घिरे हुए लोग
हो जाते हैं बेचैन
वे जला देते हैं
एक टुटही लालटेन
टांग देते हैं किसी ऊँचे बाँस पर
ताकि उनके होने की खबर
पानी के पार तक पहुँचती रहे

फिर उस मद्धिम रोशनी में
पानी की आँखों में
आँखें डाले हुए
वे रात-भर खड़े रहते हैं
पानी के सामने
पानी की तरफ
पानी के खिलाफ

सिर्फ उनके अन्दर
अरार की तरह
हर बार कुछ टूटता है
हर बार पानी में कुछ गिरता है
छपाक्.....छपाक्......

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

खच्चर गधे और घोड़े की मिश्रजाति **अद्‌भूत** अनोखा, विचित्र, विस्मयजनक **टाट** बिछाने के काम आनेवाला मोटा कपड़ा **पुआल** पयाल धान की सूखी डंठल जिनसे दाने अलग करलिए गये हो **मध्यम** धीमा **अरार** कगार

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) बाढ़ आने पर लोग अपना सामान किस पर लादकर ले जाते हैं ?

(2) वे अपने साथ किस की गंध ले आते हैं ?

(3) वे आग को बचाकर कहाँ रखते हैं ?

(4) वें उँचे बाँस पर क्या लटका देते हैं ?

(5) वे रातभर कैसे खड़े रहते हैं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) भयानक बाढ़ में भी उन्हें क्या-क्या मिल जाता है ?

(2) पानी में घिरे हुए लोग अपना निवासु कैसे बनाते हैं ?

(3) वे अपने साथ कौन-कौन सी वस्तुएँ ले आते हैं ?

(4) बाढ़ में उनका क्या-क्या बह जाता है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) बाढ़ की विनाशलीला का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(2) बाढ़ से बचने के लिए लोग क्या-क्या करते हैं।

(3) बाढ़ पीड़ित लोग अपने जीवित होने की खबर दूसरे लोगों को कैसे पहुँचाते है ?

(4) बाढ़ पीडित की विवशता, प्रतीक्षा और वेदना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(5) पानी में घिरे हुए लोग काव्य का सारांश लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव लिखिए :

(1) ''अपने साथ ले आते हैं पुआल की गंध
वे ले आते हैं आम की गुठलियाँ
खाली टिन
भुने हुए चने
वे ले आते हैं चिलम और आग।''

(2) ''फिर बह जाते हैं इनके मवेशी
उनकी पूजा की घंटी बह जाती है
बह जाती है महावीर जी की आदमकद मूर्ति।''

(3) ''वे जला देते हैं
एक टूटही लालटेन
टांग देते हैं किसी ऊँचे बांस पर
पानी के पार तक पहुँचती रहे।''

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह पूरी कीजिए :

(1) अपने साख ले आते हैं-----------की गंध।

(A) इत्र (B) चंदन (C) पुआल (D) नीम।

(2) बह जाती है----------की आदमकद मूर्ति।

(A) गणेशजी (B) महावीरजी (C) श्रीकृष्णजी (D) श्रीरामजी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) पानी में घिरे हुए लोग------------नहीं करते।

(A) झगडा (B) प्रेम (C) शिकायत (D) ईर्ष्या

(4) कहीं न कही बचा रखते हैं थोड़ी सी-----------।

(A) आग (B) लकड़ी (C) मिठाई (D) चटाई

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

आँख, दिवस, मवेशी, जल

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

धूप, महिमा, सूरज, बाढ़, विश्वास

8. भाववाचक शब्द बनाइए :

बेचैन, चढ़ना, मीठा, भयंकर

9. विशेषण बनाइए :

दिन, आसमान, पूजा, घर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- बाढ़ की विनाशलीला पर निबंध लिखिए।
- बाढ़ पीड़ितों की सहायता करना धर्म है। विचार विस्तार कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बाढ़ के दृश्यों का संकलन करायें।
- श्री केदारनाथ सिंह का साहित्यिक परिचय करवायें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12 नदियों में फिर प्राण प्रतिष्ठा करें

अमृतलाल वेगड़
(जन्म : सन् 1928 ई.)

अमृतलाल बेगड का जन्म जबलपुर में हुआ था। मूलत: चित्रकार वेगडजीने अपनी कला-शिक्षा शांति-निकेतन में प्राप्त की और वहीं लगभग 35 वर्ष तक कला का अध्यापन किया। इनके लिए प्रकृति सबसे प्रिय एवं आत्मीय है। नर्मदा के अनन्य सौंदर्य को आत्मसात् कर उसे अपनी तूलिका एवं लेखनी से साकार कर दिया है। नर्मदा के दोनों किनारों की ढाई हजार किलोमीटर की विकट पदयात्रा द्वारा यह सब संभव हो सका है।

नर्मदा के भव्य सौंदर्य को मूर्त करने वाली अनेक चित्र-प्रदर्शनियाँ देश के बड़े-बड़े शहरों में आयोजित हुई और कला-मर्मज्ञों द्वारा सराही गईं। अपने चित्रों के लिये उन्हें 1994-95 में मध्यप्रदेश शासनके 'शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। हिन्दी में इतनी तीन और गुजराती में चार पुस्तकें प्रकाशित हैं। बापू, सूरज के दोस्त, भारत मेरा देश, सौंदर्य की देवी नर्मदा, अमृतस्य नर्मदा जैसी कृतियाँ अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं।

प्रस्तुत निबंध में नदियों के प्रदूषण संबंधी समस्याओं पर विचार किया गया है। वस्तुत: पानी के साथ मनुष्य का प्राकृत्तिक सम्बन्ध है। वह हमें बार-बार अपनी ओर खींचता है। जल ही जीवन है, इसलिए दुनियाभर की संस्कृतियों का विकास नदियों के किनारों पर ही हुआ है। आज इन जीवनदायिनी नदियों का हमने विषाक्त कर दिया है। विभिन्न कारणों से नदियाँ का पानी दूषित हो रहा है और उसके कारण मनुष्य जीवन विविध रोगों का शिकार हो रहा है। लेखक का यह कथन हमें सचेत करता है कि कभी लोग नदियों के साथ सामंजस्य रखता था। जब मनुष्य असभ्य था, तब नदियाँ स्वस्थ और स्वच्छ थीं आज मनुष्य सभ्य हो गया है तो नदियाँ मलिन और विषाक्त हो गई हैं। लेखक की यह चिंता हम सबकी चिंता होनी चाहिए।

अजीब है यह पानी। इसका अपना कोई रंग नहीं , पर इन्द्रधनुष के समस्त रंगों को धारण कर सकता है। इसका अपना कोई आकार नहीं, पर असंख्य आकार ग्रहण कर सकता है। इसकी कोई आवाज नहीं, पर वाचाल हो उठता है तो इसका भयंकर वज्र निनाद दूर-दूर तक गूँज उठता है। गतिहीन है, पर गति-मान होने पर तीव्र वेग धारण करता है और उन्मत शक्ति और अपार ऊर्जा का स्त्रोत बन जाता है। उसके शांत रुप को देखकर हम ध्यानावस्थित हो जाते हैं, तो उग्र रूप को देखकर भयाक्रांत। जीवनदायिनी वर्षा के रूप में वरदान बनकर आता है, तो विनाशकारी बाढ़ का रूप धारण कर जल-तांडव भी रचता है। अजीब है यह पानी।

गाँवों और शहरों में रहते हुए मनुष्य अपने ग्रह के मूल स्वरूप को प्राय: भुला बैठा है, इसका सही अंदाज तभी लग सकता है जब वह किसी लम्बी समुद्री-यात्रा पर निकल जाए। चारों ओर पानी ही पानी, का अनंत विस्तार। पहली बार उसके सामने यह तथ्य उजागर होता है कि उसकी दुनिया पानी की दुनिया है। वह एक ऐसे ग्रह पर निवास करता है जिस पर पानी का आधिपत्य है। जमीन पर रहते यह बात कभी उसकी समझ में न आती। जबकि समुद्र में और हममें कितनी समानता है-

हमारा ह्दय धड़कता है, समुद्र गरजता है।
कहीं समुद्र का गर्जन धरती के ह्दय की धड़कन तो नहीं।
समुद्र का पानी खारा है कहीं हमारे रक्त में वही खारापन तो नहीं।

संभवत: इसीलिए समुद्र हमें जितना उद्वेलित और सम्मोहित करता है, उतना और कोई नहीं। पुरी का समुद्र देखकर चैतन्य महाप्रभु इतने भाव-विभार हो गए कि उसी में समा गए।

समुद्र में ब्रह्मा भी है, विष्णु भी। वह हमारा सर्जक भी है और हमारा पालक भी।

समुद्र ही अपने पानी को साफ करके, उसका खारापन दूर करके हमें भेजता है। अगर वह पानी भेजना बन्द कर दे तो जीवन समाप्त हो जाएगा। वह आज भी हमारा पालन-षोषण कर रहा है। ऐसा नहीं कि समुद्र (मंथन)से एक ही बार अमृत निकला था। अमृत हर बार निकलता है और वर्षा के रूप में पूरी धरती पर बरसता है।

सूर्य की गरमी से तपकर समुद्र का पानी भाप बनता है। निराकार भाप ऊपर जाकर साकार बादल में ढल जाती है। इन बादलों को सैंकड़ों या हजारों किलोमीटर दूर की जगहों तक हवाएँ ले जाती हैं, मानसून की हवाएँ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जब ऊँचे पहाड़ों या घने जंगलों तक मानसून पहुँचाता है तो वहाँ की ठंडक पाकर ठहर जाता है। पहाड़ और वन मानो कहते हैं–धरती, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे और मनुष्य कब से तुम्हारी बाट जोह रहे हैं। ऊँची अटारी पर से नीचे उतरो, वायु में से पुनः द्रव बनो, पानी बनकर तप्त धरा को तृप्त करो, धन–धान्य से पूर्ण करो, लोगों में नवजीवन का संचार करो।

मेघ मानो इसी घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हो। अपने जीवन को सार्थक करने का समय आ पहुँचा है। लोक–कल्याण के लिए अपने–आपको, उत्सर्ग करने की घड़ी आ गई है। यह कोई यात्रा के लिए यात्रा नहीं थी, आकाश में मंडराते रहना ही उनका उद्देश्य नहीं। बंजर जमीन को उपजाऊ बनाना, समुद्र ने जो धन उसे सौंपा है उसे धरती को सौंप देना–यही तो है वह मिशन जिसके लिए समुद्र ने उसे भेजा था। अगर वह बरसता नहीं तो उसका फेरा बेकार हो जाएगा।

पहले छोटी–छोटी बुंदनियाँ, फिर मुसलधार वृष्टि। मेघ झकोर–झकोर कर बरस रहे हैं। बिजली भी कड़कती है। पौधे झुक–झूम रहे हैं, वृक्ष डोल रहे हैं। आकाश से इतना सारा पानी कैसे बरस सकता है। बादलों ने इतना सारा बोझ कैसे उठा रखा होगा ? फटते बादलों के बीच सूरज की लुकाछिपी का दृश्य कितना मोहक लगता है। रही–सही कमी इन्द्रधनुष पूरी कर देता है। हवा कितनी स्वच्छ और मादक लग रही है।

मेरे लिए वर्षा–ऋतु का आकाश यानी आर्ट–गैलेरी । बादल मानों आकाश में टँगी कलाकृतियाँ! जीवन से धड़कती, ऊपर से कूदती, नदी–नालों को छलकाती धरा को शीतलता प्रदान करती, मैदानों को हरा–भरा करती और अपने आपको निछावर करती सजीव कलाकृतियाँ!

वर्षा यानी विराट नाटय–प्रस्तुति। पहला अंक खेला जाता है समुद्र में, दूसरा आकाश के मंच पर और तीसरा धरती पर। वर्षा का फलक कितना विशाल है–पहले असीम सागर फिर अतल आकाश और अंत में विस्तृत धरती। लाखों वर्ग किलोमीटर तक फैला मंच ! कितने घनिष्ठ हैं आकाश और पृथ्वी के बीच के बंधन।

प्राचीन काल में कृषि पूरीतरह से वर्षा पर आधारित थी। एक वर्षा से दूसरी वर्षा तक के समय को लोग वर्ष मानते थे। वर्ष शब्द वर्षा से बना है। इजिप्त में वर्षा नहीं होती। वहाँ की कृषि नील नदी की बाढ़ पर आधारित थी। वे एक बाढ़ से दूसरी बाढ़ तक के समय को वर्ष मानते थे। वर्षा और बाढ़ ने पंचांग को जन्म दिया।

पानी का चंचल रूप है नदी। यह वह जीवन–रेखा है जो अपने कछार में बसे लोगों को जीवनदायी जल प्रदान करती है। जिस भूमि पर केवल वर्षा के जल से खेती होती है उसे देव मातृक और जो जमीन केवल वर्षा के भरोसे न रहकर नदी के पानी से सिंचित होती है उसे नदी मातृक कहा गया है। उन दिनों नदी का पानी मछलियों से लबालब रहता था। नदी–तट पर बसने का यह बहुत बड़ा आकर्षण था। वह एकमात्र आहार था जो बारहों महीने मिलता था। पीने के पानी, खाने के लिए मछली और खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी (जो नदी बाढ़ के समय बहाकर लाती है)पहले के लोगों के लिए इससे बड़ा वरदान भला और क्या हो सकता था। नदी के कारण कृषि संभव हुई। जो शिकारी था, वह किसान बन गया। उसे शिकार की भागदौड़ से मुक्ति मिली। वह एक जगह घर बसा कर कला, धर्म, अध्यात्म, विज्ञान और साहित्य की ओर अग्रसर हो सका। मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया।

हजारों वर्षो से मनुष्य नदी की ओर खिंचता चला आया है। केवल इसिलए नहीं कि वह हमारी और हमारे खेतों की प्यास बुझाती है, बल्कि इसलिए भी कि वह हमारी आत्मा को भी तृप्त करती है। संस्कृति का जन्म होता है। संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों की कोख से हुआ है। भारतीय संस्कृति गंगा की देन है।

अंत में नदी समुद्र से जा मिलती है। पानी जहाँ से चला था, वापस वहीं पहुँच गया। नदी कभी समाप्त न होने वाली एक निरंतर रचना है, एक ऐसी शक्ति जो नित्य पुनर्जीवित होती रहती है।

समुद्र से बादल, बादल से वर्षा, वर्षा से नदी, नदी पुनः समुद्र में!

किन्तु ,नदी एक अस्थिर मित्र है।

हजारों वर्षो से वर्षा–ऋतु में नदी–तट के निवासियों को बाढ़ का प्रकोप भी झेलना पड़ता था। नदी का पानी उफन पड़ता और तट–बंधों को तोड़ता हुआ गाँव के गाँव बहा ले जाता।

आदमी और नदी के बीच यह लड़ाई चलती रहती। कभी एक पक्ष की जीत होती तो कभी दूसरे की. लोग अपने घरौंदे बनाते और नदी उन्हें नष्ट कर देती। लोंग इस लड़ाई से उकता गए। आखिर उन्होंने नदी पर बाँध बनाना सीख लिया।

हमारे पास आज उतना ही पानी है, जितना हजार साल पहले था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से उसकी माँग बेतहासा बढ़ गई है। आजादी के समय हमारी आबादी 25 करोड़ से थोड़ी ज्यादा थी । आज 100 करोड का आँकडा पार कर चुकी है।

बाँध हमारी मजबूरी है। आबादी को पुनः 25 करोड़ पर ला दीजिए, फिर नए बाँध बनाना तो दूर, पुराने बाँधों को भी तोड़ दीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हजारों वर्षो से मनुष्य पानी का संग्रह करता आया है –कुँओं,तालाबों और बावड़ियों के रूप में। बाँध उसी शृंखला में नई कड़ी है।

आर्द्रता, कुहरा, बिजली, ओस सभी पानी के विभिन्न रूप हैं।

प्राय: सभी देश अपनी नदियों के पानी का भरपूर उपयोग करना चाहते हैं । जब कोई नदी कई देशों में से होकर बहती है, तो वह विवाद का कारण बनती है। हरेक देश को लगता है कि दूसरा देश ज्यादा पानी ले लेता है। मध्य-पूर्व कई छोटे-छोटे देशों में बँटा है। नदी-विवाद वहीं सबसे ज्यादा है। टर्की और ईराक के बीच यूक्रेटिस के पानी को लेकर, ईराक और सीरिया के बीच भी इसी नदी को लेकर, इजरायल और पेलेस्टाइन के बीच भूगर्भ जल को लेकर और इजरायल और जार्डन के बीच बाँध की जगह को लेकर झगड़े चलते रहते हैं। कहते हैं कि मध्य-पूर्व में अगर युद्ध होता, तो तेल को लेकर नहीं, पानी को लेकर होगा। इस झगड़ों के कारण पानी का समुचित उपयोग नहीं हो पाता और व्यर्थ समुद्र में चला जाता है।

हमारे देश में तो प्रान्तों के बीच ऐसे ही झगड़े चल रहे हैं। नर्मदा को लेकर मध्यप्रदेश और गुजरात के बीच का विवाद प्राय: सुलझ गया है, किन्तु कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच गोदावरी को लेकर विवाद चल रहा है।

संभवत: पूरे विश्व में पानी का सर्वाधिक सूझ-बूझ के साथ उपयोग करनेवाला देश है इजरायल। इस देश का 60 प्रतिशत भाग रेगिस्तानी है। लेकिन यहाँ के इंजीनियरों ने रेगिस्तानी क्षेत्र पर हरियाली के कालीन बिछा दिये हैं। इजरायल जमीन से पानी की आखिर बूँद तक निचोड़ लेता है। कभी यह नवोदित राष्ट्र पानी की दृष्टि से कंगाल था। लेकिन वहाँ के जल इंजीनियरों ने पता लगाया कि यहाँ की भूमि में चट्टानी परतों के नीचे 30 अरब घनमीटर पानी के विशाल भंडार पड़ा हैं। इनमें से एक भूमध्य सागरीय तट के नीचे था। उन्होंने न केवल इन भंडारों से पानी निकाला बल्कि नहरों और पाइपों की जल संवाहक प्रणाली भी स्थापित की। इसके लिए उन्हें पाइप औप पंप उद्योग स्थापित करने पड़े।

वहाँ के इंजीनियर पानी को मन चाही दिशा में ही नहीं, जमीन के ऊपर या नीचे कहीं भी भेज सकते हैं। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की है कि जमीन बरसाती पानी को पूरी तरह से सोख लेती है, जो अन्यथा समुद्र में चला जाता। बरसात के पानी को रोककर वे भूमिगत भंडारों को फिर से जलपूरित करने में भी समर्थ हुए हैं।

पानी की किफायतशारी के क्षेत्र में इजरायल की सबसे बड़ी देन है ड्रिप इरिगेशन या टपकन सिंचाई विधि, जिस में प्लास्टिक के पाइप में बने छिद्रों द्वारा पानी सीधे पौधे की जड़ों पर टपकाया जाता है। पौधों को उतना ही पानी दिया जाता है जितना की जरूरी होता है। इस पद्धति से सिंचाई करके किसानों ने उतने ही पानी में अपनी पैदावार दोगुनी या इससे भी ज्यादा कर ली है।

अब तो हमारे देश में भी इसका पर्याप्त प्रचार हो गया है।

आज संसार में जटिल और खतरनाक से खतरनाक रासायनिक पदार्थ पैदा हो रहे है। इन्हें इधर-उधर फेंक देने या नदियों में बहा देने के घातक परिणाम होंगे। कल-कारखानों के अलावा बड़े शहर भी अपना मल-मूत्र नदियों के हवाले करते हैं। हम नदियों में लगातार जहर घोल रहे हैं। खेतों में किसान जिन कीट-नाशकों का छिंड़काव करते हैं, देर-सबेर वे भी नदियों में पहुँचते हैं। इनमें से कुछ जहरीले रसायन बरसों बाद भी प्रभावहीन नहीं होते। अमरीका में डीडीटी पाउडर पर प्रतिबेध लगने के बीस बरस बाद भी वह मिसीसिपी के पानी में पाया गया। मिसीसिपी में पकड़ी गई टनों मछलियाँ इसलिए नष्ट कर देनी पड़ी क्योंकि उनके शरीर में पीसीबी नामक जहरीला रसायन पाया गया. जो पक्षी इन मछलियों को खाते थे, जैसे पेलिकन, वे मर गये। ये भोजन के साथ मनुष्यों के शरीर में और माँ के दूध के जरिए शिशु के शरीर में पहुँचते हैं। नदी में घुले रसायन कॉलेरा, टायफाइड और दस्त जैसी बीमारियाँ फैलाते है। दूषित पेय-जल देश में, विशेष रूप से गाँवों में, फैलने वाले रोगों का सबसे बड़ा कारण है। जहरीले रसायनों के कारण पानी का एक बहुत बड़ा भाग ऑक्सीजन- रहित हो जाता है। ऐसी स्थिति में लाखों मछलियाँ ऑक्सीजन न मिलने के कारण दम घुटने से मर जाती हैं।

रसायनों, उर्वरकों, कीटनाशकों, कारखानों के अशोधित अवशिष्टों और शहरों के हजारों टन अशोधित मल-मूत्र के कारण नदियाँ विषाक्त हो रही हैं। कारखानों से निकलने वाला टनों मलबा भी नदियों में झोंका जाता है। यह आत्मघाती कदम है।

कभी लोग नदियों के साथ सामंजस्य से रहा करते थे। जब मनुष्य असभ्य था, तब नदियाँ स्वस्थ और स्वच्छ थीं। आज जब मनुष्य सभ्य हो गया है तो नदियाँ मलिन और विषाक्त हो गई हैं। उन दिनों नदियों में स्वयं अपनी सफाई करने की क्षमता थी। परन्तु बढ़ते हुए, प्रदूषण के कारण नदी अपनी यह क्षमता खोती जा रही है। जल-प्रदूषण के विरूद्ध रण-भेरी बजाने का समय आ गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक ओर हम अपनी धरती को विकृत कर रहे हैं, पर्यावरण को क्षति पहुँचा रहे हैं और नदियों को विषाक्त कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अन्य देशों के लोग धरती का चेहरा बदल रहे है। वे जंगल उगा रहे हैं, नदियों को साफ कर रहे हैं, और रेगिस्तानों में पानी ला रहे हैं। क्या हम यह नहीं कर सकते ? आखिर इस धरती पर हम मेहमान ही तो हैं। हमारे आगमन समय यह जैसी थी, अगर जाते समय कुछ और अच्छी न बना सके, तो कम-से-कम खराब करके तो न जाएँ।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रतीक्षा इंतजार **आबादी** बस्ती, जनसंख्या **आहार** भोजन, सामग्री **कछार** नदी के किनारे की उपजाऊ जमीन **जटिल** उलझा हुआ **बंजर** परती **आधिपत्य** कब्जा, अधिकार **उद्वेलि** छलकाना **सर्जक** रचयता, बनानेवाला **प्लावित** डुबाना **उत्सर्ग** बलिदान **फलक** केनवास, पहलू **मातृक** माता-संबंधी **जलपूरित** जल से भरना **मलिन** गंदा, दूषित **क्षति** हानि, नुकशान

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) चैतन्य महाप्रभु कहाँ समा गए ?

(2) समुद्र का पानी भाप कैसे बनता है ?

(3) समुद्र मंथन के अंत में क्या मिला ?

(4) मानसून की प्रतीक्षा कौन-कौन करते है ?

(5) बादलों का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

(6) पंचांग को जन्म किसने दिया ?

(7) हमारी आत्मा को कौन तृप्त करता है ?

(8) लोग वर्ष किसे मानते थे ?

(9) पानी के विभिन्न स्वरूप क्या-क्या है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) आज भी हमारा पालन पोषण कौन कर रहा है ? कैसे ?

(2) इजिप्त में खेती किस नदी पर आधारित है क्यों ?

(3) आदमी और नदी के बीच क्या लड़ाई चलती रहती है ?

(4) समुद्र की मछलियां किस कारण से मर जाती हैं ?

(5) नदियाँ विषाक्त क्यों हो गई हैं ?

(6) बादल कैसे बनते हैं ?

3. विस्तार से उत्तर दीजिए :

(1) मानसून बनने की प्रक्रिया समझाइए।

(2) 'नदी लोगों की जीवन रेखा है' समझाइए।

(3) नदी विवाद का रूप कब धारण करती है ?

(4) इजरायल की सिंचाई पद्धति के बारे में समझाइए।

(5) 'इजरायल ने पानी का सूझबूझ के साथ उपयोग किया है' सविस्तार समझाइए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

(1) मनुष्य -------की ओर खिंचता चला आता है।

(A) घन (B) नदी (C) संस्कृति (D) घर

(2)----जीवन रेखा है।

(A) सम्पति (B) नदी (C) माता (D) पिता

(3) नदी-------से मिलती है।

(A) समुद्र (B) नाला (C) नहर (D) तालाब

(4) कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच -----नदी का विवाद है।

(A) नर्मदा (B) गंगा (C) कावेरी (D) सिंधु

(5) भारतीय संस्कृति--------की देन है।

(A) गंगा (B) यमुना (C) नर्मदा (D) कावेरी

5. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

दिल धड़कना, न्योच्छावर करना, दम घुटना

6. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

जटिल, प्राचीन, आर्द्रता, चंचल

7. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) पानी का चंचल रूप है नदी। यह वह जीवन रेखा है, जो अपने कदार में बसे लोगों को जीवनदायी जल प्रदान करती है।

(2) समुद्र में ब्रह्मा भी है, विष्णु भी। वह हमारा सर्जक भी है और पालक भी।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी 'नदियों का महत्व' 10 वाक्यों में लिखें ।
- 'नर्मदा बोलती है'...... विषय पर 20 वाक्यों में निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों को 'पर्यावरण का महत्त्व' समझाइए ।
- शिक्षक नदियों को शुद्ध करने के उपाय सूचित करें।
- 'एक बाढ़ पीड़ित की आत्मकथा' विषय पर वर्ग में चर्चा करें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13 महाराजा का इलाज

यशपाल

(जन्म : सन् 1903 ई. ;निधन: सन् 1976 ई.)

प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार यशपाल का जन्म पंजाब की फिरोजपुर छावनी में हुआ था। लाहौर से उच्च शिक्षा प्राप्त कर वे, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गए। वीर भगतसिंह और चन्द्रशेखर के साथ रहकर क्रांतिकारी दल के सदस्य बन गए। अंग्रेज सरकार ने उन्हें बंदी बनाकर राजद्रोह की मुकदमा भी चलाया था। जेल में भी वे सृजन कार्य करते रहे। उन्होंने **'विप्लव'** नामक पत्रिका का संपादन भी किया।

मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित यशपाल अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाने में सफल रहे। पूंजीवादी समाज-व्यवस्था का विरोध करते हुए वे शोषण मुक्त समाज का पूरजोर समर्थन करते हैं। रूढ़ियों और अंध विश्वासों की कटु आलोचना वे बराबर करते रहे। दादा कॉमरेड, देशद्रोही, दिव्या, अमिता और झूठा सच उनके प्रमुख उपन्यास हैं। अभिशप्त, भष्मावृत चिनगारी, फूलों का कुर्ता उनके कहानी संग्रह हैं। 'सिंहावलोकन' क्रांतिकारी जीवन-गाथा से संबंधित वृहद् ग्रंथ हैं। उन्हें 'देव पुरस्कार' 'सोवियेत लेण्ड नेहरू पुरस्कार ' तथा 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया था।

प्रस्तुत कहानी में एक महाराजा के राजरोग के इलाज की घटना का मार्मिक चित्रण है। मोहाना रियासत के महाराजा के रोज के निदान के लिए देश-विदेश से डॉक्टर आते हैं, उनके शरीर का परीक्षण करते और एक कक्ष में मिलकर अपना अभिप्राय प्रकट करते। ये क्रम नौ वर्ष से चल रहा था, पर न महाराज की पीड़ा में अंतर आता और न उनके जकड़े हुए घुटनों में किसी प्रकार की गति आ पाती। उपचार हेतु पहुँचे डॉक्टर संघटिया ने जब भरी सभा में कहा कि बंबई में मेड्कल कॉलेज के एक मेहतर को ठीक इसी प्रकार घुटने जकड़ जाने और मानसिक पीड़ा का जुस्साध्य रोग --तब अभिजात्य पर प्रहार होने से क्रोधवश महाराजा खड़े हो गए और क्रोध से थुथलाते हुए चीख पड़े। महाराजा की जो बीमारी बड़े-बड़े डॉक्टर ठीक न कर सके वह मेहतर का नाम मात्र सुनने से उत्पन्न क्रोध में से दूर हो गई। असाध्य रोग का यह साइकोसेमटिक इलाज हास्य और व्यंग दोनों की सहज अनुभूति कराता है।

उत्तर प्रदेश की जागीरों और रियासतों में मोहाना की रियासत का बहुत नाम था। रियासत की प्रतिष्ठा के अनुरुप ही महाराज साहब मोहाना की बीमारी की भी प्रसिद्धि हो गई थी।

जिला कोर्ट की बार में, जिला मेजिस्ट्रेट के यहाँ और लखनऊ के गवर्नमेंट हाउस तक में महाराजा की बीमारी की चर्चा थी। युद्धकाल में महाराजा को गवर्नर के यहाँ से युद्धकोष में चंदा देने के लिए पत्र आया था। महाराजा के सेक्रेटरी ने पच्चीस हजार रुपये के चेक के साथ पत्र में महाराजा की असाध्य बीमारी की चर्चा लेकर खेद प्रकट किया था कि इस रोग के कारण महाराजा सरकार की उचित सेवा के अवसर से वंचित रह गये हैं।

गवर्नर के सेक्रेटरी ने महाराजा की भेंट के लिए धन्यवाद देकर गवर्नर की ओर से महाराज की बीमारी के प्रति चिंता और सहानुभूति भी प्रकट की थी। वह पत्र काँच लगे चौखट में मढ़वाकर महाराज के ड्राइंग रूम में रख दिया गया था। ऐसा ही एक पोस्टकार्ड महात्मा गांधी के हस्ताक्षरों में और एक पत्र महामना मदनमोहन मालवीय का भी महाराजा की बीमारी के प्रति चिंता और सहानुभूति का विशेष अतिथियों को दिखाया जाता है।

महाराज को साधारण लोग-बाग की तरह कोई साधारण बीमारी नहीं थी। देश और विदेश से आये हुए बड़े-से-बड़े डॉक्टर भी उनकी बीमारी का निदान और उपचार करने में मुँह की खा गये थे। लोगों का विचार था कि चिकित्साशास्त्र के इतिहास में एसा रोग अब तक देखा-सुना नहीं गया। ऐसे राज-रोग को कोई साधारण आदमी झेल भी कैसे सकता था।

महाराजा गर्मियों में प्रतिवर्ष मंसूरी में जाकर रियासत की कोठी में रहते थे। कोठी की अपनी रिक्शायें थी। रिक्शा खींचने वाले कुलियों नीली वर्दियों पर मोहाना स्टेट के बिल्ले, चमचमाते पीत्तल के लगे रहते थे। महाराजा जब कभी कोठी में से रिक्शे पर बहार निकलते तो रिक्शा खींचनेवाले चार कुलियों के साथ, बदली के लिए अन्य चार कुली भी साथ-साथ दौड़ते चलते। सावधानी के लिए महाराजा के निजी डॉक्टर घोड़े पर सवार रिक्शे के पीछे रहते थे।

सितम्बर के महीने में, महाराज के पहाड़ से अपनी रियासत या लखनऊ की कोठी पर लौटने से पहले मंसूरी में डॉक्टरों के मेले की धूम मच जाती थी। मंसूरी के सब बड़े-बड़े होटलों में कुछ दिन पेश्तर ही कमरों के कई सूट या कमरे तीन दिन के लिए सुरक्षित करवा लिये जाते थे। तीन-चार बड़े-बड़े बंगले भी किराये पर लिये जाते ।इसी तरह डॉक्टरों के लिए रिक्शायें और बढ़िया घोड़े भी सुरक्षित कर लिये जाते। लोग-बाग न होटलों में स्थान पा सकते न उन्हें सवारियाँ मिल पाती। बात फैल जाती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कि महाराज मोहाना को देखने के लिए देश भर से बड़े-बड़े डॉक्टर आ रहे हैं।

यह सब डॉक्टर महाराज के शरीर की परीक्षा और उनकी बीमारी का निदान करने के लिए बुलाये जाते थे। सब डॉक्टर बारी-बारी से महाराज की परीक्षा कर चुकते तो महाराज की बीमारी के निदान का निश्चय करने के लिए डॉक्टरों का एक सम्मेलन होता और फिर डॉक्टरों की सम्मिलित राय से महाराज की बीमारी पर एक बुलेटिन प्रकाशित किया जाता था। सब डॉक्टर अपनी फीस, आने-जाने का किराया और आतिथ्य पाकर लौट जाते परंतु महाराजा के स्वास्थ्य में कोई सुधार न होता। न महाराज के ह्दय और सिर की पीडा में अंतर आता और न उनके जुड़ गये घुटनों में किसी प्रकार की गति आ पाती। यह क्रम नौ वर्ष से इसी प्रकार चल रहा था।

उस वर्ष बम्बई-मेडिकल कालेज के प्रसिध्ध डॉक्टर कोराल को भी महाराजा मोहाना के रोग के लिए मैसूर में आयोजित डॉक्टर-सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण भेजा गया था। डॉक्टर कोराल तीन वर्ष पूर्व भी एक बार इस सम्मेलन में सम्मिलित होकर अपनी फीस और आतिथ्य स्वीकार कर आये थे। इस वर्ष भी इस प्रसंग में मंसूरी की सैर कर आने में उन्हें आपत्ति न होती, परंतु भारत सरकार ने डॉक्टर कोराल को अमरीका जानेवाले डॉक्टरों के शिष्टमंडल में नियुक्त कर दिया था। शिष्टमंडल महाराज मोहाना केनिमंत्रण कि तिथि से पूर्व ही बम्बई से जा रहा था। प्राय: एक वर्ष, पूर्व ही डॉक्टर संघटिया बियाना में काफी समय अनुसंधान का कार्य कर बम्बई मेडिकल कालेज में लौटे थे। डॉक्टर संघटिया अनेक रोगों का इलाज 'साइकोसोमेटिक'(मानसिक उपचार)प्रणाली के माध्यम से कर रहे थे।

डॉक्टर कोरेल ने महाराज मोहाना के निमंत्रण के उत्तर में सुझाव दिया था कि डॉक्टर संघटिया के नये अनुसंघान का प्रयोग महाराज के उपचार के लिए करके परिणाम देखा जाना चाहिए।

महाराज के यहाँ भी बियाना से न ये डॉक्टर के आने की बात से उत्साह अनुभव किया गया और डॉक्टर संघटिया के नाम निमंत्रण भेज दिया गया।

डॉक्टर संघटिया निश्चत समय पर बम्बई से मंसूरी पहुँचे। उन्हें एक बहुत बड़े होटल में पूर्व सुरक्षित स्थान पर टिका दिया गया। दूसरे दिन महाराज की कोठी से एक घुड़सवार जाकर उन्हें रियासत के रिक्शे पर कोठी लिवा ले गया। जिस समय डॉक्टर संघटिया आये, कोठी के ड्राईंग रुम में एक अमेरिकन और एक भारतीय डॉक्टर भी मौजूद थे।

महाराज मोहाना के सेक्रेटरी ने विनय से डॉक्टर संघटिया को सुचना दी कि उनसे पहले आये डॉक्टर महाराज की परीक्षा कर लें तो वे भी महाराज की परीक्षा करने की कृपा करेगें। तब तक वे कुछ ड्रिंक स्वीकार करें।

डॉक्टर संघटिया ने बहुत ध्यान से दो घंटे से अधिक समय तक रोगी की परीक्षा की। पिछले वर्षों में महाराज के रोग के निदान के संबंध में प्रकाशित डॉक्टरों के बुलेटिन देखे।

दो दिन और तीसरे दिन मध्याह से पूर्व तक निमंत्रित डॉक्टर बारी-बारी से महाराज की परीक्षा करते रहे। सभी डॉक्टरों को महाराज के अंग-प्रत्यंग के एक्सरे फोटो के एलबम भेंट किये गये थे।

तीसरे दिन दोपहर बाद बत्तीसों डॉक्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया था।

कोठी के बडे हॉल में कुर्सियो के बत्तीस जोड़े अंडाकार लगाये गये थे, जैसे विशेषज्ञों की कॉनफेरेन्सो की प्रणाली है। प्रत्येक मेज पर एक डॉक्टर का नाम लिखा था। और मेज पर उस डॉक्टर का नाम और उपाधि सहित छपे हुए कागज मौजूद थे। सभी मेजों पर बहुत कींमती फाउन्टेन पेन और पेंसिल के सेट केसों में सजे हुए थे। कलमों, पेंसिलों और केसों पर भी खुदा हुआ था-'महाराज मोहाना की ओर से भेंट'। डॉक्टरों के बैठने का क्रम अंग्रेजी वर्णमाला में डॉक्टरों के नाम के पहले अक्षर के क्रम के अनुसार था।

डॉक्टरों से अनुरोध किया गया था कि वे अपनी परीक्षा और निदान के संबंध में परस्पर विचार कर अपना मंतव्य लिख लें। इसके पश्चात् महाराज सभा में उपस्थित होकर डॉक्टरों की राय सुनेंगे।

डॉक्टरों के सत्कार के लिए चाय-कॉफी, व्हिसकी--जिन, फलों के रस और हलके-फुलके आहार का भी प्रबंध था। डॉक्टर लोग प्राय: एक धंटे तक चाय, काफी, व्हिसकी, जिन की चुस्कियाँ लेते, आपस में बात-चीत करते अपने मंतव्य लिखते रहे।

साढ़े चार बजे महाराज साहब को एक पहिए वाली आराम कुर्सी पर हाल में लाया गया। महाराज के चेहरे पर रोगी की उदासी और दयनीय चिंता नहीं, असाधारण दुर्बोध रोग के बोझ को उठाने का गर्व और गंभीरता छायी हुई थी।

महाराज के दायीं ओर से डॉक्टरों ने क्रमश: परीक्षा और निदान के संबंध में अपनी-अपनी राय दी और उसके अनुकूल उपचार के सुझाव देने आरंभ किये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो डॉक्टरों ने महाराज को उपचार के लिए न्यूयार्क जाकर विद्युत चिकित्सा करवाने की राय दी। एक डॉक्टर का विचार था कि महाराज को एक वर्ष तक चेकोस्लोवाकिया में **'कालोंविवारी'** के चश्में में स्नान करना चाहिए। सोवियेत का भ्रमण करके आये एक डॉक्टर का सुझाव था कि महाराज को काले समुद्र के किनारे **'सोची'** में **'मातस्यस्ता' स्त्रोत** के जल से अपना इलाज करवाना चाहिए।

महाराज गंभीर मौन से डॉक्टरों की राय सुन रहे थे।

सत्ताईशवें नंबर पर डॉक्टर संघटिया से अपना विचार प्रकट करने का अनुरोध किया गया।

डॉक्टर संघटिया उठे-**'**महाराज के शरीर की परीक्षा और रोग के इतिहास के आधार पर मेरा विचार है कि महाराज का यह रोग साधारण शारीरिक उपचार द्वारा दूर होना दुस्साध्य होगा----**'**

महाराजने नये युवा डॉक्टर की विज्ञता को समर्थन में एक गहरा श्वास लिया, उनकी गर्दन जरा और ऊँची हो गई। महाराज ध्यान से ये नये डॉक्टर की बात सुनने लगे।

डॉक्टर संघटिया बोले-**'**मुझे इस प्रकार के एक रोगी का अनुभव है। कई वर्ष से बंबई में मेडिकल कालेज के एक मेहतर को ठीक इसी प्रकार घुटने जुड़ जाने और हृदय तथा सिर की पीड़ा का दुस्साध्य-रोग**'**

'चुप बत्तमीज।**'**

सब डॉक्टरों ने सुना और वे विस्मय से देख रहे थे कि महाराज पहिए लगी आराम कुर्सी से उठकर खडे हो गये थे।

महाराज के वर्षों से जुडे घुटने काँप रहे थे और उनके होंठ क्रोध में फड़फड़ा रहे थे, आँखें सुर्ख थीं।

'निकाल दो बाहर बदजात को; हमको मेहतर से मिलाता है ? निकाल दो बदजात को, डॉक्टर बना है।**'** महाराज क्रोध से झुंझलाते हुए चीख पड़े।

महाराज सेवकों द्वारा हॉल से कुर्सी पर ले जाये जाने की प्रतीक्षा न कर काँपते हुए पाँवों से हाल के बाहर चले गये।

दूसरे डॉक्टर पहले विस्मित रह गये, फिर उन्हें अपने सम्मानित व्यवसाय के अपमान पर क्रोध आया और साथ ही उनके होठों पर मुस्कान भी फिर गई।

डॉक्टर संघटिया ने सबसे अधिक मुस्कराकर कहा, **'**खैर, जो हो, बीमारी का इलाज तो हो गया।**'**

शब्दार्थ-टिप्पण

वर्दी गणवेश, पहनावा **पेश्तर** पहले से **निदान** परीक्षण, जाँच **बदजात** नीची जाति का **विज्ञता** ज्ञान **अनुसंधान** खोज **मध्याह्न** दोपहर **अंग-प्रत्यंग** प्रत्येक अंग **सोची** एक स्थान का नाम **मातस्यस्ता** झरने का नाम **दुस्साध्य** मुश्किल से ठीक होने वाले **मेहतर** हलालखोर, एक प्रकार का मुस्लिम भंगी

मुहावरा

मुँह की खाना--हार जाना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) महाराज ने युद्धकोष में कितनी रकम दी ?

(2) गवर्नर ने महाराज की बीमारी के प्रति अपनी संवेदना कैसे प्रकट की ?

(3) महाराज की बीमारी को लेकर लोगों की क्या धारणा थी ?

(4) महाराज गर्मियों में कहाँ रहते थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) महाराज मोहाना की बीमारी केनिदान हेतु क्या निश्चय किया गया ?

(2) महाराज की बीमारी पर बुलेटिन कब प्रकाशित किया जाता था ?

(3) बड़े-बड़े लोगों ने महाराज के प्रति अपनी सहानुभूति किस प्रकार प्रकट की ?

(4) डॉक्टरों के जाने के बाद महाराज की बीमारी में कोई अन्तर क्यों नहीं आया ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) मंसूरी में डॉक्टर संघटिया के आतिथ्य किस प्रकार किया गया ?

(2) डॉक्टरों की सभा का आयोजन किस प्रकार किया गया था ?

(3) डॉक्टर संघटिया ने महाराज के सम्मुख क्या विचार प्रक्ट किया ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) खैर, जो हो, बीमारी का इलाज तो हो गया।

(2) रियासत की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही महाराज साहब मोहाना की बीमारी की भी प्रसिद्धि हो गई थी।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

मुँह की खाना, इठलाना

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

प्रतिष्ठा, अवसर, वंचित, आपत्ति, निश्चय, गर्व, विस्मित, खेद

7. विलोम शब्द लिखिए :

साध्य, ऊँची, बाहर, सम्मान, उचित, बढ़िया, रोगी

8. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1)मोहाना रियासत किस प्रदेश में थी ?

(A) मध्यप्रदेश (B) राजस्थान (C) उत्तर प्रदेश (D) बिहार

(2) महाराज पहाड़ से अपनी रियासत या लखनऊ की कोठी पर किस महीने में लौटते थे ?

(A) सितंम्बर (B) अक्तूबर (C) नवम्बर (D) डिसम्बर

(3) डॉक्टर संघटिया रोगों का इलाज किस प्रणाली के माध्यम से कर रहे थे ?

(A) यूनानी (B) एलोपैथिक (C) होमियोपैथिक (D) सायकोसोमेटिक

(4) डॉ. संघटिया ने महाराज के रोग की तुलना किसके रोग के साथ की ?

(A) व्यापारी (B) मेहतर (C) अफ्सर (D) नौकर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- महाराज के रोग के संदर्भ में हुई मंसूरी मेडिकल कॉन्फेरेन्स के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- झूठा सच उपन्यास पढ़कर उसका सार बच्चों को सुनाएँ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14 दो गज़लें

सुल्तान अहमद
(जन्म : सन् 1948 इ.)

नई पीढ़ी के इस समर्थ एवं सशक्त कवि-गजलकार की कर्मभूमि और जन्मभूमि अहमदाबाद है। आर्थिक समस्याओं से संघर्ष करते हुए इन्होंने गुजरात विश्व विद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में तथा पीएचडी की उपाधिप्राप्त की। हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ, गजलें तथा समीक्षात्मक लेख नियमित प्रकाशित होते रहते हैं। सामाजिक प्रतिबद्धता, आम आदमी के प्रति संवेदनशीलता, सहानुभूति, समकालीन विसंगतियों-अंतर्विरोधों की सही पहचान तथा साकगोई इनकी रचनाओं की विशेष पहचान है। भाषा और शिल्प के प्रति सजगता इनकी विशिटता है।

इनके अब तक दो गजल-संग्रह 'खामोशियों में बन्द ज्वालामुखी' और ' नदी की चीख' प्रकाशित है। 'कलंकित होने से पूर्व', 'उठी हुई बांहों का समुद्र' इनके काव्य संग्रह, 'दीवार के इधर-उधर' इनकी लम्बी कविता, 'लंका की परछाइयाँ ' (खण्ड काव्य)तथा 'हिन्दी गजल में मीन मेख'(समीक्षा ग्रन्थ) इनकी बहुचर्चित रचनाएँ हैं। 1996 में इन्हें परिवेश सम्मान से सम्मानित किया गया है।

प्रस्तुत दोनों गजले ' नदी की चीख' से उद्धृत की गई है। प्रथम गजल में शहर की भीड़ से घिरे मनुष्य की तनहाई, उसके अकेलेपन और खुद में ही सिमट कर रह जाने की मानसिकता पर कटाक्ष किया है। भले ही तब अपने अपने मार्ग पर चलें, लेकिन आदमी-आदमी के बीच की दीवार का ढहाना जरूरी है। दूसरी गजल में शाायर ने कर्जा को लेकर चल रही बहस निरर्थक कटार देते हुए, उसके यथार्थ में आने की अपेक्षा कर रहा है। संकीर्णता का त्याग, उदारता ही हमें भय से मुक्ति का मार्ग दिखा सकती है।

1

शहर में होने की तन्हा आदमी लाचार है,
इक तो ज्यादा भीड़ उस पर गर्म ये बाज़ार है।

पूछते हो हाल क्या तुम? जाके खुद ही देख लो,
चल रहा है तेज़ पर सारा नगर बीमार है।

हम हज़ारों बार अपनी बात समझाए मगर,
क्या करें उनका हक़ीक़त से जिन्हें इनकार है।

अब जरूरी हो गया है हौसले से तोड़ना,
आदमी और आदमी के बीच जो दीवार है।

हम नहीं कहते जिधर से हम चले, वो भी चलें,
जग उठें किरनें हमें तो बस यही दरकार है।

2

दरख्त़ बोले, खि़ज़ाँ है कबसे ? कभी चमन में फ़जा भी आए,
अगर चली है हवा फ़जा की, कोई तो पत्ता हरा भी आए ।

उजाड़ चेहरे, उदास गलियाँ, ये सहमी सड़कें, खिचीं हवाएँ,
लरज उठे हैं तमाम बस्ती कोई जो मद्धिम सदा भी आए ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बहस लुटेरों की हरकतों पर छिड़ी हुई है न जाने कबसे
लुटे घरों को ये फिक्र है अब बहस का कुछ फैसला भी आए ।

सभी से ऊँचा, सभी से बढकर मकाँ बनाना तो देख लेना,
कहीं बचा है वो कोना जिसमें कोई तुम्हारे सिवा भी आए ।

उमस, अंधेरा, घुटन, उदासी ये बंद कमरों की खूबियाँ हैं,
खुली रखे गर ये खिड़कियाँ तो कहीं से ताजा हवा भी आए ।

शब्दार्थ टिप्पण

शहृय नगर **तन्हा** तनहा **एकाकी** अकेला **हकीकत यथार्थ** असलियत, वास्तविकता **दरकार** आवश्यक, अपेक्षित **खिजा** पतझर, **दरख्त** पेड **फ़ज़ा** खुला हरा मैदान, बहार **लरजना** थरथराना, काँपना **मद्दिम** धीमी, मंद **फिक्र** चिंता **सदा** प्रतिध्वनि, आवाज **मकाँ** मकान **गर** यदि

स्वाध्याय

1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) शहर में आदमी की क्या लाचारी है ?
(2) शायर आदमी-आदमी के बीच की दीवार किस तरह तोडने को कह रहा है ?
(3) शायर की लोगो से क्या अपेक्षा है ?
(4) लुटें घरों को किस बात की चिंता है ?
(5) पूरी बस्ती कब थरथरा उठती है ?

2. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) शहरी व्यक्तियों के अकेलेपन के कौन-से कारण हैं ?
(2) पूरा शहर क्यों बीमार है ?
(3) दरख्तों की क्या ख्वाहिशें हैं ?
(4) मकान बनाते समय शायर किस बात की हिदायत दे रहा है ?
(5) बंद कमरों के दुष्प्रभाव को कैसे कम किया जा सकता है ?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) हम नहीं कहते जिधर से हम चलें, वो भी चलें
(2) अगर चली है हवा फजा की, कोई तो पत्ता हरा भी आए ।
(3) उमस, अँधेरा, घुटन, उदासी ये बंद कमरों की खूबियाँ है ।

4. दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

दरख्त, खिजाँ, फजा, बस्ती, मकाँ, तन्हा, हकीकत, दरकार

5. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

खिजाँ, हकीकत, तेज, इनकार, जरुरी

विद्यार्थी-प्रवृति

- सुल्तान अहमद की अन्य गजलें पुस्तकालय से ढूंढ़कर पढ़िए ।
- चित्रा, जगजीत सिंह या गुलाम अली (छोटे) की गजलें (गाई हुई) सुनिए ।

शिक्षक-प्रवृति

- गजल के शिल्प-मतला, शेर, बहर, मक्ता आदि की प्राथमिक जानकारी दीजिए ।
- रदीफ काफिया पहचानना सिखलाइए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

द्वितीय सत्र

15 भारतीय संस्कृति

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
(जन्म : सन् 1907 ई . निधन : सन् 1979 ई.)

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया (उ.प्र.) जिले के 'दुबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ था । आरंभिक शिक्षा संस्कृत में हुई। उन्होंने काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की । उनकी साहित्यिक प्रतिभा के विकास में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ के शांतिनिकेतन का अमूल्य योगदान रहा । जहाँ वे 1940 से 1950 तक हिन्दी विभाग में अध्यक्ष एवं प्रोफेसर रहे, बाद में इसी पद पर पंजाब विश्व विद्यालय, चंड़ीगढ़ गए । निबंध उपन्यास एवं समीक्षा के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान है ।

द्विवेदीजी के निबंध विद्धता और सरसता, गंभीरता तथा विनोदमयता, प्राचीनता ओर अर्वाचीनता, व्यक्ति एवं लोक का अद्‌भुत समन्वय है । 'अशोक के फूल','कल्पलता', 'आलोक पव ', और 'कुंटज',प्रमुख निबंध संग्रहों के अतिरिक्त 'चारुचंद्रलेख', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', तथा 'अनामदास का पोथा' उनकी यशस्वी औपन्यासिक कृतियाँ हैं । भारत सरकार ने उन्हें 'पद्‌मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने भारतीय संस्कृति की उस समन्वयशील प्रवृति का परिचय दिया है, जो सारग्राही है । संस्कृति का अर्थ है 'सर्वोत्तम-चिन्तन-मनन' वह जो मनुष्य को पशु-सुलभ धरातल से ऊपर उठाकर दृढतापूर्वक मानवता के सिंहासन पर स्थापित करती है । इस्लाम के आगमन पर उसे नयी चुनौती का सामना करना पड़ा पर कबीर, नानक जैसे संत कवियों ने कुछ कुछ उन दूरियों को दूर किया था । परंतु फिरसे एकबार अंग्रेजों के आगमन से पुन: वैमनस्य बढ़ने लगा, पाश्यात्य संस्कृति जिसे भौतिकवादी संस्कृति के रुप में है ।

भारतीय संस्कृति के बारे में मेरा विचार कुछ इस प्रकार है । भारतवर्ष का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है । इसका जितना हिस्सा जाना जा सका है, उससे कहीं अधिक भाग अभी भी ठीक-ठीक जाना नहीं जा सका है । वह पण्डितों के अनुमान का ही विषय है परंन्तु इतना निश्चित है कि यह संस्कृति विकासशील रही है । आर्य, द्रविड़, किरात, हूण, शक आदि अनेक जातियाँ के विश्वास और रीति-नीतिं इसमें मिलते रहे हैं । बहुत-सी नयी कल्पनाएँ जुड़ती रही हैं । इस प्रकार जिस संस्कृति में कभी इन्द्र, वरुण आदि देवताओं का प्राधान्य था, यज्ञ-याग का बाहुल्य था उसमें दूसरे समय शिव, विष्णु आदि देवताओं का प्राधान्य हो गया और पूजा-पाठ तीर्थ-व्रत आदि का प्राधान्य हो गया । यह एक उदाहरण मात्र है परंन्तु बहुत से प्राचीन विश्वास जीते रहे है और नयी मान्यताओं को इस प्रकार आत्मसात कर गयी है मानो वे अनादिकाल से चले आ रहे हों । कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि भारतवर्ष के इतिहास में जो कुछ जब कभी हुआ है, वह सब भारतीय संस्कृति है, कुछ दूसरे लोग ऐसा सोचते हैं कि वे जितना कुछ तात्कालिक परिस्थिति में उचित और ग्राह्य समझते हैं, वही भारतीय संस्कृति है परंन्तु दोनों ही दृष्टियाँ मुझे ठीक नहीं लगतीं। संस्कृति मेरे मन से सर्वोच्च चिन्तन-मनन के मूर्त रूप का नाम है । मूर्त में जिस प्रकार मन्दिर मूर्ति, चित्रकला आदि बातें आती हैं, उसी प्रकार कविता, नाटक, संगीत, धर्म, शिष्टाचार भी आते हैं । जहाँ कहीं फार्म या रूप हैं वही मेरे विचार से मूर्त हैं। परंन्तु सभी मूर्त रुप या आधार संस्कृति नहीं हैं। किसी देश या काल के सर्वोतम चिन्तन-मनन को ही मैं उस देश या काल संस्कृति कहता हूँ। भारतवर्ष ने अपने विशाल इतिहास के दौरान बहुत कुछ सोचा है, अच्छा भी, कम अच्छा भी और कभी-कभी गलत भी। सबकी मूर्त रुप की गणना मैं '' ' संस्कृति' में नहीं करता। मैं उनको ही भारतीय संस्कृति में गिनता हूँ जो सर्वोत्तम हैं। अर्थात मनुष्य को पशु-सुलभ धरातल से अधिक-से-अधिक ऊपर उठाने में और मानवता के सिंहासन पर अधिक से अधिक दृढतापूर्वक बैठाने में समर्थ हैं। जो बातें मनुष्य को जड़ता की ओर और पशु-सुलभ स्वार्थ, लोभ-मोह और जुगुप्क्षित आचरण की ओर ले जानेवाली हैं, उन्हें मैं संस्कृति का प्रतिपन्थी मानता हूँ। इस श्रेष्ठ मानवीय प्राप्ति को भारतीय संस्कृति इसलिए कहता हूँ कि वे भारतीय सन्दर्भ में भारतीय मनीषियों द्‌वारा पुरस्कृत हैं। इसलिए नहीं की किसी अन्य देश की इसी श्रेणी से वे भिन्न या विरुद्ध हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस भारतीय संस्कृति के दीर्घकालीन इतिहास ने कुछ आधारभूत मान्यता का अनुसन्धान किया है। हर व्यक्ति को, देवता हो चाहे दानव, पुरुष हो या स्त्री, अपने किये का फल भोगना पड़ता है। इसे कर्मफल का सिद्धांत कहते हैं। फिर इस कर्मफल को भोगने के लिए मनुष्य अनेक जन्म ग्रहण करता है, जब तक वह सम्पूर्ण फल भोग नहीं लेता तब तक उसका निस्तार नहीं होता। यह पुनर्जन्म का सिद्धांत है। मनुष्य की दृष्टि जब तक तप, भक्ति, सेवा, समाधि, व्रत, अध्ययन आदि द्वारा संक्षेप में योग द्वारा शुद्ध नहीं होती तब तक वह प्राणी आवागमन के जाल से मुक्त नहीं होता। यह आवागमन ही भव या संसार है। ये कुछ ऐसे सामान्य स्वीकृत तथ्य हैं जो भारतवर्ष के हर मत और हर सम्प्रदाय में स्वीकृत हैं। विदेशी विद्वानों ने तो पुनर्जन्म के सिद्धांतों को भारतीय संस्कृति का लक्षण माना है। संसार में कहीं भी यह बात नहीं पायी जाती। बद्धमूल होने की तो बात ही कहाँ उठती है। बौद्ध और जैन धर्मों के आन्दोलन में भी इन बातों को ज्यों का त्यों मान लिया है। यही कारण है कि धीरे-धीरे ये मत विशाल संस्कृतिधारा के अभिन्न अंग बन गये हैं। बुद्ध और वृषभ भी विष्णु के अवतार बन गये हैं। बाहर से आनेवाली जातियों से कई बार संघर्ष हुआ पर अन्ततोगत्वा मूल सामान्य मान्यताएँ सबने मान लीं और भारतीय संस्कृति की टूट धारावाहिक नहीं हुई। रवीन्द्रनाथ भी कह सकते हैं कि बीच-बीच में वीणा के तार टूट अवश्य गये थे, थोड़ी देर के लिए संगीत में बाधा भी पड़ी थी, पर इस बात को लेकर हाय-हाय करने की क्या जरुरत है।

इस्लाम के आने पर भारतीय संस्कृति को एक नयी चुनौती का सामना करना पड़ा। यह धर्म नये ढंग का था। मैंने अन्यत्र दूसरी चर्चा की। संक्षेप में चुनौती का स्वरूप सामाजिक अधिक था, धार्मिक और दार्शनिक कम।

भारतवर्ष में कई कारणों से सोन्मुखता शुरु हो गयी थी। भारतीय संस्कृति की पाचन शक्ति शिथिल हो गयी थी। फिर नयी संस्कृति प्राणों के पार वेग को लेकर चली थी। पुराना उच्छल प्राणावेग हुए देश में अत्यन्त क्षीण हो आया था। फिर भी पहले धक्के को संभालने के बाद कुछ-न-कुछ नयी जीवनी लक्ष्य का उन्मेष हुआ होगा।

भारतवर्ष ने इस चुनौती का सामना भक्ति आनन्दोत्सव के द्वारा किया था। कबीर और नानक आदि के प्रयत्न बड़े शक्तिशाली थे। पर इतिहास की गति दूसरी ओर मुड़ गयी। अँग्रेजों के आने के बाद इस समन्वय के मार्ग में बाधा पड़ी और उनकी कूटनीतियों के कारण समन्वय की धारा तो रुक ही गयी, नये दरार पड़ने लगे। मेरा विश्वास है कि नयी संस्कृति न आ गयी होती तो इस्लाम का भी कुछ न कुछ समन्वय हो गया होता। होना शुरु हो चुका था। मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूँ कि ये दोनों संस्कृतियाँ एक हो ही नहीं सकती थीं। हो रही थीं। बहुत कुछ हो आयी थीं।

आप जिसे पाश्चात्य संस्कृति कहते हैं वह कभी इस नाम से पुकारी अवश्य जाती थी, परन्तु थी वह आधुनिक संस्कृति। मैं समझता हूँ कि आप भी मानेंगे कि विज्ञान और प्रविधिशास्त्रीय उत्थान ने मनुष्य को पुराने हजारों वर्षों के इतिहास से अलग कर दिया है। अब संस्कृति भौगोलिक सीमाओं द्वारा परिचित नहीं होगी। भूगोल की सीमाएँ लड़खड़ा गयी हैं, टूट भी रही है। एक नयी मानवीय संस्कृति पैदा हो रही है। पाश्चात्य देशों में इसका प्रथम आविर्भाव होने के कारण इसे पाश्यात्य संस्कृति कहा जाता है पर वह आधुनिक वैज्ञानिक अभ्युत्थान की देन। भारतीय संस्कृति इसे समृद्ध करेगी। जिन छोटी-मोटी भौगोलिक या सामाजिक इकाइयों का अभी तक आत्मसात् करते या होते होंगे, सुना गया है उनसे यह एकदम भिन्न प्रकृति की है, यह मनुष्य के नये युग में प्रवेश करने के कारण स्पष्ट हुई है। पुराने अनुभव इसे समृद्ध और सशक्त बनाएँगे। इतिहास ही बतायेगा कि भारतीय संस्कृति का कितना अंश यह स्वीकार करेगी। मै इस समय केवल अनुमति कर सकता हूँ। इस अनुमति में मेरी रुचि और मेरे संस्कार भी काम करते हैं और मेरी इतिहास की थोड़ी-बहुत जानकारी भी। मै समझता हूँ कि भारतीय मनीषा के बहुमुखी अनुभव से यह नयी संस्कृति बहुत अधिक समृद्ध होगी।

शब्दार्थ-टिप्पण

अनुमान अंदाज **विस्मृति** भूली हुई **बाहुल्य** अधिकता **संगति** मेल **धरातल** पृथ्वी की सतह **सिंहासन** राजा का आसन **जुगुप्क्षित** घृणित **अंततोगत्वा** खिर में **चुनौती** ललकार **ह्यासोन्मुखता** पतनशीलता **दरार** एकताभंग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) भारतवर्ष की संस्कृति कितनी पुरानी है ?

(2) भारत में कौन-कौन सी प्राचीन जातियों के रीत-रिवाज मिलते हैं ?

(3) लेखक ने संस्कृति किस कहा है ?

(4) लेखक संस्कृति का प्रतिपंथी किसे मानता है ?

(5) कर्मफल का सिद्धांत किसे कहते हैं ?

(6) प्राणी आवागमन के जाल से कब तक मुक्त नहीं होता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों मे लिखिए :

(1) भारतीय संस्कृति ने नई मान्यताओं को किस तरह से आत्मसात् किया है ?

(2) भौगोलिक सीमाएँ कैसे टूट रही हैं ?

(3) भारतीय संस्कृति कैसे समृद्ध होगी ?

(4) विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मानव पर क्या असर पडा़ है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) भारतीय संस्कृति विकासशील रही है। समझाइए ।

(2) भारतीय संस्कृति सर्वोत्तम क्यों मानी जाती है ?

(3) भारतीय संस्कृति की आधारभूत मान्यता विस्तारपूर्वक समझाइए।

(4) आधुनिक संस्कृति को पाश्यात्य संस्कृति क्यों कहा गया है ?

(5) इस्लाम की चुनौती का स्वरूप सामाजिक अधिक था, धार्मिक और आर्थिक कम – समझाइए ।

(6) वे कौन-कौन सी मान्यताएँ हैं, जिन्हें भारत में हर मत और संप्रदाय के लोग स्वीकार करते हैं ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) हर व्यक्ति को, देवता हो चाहे दानव, पुरुष हो या स्त्री अपने किये का फल भोगना पड़ता है ।

(2) संस्कृति मेरे मन से सर्वोच्च चिन्तन-मनन के मूर्तिरूप का नाम है।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

चुनौती देना, आत्मसात् करना, शिथिल होना

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

धरातल, मूर्ति, दृष्टि, विस्मृत, चुनौती, पुराना

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

प्राचीन, नया, बहुत, मूर्त, अविश्वास, सामाजिक, परिचित, स्वीकार

8. निम्नलिखित शब्दों का संधि विग्रह कीजिए :

प्राणावेग, आनंदोत्सव, अनादि, सर्वोत्तम

9. विग्रह करके समास भेद बताइए :

ठीक-ठीक, चिन्तन-मनन, कर्मफल, आवागमन, पशु-सुलभ

10. प्रत्यय अलग करके लिखिए :

शास्त्रीय, वैदिक, उन्मुखता, दृढ़तापूर्वक, भारतीय, धारावाहिक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) भारतवर्ष का इतिहास कितने वर्ष पुराना है ?

(A) तीन (B) दस (C) पचास (D) हजारों

(2) इनमें से विष्णु का अवतार कौन नही है ?

(A) शंकर (B) बुद्ध और वृषभ (C) कृष्ण (D) राम

(3) इनमें से कोन-सी भारतीय संस्कृति की आधारभूत मान्यताओं में है ?

(A) मूर्तिपूजा (B) कर्मफल (C) अस्तित्ववाद (D) नास्तिकता

(4) भारतीय संस्कृति ने इस्लामी संस्कृति की चुनोती का सामना कैसे किया ?

(A) तलवार से (B) सत्याग्रह से (C) भक्ति आंदोलन से (D) चुपचाप

विद्यार्थी-प्रवृति

- देखे गए किसी ऐतिहासिक स्थल का वर्णन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृति

- ऐतिहासिक स्थल के प्रवास का आयोजन कीजिए ।
- आनंदी और लालबहादुर के बीच की घटना को संवाद के रूप में लिखिए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

16 बिहारी के दोहे

बिहारी

(जन्म : सन् 1546 ई. निधन: सन् 1664 ई.)

रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारी का जन्म ग्वालियर के निकट बसुआ-गोबिंदपुर नामक गाँव में हुआ था। कहा जाता है कि बिहारी का परिचय बादशाह शाहजहाँ से था। ये जयपुर के महाराज जयसिंह के राज्याश्रित कवि थे। विषय-वासना में लिप्त महाराजा को जब कोई समझाने का साहस नहीं कर सका तब बिहारी ने एक दोहा **'नहि पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल'** लिखकर भेजा तो वह बहुत प्रभावित हुआ था। इस रचना से प्रसन्न होकर महाराजा ने इन्हें प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देना स्वीकार किया था।

इनकी एक मात्र रचना है, 'बिहारी सतसई'। सतसई का अर्थ है सात सौ दोहों (मुक्तकों) का संग्रह। बिहारी के दोहों को पढ़कर यह कहना स्वाभाविक प्रतीत होता है कि दोहे जैसे छोटे-से छंद में सीमित रहकर भी बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है। बिहारी मुख्यत: शृंगारी कवि हैं परंतु इन्होंने अपने दोहों में भक्ति, नीति, दर्शन, गणित आदि अनेक विषयों का निरूपण कर अपनी बहुज्ञता का परिचय दिया है इनके दोहे कल्पना शक्ति एवं गहन अनुभूति के भंडार हैं जिनमें लोक एवं शास्त्र का अथाह ज्ञान भरा हुआ है।

यहाँ बिहारी के दस मुक्तक संकलित हैं। प्रथम मुक्तक में लोभ रूपी चश्में से देखने का परिणाम बताया है तो दूसरे दोहे में अन्य के हाथों में पड़कर काम करने में किसी प्रकार के जीवन की सार्थकता न होने की बात कही गई है। तीसरे दोहे में मनुष्य की और जल के पानी की तुलना की गई है और चौथे दोहे में 'कनक-कनक' के माध्यम से स्वर्ण एवं धतूरे की प्रकृति का उल्लेख है। पाँचवे दोहे में स्पष्ट किया है कि बुरे लोग सत्संग के संसर्ग में आकर भी अपना बुरा स्वभाव नहीं छोड़ते। छठे दोहे में भक्त हृदय की अनोखी दशा एवं सातवें - आठवें दोहों में नीति-विषयक भाव व्यक्त हुए हैं। अंतिम दो दोहों में बसंत-ऋतु में आम्र बौरों तथा माधवी लता पर गुंजार करते भ्रमर-समूह का वर्णन एवं भ्रमर और गुलाब की अन्योक्ति द्वारा सीख दी गई है।

रनित भृंग-घटावली, झरित दान मधु-नीर ।
मंद-मंद आवत चल्यौ, कुंजरु-कुंज-समीर ॥1॥

तन्त्री नाद कबित-रस, सरस राग, रति रंग ।
अनबूडे बूड़े, तरे, जे बूडे सब अंग ॥2॥

घरु घरु डोलत दीन व्हवै, मुनि जनु जाचतु जाइ ।
दियैं लोभ-चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ौ लखाइ ॥3॥

कनक कनक तैं सौगुनी मादकता अधिकाय ।
अहिं खायें बौराइ जग, इहिं पाये बौराइ ॥4॥

स्वारथु , सुकृतु न, श्रम बृथा, देखि बिहंग बिचारि ।
बाज, पराए पान परि, तू पंछि जिनु न मारि ॥5॥

प्रलय करन बरषन लगे, जुरि जलंधर इकसाथ ।
सुरपति गरबु हरयौ हरषिं गिरिधर गिरि धर हाथ ॥6॥

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जेतौ नीचौ हवै चलै, तेतौ ऊँचो होइ ॥7॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छकि रसाल-सौरभ सने, मधुर माधवी-गन्ध ।
ठौर-ठौर झूमत झपत भौंर झौंर मधु-अन्द ॥ 8 ॥

इहीं आस अटक्यौ रहतु, अलि गुलाब कैं भूल ।
हवै हैं फेरि बसन्त ऋतु , इन डारनु वे फूल ॥ 9 ॥

दिन दस आदरु पाइ कै करि, लै आपु बखानु ।
जौ लगि काग! सराद पखु, तो लगि तौ सनमानु ॥ 10 ॥

अरे हंस, या नगर मैं, जैयौ आपु बिचारि ।
कागनि सौं जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिडारी ॥ 11 ॥

संगति, सुमति न पावहीं, परे कुमित के धंध ।
राखो मेलि कपूर में, हींग न होति सुगंध ॥ 12 ॥

शब्दार्थ-टिप्पण

दीनह्वै गरीब होकर **जन-जन** प्रत्येक व्यक्ति को **जाँचत** याचना **लोभ-चसमा** लोभ रूपी चश्मा **स्वारथ** अपना हित **सुकृत** पुण्य कार्य **विहंग** पक्षी **पान** पाणि, हाथ **गति** चाल, स्वभाव **जोय** देखकर **कनक**-सोना, धातू **मादकता** उन्माद, नशा **बौराय** पागल हो जाना **कुमित** खोटी बुद्धि **धंध** चक्कर **मेलि** मिलाकर, रखो **तंत्रीनाद** वीणा का स्वर **कवित्त-रस** कविता का रस **रतिरंग** स्त्री के साथ प्रेम प्रसंग **अनबूड़े** जो डूबे नहीं **बूड** निमग्न **तरे** उद्धार हो गया **बखान** प्रशंसा **सराध** पखु **श्राद्ध** पक्ष **बिडारि** छोड़ देना **रसाल** आम फल **छकि** तृप्त होकर **सौरभ सने** गन्ध से युक्त **माधवी** वासन्ती का पुष्प पौधा **झंपत** ढंक लेते हैं **झौंर** समूह **अटक्यौ** अटकहुआ **अलि** भौंरा **मूल** जड **बहुरि** फिर

अभ्यास

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

(1) लोभ रुपी चश्मा लगाने पर क्या परिणाम आता है ?
(1) सुमति किस प्रकार प्राप्त हो सकती है ?
(1) एक कनक से दूसरे कनक को अधिक मादक क्यों कहा गया है ?
(1) तीसरे दोहे में कवि ने किनकी गति को समान कहा है ?

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक -दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिहारी के दोहे में ऐसी कौन-सी बातें हैं जिनमें डूबने पर ही उनकी अनुभूति होती है ?
(2) बिहारी कौए के दृष्टांत द्वारा क्या समझाना चाहते हैं ?
(3) भौंरा गुलाब के मूल में क्यों अटका हुआ है ?
(4) कवि हंस को किस तरह के नगर में जाने से मना करता है ?

2. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि बिहारी के बारे में आप क्या जानते हैं ?
(2) नर और नल नीर में क्या समानता है ?
(3) 'कनक-कनक' में प्रयुक्त कवि के अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए।
(4) 'सुमित' और 'कुमति' के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. भाव - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

(1) राखो मेलि कपूर में, हींग न होति सुगंध ।

(2) अनबूड़े बूड़े तरे जे बूड़े सब अंग।

(3) जेतौ नीचौ ह्य चले, तेतौ ऊँचो होय ।

4. निम्नलिखित शब्दों के मानक हिन्दी रूप लिखिए :

चसमां, स्रम, सनमानु, सराध, जैतो, आस, गरबु, हरषि, स्वारथु

5. समानार्थी शब्द लिखिए :

वृथा, मधु, सुगंध, पंछी, लघु, दीन, आदर

6. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) तंत्रीनाद कवित्त रस , सरस राग-----रंग ।

(A) रति (B) मति (C) गति (D) भक्ति

(2) ------की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ ।

(A) आदमी (B) नर (C) मनुष्य (D) व्यक्ति

(3) इहीं आस अटक्यौं रहतु, अलि------कैं मूल ।

(A) कमल (B) मोगरा (C) जूही (D) गुलाब

(4) सुगंध का समानार्थी शब्द चुनकर लिखें।

(A) खुश्बू (B) संगीत (C) लज्जा (D) पवन

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'गागर में सागर' उक्ति को बिहारी के संदर्भ में समझिए।
- अपने पुस्तकालय में जाकर बिहारी के अन्य दोहे पढ़िए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहीं विकास इहिं काल' दोहे के साथ जुड़ी हुई जनश्रुति के बारे में विद्यार्थी को बताएँ।
- विद्यार्थियों को 'दयाराम सतसई,' 'मतिराम सतसई' की भी जानकारी दें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17 अपना-अपना भाग्य

जैनेन्द्रकुमार

(जन्म : सन् 1904 ई. मृत्यु: सन् 1990 ई.)

हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद जैनेन्द्रकुमार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज कस्बे में हुआ था। आरंभिक शिक्षा जैन गुरुकुल हस्तिनापुर में हुई। महात्मा गांधी के आवाह्न पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़कर वे राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। उनके चिंतन और साहित्य पर गांधीजी के सिद्धांतों का प्रभाव पड़ा। इनकी कहानियों और उपन्यासों में मानव-मन का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इन्हें हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कथा के आरंभ का श्रेय प्राप्त है। जैनेन्द्रजी की कहानियाँ सोदेश्य हैं। उनकी भाषा बड़ी सटीक और सजीव है।

'वातायन' 'एक रात' 'दो चिड़िया' 'फांसी' 'नीलम देश की राजकन्या' और 'ध्रुवयात्रा' आदि इनके प्रमुख कहानी संकलन हैं। 'परख' 'सुनीता' 'त्यागपत्र' 'कल्याणी' 'जयवर्द्धन' तथा 'मुक्तिबोध' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। इन्हें 'भारत-भारती' पुरस्कार, 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा 'पद्मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने व्यंगपूर्ण ढंग से यह बताना चाहा है कि जो लोग समृद्ध-संपन्न हैं, सुख-सुविधाभोगी हैं वे समाज के गरीबों की समय पर सहायता नहीं करतें, पर बाद में उनके करुण अंत पर यह सोचकर अपने को तसल्ली देते हैं कि उनका भाग्य ही ऐसा था।

बहुत कुछ निरुद्देश्य घूम चुकने पर हम सड़क के किनारे बेंच पर बैठ गए। नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी। रुई के रेशे-से भाप के बादल हमारे सिरों को छू-छूकर बेटोक घूम रहे थे। हल्के प्रकाश और अँधियारी से रंगकर कभी वे नीले दीखते, कभी सफेद और फिर जरा अरुण पड़ जाते, जैसे हमारे साथ खेलना चाह रहे हों।

पीछे हमारे पोलोवाला मैदान फैला था। सामने अंग्रेजो का एक प्रमोद-गृह था, जहाँ सुहावना, रसीला बाजा बज रहा था और पार्श्वमें था वही सुरम्य अनुपम नैनीताल।

ताल में किश्तियाँ अपने सफेद पाल उड़ाती हुई एक-दो अंग्रेज यात्रियों को लेकर, इधर से और उधर से इधर खेल रही थीं। कहीं कुछ अंग्रेज एक-एक देवी सामने प्रतिस्थापित कर, अपनी सुई-सी शक्ल की डोंगियों को मानो शर्त बाँधकर सरपट दौड़ा रहे थे। कहीं किनारे पर कुछ साहब अपनी बंसी डाले, सधैर्य, एकाग्र, एकस्थ, एकनिष्ठ मछली-चिन्तन कर रहे थे।

पीछे पोंलो-लॉन में बच्चे किलकारियाँ मारते हुए हाकी खेल रहे थे। शोर, मार-पीट, गाली-गलौज भी जैसे खेलका ही अंश था। इस तमाम खेल को उतने क्षणों का उदेश्य बना, वे बालक अपना सारा मन, सारी देह, समग्र बल और समूची विद्या लगाकर मानो खतम कर देना चाहते थे। उन्हें आगे की चिन्ता न थी, बीते का खयाल न था। वे शुद्ध तत्काल के प्राणी थे। वे शब्द की सम्पूर्ण सच्चाई के साथ जीवित थे।

सड़क पर से नर-नारियों का अविरत प्रवाह आ रहा था और जा रहा था। उसका न ओर था, न छोर। यह प्रवाह कहाँ जा रहा था और कहाँ से आ रहा था, कौन बता सकता था? सब तरह के लोग उसमें थे, मानो मनुष्यता के नमूनों का बाज़ार सजकर सामने से इठलाता निकला चला जा रहा हो।

अधिकार-गर्व में तने अंग्रेज उसमें थे और चिथड़ों से सजे, घोड़ों की बाग थामे, वे पहाड़ी उसमें थे, जिन्होंने अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान को कुचलकर शून्य बना लिया था और जो बड़ी तत्परता से दुम हिलाना सीख गए थे।

भागते, खेलते, हँसते, शरारत करते, लाल-लाल अंग्रेज बच्चे थे और पीली-पीली आँखे फाड़े, पिता की उँगली पकड़कर चलते हुए अपने हिन्दुस्तानी नौनिहाल भी थे।

अंग्रेज पिता थे, जो अपने बच्चो के साथ भाग रहे थे, हँस रहे थे और खेल रहे थे। उधर भारतीय पितृदेव भी थे। जो बुजुर्गी को अपने चारों तरफ लपेटे, धन-संम्पन्नता के लक्षणों का प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे।

अंग्रेज रमणियाँ थीं, जो धीरे-धीरे नहीं चलती थीं, तेज़ चलती थीं। उन्हें न चलने में थकावट आती थी, न हँसने में लाज आती थी। कसरत के नाम पर वे घोड़े पर भी बैठ सकती थीं, और घोड़े के साथ ही साथ, जरा जी होते ही, किसी-किसी हिन्दुस्तानी पर कोड़े भी फटकार सकती थीं। वे दो-दो, तीन-तीन, चार-चार की टोलियों में नि:शंक, निरापद इस प्रवाह में मानो अपने स्थान को जानती हुई, सड़क पर चली जा रही थीं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उधर हमारी भारतकी कुललक्ष्मियाँ, सड़क के बिलकुल किनारे दामन बचाती और सँभालती हुई, साड़ी की तहों में सिमट-सिमटकर, लोकलाज, स्त्रित्व और भारतीय गरिमा के आदर्श को अपने परिवेष्टनों में छिपाकर सहमी-सहमी, धरती में आँखें गाड़े, कदम-कदम बढ़ रही थीं।

इसके साथ ही भारतीयता का एक और नमूना था। अपने कालेपन को खुरच-खुरचकर बहा देने की इच्छा करनेवाले अंग्रेजी-दाँ पुरुषोत्तम भी थे, नेटिवों को देखकर मुँह फेर लेते थे और अंग्रेज को देखकर आंखें बिछा देते थे और दुम हिलाते थे। वैसे वे अकड़ के साथ कुचल-कुचलकर चलने का उन्हें अधिकार मिला है।

घण्टे के घण्टे सरक गए। अन्धकार गाढ़ा हो गया। बादल सफेद होकर जम गए। मनुष्यों का वह ताँता एक-एक कर क्षीण हो गया। अब इक्का-दुक्का आदमी सड़क पर छतरी लगाकर निकल रहा था। हम वही के वहीं बैठे थे। सर्दी-सी मालूम हुई। हमारे ओवरकोट भीग गए थे।

पीछे फिरकर देखा। वह, लॉन बर्फ की चादर की तरह बिलकुल स्तब्ध और सुन्न पड़ा था।

सब ओर सन्नाटा था। तल्लीताल की बिजलीकी रोशनियाँ दीप-मालिका-सी जगमगा रही थीं। वह जगमगाहट दो मील तक फैले हुए प्रकृति के जल-दर्पण पर प्रतिबिम्बित हो रही थीं और दर्पण का काँपता हुआ, लहरें लेता हुआ, वह जल प्रतिबिम्बों को सौ गुना, हज़ार गुना करके, उनके प्रकाश को मानो एकत्र और पुंजीभूत कर के व्याप्त कर रहा था। पहा्डों के सिर पर की रोशनियाँ तारों-सी जान पड़ती थीं।

हमारे देखते-देखते एक घने पर्दे ने आकर इन सब को ढँक दिया। रोशनियाँ मानो मर गई। जगमगाहट लुप्त हो गई। वे काले-काले भूत-से पहाड़ भी इस सफेद पर्दे के पीछे छिप गए। पास की वस्तु भी न दीखने लगी। मानो यह घनीभूत प्रलय था। सब कुछ इस घनी गहरी सफेदी में दब गया। एक शुभ्र महासागर ने फैलकर संस्कृति के सारे अस्तित्व को डुबो दिया। ऊपर-नीचे, चारों तरफ वह निर्भेद्य, सफेद शून्यता ही फैली हुई थी।

ऐसा घना कुहरा हमने कभी न देखा था। वह टप-टप टपक रहा था।

मार्ग अब बिलकुल निर्जन, चुप था। वह प्रवाह न जाने किन घोंसलों में जा छिपा था।

उधर बृहदाकार शुभ्र शून्य में कही से ग्यारह बार टन-टन हो उठा। जैसे कहीं दूर कब्र में से आवाज़ आ रही हो।

हम अपने-अपने होटलों के लिए चल दिए।

रास्ते में दो मित्रों का होटल मिला। दोनों वकील-मित्र छुट्टी लेकर चले गए। हम दोनों आगे बढ़े। हमारा होटल आगे था।

ताल के किनारे-किनारे हम चले जा रहे थे। हमारे ओवरकोट तर हो गए थे। बारिश नहीं मालूम होती थी, पर वहाँ तो ऊपर-नीचे हवा के कण-कण में बारिश थी। सर्दी इतनी थी कि सोचा, कोट पर एक कम्बल और होता तो अच्छा होता।

रास्ते में ताल के बिलकुल किनारे पर एक बेंच पड़ी थी। मैं जी में बेचैन हो रहा था। झटपट होटल पहुँचकर इन भीगे कपडों से छुट्टी-पा, गरम बिस्तर में छिपकर सो रहना चाहता था, पर साथ के मित्र की सनक कब उठेगी, कब थमेगी-- इसका पता न था। उन्होनें कहा--'आओ, जरा यहाँ बैठें।'

हम उस चूते कुहरे में रात के ठीक एक बजे तालाब के किनारे उस भीगी बर्फ-सी ठंडी हो रही लोहे की बेंच पर बैठ गए।

पाँच, दस, पन्द्रह मिनट हो गए। मित्र के उठने का कोई इरादा न मालूम हुआ। मैंने झुँझलाकर कहा-"चलिए भी.."

"अरे, जरा बैठो.........."

हाथ पकड़कर जरा बैठने के लिए जब जोर से बैठा लिया गया, तो और चारा न रहा। सनक से छुटकारा पाना आसान न था और जरा बैठना भी 'जरा' न था।

चुपचाप बैठे तंग हो रहा था, कुढ़ रहा था कि मित्र अचानक बोले-"देखो वह क्या है ?"

मैंने देखा कि कुहरे की सफेदी में कुछ ही हाथ दूर से एक काली-सी मूर्ति हमारी तरफ आ रही थी। मैंने कहा- "होगा कोई।"

तीन गज की दूरी से दीख पड़ा, एक लड़का, सिर के बड़े-बड़े बाल खुजलाता चला आ रहा था। नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली-सी कमीज लटकाए।

पैर उसके न जाने कहाँ पड़ रहे थे, और वह न जाने कहाँ जा रहा था, कहाँ जाना चाहता था, न दायाँ था, न बायाँ था। पास की चुंगी की लालटेन के छोटे-से प्रकाश-वृत्त में देखा- कोई दस-बारह बरस का होगा। गोरे रंग का है, पर मैल से काला पड़ गया है, आँखें अच्छी, बड़ी पर सूनी हैं। माथा जैसे अभी से झुरियाँ खा गया है। वह हमें न देख पाया, वह जैसे कुछ भी न देख रहा था। न नीचे की धरती, न ऊपर चारों ओर फैला हुआ कुहरा, न सामने का तालाब, और न एकाकी दुनिया। वह बस अपने निकट वर्तमान को देख रहा था ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मित्र ने आवाज दी–– ''ए !
उसने अपनी सूनी आँखें फाड़ दीं।
दुनिया सो गई है, तू ही क्यों घूम रहा है ?''
''बालक मूक, फिर बोलता हुआ-सा चेहरा लेकर खड़ा रहा।
''कहाँ सोएगा ?''
''यहीं-कहीं।''
''कल कहाँ सोया था ?''
''दुकान पर।''
''आज वहाँ क्यों नहीं ?''
''नौकरी से हटा दिया।''
''क्या नौकरी थी ?''
''सब काम, एक रुपया और जूठा खाना।''
''फिर नौकरी करेगा ?''
''हाँ।''
''बाहर चलेगा ?''
''"हाँ''
''आज क्या खाना खाया ?''
''कुछ नहीं।''
''अब खाना मिलेगा ?''
''नहीं मिलेगा।''
''यों ही सो जाएगा ?''
''हाँ।''
''कहाँ ?''
''यहीं-कहीं।''
''इन्हीं कपड़ों में ?''
बालक फिर आँखों से बोलकर मूक खड़ा था। आँखें मानो बोलती थीं- ''यह भी कैसा मूर्ख प्रश्न है !''
''माँ-बाप हैं ?''
''हाँ । पन्द्रह कोस दूर, गांव में।''
''तूं भाग आया ?''
''हाँ।''
''क्यों ?''
''मेरे कई भाई-बहन हैं, सो भाग आया। वहाँ काम नहीं, रोटी नहीं। बाप भूखा रहता था और मां भूखी रहती थी रोती थी, सो भाग आया। एक साथी और था। उसी गांव का था, मुझसे बड़ा। दोनों साथ यहाँ आए। वह अब नहीं है।''
''कहाँ गया ?''
''मर गया।''
बस जरा-सी उम्र में ही उसकी मौत से पहचान हो गई-मुझे अचरज हुआ, पूछा-''मर गया ?''
''हाँ, साहब ने मारा था, मर गया।''
''अच्छा, हमारे साथ चल।''
वह साथ चल दिया। लौटकर हम वकील दोस्त के होटल पहुँचे।
''वकील साहब !''

वकील साहब होटल के कमरे से उतरकर आए। काश्मीरी दुशाला लपेटे थे, मोजे चढ़े पैरों में चप्पलें थीं। स्वर में हलकी झुंझलाहट थी, कुछ लापरवाही थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"ओ हो, फिर आप! कहिए"

"आपको नौकर की जरूरत थी न, देखिए यह लड़का है।"

"कहाँ से लाए? इसे आप जानते हैं?"

"जानता हूँ, यह बेईमान नहीं हो सकता।"

"अजी, ये पहाड़ी बड़े शैतान होते हैं। बच्चे-बच्चे में गुण छिपे रहते हैं- आप भी क्या अजीब हैं, उठा लाए कहीं से- लो जी, यह नौकर लो।"

"मानिए तो, यह लड़का अच्छा निकलेगा।"

"आप भी.....जी बस खूब हैं। ऐसे ऐरे-गैरे को नौकर बना लिया जाए और अगले दिन वह न जाने क्या-क्या लेकर चम्पत हो जाए ।"

"आप मानते ही नहीं, मैं क्या करूं।"

"मानें क्या खाक। आप भी....जी अच्छा मजाक करते हैं। अच्छा, अब हम सोने को जाते हैं।"

वह चार रुपया रोज के किराए वाले कमरे में सजी मसहरी पर सोने झटपट चले गए।

वकील साहब के चले जाने पर होटल के बाहर आकर मित्र ने अपनी जेब में हाथ डालकर कुछ टटोला। पर झट कुछ निराश भाव से हाथ बाहर कर वे मेरी ओर देखने लगे।

'क्या है?' मैंने पूछा।

'इसे खाने के लिए कुछ देना चाहता था' अंग्रेजी में मित्र ने कहा, 'मगर दस-दस के नोट हैं।'

'नोट ही शायद मेरे पास है, देखूँ ?'

सचमुच मेरे पाकिट में भी नोट ही थे।

हम फिर अंग्रेजी में बोलने लगे। लड़के के दाँत बीच-बीच में कटकटा उठते थे। कड़ाके की सर्दी थी।

मित्र ने पूछा--'तब?'

मैंने कहा--'दस का नोट ही दे दो।' सकपकाकर मित्र मेरा मुँह देखने लगे--'अरे यार ! बजट बिगड़ जाएगा। हृदय में जितनी दया है, पास में उतने पैसे तो नहीं हैं।'

'तो जाने दो, यह दया ही इस जमाने में बहुत है।'**--**मैंने कहा।

मित्र चुप रहे। जैसे कुछ सोचते रहे। फिर लड़के से बोले--'अब आज तो कुछ नहीं हो सकता। तू कल मिलना। वह 'होटल डी पब' जानता है? वहीं कल १० बजे मिलेगा?'

'हाँ, कुछ काम देंगे हजूर?'

'हाँ, हाँ, ढूंढ़ दूँगा।'

'तो, जाऊँ?' लड़के ने निराशा से पूछा।

'हाँ।' ठंडी साँस खींचकर मित्र ने कहा -- 'कहाँ सोएगा?'

'यहीं कहीं, बेंच पर, पेड़ के नीचे, किसी दुकान की भठ्ठी में !'

बालक कुछ ठहरा। मैं असमंजस में रहा। तब वह प्रेत गति से एक ओर बढ़ा और कुहरे में मिल गया। हम भी होटल की ओर बढ़े। हवा तीखी थी- हमारे कोटों कों पार कर बदन में तीर-सी लगती थी।

सिकुड़ते हुए मित्र ने कहा-"भयानक शीत है। उसके पास कम--बहुत कम कपड़े.......।"

"यह संसार है यार !" मैंने स्वार्थ की फिलोसुफी सुनाई-**"**चलो पहले बिस्तर में गरम हो लो, फिर किसी और की चिन्ता करना।"

उदास होकर मित्र ने कहा-"स्वार्थ ! जो कहो, लाचारी कहो, निठुराई कहो-या बेहयाई ।"

दूसरे दिन नैनीताल स्वर्ग के किसी काले गुलाम पशु के दुलार का वह बेटा-वह बालक, निश्चित समय पर हमारे होटल-डि-पब में नहीं आया। हम अपनी नैनीताल-सैर खुशी-खुशी खत्म कर चलने को हुए। उस लड़के की आस लगाए बैठे रहने की जरूरत हमने न समझी।

मोटर में सवार होते ही यह समाचार मिला- पिछली रात, एक पहाड़ी बालक, सड़क के किनारे-पेड़ के नीचे ठिठुर कर मर गया।

मरने के लिए उसे वही जगह, वही दस बरस की उम्र और वही काले चिंथड़ों की कमीज मिली। आदमियों की दुनिया ने बस यही उपहार उसके पास छोड़ा था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पर बतलाने वालों ने बताया कि गरीब के मुंह पर, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर, बरफ की हल्की-सी चादर चिपक गई थी, मानो दुनिया की बेहयाई ढंकने के लिए प्रकृति ने शव के लिए सफेद और ठंडे कफन का प्रबंध कर दिया था।

सब सुना और सोचा--अपना-अपना भाग्य !

शब्दार्थ-टिप्पण

निरुद्देश्य बिना किसी उद्देश्य के, बेमतलब **अरुण** लाल रंग **प्रकाश-वृत्त** रोशनी का घेरा **मूक** गूंगा, चुपचाप **असमंजस** दुविधा **निठुराई** निष्ठुरता **बेहयाई** निर्लज्जता **सुरम्य** मनोहर, सुंदर

मुहावरे

आँखे फाड़ना आश्चर्य से देखना **चम्पत हो जाना** भाग जाना **कोई चारा न रहना** कोई उपाय न बचना, उपाय न होना **छुटकारा पाना** पीछा छुड़ाना

स्वाध्याय

1. एक -दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) नैनीताल में लेखक और उसके मित्र ने क्या देखा ?

(2) लेखक को लड़के की गरीबी का पता कैसे चला ?

(3) हल्की रोशनी में बादलों के रंग में क्या परिवर्तन दिख रहा था ?

(4) लेखक को लड़के की मृत्यु का समाचार कैसे मिला ?

2. सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) होटल लौटकर लेखक की अपने मित्र से क्या बात हुई ?

(2) नैनीताल की संध्या के दृश्य का वर्णन कीजिए।

(3) पहाड़ी लड़कों के बारे में वकील साहब की क्या राय थी ?

(4) 'आदमियों की दुनिया' ने लड़के के साथ कैसा व्यवहार किया था ?

(5) इस कहानी का शीर्षक 'अपना-अपना भाग्य' क्यों रखा गया है ? समझाइए।

3. सही उत्तर चुनकर लिखिए :

1. वकील साहब ने पहाड़ी लड़के को नौकरी क्यों नहीं देना चाहते थे ?

(1) उन्हें नौकर की जरूरत नहीं थी।

(2) लड़का घरेलू काम नहीं जानता था।

(3) वे अजनबी को नौकर नहीं रखना चाहते थे।

(4) लड़का अधिक वेतन मांग रहा था ।

4. समानार्थी शब्द दीजिए :

धरती, दुनिया, बादल, तीर, प्रकाश, उपहार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- लेखक के मित्र (वकील साहब) और लड़के के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।
- इस कहानी के लिए कोई और शीर्षक सुझाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- जैनेन्द्रकुमार के किसी एक लघु उपन्यास (परख, त्यागपत्र या सुनीता) का परिचय विद्यार्थियों को दीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

18 श्रीकृष्ण भक्ति

रसखान

(जन्म: सन् 1548 ई., निधन: सन् 1628 ई.)

कृष्णभक्त कवि रसखान का जन्म स्थान एवं प्रारंभिक निवास दिल्ली माना जाता है। प्रसिद्ध है कि रसखान ने वल्लभ संप्रदाय के अंतर्गत विट्ठलदासजी से दीक्षा ली थी। इसके बाद इन्होंने ब्रज भूमि में ही कृष्ण-भक्तिमय जीवन व्यतीत किया था। रसखान की भक्ति आत्मसमर्पण की भक्ति है इन्हें अपने आराध्य की शक्ति और वात्सल्य पर पूरा विश्वास है। व्रज भाषा का अत्यंत सरल रूप इनकी कविता में प्राप्त होता है। श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का वर्णन, ब्रजप्रेम, भक्ति, राधा-कृष्ण की रूप माधुरी आदि इनकी कविता के मुख्य विषय हैं। रसखान की चार रचनाएँ प्रामाणिक मानी जाती हैं- 'सुजान रसखान,' 'प्रेम वाटिका,' 'दान लीला,' और 'अष्टयाम,' । रसखान ने दोहे, कविता, सब से अधिक लिखे हैं जो कोमलकांत पदावली की दृष्टि से अपूर्व हैं। ब्रज भाषा का सरल-तरल, सरस स्वच्छ रूप इनकी रचनाओं में देखते ही बनता है।

प्रस्तुत प्रथम सवैये में रसखान ने अपनी अनन्य भक्ति-भावना प्रदर्शित की है। वे अपने ब्रजप्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहते है कि पुनर्जन्म के बाद यदि उनको मनुष्य, पशु, पत्थर,या पक्षी की योनि मिले तो वे क्रमश: गोकुल गांव नदी, गायों, गोवर्धन पर्वत, यमुना नदी और कदम्ब के पेड़ों का सांनिध्य चाहते हैं। दूसरे सवैये में बाल-कृष्ण के अनुपम सौंदर्य को देखकर स्वयं कामदेव अपनी करोड़ों कलाएँ उन पर न्योछावर कर देता है। अंतिम सवैये में श्रीकृष्ण के मोहक व्यक्तित्व के प्रभाव का कलात्मक चित्रण किया गया है जिसमें ऐसा लगता है कि उनके रूप माधुर्य में पागल होकर सारा ब्रज ही श्रीकृष्ण के हाथों बिक गया है।

सवैये

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मंझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धरयो कर छत्र पुरंदर-धारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥ 1 ॥

धूरि भरे अति सोभित श्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अंगना, पग पैजनी बाजति पीरि कछोटी ॥
वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी ॥ 2 ॥

जा दिन तैं वह नंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है ।
मोहिनीताननि गोधन गावत बेनु, बजाइ रिझाइ गयौ है ॥
वा दिन सो कछु टोना सो कै, रसखानि हिय मैं समाइ गयौ है ।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गयौ है ॥ 3 ॥

शब्दार्थ-टिप्पण

मानुष मनुष्य **मंझारन** के बीच **जौ** यदि **पाहन** पत्थर **नित** नित्य **धरयो** धारण किया **पुरन्दर** इन्द्र **वारत** न्योछावर **खग** पक्षी **काम** कामदेव **कालिंदी** यमुना नदी **छोहरा** लड़का **कूल** किनारा **धेनु** गाय **धूरि** धूल **बेनु** बाँसुरी **पैजनी** पायल **सिगरौ** समस्त

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) पशु के रूप में जन्म मिलने पर रसखान की क्या अभिलाषा है ?

(1) पक्षी के रूप में कवि कहाँ बसना चाहते हैं ?

(1) पत्थर के रूप में होने पर कवि क्या बनना चाहते हैं ?

(1) कौए को भाग्यशाली क्यों कहा गया है ?

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि कौन-से गिरि का पत्थर होना चाहते हैं ?

(2) आँगन में खेलते हुए कृष्ण ने क्या पहन रखा है ?

2 . निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) नंद के लड़के ने व्रजवासियों को किस प्रकार रिझाया है ?

(2) खेलते-खाते हुए कृष्ण किस प्रकार शोभित हो रहे हैं ?

3. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) पुनर्जन्म होने पर कवि रसखान व्रज में बसने को क्यों कहते हैं ?

(2) व्रज में कोई किसी की मर्यादा क्यों नहीं कर रहा है ?

(3) कामदेव अपनी करोड़ों कलाएँ किस छवि पर न्योच्छावर कर रहा है ?

(4) कृष्ण के बाल-सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

4. भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) काग के भाग बड़े सजनी

(2) कोऊ न काहू की कानि करै

5. निम्निलिखित शब्दो के मानक हिन्दी रूप में लिखिए :

मानुष, सोभित, पीरी, बस, पसु, कोऊ, बेनु, ब्रज

6. योग्य विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चेरौं नित...........की धेनु मंझारन

(A) नंद (B) चंद (C) यशोदा (D) बलराम

(2) धूरि भरे अति ....स्यामजू

(A) सोजत (B) मोहित (C) सोभित (D) लोभित

(3) कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर.............गयौ है।

(A) बिकाइ (B) लुटाइ (C) रिझाय (D) रिसाइ

(4) प्रत्यक्ष का विरोधी शब्द चुनकर लिखिए :

(A) सामने (B) परोक्ष (C) पराया (D) निरपेक्ष

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रसखान के कृष्णभक्ति के अन्य पद पढ़िए ।
- अपनी कक्षा में रसखान के सवैयों का सस्वर पाठ कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को अन्य कृष्णभक्त कवियों की जानकारी प्रदान करें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19 सादगी और स्वच्छता

मोहनदास करमचंद गांधी

(जन्म: सन् 1869 ई., निधन: सन् 1948 ई.)

हम जिन्हें सम्मान तथा अपनत्व से महात्मा गांधी कहते हैं उनका पूरा मूल नाम मोहनदास करमचन्द गांधी है। इनका जन्म गुजरात के पोरबंदर नामक शहर में हुआ । इनके माता-पिता के धार्मिक संस्कारों और भक्ति भावना ने इनके व्यक्तित्व में उच्च मानवीय आदर्शों और मूल्यों के प्रति अटूट निष्ठा पैदा की थी। मैट्रिक पास करने के बाद इन्होंने इग्लैण्ड से बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। इनके सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ दक्षिण अफ्रीका में हुआ। वहां वकालत करते समय वे लम्बे समय तक गिरमिटिया लोगों के अधिकार के लिए अंग्रेज सरकार से लड़ते रहे। सन् 1915 में वे भारत वापस लौटे और स्वतंत्रता संग्राम में न केवल सक्रिय हिस्सेदारी की अपितु उसे बड़ा सबल नेतृत्व भी प्रदान किया और भारत के आजाद होने तक भारतीय राजनीति के मुख्य सूत्रधार बने रहे। सत्य और अहिंसा को हथियार बनाकर चलाए गए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सफलता ने बापू को विश्व की महान् विभूतियों के बीच लाकर खड़ा कर दिया। ये आधुनिक युग के बड़े महत्त्वपूर्ण विचारक, चिंतक और कर्मयोगी थे। इनके विचारों ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। समग्र भारतीय साहित्य ने बापू के विचारों और कार्यों से प्रेरणा ली है।

साबरमती आश्रम, गुजरात विद्यापीठ, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा, वर्धा आश्रम के संस्थापक और महिलोद्धार, अछूतोद्धार राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों के गांधीजी अगुआ रहे। अपने सादगीपूर्ण जीवन और आचरण तथा भारतीय जनता की नि:स्वार्थ सेवा से वे अपने जीवनकाल में सामान्य व्यक्ति से महात्मा और राष्ट्रपिता बन गये। गांधीजी उच्चकोटि के वकील, राजनेता, कुशल सम्पादक और आत्मकथाकार थे। गांधीजी ने यंग इंडिया, नवजीवन (अंग्रेजी, हिन्दी) हरिजन पत्रिका का सफल सम्पादन किया। इन्होंने 'सत्यनां प्रयोगो' नाम से गुजराती में आत्मकथा लिखी थी जो आज भी मील का पत्थर मानी जाती है। भारत सरकार ने उनके व्याख्यानों, सम्पादकीय लेखों तथा पत्रों को संपूर्ण गांधी वाङमय नाम से प्रकाशित किया है। काका कालेलकर ने उनके चुने हुए लेखों, भाषणों तथा सम्पादकीय लेखों का संकलन 'बापू की हिन्दीवाणी' के नाम से किया है।

प्रस्तुत अंश गांधीजी की आत्मकथा से है। उनके सादगी एवं स्वावलंबन्ध सम्बन्धी विचार और प्रयासों का चित्रण उनके द्वारा किया गया है। धोबी की गुलामी से मुक्ति पाना और अपना काम खुद करने का कुछ लोगों के लिए हँसी का कारण बनता है। पर वे उसे नजर अंदाज कर देते हैं और गोखलेजी के दुपट्टे वाला प्रसंग उन्हें उत्साहित ही करता है। इस प्रकार स्वावलंबन और सादगी उनके शौक में सुमार हो गए।

अपने अफ्रीका निवास के दौरान ही गाँधीजी ने सफाई के महत्व को समझा था, जब डरबन में प्लेग के प्रकोप का भय पैदा हुआ तब उन्होंने हिन्दुस्तानियों के रिहायशी क्षेत्रों में सख्ती से सफाई का कार्य करवाया। इससे उन्हें कुछ कड़वे अनुभव भी हुए। पर वे स्वीकार करते हैं कि आप सुधार के लिए निकलते हैं तो इतनी तो तैयारी रखनी होगी।

इसी प्रकार अकाल के समय में लोगों से चंदा इकट्ठा कर समाज को सहायता पहुँचाने की सोच भी उन्हें सत्य की ओर नजदीक ले जाती है और उनका विश्वास दृढ़ होता जाता है।

भोग भोगना मैनें शुरु तो किया, पर वह टिक न सका। घर के लिए साज-सामान भी बसाया, पर मेरे मन में उसके प्रति कभी मोह उत्पन्न नहीं हो सका। इसलिए घर बसाने के साथ ही मैंने खर्च कम करना शुरू कर दिया। धोबी का खर्च भी ज्यादा मालूम हुआ। इसके अलावा, धोबी निश्चित समय पर कपड़े नहीं लौटाता था। इसलिए दो-तीन दर्जन कमीजों और उतने ही कालरों से भी मेरा काम चल नहीं पाता था। कालर मैं रोज बदलता था। कमीज रोज नहीं तो एक दिन के अन्तर से बदलता था। इससे दोहरा खर्च होता था। मुझे यह व्यर्थ प्रतीत हुआ। अतएव मैने धुलाई का सामान जुटाया। धुलाई-कला पर पुस्तक पढ़ी और धोना सीखा। पत्नी को भी सिखाया। काम का कुछ बोझ तो बढ़ा ही, पर नया काम होने से उसे करने में आनन्द आता था।

पहली बार अपने हाथों धोये हुए कालर को तो मैं कभी भूल नहीं सकता। उसमें कलफ अधिक लग गया था और इस्तरी पूरी गरम नहीं थी। तिस पर कालर के जल जाने के डर से इस्तरी को मैंने अच्छी तरह दबाया भी नहीं था। इससे कालरमें कड़ापन तो आ गया, पर उसमें से कलफ झड़ता रहता था। ऐसी हालत में मैं कोर्ट गया और वहाँ बारिस्टरों के लिए मजाक का साधन बन गया। पर इस तरह का मजाक सह लेने की शक्ति उस समय भी मुझमें काफी थी।

मैंने सफाई देते हुए कहा, अपने हाथों कालर धोने का मेरा यह पहला प्रयोग है, इस कारण इसमें से कलफ झड़ता है। मुझे इससे कोई अड़चन नहीं होती : तिस पर आप सब लोगों के लिए विनोद की इतनी सामग्री जुटा रहा हूँ, सो घाते में।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक मित्र ने पूछा, पर क्या धोबियों का अकाल पड़ गया है ?

यहाँ धोबीका खर्च मुझे तो असहय मालूम होता हैं। कालर की कीमत के बराबर धुलाई हो जाती है और इतनी धुलाई देने के बाद भी धोबी की गुलामी करनी पड़ती है। इसकी अपेक्षा अपने हाथ से धोना मैं ज्यादा पसन्द करता हूँ।

स्वावलम्बन की यह खूबी मैं मित्रों को समझा नहीं सका।

मुझे कहना चाहिये कि आखिर धोबी के धंधे में अपने काम लायक कुशलता मैंने प्राप्त कर ली थी और घर की धुलाई धोबी की धुलाई से जरा भी घटिया नहीं होती थी। कालर का कड़ापन और चमक धोबी के धोये कालर से कम न रहती थी। गोखले के पास स्व.महादेव गोविन्द रानडे की प्रसादीरूप एक दुपट्टा था। गोखले उस दुपट्टे को अतिशय जतन से रखते थे और विशेष अवसर पर ही उसका उपयोग करते थे। जॉहनिस्बर्ग में उनके सम्मान में जो भोज दिया गया था, वह एक महत्वपूर्ण अवसर था। उस अवसर पर उन्होंने जो भाषण दिया वह दक्षिण अफ्रीका में उनका बड़े से बड़ा भाषण था । अतएव उस अवसर पर उन्हें उक्त दुपट्टे का उपयोग करना था। उसमें सिलवटें पड़ी हुई थीं और उस पर इस्तरी करनेकी जरुरत थी। धोबीका पता लगाकर उससे तुरन्त इस्तरी कराना सम्भव न था। मैंने अपनी कला का उपयोग करने देने की अनुमति गोखले से चाही।

मैं तुम्हारी वकालत का तो विश्वास कर लूगाँ, पर इस दुपट्टे पर तुम्हें अपनी धोबी कला का उपयोग नहीं करने दूँगा। इस दुपट्टे पर तुम दाग लगा दो तो ? इसकी कीमत तुम जानते हो ? यों कहकर अत्यन्त उल्लास से उन्होंने प्रसादी की कथा मुझे सुनायी।

मैंने फिर बिनती की और दाग न पड़ने देने की जिम्मेदारी ली। मुझे इस्तरी करनेकी अनुमति मिली और अपनी कुशलता का प्रमाण-पत्र मुझे मिल गया ! अब दुनिया मुझे प्रमाण-पत्र न दे तो भी क्या ?

जिस तरह मैं धोबी की गुलामी से छूटा, उसी तरह नाई की गुलामी से भी छूटने का अवसर आ गया। हजामत तो विलायत जानेवाले सब कोई हाथ से बनाना सीख ही लेते हैं, पर कोई बाल छाँटना भी सीखता होगा, इसका मुझे खयाल नहीं है। एक बार प्रिटोरिया में मैं एक अंग्रेज हज्जामकी दुकान पर पहुँचा। उसने मेरी हजामत बनाने से साफ इनकार कर दिया और इनकार करते हुए जो तिरस्कार प्रकट किया, सो घाते में रहा। मुझे दु:ख हुआ। मैं बाजार पहुँचा। मैंने बाल काटनेकी मशीन खरीदी और आईनेके सामने खड़े रहकर बाल काटे। बाल जैसे-तैसे कट तो गये, पर पीछे के बाल काटने में बड़ी कठिनाई हुई। सीधे तो वे कट ही न पाये। कोर्ट में खूब कहकहे लगे।

तुम्हारे बाल ऐसे क्यों हो गये हैं ? सिर पर चूहे तो नहीं चढ़ गये थे ?

मैंने कहा: जी नहीं, मेरे काले सिर को गोरा हज्जाम कैसे छू सकता है ? इसलिए कैसे भी क्यो न हों, अपने हाथसे काटे हुए बाल मुझे अधिक प्रिय हैं।

इस उत्तर से मित्रों को आश्चर्य नहीं हुआ। असल में उस हज्जामका कोई दोष न था। अगर वह काली चमड़ीवालों के बाल काटने लगता तो उसकी रोजी मारी जाती। हम भी अपने अछूतों के बाल ऊँची जातिके हिन्दुओंके हज्जामों को कहाँ काटने देते हैं ? दक्षिण अफ्रीका में मुझे इसका बदला एक नहीं, अनेकों बार मिला है : और चूँकि मैं यह मानता था कि यह हमारे दोष का परिणाम है, इसलिए मुझे इस बात से कभी गुस्सा नहीं आया।

स्वावलम्बन और सादगी के मेरे शौक ने आगे चलकर जो तीव्र स्वरुप धारण किया उसका वर्णन यथास्थान होगा। इस चीज की जड़ तो मेरे अन्दर शुरु से ही थी। उसके फूलने-फलने के लिए केवल सिंचाई की आवश्यकता थी। वह सिंचाई अनायास ही मिल गई।

* * * *

सफाई आन्दोलन ओर अकाल कोष

समाज के एक भी अंग का निरुपयोगी रहना मुझे हमेशा अखरा है। जनता के दोष छिपाकर उसका बचाव करना अथवा दोष दूर किये बिना अधिकार प्राप्त करना मुझे हमेशा अरुचिकर लगा है। इसलिए दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियों पर लगाये जानेवाले एक आरोप का, जिसमें कुछ तथ्य था, इलाज करने का काम मैनें वहाँ के अपने निवासकाल में ही सोच लिया था। हिन्दुस्तानियों पर जब-तब यह आरोप लगाया जाता था कि वे अपने घर-बार साफ नहीं रखते और बहुत गन्दे रहते हैं। इस आरोप को नि:शेष करने के लिए आरम्भमें हिन्दुस्तानियों के मुखिया माने जानेवाले लोगों के घरो में तो सुधार आरम्भ हो ही चुके थे। पर घर-घर घूमने का सिलसिला तब शुरु हुआ जब डरबन में प्लेग के प्रकोप का ड़र पैदा हुआ। इसमें म्युनिसिपालिटी के अधिकारियों का भी सहयोग और सम्मति थी। हमारी सहायता मिलन से उनका काम हलका हो गया और हिन्दुस्तानियों को कम कष्ट उठाने पड़े : क्योंकि साधारणत: जब प्लेग आदिका उपद्रव होता है, तब अधिकारी घबरा जाते हैं और उपायों की योजना में मर्यादा से आगे बढ़ जाते हैं। जो लोग उनकी दृष्टिमें खटकते हैं, उन पर उसका दबाव असह्य हो जाता है। भारतीय समाज ने खुद ही सख्त उपायों से काम लेना शुरु कर दिया था, इसलिए वह इन सख्तियों से बच गया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुझे कुछ कड़वे अनुभव भी हुए। मैंने देखा कि स्थानीय सरकार से अधिकारों की माँग करने में जितनी सरलता से मैं अपने समाज की सहायता पा सकता था, उतनी सरलता से लोगों से उनके कर्तव्यका पालन कराने के काम में सहायता प्राप्त न कर सका। कुछ जगहों पर मेरा अपमान किया जाता, कुछ जगहों पर विनय-पूर्वक उपेक्षा का परिचय दिया जाता। गन्दगी साफ करने के लिए कष्ट उठाना उन्हें बहुत अखरता था। तब पैसा खर्च करने की तो बात ही क्या? लोगों से कराना चाहता है, उससे तो उसे विरोध, तिरस्कार और प्राणों के संकट की भी आशा रखनी चाहिये। सुधारक जिसे सुधार मानता है, समाज उसे बिगाड़ क्यों न माने? अथवा बिगाड़ न माने तो भी उसके प्रति उदासीन क्यों न रहे?

इस आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में घर-बार साफ रखने के महत्व को न्यूनाधिक मात्रा में स्वीकार कर लिया गया। अधिकारियों की दृष्टि में मेरी साख बढ़ी। वे समझ गये कि मेरा धन्धा केवल शिकायतें करना या अधिकार माँगने का ही नहीं है: बल्की शिकायतें करने या अघिकार माँगने में मैं जितना तत्पर हूँ, उतना ही उत्साह और दृढता भीतरी सुधार के लिए भी मुझमें है।

पर अभी समाजकी वृत्ति को दूसरी एक दिशा में विकसित करना बाकी था। इन उपनिवेशवासी भारतीयों को भारतवर्ष के प्रति अपना धर्म भी अवसर आने पर समझना और पालना था। भारतवर्ष तो कंगाल है। लोग धन कमाने के लिए परदेश जाते हैं। उनकी कमाई का कुछ हिस्सा भारतवर्ष को उसकी आपत्ति के समय में मिलना चाहिये। सन् 1817 मैं यहाँ अकाल पड़ा था और सन् 1899 में दुसरा भारी अकाल पड़ा। इन दोनों अकालों के समय दक्षिण अफ्रीका से अच्छी मदद आयी थी। पहले अकाल के समय जितनी रकम इकठ्ठा हो सकी थी, दूसरे अकाल में मौके पर उससे कहीं अधिक रकम इकठ्ठा हुई थी। इस चंदे में हमने अंग्रेजों से भी मदद माँगी थी और उनकी ओर से अच्छा उत्तर मिला था। गिरमिटिया हिन्दुस्तानियों ने भी अपने हिस्से की रकम जमा करायी थी।

इस प्रकार इन दो अकालों के समय जो प्रथा शुरू हुई वह अब तक कायम है, और हम देखते हैं कि जब भारतवर्ष में कोई सार्वजनिक संकट उपस्थित होता है, तब दक्षिण अफ्रीका की ओर से वहाँ बसनेवाले भारतीय हमेशा अच्छी रकमें भेजते हैं।

इस तरह दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की सेवा करते हुए मैं स्वयं धीरे-धीरे कई बातें अनायास सीख रहा था। सत्य एक विशाल वृक्ष है। ज्यों-ज्यों उसकी सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें से अनेक फल पैदा होते दिखायी पड़ते हैं। उसका अन्त ही नहीं होता। हम जैस-जैसे उसकी गहराई में उतरते हैं, वैसे-वैसे उसमें से अधिक रत्न मिलते जाते हैं, सेवा के अवसर प्राप्त होते रहते हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

अकाल सूखा **उदासीन** विरक्त,कंगाल **उपद्रव** उत्पात, हलचल **दोष** आरोप **सख्ती** कठोरता,क्रूरता **साख** इज्जत **आपत्ति** आपदा **सार्वजनिक** सब लोगों के लिए

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) डर्बन में किस रोग का डर फैला था?
(2) दक्षिण अफ्रीका में हिन्दुस्तानियों पर क्या आरोप लगाया जाता था ?
(3) लोग परदेश क्यों जाते हैं?
(4) गांधीजी दक्षिण अफ्रीका क्यों गए?
(5) हज्जाम ने गांधीजी के बाल क्यो नहीं काटे?
(6) दक्षिण अफ्रीकामें किस प्रकार का भेदभाव फैला था?
(7) गांधीजी में कौन कौन से शौक थे?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) विशाल वृक्ष किसे कहा गया है? क्यों?
(2) गांधीजी ने खर्च कम करना शुरु क्यों किया?
(3) गांधीजी का प्रिटोरिया में तिरस्कार क्यों हुआ?
(4) गांधीजी ने कपड़े अपने हाथ से धोना क्यों पसन्द किया?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(1) गांधीजी धोबी की गुलामी से कैसे मुक्त हुए?
(2) गांधीजीने अपने बाल स्वयं क्यों काटे?
(3) गांधीजी के सफाई आंदोलन का क्या परिणाम आया?
(4) गांधीजी के स्वावलंबन और सादगी से क्या सीख मिलती है ?
(5) गांधीजी बारिस्टरों के लिए मजाक का विषय कैसे बने?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

सत्य एक विशाल वृक्ष है। ज्यों -ज्यों उसकी सेवा की जाती है, त्यों -त्यों उसमें से अनेक फल पैदा होते दिखायी पड़ते हैं। उसका अन्त ही नहीं होता।

5. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) गांधीजी किस देश में वकालात करने गए?
(A) अमेरिका (B) दक्षिण अफ्रीका (C) जापान (D) जर्मनी

(2) प्लेग के प्रकोप का डर किस शहर में फैला था।
(A) डरबन (B) जोहानिस्बर्ग (C) प्रिटोरिया (D) केपटाउन

(3) लोगों से कुछ भी काम कराना हो तो क्या रखना चाहिए?
(A) रुपये (B) हिम्मत (C) धीरज (D) मित्रता

(4) गांधीजीने विशाल वृक्ष किसे कहा है?
(A) साहस (B) ईमानदारी (C) सत्य (D) निष्ठा

6. मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

दाग लगना

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

आरम्भ, अपेक्षा, शुरू, पसंद, सम्भव, अनायास, निरुपयोगी, सहयोग, परदेश

8. निम्नलिखित शब्दों के सामानार्थी शब्द लिखिए :

उल्लास, प्रतीत, अवसर, गुस्सा, धीरज, उत्साह

विद्यार्थी-प्रवृति

- विद्यार्थी स्वावलम्बन और सादगी के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

शिक्षक-प्रवृति

- शिक्षक विद्यार्थियों को 'गांधीजी की आत्मकथा' के अन्य अंशों की जानकारी दें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

20 बहुत दिनों के बाद

नागार्जुन

(जन्म :सन् 1911 ई.; निधन : सन् 1998- ई.)

बाबा नागार्जुन के नाम से सम्पूर्ण हिन्दी जगत में लोकप्रिय कवि नागार्जुन का पैतृक नाम वैद्यनाथ मिश्र है। इनका जन्म तरौनी के जिला दरभंगा में हुआ था। काशी और कलकत्ता से इन्होंने साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने पाली भाषा और बौद्ध दर्शन का विशेष अध्ययन श्रीलंका के केलानिया (कोलंबो) के बौद्ध परिवेश में किया। वहीं पर इन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। राहुल सांकृत्यायन के साथ तिब्बत के दुर्गम प्रदेशों की इन्होंने यात्रा की है। बिहार के किसान संघर्षों का नेतृत्व किया और उसी सिलसिले में दस महीने जेल में भी रहे।

प्रकृति और प्रेम से लेकर राजनीति तक उनकी रचनाओं का क्षेत्र फैला हुआ है। शासन की विसंगतियों, लोगों की अवसरवादी प्रकृति आदि पर इन्होंने खुलकर व्यंग्य किया है। जनश्रम की महिमा के गायक नागार्जुन की कविताओं में व्यंग्य का स्वर मुखर है। इन्होंने अपनी कविताओं में सरल भाषा का प्रयोग किया है। इनके काव्य में विषयगत विविधता के दर्शन होते हैं। इन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली, संस्कृत और बंगला भाषा में भी रचनाएँ की हैं। कविता के साथ ही कथा-साहित्य में भी इनका बड़ा योगदान रहा है। आपके 'पत्रहीन नग्नगाछ' मैथिली कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है। 'युगधारा,' 'प्यासी पथराई आँखें,' 'सतरंगे पंखों-वाली' 'तालाब की मछलियाँ,' 'भस्मांकुर' इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। 'बलचनमा,' 'रतिनाथ की चाची,' 'नई पौध,' 'बाबा बटेसरनाथ,' 'दुखमोचन,' 'उग्रतारा,' प्रमुख उपन्यास हैं।

प्रस्तुत कविता में कवि का अपना मातृभूमि प्रेम स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। आज की शहरी संस्कृति की चमक-दमक में भी अपना गाँव, अपनी मातृभूमि का आकर्षण, उसके प्रति मोह कम नहीं होता है। बड़ी ही सीधी-सादी सरल और सहज भाषा में गाँव का सटीक और मार्मिक चित्र उभर आया है।

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी भर देखी
पकी-सुनहली फसलों की मुसकान
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैं जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे-टटके फूल
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवईं पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैंने जी भर
तालमखाना खाया गन्ने चूसे जी भर
बहुत दिनों के बाद।

अब की मैंने जी भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू-पर
बहुत दिनों के बाद।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

मुसकान मुस्कराहट **स्मित पगदंडी** सकरा रास्ता **कोकिल** कोमल **भू** पृथ्वी **तान** आवाज

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

(1) स्त्रियाँ धान कूटते समय क्या करती हैं।?

(2) कविने जी भर कर क्या देखा ?

(3) पगडंडी कैसी थी ?

(4) कवि ने किसके फूल सूंघे ?

(5) कवि ने कैसी फसलें देखीं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1)कवि ने किन किन इन्द्रिग्राह्य संवेदनों का भोग किया ?

(2) स्त्रियाँ क्या कर रहीं थी ? उनकी आवाज कैसी थी ?

(3) किशोरियों के कार्य का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ?

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए।

(1) मौलसिरी के फूल कैसे थे ? कवि ने उनका किस प्रकार उपयोग किया ?

(2) कवि ने ग्रामीण क्षेत्र का कैसा वर्णन किया है ?

(3) बहुत दिनों के बाद कवि ने क्या-क्या अनुभव किए ?

(4) ग्राम्य जीवन के कार्यों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

4. पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

अब की मैं जी भर सुन पाया।
धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान
बहुत दिनों के बाद।

5. सही जोड़े मिलाइए ।

क	ख
(1) किशोरियों की कोकिल कंठी	(1) फसलों की मुसकान
(2) जी भर सूँघे	(2) गँवईं पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
(3) जी भर देखी	(3) तान
(4) जी भर छू पाया	(4) ताजे टटके फूल

6. समानार्थी शब्द लिखिए ।

धूल, फूल, पगडंडी, भू

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी काव्य का कक्षा में समूह गान करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों को ग्राम्य जीवन के विषय में बताएँ ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

21 दर्द की पृष्ठभूमि में

मीरा सीकरी (जन्म : 1981)

मीरा सीकरी का जन्म गुजरांवाला वर्तमान पश्चिमी पाकिस्तान में हुआ था। आपने दिल्ली वि.वि.से उच्च शिक्षा प्राप्त की। स्त्री विमर्श पर आपका विशेष रुझान है। एक संवेदनशील रचनाकार के रूप में आपने अपनी रचनाओं में स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को चित्रित किया है। आपके यात्रा वर्णन भी विशेष उल्लेखनीय हैं।

पैंतरे तथा अन्य कहानियाँ, 'अनकही' 'बलात्कार' तथा अन्य कहानियाँ, मीरा सीकरी की यादगारी कहानियाँ, 'प्रेम सम्बन्धों की कहानियाँ,' आपके कहानी संग्रह हैं। 'गलती कहाँ?' आपका उपन्यास और 'एक रंग होता है नीला' आपका यात्रावृत्त हैं।

'दर्द की पृष्टभूमि में' अंदमान के द्वीप समूह की यात्रा का वर्णन है। पोर्ट ब्लेयर उसकी राजधानी है। चार साढ़े चार साल पहले आई भयानक सुनामी के बाद वह पुन: पूर्ववत हो रहा है पर लेखिका अपनी यात्रा में उस तबाही के दर्द को महसूस करती है। सेल्यूलर जेल का प्रकाश और ध्वनि शॉ उन पुरानी यादों को ताजा कर देता है, जिसके अंतर्गत् यातनाएँ कालापानी की सजा पानेवाले हमारे स्वातं‍त्र्य सेनानियों ने भोगी थीं। फिर भी यहाँ मौसम और विविध द्वीपों के रेतीले तटों की खूबसूरती उन्हें आकर्षित करती है। यह द्वीप समुद्र अपने आगोश में इतिहास को समेटे हुए हैं। अंत में लेखिका का यह कथन है कि 'पोर्ट ब्लेयर की भूमि अपने जख्मों को लाख छिपाने की कोशिश करे वे छिप नहीं पाते। उन सूखे जख्मों से निकलती टीस की ध्वनि को सुने बिना आप रह नहीं सकते।' इस यात्रा वर्णन में अनुभव की प्रामाणिकता सहज देखी जा सकती है।

कुछ ही देर में हम पोर्ट ब्लेयर पर उतरने वाले हैं, उद्घोषणा सुनकर मेरी आँखों में एक चमक-सी आ गयी है। अभी तो ग्यारह ही बजे हैं इसका मतलब है, ज्यादा-सा-ज्यादा आधे घंटे में हम धरती पर होंगे। मैं खिड़की वाली सीट पर नहीं थी पर बीच वाली कुर्सी से भी खिले-खुले दिन में नीचे विशाल समुद्र दिखायी दे रहा था। समुद्र-ही समुद्र । कश्मीर की डल झील और जेहलम में तैरती नौकाओं जैसे द्वीप-उपद्वीपों से सुसज्जित असीम सागर-असीम कमल-ताल सा। दूरी सौंन्दर्य में आकर्षण भर देती है। हरे-हरे गुच्छों वाला यह समुद्र तो बहुत लुभावना लग रहा था। तभी भीतर बैठे सुनामी के भय ने झाँका पर इस समय भय नहीं, उल्लास हावी था। मॉरिशस में पैरा सेलिंग नहीं कर पायी थी, इस समय लग रहा था समुद्र के विशाल प्रांगण में उन्मुक्त आकाश में लहराते हुए उड़ने का अपना सुख तो होगा ही।

दिल्ली से चले थे तो सर्दी शुरू हो गयी थी इसलिए एक हल्की जैकेट पहन ली थी, पर विमान से उतरे तो तेज धूप और उसके तीखेपन को सन्तुलित करती हवा ने स्वागत किया। साथ ही यह चेतावनी भी दे दी कि यहाँ जैकेट-वैकेट का कोई काम नहीं।

गाड़ी में बैठे-बैठे समुद्र के साथ-साथ चलना अच्छा लग रहा था कि ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। पता चला कि हम 'कारवाइन कोव बीच' पर हैं। सामान्य जन की पहुँच में होने से अच्छी खासी रौनक लगी हुई थी। 'बीच' की रेत पर पहुँचने के लिए बनी सीढ़ियाँ और चबूतरे काले पड़ रहे थे। चार साढ़े चार साल बाद भी सुनामी के दिए घाव इन सीढ़ियों पर अंकित थे। ऊँचे चबूतरे पर पाँव लटका कर बैठ गयी हूँ-तट के दोनों तरफ घने पेड़ समुद्र को ब्रेकेट में बाँध जैसे वहाँ आए समुद्र प्रेमियों को अपनी सीमाओं में रहने का संकेत कर रहे हैं। यहाँ तट पर काला पानी साफ दिखायी पड़ रहा है। लगता है पानी में किसी ने राख घोल दी हो। इसीलिए तो इस प्रदेश को काला पानी की संज्ञा दी गयी होगी। पर दूर-दूर तक समुद्र को देखो तो वही पानी नीले आसमानी और मयूरी रंग की आभा ले लेता है। धीरे-धीरे शाम उतर रही है- धूप साथ छोड़ रही है। धूप के ढलने के साथ काली पड़ी सीढ़ियों और चबूतरों पर काली छायाएँ उसे और गहरा रही हैं। मैं ड्राइवर के पास जाकर पूछती हूँ- "मरीना पार्क वाले तट के समान इसका पुनर्निर्माण नहीं हुआ?"

"नहीं, बस मरम्मत हुई है।"

ड्राइवर अभी युवक ही है। सुनामी के 'कहर' के समय वह यहीं अंदमान में ही था। उसका किशोर मन उस दु:स्वप्न की याद में कह उठता है, "मैडम मुझे लगा था, मैं अकेला ही मर जाऊँगा। मैं चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था मैं अकेला ही मर जाऊँगा, मेरी माँ तो विशाखापट्टनम में है। पर यहाँ माल की तबाही हुई जान नहीं गयी। "

कह कर वह एक लम्बी साँस भरता है, जिसमें पुराना दर्द और बचे रहने की खुशी मौजूद है। वहीं एक छोटे से टापू पर एक अकेला पेड़ अपने अस्तित्व को बचाए हुए बहुत कुछ कह रहा है। अकेला पेड़ और ड्राइवर शीनू अपने-अपने अकेले अनुभवों में सहज मानवीय बेचैनी और बचने की बहुत -सी कहानियाँ लिए हुए है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राख घुला काला पानी, सुनामी की दु:खद स्मृतियों और उतरती शाम में मन उदास हो गया था, या दिनभर की थकान भीतर से बाहर आ गयी थी। मन चाहने लगा था कि होटल वापिस लौटा जाए, पर तभी आयोजक ने बताया था कि ध्वनि और प्रकाश शो देखने के बाद ही वापिस जाएँगे। ड्राइवर सेल्यूलर जेल के सामने वीर सावरकर पार्क में हमें ले आया था। पार्क में घास के ऊँचे नीचे टीलों से चाहे समुद्र देखो या गोलघर में शहीदों की तस्वीरें, यहाँ का पुराना इतिहास अन्तर्वर्ती अदृश्य धारा की तरह से हर समय साथ हो लेता है। मन की चहकती लय में विषाद की भीड़ लग गयी है। इस चुप्पी को आयोजक यह कहकर तोड़ता है कि टिकटें लेने के लिए महिलाओं को जाना पड़ेगा। मुझे छ: टिकटें लानी हैं। खिड़की पर एक सैनिक अपना परिचय पत्र दिखाते हुए छूट वाली टिकटें माँग रहा है- मैं कह उठती हूँ, " यह शो तो प्रत्येक भारतीय को नि:शुल्क दिखाया जाना चाहिए।" वह सैनिक मुझसे पूछता है कि आपने कितनी टिकटें लेनी हैं और मुझसे पैसे लेकर छूट वाली छ: टिकटें ले देता है। बात कुछ पैसों की नहीं, उस वृत्ति की है जिससे मेरा मन उस सैनिक मात्र के प्रति नहीं सम्पूर्ण सेना के प्रति कृतज्ञता से भर उठता है, जिनके बल पर हमारी स्वतन्त्रता और सुरक्षा सुरक्षित है।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम कालापानी के नाम से जानी जाने वाली सेल्यूलर जेल के खुले प्रांगण में विदेशी शासन के दौरान दंड-प्राप्त क्रान्तिकारियों की कारावासकालीन यातना को उजागर करता है।

प्रांगण में कार्यक्रम शुरू हो चुका है - जेल के पेड़ों और दीवारों की ईंटों की साक्षी में अवसादमय स्मृतियों की पीड़ा का इतिहास ध्वनि और प्रकाश के बलाबल में गंभीर सन्नाटे में गूँज रहा है- देखते, सुनते दर्शकों की च...च....च....च ध्वनियाँ साफ सुनी जा सकती हैं। स्वतन्त्रता की हमारी इमारत की नींव बने इन स्वतन्त्रता सेनानियों-शहीदों ने कितने कष्ट उठाए कि फुसफुसाहटें, शो के स्वर में घुल-मिल जाती है। अँधेरा और उजाला एक समय पर है कि इनमें बारिस का विषम स्वर लग जाता है। पर कोई भी दर्शक अपने स्थान से उठता नहीं। हाँ छतरियाँ खुल जाती हैं। पर बारिश छतरियों से ज्यादा बलशाली है। कुछ लोग पेड़ों के नीचे चले गए पर कार्यक्रम आगे बढ़ रहा है। पेड़ों से पानी टपक रहा है। छतरियों से पानी की धाराएँ बह रही हैं, भीगते दर्शकों की संवेदना क्रांन्तिकारियों से हटकर अपनी पर केन्द्रित हो जाती है। लगभग सभी गेट के पास आकर रुक गए हैं। हम वापस लौट जाने के लिए पार्किंग पर आते हैं- ड्राइवर कह रहा है 'शो' फिर से हो रहा है पर अब मन अपनी लय खो चुका है, लौटना नहीं हो सकता।

पोर्ट ब्लेयर की खूबसूरती उसके 'रेतीले तट' और छोटे-बड़े टापू में हैं। उन्हीं में से तीन टापुओं को देखने के लिए 'जंगली घाटी' से बेड़ा लिया था। शुक्र है धूप निकल आयी थी, वर्ना उन्हें देखना सम्भव न हो पाता।

शायद मौसम को अपनी ही नजर लगी गयी-धूप छाया का खेल शुरु हो गया और छाया के साथ बारिस भी खेल में शामिल हो गयी. कर्मी दल के युवक से मैंने पूछा, "नवम्बर में बारिश ?" उसका जवाब था, "मानसून का मौसम तो नहीं पर यहाँ कभी भी बारिश हो जाती है।" छतरियाँ खोल ली थीं, बेड़े में आगे बैठे होने के कारण बारिश और ऊँची तरंगों की उछाल का सीधा हमला हो रहा था। विराट समुद्र पर आक्रमण करती ये लहरें बेड़े को ज्यादा ही हिला रही थीं। अवचेतन में बैठा सुनामी का भय बेचैन कर रहा था। "मैं अकेला ही मर जाऊँगा।" -शीबू का वाक्य, कानों में गूंजने लगता है। बेड़ा धीर-धीरे आगे बढ़ रहा है। "वो सामने वाइपर द्वीप है" वहीं बैठा युवक मुझे बतलाता है और हम वाइपर द्वीप की जेट्टी पर हैं। पन्द्रह मिनट का समय यहाँ के लिए दिया है। बारिश में उतरने का मन नही होता. । पर यहाँ आये हैं तो एक नजर भीतर डाल ही लेनी चाहिए। छतरी इसलिए अन्दर जाते हैं-चरमराती दीवारें, सीढ़ियाँ, ऊपर माउंटी और दरवाजा-सा। कुछ समझ नहीं आता-कुछ लिखा हुआ भी नहीं है। बारिस से बचने के लिए बेड़े की तरफ सब भाग रहे हैं पर खैर तो वहाँ भी नहीं है। पर जहाज के पंछी को अन्तत: जहाज पर ही आना है। अभी धरती का साथ मौजूद है और देह में प्राण कान नाविक की आवाज की तरफ खिंच गए हैं जो कह रहा है, "बहुत शुरू में कैदियों के लिए जेल इसी टापू पर थी। आपने वह सीढ़ियाँ चढ़कर जो ऊपर देखा होगा,वह ऐतिहासिक फाँसीघर था। वायसराय लार्ड मेयो का खून करने वाले कैदी पठान शेर अली को इसी द्वीप पर फाँसी दी गयी थी। "

बेड़े में तो सवार होना ही था और उसके चलने के साथ ही लहरों की उठा-पटक भी शुरू हो जाती है और दिल का ऊँचे-नीचे होना भी। नाविक समुदाय में से निर्देश आता है, "आज हाई टाइड है सब बैठ जाइए।" हम ऊँची तरंगों में झूलते बेड़े का आनन्द उठा रहे हैं तो बच्चे जो आगे वाले स्तम्भ को पकड़े हैं तरंगों की फेनिल लयात्मक हँसी के साथ अपनी हँसी मिला रहे हैं। बेड़े के पिछले हिस्से में नए ब्याहे जोड़े ने अपनी दुल्हन को सुरक्षित होने का अहसास देने के लिए अपनी बाँहों के घेरे में ले लिया है। मध्य भाग में बैठे कुछ अधेड़ और वृद्धों ने गायत्री का जाप शुरू कर दिया है। होंठ तो बहुत लोगों के हिल रहे हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भय से लाल और पीले पड़े चेहरे बारिश, हाई टाइड–ऐसे में मुझे साधनों के अभाव के दिनों में समुद्री यात्रा करने वाली साहसी नाविकों की याद हो आती है। अपने में हिम्मत और धैर्य सँजोने के लिए मैं आँखें बन्द कर लेती हूँ (शुतुर्मुगी प्रयास) पीछे चलता प्रार्थना का स्वर इस समय भी यह सोच कर होठों पर मुस्कान ला देता है कि जान पर बनी हो तभी वह परम शक्ति याद हो आती है।

बड़े के क्रू को कोई खतरा महसूस नहीं हो रहा, अभ्यस्त हैं वे इस सब के, पर अधिकांश यात्री समुद्र की इस छेड़छाड़ से परेशान हो रहे हैं। प्रार्थना रंग लाती है क्योंकि कर्मी दल में से एक लड़के ने रस्सी को निकाल लिया। बहुत मोटी लम्बी रस्सी और सामने द्वीप भी नजर आ रहा है – इतनी दूर हैं द्वीप फिर बीच समुद्र में उसने रस्सी क्यों डाल दी ? पता चला यहाँ उथला समुद्र है और किनारे तक पहुँचने के लिए छोटी नौका पर जाना होगा। पर छोटी नौका में उतरते व्यक्तियों के हो हल्ले से, समुद्र में खड़े होने पर भी डोलते बेड़े की तरह से मन दुविधाग्रस्त हो जाता है। हमारा आयोजक कह रहा है तट पर पहुँचे डॉक्टर साहेब का फोन आया है, यहाँ कुछ नहीं है, आप वहीं रह जाएँ। पर सामने द्वीप से आवाज देती धूप की चमक, चाय की गर्माहट और पाँव के नीचे धरती के स्पर्श के आकर्षण की जीत होती है। ठीक निर्णय ले लेना कितनी बड़ी बात होती है ! नार्थ से आने का मन नहीं हो रहा – हाई टाइड न होती तो यहाँ नौका से कोरल्ज भी देखा जाता पर उसकी कमी को पूरा करने के लिए हमारी **'एक साथिन'** किनारे से कोरल्ज और पत्थर चुन रही है मेरे यह कहने के बावजूद कि कोरल्ज ले जाना अपराध है।

फिर से हम समुद्र में चल रहे हैं पर अब हमें समुद्र के मसखरी अन्दाज समझ में आ गये हैं – वह गुस्से में नहीं है, बस जरा अपने दबदबे को बनाए रखना चाहता है।" "समुद्र के ये तेवर कब शान्त होंगे ?" मैं मास्टर से पूछती हूँ। "वापिस लौटने में सब ठीक हो जाएगा।" वह कहता है।

तीन बजने को थे जब हम रौस द्वीप पहुँचे। पता चला 1858 से लेकर 1945 तक यह अंग्रेजों और जापानियों की राजधानी रहा। भारतीय नौसेना द्वारा रक्षित यह द्वीप आज भी अपनी दिखावटी शान–शौक़त बनाए हुए है। मटियाले और गेरुए रंग से लिपा–पुता तराशा द्वीप, जहाँ पहुँचते ही मोर स्वागत कर रहा है;जिसके प्रशस्त रास्तों पर चलते हुए उन क्रान्तिकारियों कैदियों की याद ताज़ा हो जाती है जिन्होंने इसको बनाने में अपना खून पसीना बहाया था। अनुशासन के नाम पर उनके प्रति अगर अँगजोंने अत्याचारी व्यवहार न किया होता तो इस राजधानी को देख मन से 'आह' नहीं 'वाह' निकलती ।

लिखित कार्यक्रम के अनुसार अगले दिन हैवलॉक द्वीप के सुन्दर तट पर जाना था पर मौसम की खराबी के कारण टिकटों का वितरण नहीं किया गया। वहाँ न पहुँच पाने का मतलब था डॉल्फिन मछलियों के खेलों को देखने से भी वंचित हो जाना। प्रकृतिक आपदाओं को 'नियति' मानकर स्वीकार करने के इतर अन्य कोई रास्ता भी तो नहीं होता।

हैवलॉक के बदले हम 'वंडूर बीच' पहुँचे थे। अपने वर्तमान रूप में यह बीच, मानवीय दखलन्दाजी से अछूता अपने प्राकृतिक अस्तित्व को बनाए हुए है। 'सुनामी' की मार को इसने खूब सहा लगता है। पेड़ के ठूँठ पर बैठी नारियल पानी पीते हुए लकड़ी के गोल 'रेस्तराँ ' को देख रही हूँ, जिसको बोट मैन 'बार हुआ करता था यह' कह रहा है। उसकी टूटी–फूटी लकड़ी की सीढ़ी से गलियारे में पहुँच दूर तक फैले समुद्र को देख रही हूँ। ठूँठ हुए पेड़ जगह–जगह दिल्ली हाट में रक्खे मूढ़ों–से बिखरे हुए हैं। सुनामी के बाद, अपने बचे हुए उपकरणों से तट ने अपना श्रृंगार कर लिया है। कोरल्ज दिखाने के लिए नावें चल रही हैं। एक सप्ताह पहले ही रेहड़ी वालों को चलती फिरती रहड़ियों को लगाने की इजाजत मिल गयी है। पर्यावरण को दूषित करने के लिए पोलिथीन का कचरा न फेंका जाए, इसकी देख रेख के लिए सेवारत महिलाएँ आ गयी हैं। जिन्दगी ने अपनी लय ले ली है। विदेशी सैलानी लगभग नहीं के बराबर है। यों हरे भरे गुच्छों को लिए समुद्र हर किसी का स्वागत कर रहा है।

यह इत्तफाक ही कहा जाएगा कि टुअर पैकेज के पहले दिन 'सेल्यूलर जेल' के प्रांगण में यहाँ का 'ध्वनि और प्रकाश' कार्यक्रम देखा और अन्तिम दिन सेल्यूलर जेल । इस विशाल जेल को देख इसके वास्तुकार की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता। उसका बुद्धि कौशल कि कतारों मैं कैदी किसी भी तरह एक–दूसरे को देख नहीं सकते, बात करना तो दूर की बात है। इन कैदियों को १३.५ फीट लम्बी और 7 फिट चौड़ी कोठरी में रात के बारह घंटे बन्द रहना पड़ता था। यहाँ के यातनादायक ब्यौरे दिल हिला देने वाले हैं। आज भी यहाँ की दीवारें और खिड़कियाँ इस बात की गवाह हैं।

पोर्ट ब्लेयर की भूमि अपने जख्मों को लाख छिपाने की कोशिश करे, वे छिप नहीं पाते। यद्यपि वे जख्म सूख गये हैं, पर उनके दाग यह बता रहे हैं कि यहाँ की साँस तो सामान्य हो चुकी है, पर उसके साथ निकलती टीस की ध्वनि को सुने बिना आप रह नहीं सकते।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

उन्मुक्त स्वतंत्र, खुला **दखंलदाजी** टोकना, रोकना **जिजीविषा** जिने की अदम्य इच्छा **आभा** चमक **तबाही** बरबादी **अवसाद** उदासी **इत्तफाक** संयोग

मुहावरे

शुतुरमुर्गी प्रयास विपत्ति से मुँह छिपाना **आँखों में चमक आना** प्रसन्नता

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) यात्रा की शुरुआत में दिल्ली का मौसम कैसा था ?

(2) किस तट पर काला पानी साफ दिखाई पड़ रहा था ?

(3) लेखिका की आँखों में चमक कब आ गई ?

(4) वीर सावरकर पार्क कहाँ पर है ?

(5) पोर्ट ब्लेयर के तीन टापुओं को देखने के लिए बेड़ा कहाँ से लिया गया था ?

(6) नाविक के अनुसार बहुत शरू में कैदियों के लिए जेल किस टापू पर थी ?

(7) हाई टाइड अर्थात् क्या ?

(8) टुअर पैकेज के पहले दिन और अन्तिम दिन लेखिका ने क्या देखा ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) होटल से थोड़ा बाहर निकलते ही क्या-क्या था ?

(2) हाईटाइड में बेड़े की दशा कैसी हो रही थी ?

(3) रौस द्वीप पर किसकी राजधानी थी ?

(4) वंडूर बीच के बारे में लेखिका ने क्या लिखा है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) कारवाइन कोव बीच का सौन्दर्य वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

(2) 'सेल्यूलर जेल' की विशेषता बताइए।

(3) पोर्टब्लेयर के प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में विस्तार से लिखिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

पोर्टब्लेयर की भूमि अपने जख्मों को लाख छिपाने की कोशिश करे वे छिप नहीं पाते।

5. मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

इत्तफाक होना, खून-पसीना बहाना, तबाह होना, आँखों में चमक आना

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

उल्लास, आकाश, तट, ज़ख़्म, कोशिश, दर्द

7. विरोधी शब्द लिखिए :

धूप, गहरा, उजाला, दूर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. सही विकल्प चुनकर सही उत्तर दीजिए :

(1) अंदमान-निकोबार द्विप समूह की राजधानी कोन-सी है ?

(A) रौस (B) कँवरती (C) पोर्ट ब्लेयर (D) पुडुचेरी

(2) लंच के बाद साइट सीइंग के लिए जाते समय साथ में क्या ले जाना था ?

(A) दूरबीन (B) पानी की बोतल (C) मफलर (D) छतरी

(3) वायसराय लोर्ड मेयो का खून किसने किया था ?

(A) भगतसिंह (B) अब्बासअली (C) पठान शेर अली (D) सावरकर

(4) लेखिका ओर उनके साथी हैवलोक के बदले कहाँ पहुँच गये थे ?

(A) वंडूर बीच (B) रौस द्वीप (C) मरीना पार्क (D) कारवाइन कोव बीच

विद्यार्थी प्रवृति

- वर्ग में प्रवास की चर्चा कीजिए।
- प्रवास आयोजन की पूर्व तैयारी की चर्चा कीजिए।
- अपने राज्य के प्रवास योग्य स्थलों की सूची तैयार कीजिए।

शिक्षक प्रवृति

- प्रवास आयोजन एवं प्रवास स्थलों की सूची तैयार करने में विद्यार्थियों की सहायता करें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

22 दो कविताएँ

केदारनाथ अग्रवाल

(जन्म: सन् 1901 ई,; निधन : सन 2000 ई.)

केदारनाथ अग्रवालजी का जन्म बाँदा जिले के कमासीन नामक गाँव में हुआ था। प्रयाग और आग्रा विश्वविद्यालय से बी.ए., एल.एल.बी., की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के बाद वे बाँदा में वकालत करते रहे। 'हंस' और 'नया साहित्य' जैसी प्रगतिवादी पत्रिकाओं में इनकी कविताएँ बराबर छपती रही हैं। हिन्दी के समर्थ प्रगतिवादी कवियों में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। नई कविता के साथ भी इनका निकट का संबंध रहा है।? वर्ग विहीन समाजरचना का संकल्प इनकी रचनाओं से स्पष्ट प्रक्ट होता हैं।

शैलीकार के रूप में मुक्तछंद और गीतिछंद का सफल प्रयोग किया है। हकीकतों को खुली और चुभती हुई सीधी-सरल भाषा में व्यक्त कर देते हैं। इनकी कविता में किसी भी प्रकार की कृत्रिमता नहीं है। 'नींद के बादल,' 'अपूर्वा,' 'युग की गंगा,' 'लोक और परलोक,' 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' आदि उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं। प्रकृति प्रेम एवं सौन्दर्य चेतना से युक्त उनकी कविताएँ बड़ी ही मार्मिक हैं। अनूढ़ा शब्दचयन और भावाभिव्यक्ति में चित्रात्मकता इनकी कविता की विशेषताएँ हैं।

'अच्छा होता' कविता में कवि ने आदमी में आदमियत की कल्पना की है। कवि कहता है कि अगर आदमी में अवगुण न होते तो अच्छा होता। 'सितार-संगीत की रात' कविता में कवि ने संगीत समारोह के दृश्य को प्रतीकों के माध्यम से चारों ओर फैले प्रसन्नता के माहोल को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उभारा है।

---

1. अच्छा होता

अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
परार्थी-
पक्का-
और नियति का सच्चा होता
न स्वार्थ का चहबच्चा-
न दगैल-दागी-
न चरित्र का कच्चा होता।
अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
दिलदार-
दिलेर-
और हृदय की थाती होता,
न ईमान का घाती-
ठगैत ठाकुर
न मौत का बराती होता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. सितार -संगीत की रात

आग के ओंठ बोलते हैं।
सितार के बोल,
खुलती चली जाती हैं
शहद की पंखुरियाँ,
चूमती अँगुलियों के नृत्य पर,
राग-पर राग करते हैं किलोल,
रात के खुले वक्ष पर,
चन्द्रमा के साथ,
शताब्दियाँ झाँकती हैं
अनंत की खिड़कियों से,
संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है,
हर्ष का हंस दूध पर तैरता है,
जिस पर सवार भूमि की सरस्वती
काव्य-लोक में विचरण करती है।

शब्दार्थ-टिप्पण

अच्छा भला **परार्थी** दूसरे का उपकार या भलाई करने वाला **पक्का** अनुभवी **नियति** स्वभाव, प्रकृति **दगैल** दगाबाज **दागी** कलंकित **चरित्र** स्वभाव, आचरण **दिलेर** हिम्मतवाला **थाती** धरोहर **घाती** घातक, धोखा देना **ठगैत** ठगनेवाला **अनंत** जिसका अंत न हो, नित्य **किलोल** क्रीडा **हर्ष** खुशी **विचरण** घूमना-फिरना

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) 'अच्छा होता' कविता के कवि कौन हैं ?
(2) नियति का अच्छा होता तो आदमी कैसा होता ?
(3) चरित्र का कच्चा न होता तो आदमी कैसा होता ?
(4) 'चरित्र का कच्चा' का क्या तात्पर्य है ?
(5) 'मौत का बाराती' कहने का क्या तात्पर्य है ?
(6) 'कौमार्य बरसता है' शब्दों द्वारा कवि क्या कहना चाहता है ?
(7) हंस पर कौन सवार है ?
(8) भूमि लोक की सरस्वति कहाँ विचरण करती है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'अच्छा होता' काव्य के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
(2) 'अच्छा होता' काव्य में कवि ने मनुष्य की किन-किन विशेषताओं को उजागर किया है ?
(3) 'शताब्दियाँ झाँकती हैं ' कवि के इस कथन में छिपे भाव की व्याख्या कीजिए।

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) 'सितार-संगीत की रात' कविता के मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।
(2) 'आग के ओंठ' का काव्य सौन्दर्य बताइए।
(3) 'अच्छा होता' कविता का भाव समझाकर अपने शब्दों में लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. काव्य-पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है।

(2) आग के ओंठ बोलते हैं सितार के बोल

(3) अगर आदमी आदमी के लिए.

5. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) ....होता, अगर आदमी, आदमी के लिए।

(A) बुरा (B) अच्छा (C) ठीक (D) सच्चा

(1) अनंत की खिड़कियों से कौन झाँकता है ?

(A) शताब्दियाँ (B) कलाकार (C) कवि (D) आदमी

(1) ....काव्य-लोक में विचरण करती हैं।

(A) लक्ष्मी (B) सरस्वती (C) श्रीमती (D) वाणी

6. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

आदमी होना, दाग लगना

7. विलोम शब्द लिखिए :

पक्का, परार्थी, सच्चा, हर्ष

8. समानार्थी शब्द लिखिए :

नियति, हृदय, शहद, सरस्वती

विद्यार्थी--प्रवृत्ति

- 'अच्छा होता' कविता में निहित मूलभाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए।
- केदारनाथ अग्रवाल की अन्य कविताएँ पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- केदारनाथ अग्रवाल की जीवनी एवं रचनाओं का परिचय दीजिए ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

23 वीर बादल

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

(जन्मः सन् 1891 ई.; मृत्यु सन् 1960 ई :)

चतुरसेन शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश के अनूपशहर में हुआ था। इन्होंने आयुर्वेद की ऊँची परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं और वैद्यकी में सफल भी रहे, परन्तु इनकी रुचि शुरू से ही साहित्य की ओर थी। इन्होंने हिन्दी गद्य के विभिन्न रूपों को अंगीकार किया, जिनमें कहानी, उपन्यास, नाटक तथा गद्य काव्य मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त राजनीति, चिकित्सा, कामशास्त्र तथा पाकशास्त्र जैसे विषयों को भी अपने लेखन का आधार बनाया।

चतुरसेन लिखित कहानियों की विषयभूमि बौद्धकालीन, राजपूत कालीन एवं मुगलकालीन समाज और संस्कृति है। इनकी लगभग 450 कहानियों में कुछ थोड़ी-सी कहानियाँ शिल्प, गठन और मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से सफल बन पायी हैं। इनकी कहानियों में रोमानी 'इतिहास-रस' परिलक्षित होता है। कुछ कहानियों में इनका संपूर्ण कहानी साहित्य पाँच भागों में प्रकाशित हुआ है- (1) 'बाहर-भीतर' (2) 'दु:खवा मैं कासे कहूँ सजनी' (3) 'बाहर-भीतर' (4) 'सोया हुआ शहर और (5) 'कहानी खत्म हो गई'। 'वयं रक्षामः','वैशाली की नगरवधू', 'सोना और खून,' (5भाग) आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। कथा का अद्भुत प्रवाह, वर्णन में सजीवता और भाषा में लालित्य इनकी विशेषताएँ हैं।

प्रस्तुत कहानी 'वीर बादल' इनकी एक प्रतिनिधि रचना है। इस कहानी की घटनाएँ आदर्श और प्रतिष्ठा के लिए लड़े गए युद्धों का एक अद्भूत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। राजपूती शौर्य का चित्रण जैसा एक कहानी में हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। मध्यकालीन समाज के जीवन मूल्यों को प्रकाशित करनेवाली यह इनकी एक उत्तम रचना है।

तेरहवीं शताब्दी बीत रही थी। निर्दय और इन्द्रियलोलुप पठान अलाउदीन खिलजी भारत का सम्राट था। उसने अपनी दुर्घर्ष सेना के बल पर राजपुताना को कुचल डाला था, और वह राजपुताने की बची-खुची आबरु को लूटने के लिए दलबल सहित चित्तौड़ पर चढ़ आया था। चित्तौड़ पर दुर्भाग्य उदय हुआ था। इस बार उसका इरादा चित्तौड़-विजय का न था, प्रत्युत चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी को हरण करने का था। चित्तौड़ की आन्तरिक अवस्था अच्छी न थी, राणा लक्ष्मणसिंह नाबालिग थे और उनके चाचा लक्ष्मणसिंह चित्तौड़ के कर्ता-घर्ता थे। पद्मिनी भीमसिंह की पत्नी थी। वह पद्मराग मणि के समान सुन्दर और कान्तिवाली थी। उसके सौंन्दर्य की तारीफ राजपुताने-भर में फैली हुई थी और सौंन्दर्य लोलुप अलाउद्दीन खिलजी पूरी शक्ति से उस सौंन्दर्य-कुसुम को लूटने चित्तौड़ पर चढ़ आया था।

किला चारों ओर से घिरा हुआ था और किसी भी आदमी का किले से बाहर जाना या बाहर से भीतर आना सम्भव न था। किले में खाद्य-सामग्री अभी इतनी थी कि वर्षो घेरा पड़ा रहने पर भी उसकी कमी न होती। परन्तु पानी का अभाव था। लोगों ने प्रथम स्नान आदि बन्द किए। अब पीने में भी किफायत पर नौबत आ पहुँची। अलाउद्दीन को चित्तौड़ को घेरे नौ मास हो चुके थे। किला फतह होने की कोई युक्ति सूझ न पड़ती थी। भारतीय राजनीति का वातावरण उस समय अत्यन्त क्षुब्ध था।

मालवा, गुजरात, बंगाल और दिल्ली से अशान्तिपूर्ण खबरें आ रही थीं। अलाउद्दीन ने समझा कि सौंन्दर्य की देवी के पीछे हिन्द का तख्त ही न खोना पड़े वह जल्द से जल्द चित्तौड़ के मामले को खत्म करने का मन्सूबा बांधने लगा। मन ही मन उसने कपट का जाल बिछाया और फिर सुलह का झंडा लेकर किले में संवाद भेज दिया।

सुलह का झंडा देखकर किले का फाटक खु ल गया। दूत भीत मुद्रा से किले में गया। विकट आकृति राजपूत उसे सन्देह और क्रोध से देख रहे थे। उसने राणा भीमसिंह की राजसभा में जाकर विनयपूर्वक यह निवेदन किया कि सुलतान चित्तौड़ के राणा से बराबर की दोस्ती करना चाहते हैं। उनकी मन्शा न चित्तौड़ छीनने की है,न महारानी को हरण करने की। अगर महाराणा अपनी दोस्ती का सबूत दें तो सुलतान अभी दिल्ली को लौट जाएं। दोस्ती के सबूत में सुलतान केवल यह चाहते हैं कि उन्हें केवल एक बार महारानी की झलक दिखा दी जाए। और कुछ नहीं।

गर्वीले राजपूतों को दूत का यह प्रस्ताव अत्यन्त अपमानजनक प्रतीत हुआ। उन्होंने तलवारें खींच ली और भांति-भांति के कुवाक्य दूत और सुलतान को कहे। प्रत्येक राजपूत इस अपमान के बदले अपने प्राण देने के लिए तैयार था, पर राणा भीमसिंह गभ्भीर चिन्ता में निमग्न थे। उनके ऊपर चित्तौड़ की रक्षा एवं हजारों राजपूतों की जीवन-रक्षा का दायित्व था। उन्होंने सोचा, क्या सर्वनाश से बचने के लिए यह अपमान सह लिया जाए? उन्होंने अपने मन्त्रियों, सरदारों, भाई-बंदों और दरबारियों से परामर्श किया और रानी पद्मिनी से भी सब हकीकत कह दी! रानी ने साहसपूर्वक कह दिया कि यदि मेरा यह अपमान कर के वह दैत्य

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

टल जाए तो मैं अपनी आबरू का बलिदान करने को तैयार हूँ, परन्तु प्रत्यक्ष नहीं, दर्पण में ही वह पशु मेरी छबि की एक झलक देख सकता है।

राणा भीमसिंह ने सभासदों को सब ऊँच-नीच समझाकर अन्त में प्रस्ताव की स्वीकृति दे दी। उन्होंने यह शर्त की कि सुलतान अकेले नि:शस्त्र किले में आएंगे और दर्पण में महारानी की एक झलक देखकर तुरन्त लौट जाएंगे तथा तुरन्त ही चित्तौड़ का घेरा उठा लेगें।

अलाउद्दीन ने राणा की इस उदारता की बड़ी तारीफ की और मित्रता की बहुत लम्बी-चौड़ी बातें राणा के पास भेजी। ठीक समय पर नि:शस्त्र अकेले किले में आ पहुँचा।

सुलतान का प्रस्ताव अभूतपूर्व था और वह विश्वासी व्यक्ति न था। किले का प्रत्येक राजपूत इसे अपना जातीय अपमान समझे हुए था। परंतु राणा अपने विचार का दृढ़ था। वह गम्भीर और मौन था। आज महलों में अद्‌भुत गम्भीरता छाई हुई थी। राजपूत बड़ी-बड़ी काली दाढ़ियों के बीच दांतों की बत्तीसी भीचें सम्पुटित होंठ किए , बिना बड़ी-बड़ी ढाल कन्धे पर लिए, तलवारें म्यान में किए, लाज और अपमान से नीचे आँखें किए खड़े थे। सुलतान सबके बीच साहस और उत्साह की मूर्ति बना धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। राणा ने किले के फाटक पर उसका स्वागत किया था। राजपूतों के वचन पर उसे भरोसा था। वह नि:शस्त्र तथा एकाकी था। वह चपल घोड़े पर सवार था और आगे बढ़ रहा था। उसके बाईं ओर राणा चुपचाप एक घोड़े पर सवार आगे बढ़ रहा था और पीछे चुने हुए सवार थे। सुलतान अपनी मित्रता और प्रसन्नता प्रकट करने के लिए बहुत-सी बातें करता जाता था।

जनाने दरवाजों पर सब घोड़ों से उतर पड़े। वे उन सीढ़ियों पर चढ़े जहां किसी यवन के पांव नहीं पड़े थे। राजपूत क्रोध से एवं बांदिया भय से थर-थर कांपती जा रही थीं। सन्नाटा था, विरद् गानेवाले चुप बैठे थे।

सुलतान ने कहा-महाराणा, आज से हम दोनों दोस्त हुए न, कहिए। महाराणा ने खिन्नमन होकर धीरे से कहा-सुलतान की यदि यही इच्छा है तो मैं वचन देता हूँ कि राजपूत हमेशा सच्ची दोस्ती निभाएंगे।

"इसका मुझे पूरा भरोसा है आप देखते हैं कि आपपर मैं यकीन करके खाली हाथ किले में आ गया हूँ। उम्मीद है, आप भी मुझे भरोसा देंगे।"

राणा ने गम्भीर स्वर में कहा-तो क्या सुलतान मित्रता की ओर इतना कदम उठाकर भी वह अपमानजनक काम करने का इरादा रखते हैं जो राजपूतों के लिए बिल्कुल नया है?

"यकीन रखिए, राणा साहब, मेरी नीयत कुछ बुरी नहीं। जैसा हम लोगों में कोल-करार हुआ है, उसके होते ही मैं तुरन्त दिल्ली लौट जाऊंगा।"

राणाने ठण्डी सांस लेकर एक बार सरदार की ओर देखा-वे नीची आँखें किए खड़े थे। फिर उसने चांदी की भांति सफेद महलों के आकाश को छूनेवाले सुनहरी कंगूरों को देखा जो सूर्य की धूप में चमक रहे थे! तब सूर्यवंश के उस अधिकारी ने एक ठण्डी सांस ली और कहा- तब आइए, राजपूत अपनी बात पूरी करेंगे। दोनों आगे बढ़े। दो कदम बाद सुलतान झिझककर खड़ा हो गया, उसने देखा-सामने पूरे कद के आईने में वह अलौकिक सुन्दरी-जैसे रत्नों से जड़ी तस्वीर हो-लाज से सिर नवाए खड़ी है। एक झलक सुलतान ने देखा, और वह झलक दर्पण से गायब हो गई। सुलतान निश्चल हो गया, इस सौंदर्य की उसने कभी कल्पना भी न की थी। महाराणा ने कंपित कंठ से कहा-राजपूतों का वचन पूरा हुआ, अब सुलतान को अपना वचन निभाना चाहिए।

सुलतान चौंका और सोते हुए मनुष्य की भांति उसने कहा-हां हां, जरूर, अब मुझे आपकी दोस्ती पर यकीन हो गया है। महाराणा, दर-हकीकत मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। आपकी महाराणी इन्सान नहीं हैं, इन्सान में इतनी खूबसूरती नहीं हो सकती।

राजपूत धीरज खो रहे थे। राणा ने अधीर होकर कहा-राजपूती मर्यादा को निभाने के लिए, सुलतान, जैसे प्रतिष्ठित मेहमान को विदा करने हम बाहर की ड्योढ़ी तक चलेंगे, परन्तु सुलतान अपना वचन कब पूरा करेंगे?

मैं अभी अपनी छावनी उठाता हूं, सुलतान ने वापस लौटती बार कहा था।

वे चुपचाप धीरे-धीरे लौट रहे थे, दोनों चुप थे। राणा अपने उस अपमान की बात सोच रहे थे, जो अभी हो चुका था और सुलतान उस घात की, जो वह अभी करनेवाला था।

फाटक आ पहुंचा। राणा ने कहा- मैं सुलतान के कष्ट करने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

"नहीं,नहीं, माफी मुझे मांगनी चाहिए, क्योंकि मैंने आपको बड़े भारी तरद्दुद में डाल दिया है; मगर खैर, इससे हमारी और आपकी दोस्ती पक्की हो गई। अरे, आप रुक क्यों गए? जरा और आगे चलिए। वहां मेरे आदमी हैं, मैं आपके लिए कुछ सौगात लाया हूं, जो आपको बाइज्जत कबूल करनी होगी। आशा है आप इन्कार नहीं करेंगे।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राणा झिझका पर आगे बढ़ा। उसने कहा- आपकी दोस्ती ही मेरे लिए सबसे बड़ी सौगात है।

सुलतान ने अत्यन्त आग्रह से कहा- नहीं, नहीं, अगर आप इन्कार करेंगे तो मैं समझूंगा कि आपका दिल मेरी तरफ से साफ नहीं है।

फाटक कदम-कदम पर दूर हो रहा था, राणा कुछ कह न सके। एकाएक पठानों का एक बड़ा दल जंगल से निकल आया और बात ही बात में राणा को घेर लिया। राणा तलवार भी न निकाल पाया, उसकी मुश्कें कस दी गईं। राणा ने लाल-लाल आँखें करके कहा--यही दोस्ती है ?

"दोस्ती ? काफिर और दीनदार की कैसी दोस्ती ? या तो वह परी मेरे हवाले कर, वरना चित्तौड़ की ईंट से ईंट बजा दूंगा, और तेरी बोटियां चील और कौए खाएगें।"

राणा ने घृणापूर्ण दृष्टि से देखकर कहा--धिक्कार है तुझ विश्वासघाती पर।

सुलतान ने कहा- ले जाकर बन्द कर दो बदबख्त को। और वे तेजी से चल दिए।

किले में हाहाकार मच गया। राजपूतों ने तलवारें सूत लीं। सबने इरादा किया, किले का फाटक खोल दो और जूझ मरो। पद्मिनी ने सुना तो कहलाया-सब कोई शान्त रहें, मैं महाराणा की मुक्ति का उपाय करूंगी। लोग आश्चर्यचकित हो महाराणा की मुक्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

" बादल, क्या तुम अपने काकाजी को छुड़ाने का साहस कर सकते हो ?"

" हां काकीजी. मैं अभी अपने प्राण दे सकता हूं।"

" परन्तु बेटे, शत्रु छली और बली हैं, हमें भी छल और बल से काम लेना होगा।"

" छल-बल से कैसे काकी जी ?"

" मैं सुलतान से कहलाए देती हूँ, मैं स्वयं उनके पास आने को राजी हूँ, आप राणा को छोड़ दें।"

" छी: छी: काकी ! क्या आप उस म्लेच्छ सुलतान के पास जाएंगी ?"

" नहीं बेटे, मेरी जगह मेरी डोली में तुम जाओगे।"

" क्या मैं ?

" हां तुम मेरी जगह, यद्यपि तुम अभी बारह साल के बालक हो, पर क्षत्रिय-पुत्र को जूझ मरने के लिए यह आयु काफी है। तुम यह काम कर सकोगे ?"

" मुझे क्या करना होगा ?"

" तुम सब हथियार बांधकर मेरी पालकी मैं बैठोगे। पालकी के साथ सात-सौ डोलियों में मेरी सहेलियां होंगी। प्रत्येक डोली में बांदी की जगह दो-दो शूरवीर हथियार बांधकर बैठेंगे। और चार-चार शूरमा कहार का भेस धरे डोली उठाएंगे, जिनके हथियार कपड़ों में छिपे होंगे।"

" इसके बाद काकीजी।"

" इसके बाद रानी-राणा में अकेले में भेंट होगी। पास में तुम्हारे काका गोरा घोड़े पर सवार होंगे। वे तुरन्त ही राणाजी को घोड़ा और हथियार दे देंगे और किले की ओर चलता कर देंगे। फिर तुम डोली से निकल अपने राजपूती जौहर के हाथ दिखलाना।"

"ऐसा ही होगा काकीजी हम सुलतान को दगाबाजी का वह पाठ पढ़ाएँगें, जिसका नाम है।"

"तब जाओ बेटे, अपने गोरा काका से कहो। वे सुलतान से कहला भेजें कि रानी आपके पास आने को राजी है। मगर वे अपनी बांदियों और सहेलियों के साथ आएंगी। उन्हें परदे में उतारने का बन्दोबस्त कीजिए और राणा को छोड़ दीजिए तथा रानी को एक घण्टे राणा से एकान्त में मिलने की आज्ञा मिलनी चाहिए, बस।"

"समझ गया। अभी जाकर चाचा से सब हकीकत बयान करता हूं।"

"जाओ पुत्र, ईश्वर तुम्हें सफलता दें।"

सुलतान की छांवनी में जश्न मनाया जा रहा था। उसे खबर लग चुकी थी कि पद्मिनी अपने महल से चल चुकी हैं। वह पहाड़ से उतरती हुई डोलियों को देख-देखकर प्रसन्न हो रहा था। वह अपनी चालाकी पर खुश हो रहा था। सिपाही शराब ढाल रहे थे और नाच-गान में मस्त थे। किसी को किसी की सुध नहीं थी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धीरे-धीरे डोलियां पठानों के शिबिर में आ गईं और वे सब एक बड़े तम्बू में उतार दी गईं। रानी ने कहला भेजा-अब आप एक घण्टे के लिए मुझे राणा से मिलने की इजाजत दें। इसके बाद तो मैं आपकी हूं ही।

बादशाहने हंसकर कहा-अच्छा, अच्छा, इसमें कोई हर्ज नहीं है। राणा अच्छा आदमी है। मगर एक घण्टे बाद मैं कुछ नहीं सुनूंगा।

" यह मैं क्या देख-सुन रहा हूं, अच्छा होता कि इससे पहले ही मैं मर गया होता। पद्मिनी, तुमसे ऐसी आशा न थी। अब तुम मुझे अपना मुंह दिखाने का साहस करती हो ?" राणा भीमसिंह ने क्रोध से थर-थर कांपते हुए पालकी के सुनहरी और अग्निमय नेत्रों से देखते हुए कहा।

पर्दा हिला। बादल ने घूंघट से मुंह निकालकर कहा-काकाजी, सावधान!

" कौन, तुम हो **बादल**!"

" जी हां, और सात सौ डोलियों में जुझारु वीर भरे हैं। हम, हम सुलतान से निबट लेंगे। बाहर गोरा काका घोड़ा लिए खड़े हैं। आप घोड़े पर चढ़कर किले में जा पहुंचें और फिर सेना लेकर सुलतान की सेना पर टूट पड़ें, तब तक हम निबट लेंगे।**"**

" शाबाश बेटे, हम आज दगाबाजी का......"

" चुप, ज्यादा बातें न कीजिए। खेमे के पीछे घोड़ा खड़ा है, आप जाइए, हम शत्रुओं को रोकते हैं।" बादल पालकी से निकल खड़ा हुआ। संकेत होते ही हजारों राजपूत हर-हर करके तलवार सूतकर निकल पड़े। रंग में भंग पड़ गया। छावनी में उथल-पुथल मच गई । जो जहां था, वहीं काट डाला गया । तैयारी का अवसर ही न था। मारो, मारो की आवाज सुनाई पड़ती थी। घायलों के चित्कार मारते हुए कराहने की आवाज और राजपूतों की हर-हर महादेव तथा पठानों की अल्ला हो-अकबर की तुमुल ध्वनि हो रही थी। रुण्ड-मुण्ड राणा भीमसिंह तीर की भांति किले की ओर जा रहे थे। किले पर राजपूत तलवारें झन-झनां रही थीं।

बादल को पठानों ने घेर लिया था। पर वह बालक किले के नीचे पथ पर खड़ा दोनों हाथों से तलवार चला रहा था। गोरा ने तलवार चलाते-चलाते कहा-वाह बेटे, खूब खेत काट रहे हो!

" सावधान काकाजी, वह पीछे से वार होता है!"

तलवारें चलाते-चलाते गोरा ने कहा-हर्ज नहीं, राणाजी महल में पहुंच गए हैं, वह तोप छूटी।

तलवारें और तीर बरस रहे थे। गोरा ने कहा-बादल, अब मेरे हाथ नहीं चलते।

बादल ने कहा-काकाजी, हम उस लोक में मिलेंगे। -गोरा घाव खाकर गिर पड़ा। बादल ने देखा और शत्रुओं को चीरते हुए जोर से उसके कान के पास पुकारा-मैं, काकाजी, आपकी वीरता का बयान करूंगा! महाराणा सेना लेकर आ रहे हैं!

राणा ने आते ही शत्रुंओं को गाजर-मूली की तरह काटना आरम्भ कर दिया। शत्रु के पैर उखड़ गए। सुलतान पिटे कुत्ते की तरह सब सामान छोड़कर भागा। उसकी छावनी जला दी गई। बादल के शरीर पर अन-गिनत घाव थे। उसके मुमूर्ष शरीर को महलों में लाया गया। शरीर से एक-एक बूंद रक्त निकल गया था और उसके होंठों पर हंसी की रेखा थी।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रत्युत बल्कि **लोलुप** लालची, लोभी **किफायत** मितव्ययता **नौबत** स्थिति, दशा **क्षुब्ध** क्रुद्ध, उपद्रवग्रस्त **तख्त** सिंहासन, राज्य **मन्सूबा** इच्छा **निमग्न** डूबा **परामर्श** सलाह **संपुटित** बंद **यवन** मुस्लिम **बांदी** दासी **विरद** ख्याति **दुर्धर्ष** धृष्ट, अदम्य **कौल** शपथ, वचन संकल्प **तरद्दुद** चिंता, अंदेशा **काफिर** मूर्तिपूजक, गैरमुस्लिम **दीनदार** धर्मशील, धार्मिक **चीत्कार** घोर ध्वनि **आर्तनाद** रुण्ड, सिरहीन धड़ **मुंड** सिर **मुमूर्ष** मृत्यु का इच्छुक **शूरमा** वीर योद्धा

मुहावरे

जाल बिछाना-फँसाने का उपाय करना **मुश्कें कसना**-दोनों हाथों को पीछे करके पीठ पर बाँधना **ईंट-से-ईंट बजाना**-लड़ाई या युद्ध होना **रंग में भंग पड़ना**-आनंद और हँसी-खुशी आदि में विघ्न पड़ना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. सही विकल्प चुनकर पूरे वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) गोरा-बादल के युद्ध का समय क्या था ?

(A) बारहवीं सदी (B) तेरहवीं सदी (C) चौदहवीं सदी (D) पंद्रहवीं सदी

(2) इस बार अलाउद्दीनि की चितौड़ पर चढ़ाई करने का इरादा क्या था ?

(A) चितौड़ जीतना (B) राजपूतों को हराना (C) पद्मिनी का हरण (D) चितौड़ का सर्वनाश करना

(3) राणा भीमसिंह ने निम्नलिखित में से कौन सी शर्त नहीं रखी थी ?

(A) सुलतान अकेले किले में आएँगे। (B) पद्मिनी की झलक दर्पण में देखकर सुलतान तुरंत लौट जाएँगे।

(C) सुलतान नि:शस्त्र आएँगे। (D) सुलतान चितौड़ की आर्थिक मदद करेंगे।

(4) अलाउद्दीन के चित्तौड़ युद्ध के समय बादल की उम्र कितनी थी ?

(A) 12 वर्ष (B) 13 वर्ष (C) 14 वर्ष (D) 11 वर्ष

2. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) अलाउद्दीन के आक्रमण के समय चितौड़ की आंतरिक व्यवस्था कैसी थी ?
(2) किले में किस चीज का अभाव था ?
(3) अलाउद्दीन चितौड़ को मामले को जल्द क्यों निपटाना चाहता था ?
(4) सुलतान के दूत ने दोस्ती के लिए क्या शर्त बताई ?
(5) पद्मिनी के आने का समाचार जानकर पठानों की छांवनी का वातावरण कैसा हो गया था ?
(6) डोलियों को तम्बू में उतर जाने पर अलाउद्दीन के पास क्या संदेश भेजा गया ?
(7) पद्मिनी के आने की बात सुनकर राणा भीमसिंह की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

3. पाँच-छ वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) सुलह के लिए भेज गए दूत ने राजसभा में क्या कहा ?
(2) दूत के अपमानजनक प्रस्ताव को राणा भीमसिंह ने क्यों स्वीकार कर लिया ?
(3) अलाउद्दीन ने पद्मिनी का दर्शन कैसे किया ? उसका उस पर क्या प्रभाव पड़ा ?
(4) गोरा-बादल की वीरता का वर्णन कीजिए।
(5) राजपूतों ने दगाबाजी के लिए पाठ पढ़ाने की कौन सी योजना बनाई ?

4. नीचे दिए गए मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

रंग में भंग पड़ना, पाँव उखड़ना, जाल बिछाना, ईंट-से-ईंट बजाना

5. 'ना' उपसर्ग से बननेवाले पाँच शब्द लिखिए :

उदा, नाबालिग

6. संधि विग्रह कीजिए :

अत्यंत, निश्चल, स्वागत, सम्मान, वातावरण

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने अभिभावक या शिक्षक की सहायता से 'जौहर'तथा'केशरिया' शब्द को विशिष्ट अर्थ संदर्भ ढूँढ़कर उन्हें अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए ।
- राजपूत काल के प्रसिद्ध किलों के चित्र एकत्र कीजिए।
  उदयपुर, चितौड़ और हल्दीघाटी के प्रवास का आयोजन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- स्वमान की रक्षा हेतु बलिदान देने की भावना राजपूतों का एक प्रमुख गुण रहा। ऐसे कुछ राजपूत बलिदानियों की कथा विद्यार्थियों को पढ़ने के अवसर प्रदान कीजिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

24 बिरसा मुंडा

संकलित

प्रस्तुत जीवन कथा में बिरसा मुंडा के जीवन संघर्ष की सच्ची कहानी है। बिरसा मुंडा केवल पच्चीस वर्ष की कम आयु में अपने समाज और देश के लिए एक मिशाल बन गया। बचपन से लेकर युवावस्था तक उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। इसाई मिशनरियों और पादरियों द्वारा भारतीय संस्कृति के लिए किए जा रहे अपमानजनक कथन सुनना उसके लिए असह्य था। उसने सभी प्रकार के शोषण से मुक्ति दिलाने और अंग्रेजी सत्ता को आदिवासी क्षेत्र से दूर रखने का भरसक प्रयास किया। अंतत: वह अपने ही लोगों के विश्वासघात के कारण सरकार की गिरफ्त में आ गया और जेल में ही उसकी मृत्यु हुई। पर उसकी कोशिशें नाकाम नहीं रहीं। ब्रिटिश सरकार को भूमि समस्या के लिए कदम उठाने पड़े। बिरसा आज भी आदिवासी साहित्य में जीवित है।

बिहार वर्तमान झारखंड राज्य के रांची और सिहभूम जिलों के मुंडा आदिवासियों को अंग्रेजी अधिकारियों और दलालों के शोषण और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष के लिए खड़ा करके बिरसा ने अपनी कीर्ति अमर की। उसने बहुत ही कम उम्र पाई, केवल पच्चीस वर्ष (1875-1900)की। किन्तु जीवन के अन्तिम पांच वर्षों में वह मुंडा लोगों को बहुत कुछ सिखा गया। यह बिरसा के प्रयत्नोंका ही फल था कि सन 1900 में 60 वर्ग मील के इलाके की जनता अपने तीर-कमान और बरछे-भालों से ब्रिटिश सरकार को गोलियों का मुकाबला करने के लिए उठ खड़ी हुई थी। सभी प्रकार का शोषण समाप्त करने तथा अंग्रेजी सत्ता का जुआ उतार फेंकने का उनका आह्वान घर-घर का नारा बन गया। बिरसा अब नहीं है , किन्तु मुंडा जन-जाति अपने जंगलों और पहाड़ों में आज भी उनकी आवाज गूंजती हुई सुनती है और उनको विश्वास है कि धरती आबा-इसी नाम से वे पुकारे जाते थे-एक बार फिर अवतार लेकर उनका मार्गदर्शन करेगें।

बिरसा के पिता सुगना मुंडा लकरी मुंडा की दूसरी सन्तान थे। सुगना के पांच पुत्र हुए। बिरसा उनकी चौथी सन्तान थे। उपलब्ध सामग्री के आधार पर बिरसा का जन्म 1875 के आसपास माना जाता है। कुछ व्यक्ति उनका जन्म स्थान उलिहातु और कुछ चलखद बताते हैं। बिरसा के ताऊ, पिता,चाचा सभी ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। उनके पिता जर्मनी धर्म प्रचारकों के सहयोगी थे।

बिरसा का बचपन एक साधारण आदिवासी किसान की भांति चलखद में बीता। वह भी भेड़ बकरियां चराने लगे किन्तु मां-बाप ने गरीबी के कारण बालक को पांच वर्ष की आयु में ननिहाल भेज दिया। बाद में जब उनकी छोटी मौसी की शादी हो गई तो वह बिरसा को भी अपने साथ ससुराल ले गई जहां वह बकरी चराने लगे।

बिरसा के पास स्लेट या किताब न थी। वह बकरियां चरान के समय जमीन पर अक्षर लिखने में तन्मय हो जाते। बकरियां दूसरे के खेतों में जाकर खड़ी फसल को नुकशान पहुंचातीं और खेत के मालिक बिरसा की पिटाई करते। बिरसा को बांसुरी बजाने का भी बहुत शौक था। एक बार बांसुरी बजाने में इतने लीन हो गए कि उनके मौसा की कई बकरियां खो गई। मौसा ने उनको बुरी तरह पीटा। वह भागकर अपने बड़े भाई के पास कुन्दी गांव में चले गए। बाद में वह बुर्जं के जर्मन मिशन स्कूल में पढ़ने भेजे गए। स्कूल का वातावरण उन्हें पसन्द नहीं था क्योंकि वहां उनके धर्म और संस्कृति पर कीचड़ उछाली जाती जो उनकी बर्दाश्त के बहार था। किन्तु फिर भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे सब कुछ बर्दाश्त करते रहे। बिरसा ने भी स्कूल में पादरियों और उनके धर्म का मजाक उड़ाना शुरु कर दिया। इसलिए ईसाई धर्म प्रचारकों ने 1890 में उन्हें स्कूल से निकाल दिया। इस स्कूल में बिरसा ने मिडिल तक की शिक्षा पाई।

बिरसा के विचारों का विकास 1891 से 1894 के बीच हुआ जब वे स्वामी आनन्द पांडे के सम्पर्क में आए। उन्होंने भक्ति से उनकी सेवा की और उनसे हिन्दू धर्म के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उन्हें महाभारत के पात्रों की कथा से बड़ी प्रेरणा मिली। इसी बीच एक वैष्णव साधु से प्रभावित होकर वे अहिंसा और जीवों के प्रति दया की बात करने लगे। इस प्रकार उन पर एक प्रभाव ईसाई धर्म प्रचारकों का था, दूसरा समुदाय के उन जागरूक व्यक्तियों का जो प्राचीन मुंडा राज्य के गौरव से प्रेरणा लेकर न्याय पर आधारित भूमि-व्यवस्था के लिए संघर्षशील थे और तीसरा प्रभाव हिन्दू धर्म का था।

1895 में कुछ ऐसी घटनाएं हुई कि बिरसा एक मसीहा बन गए। कहते हैं कि एक दिन जब बिरसा एक मित्र के साथ जंगल में जा रहे थे, उन पर बिजली गिरी और बिरसा के शरीर में समा गई। उनके मित्र ने तत्काल गांव लौटकर घोषणा की कि बिरसा को दिव्य ज्योति मिल गई है। गांव वालों ने बिरसा को भगवान का अवतार मान लिया। उसी समय एक मुंडा मां ने अपने बीमार पुत्र को गोद में लेकर बिरसा के पैर छुए। कुछ समय बाद बच्चा ठीक हो गया। ऐसी घटनाएं और घटीं जिससे लोगों में यह विश्वास फैल गया कि बिरसा के स्पर्श मात्र से रोग दूर हो जाएगा। लेकिन जब गांव में चेचक फैली तो वृद्धजन कहने लगे कि बिरसा के कारण ग्राम देवी रुष्ट हो गई है। बिरसा गांव छोड़कर चले गए किन्तु फिर भी महामारी का प्रकोप कम नहीं हुआ। बिरसा लौटे और उन्होंने अपनी जाति की दिन-रात सेवा कर सबका मन-मोह लिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बिरसा की लोकप्रियता बढ़ती गई। वह आंगन में खाट पर बैठ कर बातचीत करते, किन्तु श्रोताओं के बढ़ने पर उनकी सभाएं खेतों में नीम की छाया में होने लगीं। वे छोटे-छोटे दृष्टान्तों से आपने विचारों को बड़े ही सरल ढंग से समझाते। वह पुरानी रूढ़ियों और अंधविश्वासों की आलोचना करते। वह चाहते थे कि शिक्षा का प्रसार हो। लोग केवल एक देवता सिंहबांगा की पूजा करें और समाज की सेवा का व्रत लें। वह लोगों से हिंसा और नशीली वस्तुओं के त्याग का आग्रह करते। बिरसा की इन सभा ओं ने जादू का काम किया और ईसाई धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन घटती गई। साथ ही ईसाई मुंडा अपना प्राचीन धर्म फिर से स्वीकार करने लगे।

बिरसा का कार्य धार्मिक आन्दोलन तक ही सीमित न रहा। वह राजनीति की भी बातें करने लगे। उन्होंने किसानों का शोषण करने वाले जमीदारों और दूसरे बिचौलियों के काले कारनामों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणी दी। बिरसा के इस नए रूप में उभरने का एक कारण और भी था। उनकी लोकप्रियता देखकर वे व्यक्ति भी उनके साथ हो लिए जो मुंडा राज्य की स्थापना के लिए संघर्ष करना चाहते थे। अवतार माने जाने के बाद, जब वह जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले मसीहा बन गए तो सरकार सशंकित हो उठी। अधिकारियों ने चेतावनी दी कि वे भीड़ न जमा किया करें और न असंतोष की भावना फैलाएँ। बिरसा ने कहा कि मैं अपनी जाति को नया धर्म सिखा रहा हूं। सरकार मुझे कैसे रोक सकती है। किन्तु 9 अगस्त 1895 को उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया गया। गांव वालों ने पुलिस से मुठभेड़ करके उन्हें छुड़ा लिया। 16 अगस्त को बिरसा के अनुयायियों और पुलिस अधिकारियों के बीच फिर झड़प हुई। उत्तेजित जनता ने खबर फैला दी के आगामी 27 अगस्त को जमीनदारों और ईसाइयों के विरूद्ध जिहाद शुरू करना है किन्तु वह दिन नहीं आया। अधिकारियों ने इसके पूर्व ही बिरसा को चलखद में सोते हुए गिरफ्तार कर लिया।

बिरसा को एक डोली में रांची लाया गया। वहां उन पर तथा उनके 15 सहयोगियों पर मुकदमा चलाया गया। अभियुक्तों ने न अपना वकील किया न जिरह ही की। 19 नवम्बर 1895 को बिरसा और उनके कुछ सहयोगियों को दो साल के कठिन कारावास की सजा दी गई। उन्हें हजाराबाग जेल में रखा गया। उन्हें 30 नवम्बर 1897 को यह चेतावनी देकर छोड़ा गया कि वे कोई प्रचार-कार्य नहीं करेंगे।

बिरसा की रिहाई के कुछ ही समय बाद, उनके अनुयायियों ने चलखद में सभा की और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संगठन बनाने का निश्चय किया। बस, आन्दोलन के लिए जोरशोर से तैयारियां होने लगीं। अनुयायियों को दो दलों में बांटा गया। एक दल को नए मुंडा धर्म के प्रचार का कार्य सौंपा गया और दूसरे को राजनीति के लिए तैयार किया गया। तीसरे, नये रंगरूट थे। प्राचीन मुंडा राज्य के ऐतिहासिक स्थलों और मंदिरों के दर्शनों की योजना बनाई गई जिससे समूची जाति का स्वाभिमान जागे। ऐसे अवसरों पर सामूहिक भोज और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते। चुटिया के प्राचीन मंदिर पर जनवरी 1898 को ऐसे ही कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में बिरसा स्वयं उपस्थित थे। पुलिस दल आने की सूचना पाकर बिरसा अपने कुछ सहयोगियों के साथ भाग खड़े हुए।

बिरसा को गिरफ्तार करने के लिए वारंट जारी किया गया और इनाम की घोषणा की गई। किन्तु बिरसा अधिकारियों के चंगुल में नहीं आए। मुंडा आदिवासियों में विद्रोह की भावना बल पकड़ रही थी और बिरसा उन्हें संघर्ष, के लिए तैयार कर रहे थे। बिरसा ने चलखद छोड़कर डुम्बरी में अपना कार्यालय बनाया। डुम्बरी का चुनाव सामरिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। यह मुंडा क्षेत्र के बिलकुल ही मध्य में है और चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा है।

फरवरी 1898 में डुम्बरा में मुंडा क्षेत्र के प्रतिनिधियों की सभा हुई। होली के पर्व पर निकटवर्ती पहाड़ी पर एक और सभा हुई जिसमें ब्रिटिश सरकार व ब्रिटिश साम्राज्ञी के पुतले जलाए गए। कहते हैं कि लगभग 16 सभाएं की गईं और बड़े दिन के अवसर पर जमादारों, ठेकेदारों और पादरियों की हत्याओं की योजना बनाई गई।

1899 का आन्दोलन 1895 के मुकाबले बिलकुल ही भिन्न था। 1895 का आन्दोलन मुख्यत: अहिंसात्मक था और मुंडाभूमि पर अपने प्राचीन अधिकारों की मांग के लिए संघर्ष कर रहे थे। 1899 में हिंसा का मार्ग अपनाया गया। यूरोपियों, अधिकारियों और पादरियों को हटाकर उनके स्थान पर बिरसा के नेतृत्व में नए राज्य की स्थापना का निश्चय किया गया।

मुंडा जाति का अन्तिम विद्रोह बड़े दिन की पूर्व संध्या-24 दिसम्बर, 1899 को योजनानुसार प्रारम्भ हुआ। सिंहभूमि जिले के चक्रधरपुर और रांची जिले के खूंटी, कर्रा, तोरपा, तसार और बसिया के पुलिस थानों पर तीरों से हमले किए गए और उनमें आग लगा दी गई। सबसे बड़ा हमला खूंटी थाने पर किया गया। ईसाई पादरियों के क्षेत्रों पर भी हमले हुए। अधिकारियों ने मुकाबले के लिए सेना भेजी। 26 दिसम्बर से 5 जनवरी1900 तक छिटपुट हमले होते रहे। 7जनवरी से सेना से सीधी मुठभेड़ हुई। सर्वप्रथम खूंटी पुलिस थाने पर धावा बोला गया। 9 जनवरी को सैल रकाब पहाड़ी पर जबरदस्त मुठभेड़ हुई। सेना ने पहाड़ी को घेर लिया था। एक तरफ से पत्थर और तीर फेंके जा रहे थे और दूसरी तरफ से गोलियां चल रही थीं। विद्रोही हार गए। इस मुठभेड़ में कितने लोग मारे गए, इसके सही आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। इस मुठभेड़ ने आन्दोलन की कमर तोड़ दी और विद्रोह कुचल दिया गया। चारों ओर घरपकड़ शुरू हो गई और आतंक, दमन तथा अत्याचार का राज्य छा गया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो प्रमुख मुंडा सरदारों द्वारा अपने 32 अन्य साथियों के साथ 28 जनवरी को आत्मसमर्पण कर दिए जाने के बाद रांची जिले में आन्दोलन समाप्त हो गया। सेना वापस बुला ली गई। बिरसा अपने को बचाने के लिए मारे-मारे घूमते रहे। उनके पीछे अधिकारी भी थे और इनाम पाने के लालच में उनके अपनी जाति के लोग भी। आखिर उनकी ही जाति के दो व्यक्तियों ने इनाम के लालच में तीन फरवरी को उन्हें एक जंगल में पकड़वा दिया।

बिरसा की गिरफ्तारी के तीन महीने बाद ही जेल में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। पहली जून को बताया गया कि उनको हैजा हो गया है। 9 जून को प्रात: 9 बजे उनकी मृत्यु हो गई। उनके शव की परीक्षा के बाद जेल के मेहतर ने गोबर के कन्डों से उनका अन्तिम संस्कार किया। कहते हैं कि किसी ने उन्हें विष देकर मार डाला था।

बिरसा के आन्दोलन को कुचलने के लिए उनके अनुयाइयों पर मुकदमे चलाए गए। अभियुक्तों को अपनी रक्षा का मौका भी नहीं मिला। रांची और सिंहभूमि में 482 अभियुक्तों में से केवल 98 को सजा दी गई। कुल मिलाकर 3 व्यक्तियों को फांसी, 44 को आजीवन कारावास, 10 को 10 वर्ष का कठिन कारावास, 8 को सात वर्ष, 23 को पांच वर्ष और 6 को तीन वर्ष की सजा दी गई।

बिरसा और उनके आन्दोलन को किसी भी हालत में सफलता नहीं मिल सकती थी क्योंकि भारत जैसे विशाल देश की विदेश सरकार एक प्रान्त के एक छोटे से क्षेत्र के विद्रोह को कैसे बरदाश्त कर सकती थी ? लेकिन फिर भी इस आन्दोलन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि मुंडा जाति के विद्रोह के बाद दबी नहीं बल्कि शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की भावना और गहरी होती गई। बिरसा का आन्दोलन लगभग एक महीने चला और साठ वर्ग मील क्षेत्र में फैल गया।

बिरसा के आन्दोलन को पूरी तरह असफल भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसके फलस्वरूप मुंडा क्षेत्र की भूमि - समस्या सार्वजनिक महत्व का प्रश्न बन गई। सेंट्रल लेजिस्लेटिव कौंसिल और समाचार पत्रों में चर्चाएँ हुईं और तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को मजबूर होकर भूमि समस्या के सुधार के लिए कदम उठाने पड़े।

बिरसा का पार्थिव शरीर तो नहीं रहा, किन्तु वे अपनी कीर्ति, अपनी जाति के साहित्य और गीतों तथा अपने अनुयाइयों के दिलों में आज भी जीवित हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

कीर्ति यश, **फल** परिणाम, **कारावास** जेल, **आह्‌वान** बुलाना, **गूँजना** प्रतिध्वनि होना, **साम्राज्ञी** महारानी, **मुकाबला** आमना-सामना, विरोध, **अवतार** किसी देवता का लौकिक शरीर धारण करना, **पादरी** ईसाई धर्म का पुरोहित, **जिरह** ऐसी पूछताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिए की जाय, **पार्थिव** जो पृथ्वी से संबंधित हो

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) किसके प्रयत्नों से आदिवासियों ने ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया ?

(2) बिरसा मुंडा किस नाम से पुकारे जाते थे ?

(3) बिरसा के पिता ने कौन-सा धर्म स्वीकार कर लिया था ?

(4) उसे कौन-सा वाद्य बजाने का शौक था ?

(5) बिरसा अपने बड़े भाई के पास कुन्दी गाँव क्यों चले गये थे ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिरसा का जन्म कब और कहाँ माना जाता है ?

(2) बालक बिरसा को स्कूल से क्यों निकाल दिया गया था ?

(3) उन्हें स्कूल का वातावरण क्यों पसंद न था ?

(4) सरकार ने पहलीबार बिरसा मुंडा को क्यों गिरफ्तार किया ?

(5) ब्रिटिश सरकार ने उन्हें किस शर्त पर कारावास से मुक्त किया ?

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) 'बिरसा मुंडा आदिवासियों के मसीहा थे।' स्पष्ट कीजिए।

(2) '1899 का आन्दोलन 1895 के आन्दोलन से भिन्न था' स्पष्ट कीजिए।

(3) बिरसा मुंडा की मृत्यु कब और कैसे हुई ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. सही विकल्प चुनकर एक एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) बिरसा मुंडा को किस ग्रन्थ के पात्रों से प्रेरणा मिली ?

(A) रामचरितमानस (B) महाभारत (C)गीता (D) बाइबल

(2) किसके नेतृत्व में राज्य की स्थापना का निश्चय किया गया ?

(A) यूरोपियों (B) अधिकारियों (C) पादरियों (D) बिरसा मुंडा

(3) किस त्योहार पर ब्रिटिश सरकार तथा ब्रिटिस साम्राज्ञी के पुतले जलाए गए ?

(A) होली (B) दीपावली (C) ईद (D) मकरसंक्रांति

(4) ब्रिटिश सरकार ने बिरसा की मृत्यु का क्या कारण बताया ?

(A) चेचक (B) हैजा (C) मलेरिया (D) केन्सर

(5) बिरसा मुंडा की मृत्यु कहाँ पर हुई ?

(A) जंगल में (B) कोर्ट में (C) चर्च में (D) जेल में

5. समानार्थी शब्द लिखिए :

पहाड़, अंतिम, कीर्ति, जंगल, विकास, रुष्ट, त्याग, विश्वास, आतंक, प्रकोप, स्पर्श, महामारी

6. विलोम शब्द लिखिए :

ज्ञान, न्याय, सफल, अमर, आज, जन्म, जीवन, स्पष्ट

7. मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग करके लिखिए :

धार्मिक, ऐतिहासिक, सामूहिक, सांस्कृतिक, सार्वजनिक

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- प्रस्तुत पाठ का नाट्य रूपांतर कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जय जवान, जय किसान' कल्पना का विस्तार कीजिए।
- क्रांतिकारी वीर चंद्रशेखर आजाद की जीवनी पढ़िए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

25 सन्नाटा

भवानीप्रसाद मिश्र

(जन्म: सन् 1914 ई,; निधन: सन् 1985 ई.)

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ था। उन्होंने बी.ए. जबलपुर से किया। बाद में संस्कृत, उर्दू , मराठी, बंगला, और फारसी का अध्ययन स्वतंत्र रूप से किया। गांधीजी के आह्वान पर इन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और करीब ढाई वर्ष तक जेल में रहे। वर्धा के महिलाश्रम तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में काम करने के बाद आपने 'कल्पना मासिक पत्रिका का' सम्पादन किया। अध्यापन , सम्पादन और आकाशवाणी उनके कार्यक्षेत्र रहे हैं। गांधी विचारधारा का उन पर पर्याप्त प्रभाव था। मिश्रजी 'सम्पूर्ण गांधी साहित्य' के सम्पादक मंडल के सदस्य रहे हैं। आपने व्यक्ति, समाज , देश की परिस्थितियों का आकलन भावनात्मक स्तर पर किया।

'गीत फरोश', 'चकित है दुख','अंधेरी कविताएँ ','गांधीपंचशती', 'बुनी हुई रस्सी','खूशबू के शिलालेख', 'त्रिकाल संध्या' आदि उनके प्रमुख -काव्य संग्रह हैं। उनकी कविता में प्रकृति के अनेक सुंदर चित्र अंकित हैं। उनकी भाषा में सादगी और ताजगी का अद्भुत समन्वय है। उन्हें 'बुनी हुई रस्सी' के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ था। अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरा सप्तक' में इनकी रचनाओं का प्रकाशन हुआ था।

प्रस्तुत कविता में कवि श्री भवानीप्रसाद मिश्रजी ने सूने पड़े खंडहर के सन्नाटे का बड़ा ही सटीक चित्र प्रस्तुत किया है। ऐसे खंडहरों का इतिहास नहीं मिलता है। दन्तकथाओं के आधार पर इनकी कहानियाँ चलती रहती हैं। इस कविता में कवि बड़ी ही सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा में खंडहर के डरावने सन्नाटे और उससे जुड़ी दन्तकथा को आत्मकथनात्मक शैली में व्यक्त किया है।

तो पहले अपना नाम बता दूँ तुमको,
फिर चुपके-चुपके धाम बता दूँ तुमको ;
तुम चौंक नहीं पड़ना, यदि धीमे धीमे
मैं अपना कोई काम बता दूँ तुमको।

कुच लोग भ्रांतिवश मुझे शांति कहते हैं,
निस्तब्ध बताते हैं, कुछ चुप रहते हैं ;
मैं शांत नहीं निस्तब्ध नहीं, फिर क्या हूँ
मैं मौन नहीं हूँ , मुझमें स्वर बहते हैं।

कभी-कभी कुछ मुझमें चल जाता है,
कभी-कभी कुछ मुझमें जल जाता है ;
जो चलता है, वह शायद है मेंढक हो
वह जुगनू है, जो तुमको छल जाता है।

मैं सन्नाटा हूँ , फिर भी बोल रहा हूँ ,
मैं शांत बहुत हूँ , फिर भी डोल रहा हूँ ;
यह 'सर्-सर्' यह 'खड़्-खड़्' सब मेरी हैं,
है यह रहस्य मैं इसको खोल रहा हूँ ।

मैं सूने में रहता हूँ , ऐसा सूना,
जहाँ घास उगा रहता है ऊना ;
और झाड़ कुछ इमली के, पीपल के,
अँधकार जिनसे होता है दूना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुम देख रहे हो मुझको, जहाँ खड़ा हूँ ,
तुम देख रहे हो मुझको जहाँ पड़ा हूँ ,
मैं ऐसे ही खंड़हर चुनता फिरता हूँ ,
मैं ऐसी ही जगहों में पला, बढ़ा हूँ ।

हाँ, यहाँ किले की दीवारों के ऊपर,
नीचे तलघर में या समतल पर भू पर
कुछ जन-श्रुतियों का पहरा यहाँ लगा है,
जो मुझे भयानक कर देती हैं छू कर।

तुम डरो नहीं, डर वैसे कहाँ नहीं है,
पर खास बात डर की कुछ यहाँ नहीं है,
बस एक बात है, वह केवल ऐसी कि,
कुछ लोग यहाँ थे, अब वे यहाँ नहीं है।

यहाँ बहुत दिन हुए एक थी रानी,
इतिहास बताता उसकी नहीं कहानी,
वह किसी एक पागल पर जान दिये थी,
थी उसकी केवल एक यही नादानी।

यह घाट नदी का, अब जो टूट गया है,
यह घाट नदी का, अब जो फूट गया है,
वह यहाँ बैठकर रोज-रोज गाता था,
अब यहाँ बैठना उसका छूट गया है।

शाम हुए रानी खिड़की पर आती,
थी पागल के गीतों को वह दुहराती;
तब पागल आता और बजाता बंसी,
रानी उसकी बंसी पर छुप कर गाती।

किसी एक दिन राजा ने यह देखा,
खिंच गयी ह्दय पर उसके दुख की रेखा ;
वह भरा क्रोध में आया और रानी से,
उसने माँगा इन सब साँझों का लेखा।

रानी बोली पागल को जरा बुला दो,
मैं पागल हूँ , राजा, तुम मुझे भुला दो ;
मैं बहुत दिनों से जाग रही हूँ राजा,
बंसी बजवा कर मुझको जरा सुला दो।

वह राजा था हाँ, कोई खेल नहीं था,
ऐसे जवाब से उनका मेल नहीं था ;
रानी ऐसे बोली थी, जैसे उसके,
इस बड़े किले में कोई जेल नहीं था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुम जहाँ खड़े हो, यहीं कभी सूली थी,
रानी की कोमल देह यहीं झूली थी ;
हाँ, पागल की भी यहीं , यहीं रानी की,
राजा हँस कर बोला, रानी भूली थी।

किन्तु नहीं फिर राजा ने सुख जाना,
हर जगह गूँजता था पागल का गाना ;
बीच-बीच में, राजा तुम भूले थे,
रानी का हँसकर सुन पड़ता था ताना।

तब और बरस बीते, राजा भी बीते,
रह गये किले के कमरे-कमरे रीते ;
तब मैं आया, कुछ मेरे साथी आये,
अब हमसब मिलकर करते हैं मनचीते।

पर कभी-कभी वह पागल आ जाता है,
लाता है रानी को, या गा जाता है ;
तब मेरे उल्लू, साँप और गिरगिट पर,
अनजान एक सकता-सा छा जाता है।

शब्दार्थ-टिप्पण

धाम निवास, घर **निस्तब्ध** निश्चेष्ट, गतिहीन **ऊना** न्यून, छोटा, घटिया **तलघर** तहखाना **जनश्रुति** अफवाह **खास** विशिष्ट **नादानी** ना समझी, मूर्खता **घाट** नदी पट का स्थान **लेखा** हिसाब **सूली** लोहेका नुकीला छड़ हलाकर प्राणदण्ड देने का एक प्रकार **ताना** व्यंग पूर्ण चुटीली बात **रीता** खाली, रिक्त

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कुछ लोग सन्नाटे को भ्रांतिवश क्या कहते हैं ?
(2) सन्नाटे में कभी-कभी किसकी रोशनी दिख जाती है ?
(3) सन्नाटा कहाँ पलता-बढ़ता है ?
(4) रानी किस पर दिवानी थी ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सन्नाटा अपना रहस्य किस प्रकार बताता है ?
(2) सन्नाटे की भयानकता कैसे बढ़ती है ?
(3) राजा ने रानी से साँझों का हिसाब क्यों माँगा ?
(4) राजा ने रानी और पागल को मौत की सजा क्यों दी ?
(5) अब महल के कमरों में कौन रहते थे ?

3. विस्तार से प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) राजा के प्रत्युत्तर का क्या परिणाम आया ?
(2) सन्नाटे की भयंकरता का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) रानी और पागल की कहानी अपने शब्दों में लिखिए?
(4) 'सन्नाटा' काव्य का भाव विस्तार से समझाइये।

4. काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) मैं शांत नहीं निस्तब्ध नहीं, फिर क्या हूँ
मैं मौन नहीं हूँ, मुझमें स्वर बहते हैं।
(2) कुछ जन-श्रुतियों का पहरा यहाँ लगा है,
जो मुझे भयानक कर देती हैं छू कर।

5. सही विकल्प चुनकर एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) सन्नाटे में कौन चलता है?
(A) साँप (B) बिच्छू (C) मेढक (D) भूत
(2) रानी किस पर जान देती थी?
(A) राजा (B) नौकर (C) पागल (D) सैनिक
(3) रानी खिड़की पर क्यों आती थी?
(A) हवा खाने (B) गाना सुनने (C) राजा को देखने (D) प्रकृति शोभा देखने
(4) राजा ने किससे साँझों का लेखा माँगा?
(A) रानी से (B) दासी से (C) पागल से (D) सैनिक से

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

राजा, धाम, नदी, देह

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(A) शांत (B) मौन (C) अंधकार (D) जागना

8. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

सन्नाटा छा जाना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- सन्नाटा पर निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- " श्री भवानीप्रसाद मिश्र " का साहित्यिक परिचय करायें।
- श्री भवानीप्रसाद मिश्रजी के अन्य काव्यों का संकलन करवायें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

26 सिद्धार्थ का गृहत्याग

नरेश मेहता

(जन्म: सन् 1922)

आधुनिक भारतीय साहित्य के शीर्षस्थ कवि, कथाकार एवं विचारक श्री नरेश मेहता का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर में हुआ था। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। कुछ वर्षों तक ऑल इंडिया रेडियो में सेवाएँ दीं। मूलत: कवि होने पर भी गद्य के क्षेत्र में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं 'डूबते मस्तूल' तथा 'यह पथ बंधु' था (उपन्यास) उन्होंने एकांकी भी लिखे है। वे 'भारत-भारती, सम्मान' 'साहित्य अकादमी सम्मान' तथा 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित हैं।

प्रस्तुत एकांकी में युवराज सिद्धार्थ की मनोदशा का चित्रण है। राजमार्ग से जाती हुई अर्थी युवराज सिद्धार्थ को जीवन और सुख की क्षणभंगुरता का बोध करा जाती है। शरीर की नश्वरता के साथ ही सारे संबध और सुख वैभव समाप्त हो जाते हैं। युवराज सिद्धार्थ इस नश्वरता पर विजय पाने हेतु महासत्ता की खोज में निर्वाण की अनन्त यात्रा पर निकल पड़ते हैं। उनके महाभिनिष्क्रमण की यह गाथा करुणा और विश्वसत्य के खोज की कथा है।

पात्र

सिद्धार्थ	: कपिलवस्तु के युवराज
सुद्योधन	: सिद्धार्थ के पिता
महामाया	: सिद्धार्थ की माता
यशोधरा	: सिद्धार्थ की पत्नी
छंदक	: सारथी
मंत्री	: राजा का मंत्री

प्रथम दृश्य

(युवराज सिद्धार्थ राजमंदिर के अपने प्रकोष्ठ में किसी चिंता में डूबे हुए खिड़की से दूर देख रहे हैं। बाहर वासंती हवा बह रही है। युवराज अत्यंत सुंदर युवक हैं। संध्या का समय है। तभी उनकी पत्नी यशोघरा प्रवेश करती है।)

यशोघरा : आर्यपुत्र, आप तैयार हो गए?

सिद्धार्थ : (चौंकते हुए) क्या?

यशोघरा : किस विचार में थे? आपको स्मरण नहीं कि वाटिका की बात थी।

सिद्धार्थ : हाँ।

यशोधरा : वसंतोत्सव का आयोजन जो किया गया है। चलिए।

सिद्धार्थ : यशोघरा, मैं नहीं चल पाऊँगा।

यशोधरा : क्या आर्यपुत्र अस्वस्थ हैं? (सिद्धार्थ के निकट खड़ी हो जाती है।)

सिद्धार्थ : अस्वस्थ हूं, देवी, किंतु किसी रोग के कारण नहीं, पर....

यशोधरा : फिर वही महाराज, आप विचोरों को नहीं छोड़ सकते?

सिद्धार्थ : नहीं यशोधरा, पहले मैं विचारों को घेरा करता ता, किंतु अब विचार मुझे घेरते हैं। जानती हो, अभी उत्सव में चलने की तैयारी कर रहा था, तभी राजमार्ग से किसी की अर्थी गई। जीवनदायी वसंत में भी एक, व्यक्ति मर गया। मृत्यु से क्या मुक्ति नहीं मिल सकती, यशोधरा?

यशोधरा : महाराज, जैसे जीवन धर्म है, वैसे ही मृत्यु भी धर्म है। जीवन है, इसलिए मृत्यु भी है।

सिद्धार्थ : यों कहो कि शरीर है, इसलिए रोग है, बुढ़ापा है, मृत्यु है--जीवन भर दुख ही दुख: किंतु यशोधरा, यह तो मुझे स्वीकार नहीं। एक दिन इस तन और जीवन को रोग के कीटाणु, मृत्यु की लपटें, निरर्थक ही समाप्त कर देंगी। नहीं यशोधरा, सो नहीं होने का। मनुष्य कठपुतली नहीं। इस क्रम नियम से परे क्या है?

यशोधरा : प्रभु, इतना अधिक नहीं सोचना चाहिए।

सिद्धार्थ : क्योंकि सोचने से सृष्टि के विषय में नियमों के बारे में, क्रम के संबंध में जिज्ञासा पैदा होती है और वह जिज्ञासा ही हमारे मन में निर्णय उत्पन्न करती है.......

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यशोघरा : कैसा निर्णय आर्यपुत्र ?

सिद्धार्थ : (हंसते हुए) अभी निर्णय का समय नहीं आया देवि ? चिंता न करो। चलो, आज तो वसंतोत्सव है। क्षण को सत्य सिद्ध करना चाहिए। सब कुछ कर्तव्य है यहाँ यशोधरा।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

(कुछ समय बाद, सबेरे की बेला है। मंगलवाद्य बज रहे हैं। स्त्रियां मंगलाचरण गा रही हैं। युवराज सिद्धार्थ अन्यमनस्क से कक्ष में टहल रहे हैं। युवराज की माता महामाया प्रवेश करती हैं। मंत्री आदि आते हैं।)

महामाया : शाक्यवंश में नया कुलदीपक जन्मा है, सिद्धार्थ।

मंत्री : कपिलवस्तु का भावी सम्राट, बधाई स्वीकारें युवराज।
(मंत्री आदि प्रणाम में झुकते हैं। सिद्धार्थ उन्हें देखते हैं और फिर खिड़की के पास खड़े-खड़े कहीं खो जाते हैं।)

महामाया : बेटा, किस चिंता में डूब गए? यह सोचना तो और दिन कर लोगे, आज के इस शुभ दिन तो रहने दो। चलो, महाराज, राजपंडित आदि शांतिपूजन के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।
(सबका प्रस्थान। अकेले सिद्धार्थ ही रह जाते हैं।)

सिद्धार्थ : (स्वागत) एक नया कुलदीपक! कपिलवस्तु का भावी सम्राट (किंचित उपेक्षा की हंसी के साथ)एक नया जन्म, जो कि रोगग्रस्त होगा, वृद्ध होगा और फिर एक दिन मृत्यु.......इस जन्म, रोग, वृद्धावस्था एवं मृत्यु के क्रम में फंसे रहने को जीवन कहते हैं। आज जन्म की प्रसन्नता है तो कल यही संबंधी उसके चले जाने पर उसे बहा देंगे। सारे संबंध इस देह के हैं। देह तो मरने वाली है। इसीलिये ये संबंध भी मरने वाले हैं और जो वस्तु मरने वाली है, उससे प्रेम या मोह कैसा? न कोई पुत्र है, न पिता। न पति है, न पत्नी। सब विभिन्न देह हैं जो अपनी भोग भोगती हैं? इससे छुटकारा पाए बिना सब व्यर्थ है।
(तभी महाराज शुद्धोधन पधारते हैं।)

सिद्धार्थ : (पिता को देखकर प्रणाम करते हुए)प्रणाम स्वीकार करें।

शुद्योधन : आयुष्यमान भव ! चलो सिद्धार्थ, आज का-सा मंगल दिन नित नहीं आता।

सिद्धार्थ : महाराज मुझे तो चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखता है।

शुद्योधन : अधिक विचार करने से सिद्धार्थ मन में केवल प्रश्नि ही घिरते हैं।

सिद्धार्थ : किंतु, महाराज, जब अंग शिथिल हो जाएंगे, तब इन प्रश्नों से युद्ध करने की शक्ति ही कहाँ रहेगी?

शुद्योधन : युवराज, तुम क्या कहना चाहते हो?

सिद्धार्थ : कुछ नहीं, महाराज देखता हूँ, इस पुत्रजन्म के कारण मैं पितृऋण से मुक्त हुआ। शेष दो ऋणों से मुक्त होना ही पड़ेगा। (सहसा भाव बदल कर) चलिए, महाराज पाठ-पूजन की प्रतीक्षा हो रही होगी।

(दोनों का प्रस्थान पटाक्षेप।)

तृतीय दृश्य

(यशोधरा कक्ष में अपने पुत्र राहुल के साथ लेटी हुई है। कक्ष में स्वर्ण दीप जल रहा है। कमरे का दरवाजा हलके से खुलता है।)

यशोधरा : (चौंकते हुए)कौन?

सिद्धार्थ : क्यों चौंक गई, यशोधरा?

यशोधरा : (उठने की चेष्टा के साथ)प्रणाम आर्यपुत्र, अभी सोए नहीं?

सिद्धार्थ : नहीं तो, आज तक सोया ही तो था। अब तो जागने की बेला आ गई यशोधरा।

यशोधरा : (बात न समझते हुए) क्या भिनसार हो गई?

सिद्धार्थ : शायद हो जाए। हाँ, तुम क्यों नहीं सोयी?

यशोधरा : राहुल अभी-अभी तो सोया है।

सिद्धार्थ : तो तुम भी सो जाओ, यशोधरे ! मैं चलूं।

यशोधरा : बैठिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सिद्धार्थ : जागने के बाद बैठा नहीं जाता है यशोधरा , बल्कि चला जाता है।
यशोधरा : यह आज आप कैसी बातें कर रहे हैं, कुशंकाओं से मेरा मन घबरा रहा है।
सिद्धार्थ : यह तुम्हारा मोह है। अच्छा तो जाऊँ न?
यशोधरा : जैसी आर्यपुत्र की इच्छा। (सो जाती है।)
सिद्धार्थ : (स्वत:)मैं तो जगाना चाहता हूं और तुम सोना चाहती हो। अच्छा यही सही। अकेले तुम्हीं नहीं बल्कि शेष को भी जगा सकूं इस रहस्य की प्राप्ति के लिए जाता हूं। विदा!

(सिद्धार्थ जाते हैं । पटाक्षेप)

चतुर्थ दृश्य

(भोर बेला। सूर्योदय हो रहा है। नदी तट पर सिध्धार्थ अपने विश्वस्त सेवक छंदक के साथ खड़े हैं।)

सिद्धार्थ : छंदक, यह नदी ही कपिलवस्तु राज्य की सीमा है न?
छंदक : हां, प्रभु !
सिद्धार्थ : तो मैं इस भूमि पर युवराज नहीं हूं न, छंदक?
छंदक : यदि यह भूमि आपको युवराज न माने तो मेरी कृपाण.....
सिद्धार्थ : (हँसते हुए)छंदक, इस मातृभूमि के लिए न कोई सम्राट है, न सेवक। अच्छा थोडा विश्राम करें।
छंदक : प्रभु, हम कपिलवस्तु से बीस योजन दूर हैं। लौटने में देर हो जाएगी। इस बेला तक तो आप रोज लौट जाते थे और जैसे-जैसे देर होगी, वैसे-वैसे महाराज को चिंता होगी।
सिद्धार्थ : तो छंदक सुनो......मैं अब लौटूंगा नहीं।
छंदक : क्यों महाराज? क्या आप......
सिद्धार्थ : हाँ छंदक, इस देश के जन्म, रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु से निवृत्ति का उपाय खोजने के लिए मैं अब लौटूंगा नहीं।
छंदक : यह सब आप क्या कह रहे हैं, स्वामी?
सिद्धार्थ : मैं इस चक्र को, गति को नहीं स्वीकारता। इन नियमों से मुक्ति चाहता हूँ और इसलिए, छंदक, तुम अब लौट जाओगे।
छंदक : (सिद्धार्थ के चरणों में गिरकर रोते हुए)पर प्रभु, आपके बिना महाराज.......राजमाता........
सिद्धार्थ : मैं आज से तुम्हारा प्रभु नहीं। मेरा किसी से कोई संबंध नहीं। मैं तो बस पथ का एक भिखारी हूँ, छंदक। (सिद्धार्थ अपने एक-एक वस्त्र उतारकर छंदक को देते हैं। छंदक रोता है। देखते-देखते सिद्धार्थ के तन पर राजपरिवार का एक भी वस्त्र शेष नहीं रहता।)
सिद्धार्थ : मैं भिक्षुक हूँ, तुम्हीं से पहली भिक्षा मांगता हूँ।
छंदक : (सिद्धार्थ के चरणों में फूट -फूटकर रो पड़ता है।)यह क्या कह रहे हैं, महाराज !
सिद्धार्थ : मझे महाराज न कहो, छंदक। सिद्धार्थ कहो। बोलों, मुझे भीख दोगे?
छंदक : सेवक को आज्ञा करें देव!
सिद्धार्थ : छंदक, मनुष्यों की भाषा बोलो। यदि तुम मुझे भीख नहीं दोगे, तो तुमहारे राजा का यह अंतिम वस्त्र भी फेंककर मुझे दिगंबर हो जाना होगा यहां से।
छंदक : (डर जाता है।)आज्ञा करें।
सिद्धार्थ : अपना यह सादा उपवस्त्र मुझे दे दो।
(छंदक अपना उपवस्त्रदेता है।)
सिद्धार्थ : और नदी से जल लाकर मेरे ये राजसी केश काट दो।
छंदक : प्रभु! यह नहीं होने का कभी....
सिद्धार्थ : जैसी तुम्हारी इच्छा, छंदक किंतु तुम्हारे अस्वीकारने के बाद भी ये कटेगें अवश्य ही। फिर क्यों नहीं तुम्हीं काट देते?
(छंदक रोते हुए जल लेने जाता है। लौटता है और देखते-देखते सिद्धार्थ के केश कटकर धरती पर गिर जाते हैं।)
सिद्धार्थ : (अत्यंत प्रसन्न होकर)जाओ छंदक, तुम्हारा कल्याण हो। तुम वास्तव में मेरे विश्वासपात्र रहे। परिवार को सांत्वना देना और कहना कि यदि सिद्धार्थ अपने पथ में सिद्ध हुआ तो कभी लौटेगा। अब जाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छंदक : प्रभु, लौट चलिए।

सिद्धार्थ : जाओ छंदक, देर न करो। अब जाओ।
(सिद्धार्थ एक बार अपने घोड़े को प्यार करते हैं। देखते-देखते छंदक रोते हुए दोनों घोड़ों को लेकर नदी पार करके अदृश्य हो जाता है।)

सिद्धार्थ : (स्वत:) सिद्धार्थ ! उठो और आगे बढ़ो। चारों दिशाएँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। चलो और निर्वाण का पथ जब तक न मिले, चलते चलो.....

(पटाक्षेप)

शब्दार्थ-टिप्पण

अन्यमनस्क अनमना **कृपाण** कटारी, छोटी तलवार **दिगंबर** निर्वस्त्र **निर्वाण** परमगति, मोक्ष **प्रकोष्ठ** बड़ा कमरा **भिनसार** सबेरा **राजसी** राजा के योग्य, कीमती, बहुमूल्य **वाटिका** उद्यान, बगीचा

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) रोग और मृत्यु क्यों हैं ?

(2) सिद्धार्थ के मतानुसार जीवन क्या है ?

(3) हमारे संबंध मरनेवाले क्यों हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) सिद्धार्थकी अस्ववस्था का क्या कारण था ?

(2) जन्म और जीवन के संबंध में सिद्धार्थ के क्या विचार थे ?

(3) राजसी केश काटने से इन्कार कर देने पर सिद्धार्थ ने छंदक से क्या कहा ?

3. सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) सिद्धार्थ ने गृह का त्याग क्यों किया ?

(2) यशोधरा कौन थी ? उन्होंने सिद्धार्थ से किस उत्सव में जाने की बात की ? क्यों ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) जो वस्तु मरनेवाली है, उससे प्रेम या मोह कैसा !

(2) पहले मैं विचारों को घेरा करता था किंतु अब विचार मुझे घेरते हैं।

(3) मैं इस चक्र को, गति को नहीं स्वीकारता इन नियमों से मुक्ति चाहता हूं।

5. संधि-विग्रह कीजिए :

अत्यंत, वसंतोत्सव, वृद्धावस्था, समरांगण, सूर्योदय

6. विग्रह करके समास भेद बताइए :

मंगलवाद्य, युवराज, रोगग्रस्त, राजपंडित, पाठ-पूजन

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रामायण के आदर्श पात्रों का एक पात्रीय अभिनय कक्षा में कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- महाभिनिष्क्रमण अर्थात क्या ? सिद्धार्थका गृहत्याग पाठ के आधार पर बच्चों को समझाइए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

' '

27 नीलकंठ मोर

महादेवी वर्मा

(जन्म:सन 1907 ई.; मृत्यु : सन 1987 ई.)

महादेवी वर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। उन्होंने प्रयाग विश्विविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। वे कई वर्षों तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की आचार्या रहीं। वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की मनोनीत सदस्या भी रहीं। भारत सरकार ने उन्हें पद्‌मविभूषण की उपाधि से सम्मानित किया।

कवयित्री के रूप में उनके काव्य में वेदना और करुंणा के स्वर प्रधान हैं तो गद्य लेखिका के रूप में उन्होंने अपने समय के पीड़ित, व्यथित लोगों एवं जीवों की वेदना को वाणी दी। जीवों के प्रति उनकी संवेदना और करुणा यथार्थ के धरातल पर अवस्थित हैं जो उनके संस्मरणों एवं रेखाचित्रों में दिखाई देती हैं. 'नीहार,' 'रश्मि,' 'सांध्यगीत,' 'दीपशिखा,' तथा 'यामा' इनके प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ तथा स्मृति की रेखाएँ , 'श्रृंखला का कडियाँ,' और 'अतीत के चलचित्र' आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ है। 'यामा' पर उन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।

प्रस्तुत रचना नीलकंठ मोर के माध्यम से लिखिका ने अपने समकालीन जीवन की विसंगतियों के नेपथ्य में पशु-पक्षियों की प्रकृति का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। कृष्ण-राधा-कुब्जा के मिचक का सांकेतिक चित्र नीलकंठ-कुब्जा के व्यवहार में परिलक्षित होता है। पक्षी स्वभाव का मानवीकरण भी इस रचना की विशेषता है।

प्रयाग जैसे शान्त और सांस्कृतिक आश्रम-नगर में नखासकोना एक विचित्र स्थिति रखता है। जितने दंगे-फसाद और छूरे-चाकूबाजी की घटनाएँ घटित होती हैं, सबका अशुभारम्भ प्राय: नखासकोने से ही होता है।

उसकी कुछ और भी अनोखी विशेषताएँ हैं। घास काटने की मशीन के बड़े चौड़े चाकू से लेकर फरसा , कुल्हाड़ी, आरी, छुरी आदि में धार रखनेवालों तक की दुकानें वहीं हैं। अर्थात् गोंठिल चाकू-छुरी को पैना करने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है आँखों का सरकारी अस्पताल भी वहीं प्रतिष्ठित है। शत्रु-मित्र की पहचान के लिए दृष्टि कमजोर हो तो वहाँ ठीक करायी जा सकती है, जिसमें कोई भूल होने की सम्भावना न रहे। इसके अतिरिक्त एक और अस्पताल उसी कोने में गरिमापूर्ण ऐतिहासिक स्थिति रखता है। आहत, मुमूर्षु व्यक्ति की दृष्टि से यह विशेष सुविधा है। यदि अस्पताल के अन्त:कक्षों में स्थान न मिले, यदि डॉक्टर, नर्स आदि का दर्शन दुर्लभ रहे तो बरामदे पोर्टिको आदि में विश्राम प्राप्त हो सकता है और यदि वहाँभी स्थान भाव हो, तो अस्पताल के कम्पाउण्ड में मरने का संतोष तो मिल ही सकता है।

हमारे देश में अस्पताल, साधारण जन को अंतिम यात्रा में संतोष देने के लिऐ ही तो हैं। किसी प्रकार घसीटकर, टाँगकर उस सीमा-रेखा में पहुँचा आने पर बीमार और उसके परिचारकों को एक अनिवर्चनीय आत्मिक सुख प्राप्त होता है। इसके अधिक पाने की न उनकी कल्पना है, न माँग। कम-से-कम इस व्यवस्था ने अंतिम समय मुख में गंगाजल, तुलसी, सोना डालने की समस्या तो सुलझा ही दी है। यहाँ मत्स्य क्रय-विक्रय केन्द्र भी है और तेल-फुलेल की दुकानें भी मानो दुर्गन्ध में समरसता स्थापित करने का अनुष्ठान है।

पर नखासकोने के प्रति मेरे आकर्षण का कारण, उपर्युक्त विशेषताँ नहीं है। वस्तुत: वह स्थान मेरे खरगोश, कबूतर, मोर, चकोर आदि जीव-जन्तुओं का कारागार भी है। अस्पताल के सामने की पटरी पर कई छोटे-छोटे घर और बरामदे हैं, जिनमें ये जीव-जन्तु तथा इनके कठिन-ह्दय जेलर दोनों निवास करते हैं।

छोटे-बड़े अनेक पिंजड़े बरामदे में और बाहर रखे रहते हैं, जिनमें दो खरगोशों के रहने स्थान में पच्चीस और चार चिड़ियों के रहने के स्थान में पचास भरी रहती हैं। इन छोटे-जीवों को हँसने-रोने के लिए भिन्न ध्वनियाँ नहीं मिलती हैं। अत: इनका महाकलरव महा-क्रन्दन भी हो तो आश्चर्य नहीं। इन जीवों के कष्ट-निवारण का कोई उपाय न सूझपाने पर भी मैं अपने-आपको उस ओर जाने से नहीं रोक पाती। किसी पिंजड़े में पानी न देखकर उसमें पानी रखवा देती हूँ। दाने का अभाव हो तो दाना डलवा देती हूँ। कुछ चिड़ियों को खरीदकर उड़ा देती हूँ। जिनके पंख काट दिये गये हैं, उन्हें ले आती हूँ। परन्तु फिर जब उस ओर पहुँच जाती हूँ, सब कुछ पहले जैसा ही कष्टकर मिलता है।

उस दिन, एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर लौट रही थी कि चिड़ियों ओर खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियाँ चिड़ियावाले की दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होंने सड़क पर आकर ड्राइवर को रुकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होंने कहना आरम्भ किया, " सलाम गुरुजी! पिछली बार आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकरगढ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

है, सो एसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इन्सान का दिल है। मरने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दे दूँ। टालने के लिए मैंने कह दिया, "गुरुजी ने मँगवाये हैं। वैसे यह कमबख्त रोजगार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो मारो-मारो!"

बड़े मियाँ के भाषण की तूफान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुनने वाला थककर जहाँ रोक दे, वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य से परिचित होने के कारण ही मैंने बीच में उन्हें रोक पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहा?" बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे-से पिंजड़े तक पहुँची, जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। मोर हैं, यह मान लेना कठिन था। पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी-शावक जाली के गोल फ्रेम में कसे-जड़े चित्र जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियाँ की भाषण-मेल चली जा रही थी। "ईमान कसम गुरुजी, चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपये लिये हैं। बारहा कहा, भई जरा सोच तो अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी बड़ी कीमत ही माँगने चला ! पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका खयाल करके अछ्ता-पछ्ताकर देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझें।" अस्तु तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईमान के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजड़ा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी-शावकों के छूटपटाने से लगता था, मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, तीतर हैं, मोर कहकर ठग दिया है।

कदाचित् अनेक बार ठगे जाने का कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा, "मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं। है तो पक्षी ही। और तीतर-बटेर क्या लम्बी पूँछ न होने कारण उपेक्षा योग्य पक्षी हैं?" चिढ़ा दिए जाने के कारण ही सम्भवत: उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाजा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकल कर कमरे में मानो खो गए। कभी मेज के नीचे घुस गए, कभी आलमारी के पीछे। अन्त में इस लुका-छिपी से थककर, उन्होंने मेरे रद्दी कागजों की टोकरी को अपने नये बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज पर, कभी कुर्सी पर और मेरे सिर पर अचानक आविर्भूत होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाजा मुझे निरन्तर बन्द रखना पडता था। खुला रहने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागन्तुकों का पता लगा सकती और तब उसकी शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परन्तु यहाँ तो दो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाजा बन्द रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असहय ही कही जायगी।

जब मेरे कमरे का कायाकल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा तब मैंने बड़ी कठिनाई से दोनों चिड़ियों को पकडकर जाली के बड़े घर में पहुँचाया, जो मेरे जीव-जन्तुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागन्तुकों ने पहले से रहने वालों में वैसा ही कुतूहल जगाया जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उलके चारों और घूम-घूमकर गुटगूँ गुटगूँकी रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों और उछ्ल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भलीभाँति देखने के लिए एक आँख बन्द करके उनका परीक्षण करने लगे। ताम्रचूड़ झूले से उतरकर और दोनों पंखों को फैलाकर शोर करने लगा। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीरे-धीरे दोनों मोर-बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमश: और रंगमय था, जैसा इल्ली से तितली का बनना।

मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गयी। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गयी, गोल आँखों में इन्द्रनील की नीलाम द्युति झलकने लगी। लम्बी नील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगें उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में स्लेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लम्बी हुई और उसके पंखों पर चन्द्रिकाओं के इन्द्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंग-रहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गर्दन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीचे कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौन्दर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नही आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ, परन्तु अपनी लम्बी धूपछाँही गर्दन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नीलाम ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी के नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञात नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जन्तुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सबेरे ही वह खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्र कर उस ओर ले जाता, जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता था। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचुप्रहार से उसे दण्ड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे और शरीर बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर ऊपर उठा लेता था और जब तक वे आर्तक्रन्दन न करने लगते, उन्हें अधर में लटकाए रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित करने का अवसर न देते थे। उसके दण्डविधान के समान ही उन जीव जन्तुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्राय: वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लम्बी पूँछ और सघन पंखों में छुआ-छुऔअल-सा खेलते रहते थे।

एक दिन उसके अपत्यस्नेह का हमें ऐसा प्रमाण मिला कि हम विस्मित हो गए। कभी-कभी खरगोश, कबूतर आदि साँप के लिए आकर्षण बन जाते हैं और यदि नाली के घर में पानी निकलने के लिए बनी नालियों में से कोई खुली रह जाय तो उसका भीतर प्रवेश पा लेना सहज हो जाता है। ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप नाली के भीतर पहुँच गया।

सब जीव-जन्तु भागकर इधर-उधर छिप गये, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुँह में दबा रखा था; शेष आधा जो बाहर था, उससे ची-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकण्ठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी केचौकन्ने कानों ने उस मन्द स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ पंख समेट कर सर से एक झपटे में नीचे आ गया।

सम्भवत: अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है। उसने साँप को फन के पास पंजों से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किये कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल तो आया, परन्तु निश्चेष्ट-सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यक्ता नहीं समझी, परन्तु मन्द्र केका किसी असामान्य घटना की सूचना सब और प्रसारित कर दी। लाली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खण्ड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात भर उसे पंखों के नीचे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा,यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देखकर समझ में आ जाता है।

मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं। इसी से उसे बाज, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूर-कर्म है।

नीलकण्ठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था।

मेघों की साँवली छाया में अपने इन्दधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मण्डलाकर बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य सम पर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परन्तु उसकी गति में भी एक छन्द रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ के दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बायीं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्श कर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल का परिचय मिलता था। नीलकंठ ने कैसे समझा लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता; परन्तु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही, अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मण्डलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया तब से यह नृत्य-भंगिमा नित्य का क्रम बन गयी। प्राय: मेरे साथ कोई न कोई देशी विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मानसूचक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी महिलाओं ने उसे "परफेक्ट जैन्टिलमैन" की उपाधि दे डाली।

जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसन्त में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नये लाल पल्लवों से ढँक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता। पर जब तक राधा को भी मुक्त न किया जाए, वह दरवाजे की बाहर ही उपालम्भ की मुद्रा में खड़ा रहता। मंजरियों के बीच उसकी नीलाम झलक संध्या की छाया से सुनहले सरोवर में नीले कमलदलों का भ्रम उत्पन्न कर देती थी। हवा से तरंगायित अशोक के रक्तिमाभ पत्तों में तो वह मूंगे के फलक पर मरकत से बना चित्र जान पड़ता था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नीलकंठ और राधा की तो सबसे प्रिय ऋतु वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मन्द्र केका की गूँज-अनगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानो बूंदों के उतरनेके लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरम्भ होता। और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूंदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मन्द्र से मन्द्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिनी पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैला कर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक दूसरे के पंखो से टपकने वाली बूंदों को चोंच से पीकर-पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इन आनन्दोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियाँ की विरल दाढ़ी और सफेद डोरे से कान में बँधी ऐनक को ही अपने ध्यान का केन्द्र बनाया। पर बड़े मियाँ के पैकों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा जैसी ही थी। उसके मूँज से बँधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गई थी कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी। बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी- "देखिए गुरुजी, कम्बख्त चिड़मारी ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है। आप न आयी होती तो मैं उसी के सिर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ।"

सारांश यह कि सात रुपये देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आयी और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहम पट्टी और देखभाल करने पर वह महीने भर में अच्छी हो गयी। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परन्तु यह ठूँठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुँचाया गया और नाम रखा गया कुब्जा। कुब्जा नाम के अनुरूप स्वभाव से भी वह प्रमाणित हुई।

अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मारकर उसने राधा की कलंगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव जन्तु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अण्डे पिए, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मारकर राधा को ढकेल दिया फिर अण्डे फोड़कर ठूंठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिए।

हमने उसे अलग बन्द किया तो उसने दाना-पानी छोड़ दिया और जाली पर सिर पटक-पटककर घायल कर दिया।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अन्त हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एकबार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। एकबार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा के समान अब भी पंखों का मण्डलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सब में मेल हो जाएगा। अन्त में तीन-चार मास के उपरान्त एक दिन सबेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूंछ-पंख फैलाए धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंखों में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। "क्यों" का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न कोई उसे बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिन्ह मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गयी। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चन्द्रिकाओं से बिम्बित-प्रतिबिम्बित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा।

नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भाग कर लौट आया था, अत: वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाए रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूँढ आरम्भ की। खोज के क्रम में वह प्राय: जाली का दरवाजा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम,अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूँढ़ती रहती थी। एक दिन वह आम से उतरी ही थी कि कजली (अल्सेशियन कुत्ती)सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार कजली पर भी चोंच से प्रहार किया। परिणामत: कजली के दो दाँत गर्दन पर लग गये। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परन्तु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षीप्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष, महत्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है, तब वह कभी ऊँचे झूले पर और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्र से तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

नखास पशु पक्षीबाजार, जहाँ चिड़ियाँ और छोटे जीव बिकते हैं **गोंठिल** भोथरा **मुमूर्ष** मरणशील, मृत्यु का इच्छुक **पोर्टिको** कार, मोटर रखने का गैरेज **परिचारक** सेवक **अनिवर्चनीय** अवर्णनीय **आत्मिक** मानसिक **मत्स्य** मछली **फुलेल** इत्र, सुगंधि **कारागार** जेल **क्रंदन** रोना, विलाप **शावक** शिशु , पशु पक्षी **बारहा** बारबार **मूँजी** धुनी **बसेरा** निवास **आश्वस्त** विश्वास **आविर्भूत** अवतरित, उत्पन्न **अनधिकार** अधिकारहीन **मार्जरी** बिल्ली **कायाकल्प** पूर्णपरिवर्तन, नवीनीकरण **लक्का** सफेद **ताम्रचूड** मुर्गा **इल्ली** कोशित **द्युति** चमक **ग्रीवा** गरदन **उदीप्त** आलोकित, उर्जायित **वाम** बायाँ **मंथर** धीमी **चंचु** चोंच **कर्णवेध** कान छिदना **अपत्य** बच्चा संतान **निश्चेष्ट** बिना हिल डुले **निष्क्रिय** मंद्र, गंभीर, प्रसन्नकर्ता **केकारव** कुहुकने की आवाज **उष्णता** गरमी **सहजात** सहज रूप से उत्पन्न **सम** ताल, बँधान **विस्मय** अचरज **अभिभूत** ज्यादा प्रभावित, वशीभूत **मंजरी** बौर **उपालंभ** उलाहना, शिकायत **मरकत** पन्ना(एकरत्न) **तन्मय** तल्लीन, अभिमुख **स्तबक** पुष्पगुच्छ, केशगुच्छ **सोपान** सीढ़ी के चरण **कुब्जा** कुबड़ी, कुबरी

स्वाध्याय

1. लेखिका ने अपने पालतू प्राणियों के नाम दे रखे हैं उन नामों के साथ प्राणीनाम के सही जोड़े मिलाकर लिखिए :

अ	ब
(1) मोर	(1) चित्रा
(2) मोरनियाँ	(2) लाली और डॉली
(3) कुतिया	(3) मोर
(4) बिल्ली	(4) कुब्जा और राधा
	(5) कजली

2. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) प्रयाग शहर...............शहर का दूसरा नाम है।
(A) इलाहाबाद (B) बनारस (C) उज्जैन (D) नासिक

(2) अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर लौटते समय लेखिका को ....की दूकान का ध्यान आया और ड्राइवर को उधर चलने को कहा।
(A) मत्स्य (B) तेल-फुलेल (C) चिड़ियों और खरगोश (D) मेवे-मिठाई

(3) दोनों पक्षी-शावकों के ....से लगता था मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।
(A) चहचहाने (B) छटपटाने (C) क्रंदन (D) गाने

(4) लेखिका ने नन्हें खरगोश की तुलना.....................से की है।
(A) ऊन की गेंद (B) रूई के गोले (C) बर्फ की सफेदी (D) मेमने

(5) निलकंठ के ....के समान ही उन जीव-जन्तुओंके प्रति प्रेम भी असाधारण था।
(A) सुंदर लम्बी पूँछ (B) सौंदर्य (C) बंकिम ग्रीवा (D) दंड विधान

(6) मंथर शब्द का विरोधी (विरुद्धार्थी) शब्द..............है।
(A) तीव्र (B) मंद (C) मृदु (D) तिक्त

(7) अपत्य शब्द का अर्थ है............।
(A) आपत्ति (B) जो न गिरे (C) बच्चा (D) अंडा

3. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) नखासकोना से कैसी घटनाओं के अशुभारंभ की बात कही गई है।
(2) नखासकोने प्रति लेखिका के आकर्षण का क्या कारण है।
(3) बडे मियाँ ने लेखिका को क्या कहकर संबोधित किया ?
(4) घर पहुँचने पर मोर के बच्चों को देखकर सब क्या कहने लगे ?
(5) शुरु में मोर के बच्चों को किस प्राणी से बचाने के लिए अपने पढ़ने-लिखने के कमरे का दरवाजा बंद रखती थी ?
(6) लेखिका द्वारा पाले गए जीव-जन्तुओं का सामान्य निवास कहाँ है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(7) मोर का नाम नीलकंठ क्यों रखा गया ?
(8) मोरनी का नाम क्या रखा गया ?
(9) मोर खरगोश के नन्हें बच्चों को उनके कान पकड़कर कब तक उठाए रखता था ?
(10) विदेशी महिलाओं ने नीलकंठ को क्या उपाधि दे रखी थी ?
(11) दूसरी मोरनी (कुब्जा)का स्वभाव कैसा था ?

4. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) आँखों के सरकारी अस्पताल के अलावा नखासकोने के दूसरे अस्पताल की किन चीजों को लेखिका ने अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है ?
(2) ठगे जाने की बात सुनकर लेखिका क्यों अप्रसन्न हो गई ?
(3) जालीघर में पहुँचाये जाने के पहले मोर के बच्चों ने अपना बसेरा कहाँ बनाया था ?
(4) नीलकंठ खरगोश के बच्चों को किस तरह दंडित करता था ?
(5) जीव-जन्तुओं के प्रति नीलकंठ का प्रेम कैसे प्रकट होता था ?
(6) नीलकंठ ने साँप के फन पर सीधे प्रहार क्यों नहीं किया ?
(7) वसंत ऋतु का नीलकंठ पर क्या प्रभाव पड़ा ?
(8) वर्षा के थंम जाने पर नीलकंठ और राधा अपने पंखों का गीलापन कैसे दूर करते थे ?
(9) कुब्जा राधा के साथ कैसा व्यवहार करती थी ?
(10) नीलकंठ की उदासी का क्या कारण था ?

5. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) नखासकोने में जीव-जन्तुओं को कैसे रखा गया है ?
(2) नखासकोने के जीव-जन्तुओं के कष्ट को कम करने के लिए लेखिका क्या-क्या करती थीं ?
(3) मोर के बच्चों के पालने में लेखिका को क्या-क्या ध्यान रखना पड़ा ?
(4) मोर के बच्चों के कायाकल्प का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ?
(5) नीलकंठ का प्राणियों के प्रति स्नेह कैसे प्रकट होता है ?
(6) नीलकंठ ने साँप से खरगोश-शावक की रक्षा कैसे की ?
(7) लेखिका के जालीघर के पास पहुँचते ही नीलकंठ अपनी खुशी कैसे व्यक्त करता था ?
(8) वर्षाऋतु में नीलकंठ के कार्यकलाप का वर्णन कीजिए।
(9) जालीघर के अन्य जीवों पर नवांगतुकों (मोर के बच्चों) के आगमन का क्या प्रभाव दिखाई दिया ?
(10) कुब्जा के जालीघर के बाद नीलकंठ के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई दिया ?
(11) नीलकंठ-राधा-कुब्जा ने लेखिका को पक्षी-प्रकृति की भिन्नता का कैसे परिचय दिया ?

6. व्याख्या कीजिए :

(1) 'इनका महाकलरव महाक्रंदन भी हो तो आश्चर्य नहीं।'
(2) 'यहाँ मत्स्य विक्रयकेन्द्र है और तेल-फुलेल की दुकानें भी, मानो दुर्गन्ध में समरसता स्थापित करने का अनुष्ठान है।'
(3) 'मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है हिंसक मात्र नहीं।'
(4) 'राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली हैं।'

7. संधि विग्रह कीजिए :

शुभारंभ, अनधिकार, नवागंतुक, नीलाम, विस्मयाभिभूत, रक्तिमाभ, निश्चेष्ट

8. सविग्रह समास बताइए :

नील-हरित, दक्षिण-वाम, नीलकंठ, जीव-जन्तुं, नृत्यमग्न, टेढ़ी-मेढ़ी, कलह-कोलाहल, द्वेष -प्रेम, पक्षि-शावक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. नीचे दिये गए शब्दों में से प्रत्यय अलग करके बताइए :

समरसता, कष्टकर, चिड़ियावाले, व्यावहारिक, सहचारिणी, अभिमानिनी

10. नीचे दिए गए शब्दों में से उपसर्ग अलग करके लिखिए :

अशुभारंभ, अनअधिकार, असहृय, असाधारण, विभिन्न, निश्चेष्ट

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- मोर के बारे में निम्नलिखित मुदों का समावेश करते हुए एक लघु निबंध लिखें ।
- मोर का रंग-रूप , वर्षा का प्रभाव,वसंतऋतु का प्रभाव,अन्यजीवों के साथ संबंध,आहार-विहार,उसके प्रति हमारा कर्तव्य।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को कृष्ण-राधा, और कुब्जा के बारे में जानकारी दें।
- इस पृथ्वी पर ' जितना अधिकार मनुष्य का है, उतना ही अन्य जीवों का ' -इस बात की चर्चा करें।
- समग्र जीव-जगत के प्रति विद्यार्थी संवेदनशील बनें, ऐसा प्रयास करें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

28 देख चिड़िया

राजेश जोशी

(जन्म:सन् 1946 ई.)

राजेश जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के नरसिंह गढ में हुआ था। आठवें दशक के ये बहुचर्चित कवि रहे हैं। इनकी शिक्षा-दीक्षा भोपाल में हुई। इनकी कविता में प्रगतिशील कविता की प्रखर जनवादी चेतना प्रकट होती है। उनकी सामाजिक संवेदनशीलता ने ही उनकी कालगत को गति और दिशा प्रदान की है। इनकी कविताएँ यथार्थ के ठोस धरातल से जुड़ी हैं। इसलिए अपने समय का प्रतिनिधित्व करने में ये पूर्णत: सक्षम हैं।

समकालीन जनवादी कविता को राजेश जोशी की कविता एक नया कलेवर, एक नवीन दिशा प्रदान करती है। समरगाथा नामक इनकी लम्बी कविता के अतिरिक्त एक दिन बोलेगें पेड़, राजेश जोशी की प्रमुख बहुचर्चित एवं प्रसिद्धि प्राप्त कृति है।

'देख चिड़िया,' 'एक दिन बोलेंगे पेड' से उद्धत की गई है। इस कविता में चिड़िया के माध्यम से हमें अपनी स्वतंत्रता, अपनी आजादी के प्रति सजग और सतर्क रहने की बात कही गई है। आज का समय आमने-सामने युद्ध का नहीं है, बल्कि आर्थिक व्यवस्था को मजबूत करना या उस पर अपना प्रभुत्व जमाने का है। इस कविता में चिड़िया प्रतीक के माध्यम से कहा गया है कि समय आने पर उसे अपने रंग की तरह उसके बारुदी स्वभाव का भी परिचय देना चाहिए।

चिड़िया
ज्यादा इतरा मत
दिमाग मत चढ़ा आसमान पर
कि तू चाहे तो छुट्टी रह सकती है
हर वक्त
कि तूने तो पंख पा लिए हैं
कि तू उड़ना सीख गई है।

देख चिड़िया
आजू-बाजू देख
ऊपर-नीचे देख
बाजार से आते
उस हाथ को देख
जो दिखते-दिखते अचानक
सलाकों में बदल जाता है।

इन सबसे निबटने को
काफी नहीं है
पंख होना
या सीख लेना उड़ना।

बारूद के रंगवाली चिड़िया
बारूद का स्वभाव भी सीख
उड़ना-गाना
तो ठीक
लेकिन
ताव खाना भी सीख।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

इतराना इठलाना, **छुट्टी रहना** मुक्त रहना, **निबटना** सामना करना, मुकाबला करना, **ताव खाना** गुस्सा होना।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) चिड़िया के इतराने का क्या कारण है ?

(2) बारूद के स्वभाव से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(3) कवि चिड़िया को ताव खाने की सीख क्यों देते हैं ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) किनसे निपटने के लिए पंख होना आवश्यक नहीं है ?

(2) बाजार से आते हाथ सलाखों में बदल जाते हैं का क्या अर्थ है ?

(3) चिड़िया किसका प्रतीक है ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) देख चिड़िया कविता का केन्द्रीय भाव विस्तार से समझाइए ।

(2) कवि चिड़िया को बारूद का स्वभाव सीखने के लिए क्यों कहते हैं ?

(3) अचानक सलाखों में बदलना काव्य पंक्ति का भाव विस्तार कीजिए ।

4. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) बाजार से आते
उस हाथ को देख
जो दिखते-दिखते अचानक
सलाखों में बदल जाता है।

(2) बारूद का स्वभाव भी सीख
उड़ना-गाना
तो ठीक
लेकिन
ताव खाना भी सीख

5. निम्न मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए :

आसमान पर दिमाग चढ़ाना-घमंड करना

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

आसमान , पंख, हाथ

7. विरूद्धार्थी शब्द लिखिए :

रोना, ऊपर, सीखना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राजेश जोशी की अन्य कविताओं का संकलन तैयार करें।
- अन्य कवियों की इसी भाव की पाँच कविताओं का संकलन तैयार करें।
- इस कविता को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए विद्यालय के बुलेटिन बोर्ड पर लगाएँ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- चिड़िया की आत्मकथा' निबन्ध की चर्चा करें।
- ग्लोबलाइजेशन से परिचित करवाएँ एवं लाभालाभ की चर्चा करें।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

29 सहानुभूति

हरिशंकर परसाई

(जन्म:सन् 1924 ई.; निधन : सन् 1995ई.)

हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई जी का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने नागपुर विश्व-विद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया। कुछ दिनों तक अध्यापन करने के बाद आप स्वतंत्र लेखन के क्षेत्र में आए। हिन्दी साहित्य में हास्य-व्यंग्य को इन्होने शिष्ट और सम्मानित आसन पर आरूढ़ करवाया। हिन्दी साहित्य में आप ऐसे पहले कृति व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया। व्यंग्य विधा को हास्यवाले संचारी भाव से मुक्ति दिलाई और प्रगतिशील साहित्य के सौन्दर्य बोध को महत्वपूर्ण अवयव-विडंबना और तिरस्कार से जोड़ा। यही कारण है कि कबीर, नजीर, गालिब, और निराला वाला विवादी स्वर उनके यहाँ प्रमुखता से उभरा है। आप प्रेमचन्द तथा मुक्तबोध की परम्परा को अपनी परंपरा मानते हैं। वर्तमान समाज में फैले भ्रष्टाचार, ढोंग, अवसरवादिता, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता एवं प्रभृति, कुप्रवृत्तियों पर करारा व्यंग्य आपकी रचनाओं में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उभरकर सामने आया है।

इनकी भाषा सरल-सहज हलकी-फुलकी किंतु तीखी और चुटीली होती है। 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', इनके उपन्यास हैं। 'हंसते हैं रोते हैं,' 'जैसे उनके दिन फिरे' आपके कहानी संग्रह हैं। 'अपनी-अपनी बीमारी', 'तब की बात और थी', 'सदाचार का तावीज', आदि आपके प्रसिद्ध निबन्ध संग्रह हैं। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' नामक निबन्ध संग्रह पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

प्रस्तुत रचना में परसाईंजी कहते हैं कि आजकल सच्ची सहानुभूति नष्ट होती जा रही है और दिखावा तथा आडम्बर मात्र महत्वपूर्ण बन गया है। जीवित व्यक्ति तथा उसके कार्यों की उपेक्षा की जाती है और मरते ही उसके प्रति सहानुभूति का स्रोत प्रवाहित होने लगता है। किसीकी मृत्यु पर शोक प्रदर्शन भी भावनाहीन रूढ़िमात्र बन गया है। सच्ची सहानुभूति का सम्बन्ध ह्दय से होता है, प्रदर्शन से नहीं इस बात को विभिन्न उदाहरणों से इस रचना में व्यंग्य के माध्यम से समझाया गया है।

एक कविमित्र ने रेल से कटकर आत्महत्या कर ली। मैं उसकी शवयात्रा में जाने लायक साहस नहीं बटोर पाया। वह साथी था, वर्षों का मित्र! तीस साल के उस जवान मित्र के दो टुकडे भी हम नहीं देख सके। कुछ लोगों का आग्रह था कि हमें उसके दो टुकड़े भी देखना था। उन्होंने तो जी भर उसे देखा था, उसकी शवयात्रा में गये थे और बड़े शौक से रस लेकर वर्णन कर रहे थे कि कैसे कटा, कहां से कटा, खून कहाँ गिरा, आँखें कैसी थी, सिर कैसा था। दो टुकड़े इतनी दिलचस्पी से देखने वालों में से कई ने, तब उसकी ओर आँखें भी नहीं उठाई थीं, जब वह समूचा था। टुकड़े देखने वालों ने हमारी निंदा आरंभ की, जिन्होंने उसे समूचा देखा था। कुछ लोग स्नेह और सहानुभूति का घड़ा भरकर रखे रहते हैं और आदमी के मरने की राह देखते रहते हैं। इनका ह्दय आग बुझाने के लिए पानी से भरी रखी हुई बाल्टी की तरह होता है, जिसका उपयोग तभी होता है, जब आग लगती है। इनका स्नेह और सहानुभूति प्राप्त करने के लिए आदमी को मरना पड़ता है। इन लोगों ने, हम नहीं जाने वालों को ह्दयहीन कहा। फिर अखबार वालों ने कटाक्ष किया। महत्वपूर्ण मृत्यु का उपयोग जो रोचक समाचार बनाने के लिए करते हैं, उन्होंने हम लोगों की सह्दयता पर प्रश्न चिह्न लगाया । अखबारी सहानुभूति मैंने एक बार स्वयं देखी थी। एक दैनिक के दफ्तर में संपादक के पास बैठा था। संपादक अगले अंक के लिए 'बैनर खोज' रहे थे। कोई बड़ा समाचार मिल नहीं रहा था और वे परेशान थे। सहसा रेडियो ने एक बड़े लोकप्रिय नेता की मृत्यु का समाचार प्रसारित किया। संपादक खुशी से उछल पड़े और टेबिल पर हाथ मारकर बोले, फाइन ! अच्छा 'बैनर' बन जाएगा। अखबारनवीसों ने न जाने वालों पर टिप्पणी करके उस कवि की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया नहीं, घटाया ही। अर्थ तो यही निकला न कि उसकी शवयात्रा में कई साहित्यिक ही नहीं गए। यह भी क्या कवि! 'नादान की दोस्ती' वाली कहावत ऐसे ही मौके पर याद आती है।

सहानुभूति का हिसाब नहीं करना है, संवेदना की तुलना नहीं करनी और न यही कहना है कि हम औरों से अधिक सह्दय हैं। एक बात मन में उठती है कि जीवित की अवहेलना और मृतक का सम्मान कितना बढ़ गया है। पाँच सौ साल पहले

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कबीर बड़ी हैरत में चिल्लाया था--

'जियत बाप से दंगम दंगा,
मरे हाड़ पहुँचाए गंगा !'

याद आता है कि ईसा जब भक्तों के दल के साथ बढ़े जा रहे थे, तब एक आदमी ने आकर कहा कि मैं मृत भाई को दफनाकर अभी आता हूँ। ईसा ने कहा- 'लेट द डेड बरी देअर डेड!' तुम चलो मेरे साथ ! ईसा ने उस 'फार्म ' का विरोध किया था, जो जीवन को ढँक लेता है। देखता हूँ, बुरी तरह 'फार्म' ने हमारी भावनाओं को आवृत्त कर रखा है। रूप और रूपक का बोलबाला है। स्नेह, सहानुभूति, करुणा का भी एक प्रकट रूप रूढ़ हो गया है और उसी को हम आंतरिक भाव से अधिक मानने लगे हैं। सच्चा संवेदन भी जब रूढ़ हो जाता है, तब वह एक भावहीन, रिक्त थोथा रिफ्लेक्स हो जाता है। बिन बोले का दु:ख बड़ा कहा गया है, पर अब कोलाहल से दु:ख की मात्रा मापी जाती है। शवयात्रा में जो तफरीहन भी जाए उसका दु:ख बड़ा गिना जाएगा और जो दु:ख से टूटकर घर बैठा रहे, उसे निष्ठुर माना जाएगा। प्रथा है कि पुत्र की अंत्येष्टि क्रिया में पिता नहीं जाता भला पिता पुत्र का दाह होते कैसे देखेगा! अधिक दु:ख वाले को घर में ही बैठने देना चाहिए। लेकिन अब शायद अधिक दु:ख का सबूत देने के लिए बाप को भी रूपक रचना पड़ेगा। एक आदमी को जानता हूँ, जो हर शवयात्रा में जाता है। दाहसंस्कार के प्रबंध के लिए उस जैसा विश्वासी आदमी दूसरा नहीं है। करुण-से-करुण मृत्यु पर जब आसपास लोग सिसकते होते हैं, उसके चेहरे पर शिकन नहीं जाती। वह उत्सव के उत्साह से रस्सी, घास-बाँस और हंडी की व्यवस्था में व्यस्त रहता है। क्या वह हर मृत्यु पर सब से अधिक दु:खी आदमी होता है ?

नीरो रोता भी समारोह में था। हम सभी छोटे-छोटे नीरो बने जा रहे हैं। जो समारोह में न रोए, उसका रोना, रोना नहीं गिना जाएगा। पहले 'मदनोत्सव' होते थे, अब रुदनोत्सव होते हैं। इन रुदनोत्सवों में सच्चा रोने वाला तो रह जाता है। झूठा रोनेवाला रंग जमा लेता है। एक नेता की शवयात्रा मैंने देखी थी। उसका शव एक ट्रक पर रखकर ४-५ मील दूर नर्मदाघाट पर ले जाया जा रहा था। एक व्यक्ति जो बड़ी उत्तेजना से जुलूस की व्यवस्था कर रहा था, एकदम उचक के ट्रक पर चढ़ गया और शव के सीने पर दोनों हाथ रखकर दहाड़ मारकर रोने लगा, "हाय-जी" ऐसा ओवरएक्टिंग हुआ कि ट्रेजडी की जगह कॉमेडी हो गई। मृतक के सगे भाई बेचारे नीचा सिर किए अंतिम पंक्ति में चलने लगे। उनका रोना हराम कर दिया, उस विकट विलापी ने। दूसरे दिन अखबारों में छपा कि उक्त व्यक्ति 4 -5 मील शव से चिपका हुआ क्रंदन करता गया और रास्ते में उसे कई बार मूर्च्छा आ गई। यह आगे क्यों नहीं लिखा कि धिक्कार है उन वज्रहृदय भाइयों को, जो एक बार भी नहीं चीखे और चुपचाप पीछे चलते रहे।

शोक समारोह कभी-कभी कैसे हास्यापद हो जाते हैं, इसकी आपबीती बताता हूँ। मैं एक स्कूल में अध्यापक था। १० बजे लड़कों की सामूहिक प्रार्थना होती थी। वे आपस में लत्ती मारते, पेन्सिल कोंचते, कान खींचते, चिमटी लेते, प्रार्थना कह लेते थे। सामने चबूतरे पर खड़े अध्यापक भी यह फुसफुसाते हुए निभा लेते थे कि यार, आज दस तारीख हो गई पर वेतन नहीं मिला अभी तक। बेचारे रोज प्रार्थना करें फिर भी इतना-सा वरदान न मिले के वेतन पहली को मिल जाएगा। मैं प्रार्थना में शामिल नहीं होता था। संस्था के मालिकों ने मुझे यह सोचकर नहीं छेड़ा होगा कि ईश्वर के होने को कोई निश्चय नहीं है, पर यह आदमी तो निश्चित है। अनिश्चित का पक्ष लेकर निश्चित से कौन झंझट करे। मैं अपने कमरे में बैठा रहता। एक विशेष अवसर पर मैं उस स्थल पर पहुँचता था-तब जब किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के लिए शोकप्रदर्शन करना होता। शोकभाषण मेरे जिम्मे था। हर दो-चार माह में ऐसे व्यक्ति मृत होते ही हैं, जिनके लिए स्कूलों में शोकप्रस्ताव पास होते हैं और छुट्टी होती है। मुझे हेडमास्टर से सूचना मिल जाती कि आज शोकभाषण करना है। मैं आँखों में असीम दर्द भरकर मुख पर दु:ख बिछाकर धीरे-धीरे नीचे देखता कमरे से निकलता और चबूतरे पर खड़ा हो जाता। सामने सैंकड़ों लड़कों की कतारें होतीं। विकल नयनों से मैं एकबार उन लड़कों को देखता और भारी गले से बोलना आरंभ कर देता- आज हम गहन शोक की छाया तले खड़े हैं.........भाषण के अंत में यह अवश्य कहता कि मृतक जो स्थान रिक्त कर गया है, वह कभी नहीं भरेगा- यद्यपि किसी-किसी के मरने से कोई स्थान ही रिक्त नहीं होता, बल्कि ऐसा लगता है कि अच्छा हुआ, 'टयूमर' कट गया। मैं हर मरनेवाले में मनुष्य के सब गुण आरोपित कर देता था,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वह चाहे विश्वप्रसिद्ध व्यक्ति हो या मुहल्ले का नेता। चेखव की एक कहानी में मुझ जैसा एक पात्र है, जो मृत्यु पर भाषण करने में उस्ताद है। उसके पास 'रेडीमेड' भाषण हैं। उसे लोग सोते से उठाकर स्मशानभूमि ले जाते हैं, मरने वाले का नाम मात्र बता देते हैं और धड़ल्ले से शोकपूर्ण भाषण दे देता है। एक बार नशे की झोंक में वह नामों से गड़बड़ा गया और उस व्यक्ति की मृत्यु पर बोल गया, जो उसके ठीक सामने खड़ा था। मुझे भी शोक भाषण का अभ्यास हो गया था। ठंड में जब काली शेरवानी धारण किए मैं बोलता; तब तो ऐसा लगता जैसे पादरी अंतिम आशीर्वाद दे रहा है। मेरे भाषण के बाद छुट्टी हो जाती।

कुछ दिनों में लड़कों ने मेरे प्रार्थना में आने का संबंध छुट्टी से जोड़ लिया. मैं आता दिखता, तो समझ जाते कि कोई मरा है और आज छुट्टी हो जाएगी। फिर तो लड़के कभी किसी की मृत्यु की खबर पाकर मेरे पास, आते और बड़ी गंभीर मुद्रा में कहते, 'सर , अमुक आदमी की मृत्यु हो गई। शोक सभा होनी चाहिए। मैं उन्हें टालता, तो वे जोर देते, सर सर्वत्र शोक छाया हुआ है। वह महापुरुष था। उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।' एक दिन तो मुझसे आकर कहने लगे कि डाकू मानसिंह के लिए शोकसभा करनी चाहिए। मैंने डाँटा,तो कहने लगे कि चाहे डाकू हो, पर था तो प्रसिद्ध आदमी। एक दिन एक प्रसिद्ध आदमी की मृत्यु हुई। हेडमास्टर को यह निर्णय करने में देर लगी कि मरने वाला छुट्टी के योग्य था या नहीं। लड़के निराश हो चुके थे। अंतिम क्षण में हेडमास्टर ने मुझे बुला भेजा। मुझे आते देखते ही लड़के खुशी से उचकने लगे और ताली बजाकर चिल्लाने लगे, "छुट्टी होगी! छुट्टी! छुट्टी!" मैंने क्रोध से उनकी ओर देखा और डाँटा। फिर भारी स्वर में शुरू किया, "आज हम गहन शोक की छाया तले-" वाक्य समाप्त होने के पहले ही लड़के कोलाहल करते हुए भाग खड़े हुए। कहा जाएगा कि अनुशासन नहीं था लड़कों में। मैं कहता हूँ शोक प्रदर्शन की भावनाहीन रूढ़ि का यही परिणाम होता है। आत्मा अगर वास्तव में होती हो तो उसकी शांति बड़ी भंग होती होगी, हमारी इन आत्मा की प्रार्थना वाली शोकसभाओं से।

इन रूपों में कहाँ सच्चा संवेदन है? अर्थी के पीछे चलने वालों में कौन दोस्त और कौन दुश्मन है, इसकी कोई पहचान नहीं है। मेरे एक परिचित की बीमारी में जितने लोग उन्हें देखने आए, उनमें से आधे भी उन्हें वोट देते, तो वे लोकसभा का चुनाव जीत जाते। पर वे बेचारे म्युनिसिपिल की वार्डमेंबरी का चुनाव ही हार गए।

फार्म जहाँ नहीं है, वहाँ भी भावना है, इसे हम क्यों नहीं मानते? शायद वहाँ थोड़ी अधिक ही हो। जहाँ आडंबर प्रधान हो गया वहाँ सच्ची भावना कैसे रहेगी? खादी जिसके शरीर पर न हो, उसे कुछ समय पहले तक देशभक्त ही नहीं समझते थे। ऐसा लग रहा था कि खादी का देश की अर्थव्यवस्था से संबंध तोड़कर लोग मंदिर में खादी का थान रखकर उसकी पूजा करेंगे।

जिस दिन पादरी का बढ़िया रेशमी चोगा सिल गया, उस दिन से चर्च में शायद उनके ईश्वर ने आना छोड़ दिया। जितनी देर मुल्ला मस्जिद की गुंबद से सब को सुनाकर खुदा को पुकारता है। उतनी देर उसका खुदा मस्जिद से भागकर कहीं चला जाता होगा।

जब पंडित ने पूजा में तरह-तरह के बहाने से यजमान से पैसे रखवाना शुरू किया, तो उनके देवता घबड़ाकर खिसक लिए।

यह सब शायद मन की बहक है। आखिर रीति-नीति भी तो कोई चीज है। रूढ़ि का भी तो अपना महत्त्व है। माना कि हम मनुष्य के बेटे को सूली पर टाँग देते हैं, पर गले में 'क्रास' लटकाए तो घूमना ही चाहिए।

इसलिए उठूँ। शोकसभा में जाना है। वहाँ जाने वालों के नाम छपेंगे।

शब्दार्थ-टिप्पण

सहानुभूति किसी के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझना **जियत** जीते जी **अखबारनवीस** पत्रकार **कटाक्ष** चुभने वाली बात का संकेत **तफरोहन** घूमते घामते **फार्म** रूढ़ि **बहक** भावावेश में भटकन **बैनर** प्रमुख शीर्षक **मंजिल** लक्ष्य **रिफ्लैक्स**- प्रतिबिंबित **विकल** व्याकुल, बेचैन **हैरत** आश्चर्य **चेखव** एक सुप्रसिद्ध रूसी लेखक (1860-1904 ई.)सैंकड़ों कहानियों, उपन्यासों, व नाटकों के लेखक जिनकी कृतियां विश्व की लगभग 71 भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। प्रेमचंद के मतानुसार चेखव विश्व के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार हैं। **नीरो** रोम का सम्राट (37-68 ई.) सन् 64 ई. में रोम नगर को आग लग गई थी, आधा शहर जलकर राख हो गया था, पर वह उस विनाशलीला को देखता हुआ आनंद से सारंगी बजा रहा था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुहावरे

प्रश्नचिह्न लगाना–संदेह उत्पन्न करना **बोलबाला**–प्रभाव फैलाना **रंग जमाना**–असर डालना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कविमित्र को समूचा देखनेवालों की निंदा कौन करने लगे ?

(2) शवयात्रा में किसका दु:ख बड़ा गिना जाता है ?

(3) वर्तमान समय में किसका रोना 'रोना' नहीं माना जाता ?

(4) अर्थी के पीछे चलनेवालों में किस बात की पहचान नहीं होती ?

(5) खादी के महत्त्व को लेकर कौन-सी अतिशयोक्ति की गई है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) स्नेह और सहानुभूति का घड़ा भरकर रखनेवालों के विषय में लेखक क्या कहते हैं ?

(2) अखबारी सहानुभूति का कौन-सा प्रत्यक्ष प्रमाण दिया गया है ?

(3) दाह संस्कार संबंधी विश्वासी व्यक्ति के बारे में लेखक ने कौन-सी जानकारी दी है ?

(4) विकट विलापी ने नेताजी की शवयात्रा में कौन-सा रंग जमाया ?

3. विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) शोक प्रसंग पर भाषण देने में उस्ताद पात्र की विशेषताएँ अंकित कीजिए।

(2) 'शोक समारोह हास्यास्पद हो जाते हैं' उल्लेखित उदाहरण द्‌वारा समझाइए।

(3) स्नेह, सहानुभूति और करूणा का कौन-सा रूप रूढ़ हो गया है ? स्पष्ट कीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'सच्चा संवेदन भी जब रूढ़ हो जाता है, तब वह एक भावहीन रिक्त थोथा रिफ्लैक्स हो जाता है।'

(2) 'इनका ह्‌दय आग बुझाने के लिए पानी से भरी रखी हुई बाल्टी की तरह होता है, जिसका उपयोग तभी होता है जब आग लगती है।'

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह भरिए :

(1) ....रोता भी समारोह में था।

(A) चेखव (B) नीरो (C) लेखक (D) कविमित्र

(2) एक बात मन में उठती है कि जीवित की अवहेलना और मृतक का..........कितना बढ गया है।

(A) सम्मान (B) शोकप्रदर्शन (C) महत्त्व (D) आडंबर

(3) सच्ची सहानुभूति का संबंध..........से होता है।

(A) प्रदर्शन (B) स्नेह (C) ह्‌दय (D) शोक

(4) 'जियत बाप से दंगम दंगा मरे हाड़ पहुँचाए गंगा।' यह कथन किसका है ?

(A) नीरो (B) कबीर (C) चेखव (D) परसाईंजी

6. निम्नलिखित शब्दों से समानार्थी शब्द लिखिए :

स्नेह, छात्र, कोलाहल, नादान, साहस, साथी, समाचार, खून, दल, प्रथा

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

आरंभ, ट्रेजडी, मृत्यु, शांति, हर्ष, यजमान, विश्वास, निश्चित, उपयोग, असीम, उपयोग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. संधि-विच्छेद कीजिए :

व्यस्त, मदनोत्सव, रुदनोत्सव, अध्यापक, प्रार्थना, प्रतिष्ठा, सहानुभूति, निश्चय, यद्यपि

9. निम्नलिखित संज्ञाओं के स्त्रीलिंग रूप लिखिए :

कवि, संपादक, छात्र, पुत्र, धोबी, श्रीमान, मालिक, विलाव

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'पर-उपदेश कुशल बहुतेरे' विषय पर विचार-विस्तार लिखिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'जैसे उनके दिन फिरे' पुस्तक से अन्य कहानी पढ़कर बच्चों को सुनाएँ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्याकरण

1 वर्णविचार

हिन्दी में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग उच्चरित ध्वनि तथा उनके लिपिचिह्न दोनों के लिए किया जाता रहा है। वर्ण भाषा के उच्चरित तथा लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। 'वर्ण' भाषा की सबसे छोटी इकाई हैं।

1. हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था

भाषा के उच्चरित स्वरूप में दो प्रकार की ध्वनियाँ हैं- खंड्य ध्वनियाँ और खंड्येतर ध्वनियाँ। जिन ध्वनियों को हम पृथक-पृथक दर्शा सकते हैं, वे ध्वनियाँ खंड्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। खंड्य ध्वनियों के दो वर्ग हैं-स्वर तथा व्यंजन। आप जानते हैं व्यंजन वर्णों में स्वर 'अ' जुड़ा रहता है।

उदाहरण के लिए कोई एक शब्द लीजिए जैसे-दाहोद, दाहोद में द्+आ+ह्+ओ+द्+अ कुल छः ध्वनियाँ हैं, इनमें से 'द,' 'ह,' और 'द' ये तीन व्यंजन ध्वनियाँ है तथा 'आ,' 'ओ' और 'अ' ये तीन स्वर ध्वनियाँ हैं। एक विद्यार्थिनी 'मणिनगर' में रहती है। आइए, देखे कि 'मणिनगर' में कितनी ध्वनियाँ हैं ?

मणिनगर- म्+ अ+ण्+इ+न्+अ+ग्+अ+र्+अ कुल 10 ध्वनियाँ हैं। इन में म्, ण्, न्, ग्, और र् व्यजंन हैं। हमारे देश का नाम भारत है। भारत शब्द में भ्+आ+र्+अ+त्+अ यानी कुल छः ध्वनियाँ हैं। इनमें भ, र, त व्यंजन तथा आ, (दो बार) अ, ये स्वर हैं।

हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था में 'स्वर' स्वतंत्र रूप बोले जाते हैं। इनके उच्चारण के समय वायु बिना किसी अवरोध के मुखविवर से निकलती है। व्यंजन का उच्चारण किसी स्वर की मदद से होता है तथा इनके उच्चारण के समय हवा मुख में थोड़ा ज्यादा अवरुद्ध होकर बाहर निकलती है। स्वर व्यंजन में मात्रा के रूप में जुड़े होते हैं। जिन वर्णों के साथ मात्रा नहीं होती, उनमें भी स्वर 'अ' तो रहता ही है।

उच्चरित रूप में शब्द के अंतिम व्यंजन में निहित 'अ' का उच्चारण प्रायः नहीं होता। पर पूरा व्यंजन लिखा जाता है। जब स्वर रहित व्यंजन का प्रयोग करना पड़ता है तब व्यंजन के नीचे हलंत चिह्न(्) लगता है। जैसे-ट् द् ह् इत्यादि । शब्द के अंतिम संयुक्त व्यंजन में स्वर अवश्य रहता है। जैसे --महेन्द्र=म्+अ्+ह+ए्+न्+द्+र्+अ् ; चिंता= च्+इ+न्+त्+आ ।

खंड्येतर ध्वनियाँ : इन ध्वनियों को अलग करके दर्शाया नहीं जा सकता किन्तु इनके प्रयोग के कारण शब्द के अर्थ या कथन के आशय में अंतर आ जाता है। दीर्घता, अनुनासिकता, संगम(संहिता) अनुतान और बलाघात ये खंड्येतर ध्वनियाँ है।

दीर्घता : ह्स्व और दीर्घ मात्राएँ अर्थभेद का कारण बनती हैं, जैसे-
चिंता-चीता, सुर-सूर, बेल-बैल, मोर-मौर ।

अनुनासिकता : यह भी अर्थभेदक होती है, जैसे- आँधी-आधी, गोंद-गोद, पूँछ-पूछ, साँस-सास, हैं-है,

संगम : उच्चारण करते समय किन शब्दों को प्रवाह में एक साथ पढ़ना है और किनके बीच हलका-सा विराम देना है। इसी विराम स्थान को संगम या संहिता कहते हैं। यह भी अर्थभेदक है जैसे--

वह <u>नदी</u> में तैर रहा था।	उसने कुत्ते को रोटी <u>न दी</u>।
आज विद्यालय में <u>जलसा</u> है।	गर्मी में रेतीला मैदान <u>जल सा</u> दिखाई देता है।

अनुतान : बोलने में भावों के अनुसार स्वर का उतार-चढ़ाव होता है उसे अनुतान या सुरलहर कहते हैं। हिन्दी में तीन प्रकार के अनुतान का प्रयोग होता है जैसे--

वह विद्यालय जा रहा है।	(सामान्य कथन)
वह विद्यालय जा रहा है ?	(प्रश्न)
वह विद्यालय जा रहा है !	(आश्चर्य)

बलाघात : हिन्दी में बोलते समय किसी शब्द विशेष पर श्वास के दबाव से जो बल आ जाता है, उसे बलाघात कहते हैं। इसके

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैंने विज्ञान की पुस्तक पढ़ी। (किसी और विषय की नहीं, विज्ञान की)
मैंने विज्ञान की पुस्तक पढ़ी। (कुछ और नहीं (पत्रिका आदि), पुस्तक ही)

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित मोटे टाइप में छपे शब्दो पर बलाघात है। हिन्दी में वर्णों पर लगनेवाले बलाघात अर्थभेदक नहीं है। जैसे-- पिताजी ('ता' पर बलाघात)
सात ('सा' पर बलाघात)
उसे ('से' पर बलाघात)

2. हिन्दी वर्णमाला

हिन्दी वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है। हिन्दी के वर्ण देवनागरी लिपि में लिखे जाते हैं। ये हमें परंपरागत रूप से संस्कृत से प्राप्त हुए हैं। भाषा की विकासयात्रा के क्रम में हिन्दी ने अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी के कुछ वर्ण स्वीकार किए हैं। हिन्दी वर्णों की संख्या का निर्धारण एक समस्या है। भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा घोषित हो जाने के फलस्वरूप हिन्दी वर्णों का मानकीकरण बहुत जरूरी हो गया था। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् जो मानक हिन्दी वर्णमाला निर्धारित की है, वह नीचे दी जा रही है।

मानक हिन्दी वर्णमाला :

	स्वर	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
	मात्राएँ	- ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ
	अनुस्वार	(ं-) (अं)
	विसर्ग	(:) (अः)
	अनुनासिकता चिह्न	ँ
व्यंजन :	क ख ग घ ङ	
	च छ ज झ ञ	
	ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़	
	त थ द ध न	
	प फ ब भ म	
	य र ल व	
	श ष स ह	
संयुक्त व्यंजन :	क्ष (क्+ष) त्र (त्+र) ज्ञ (ज्+ञ) श्र (श्+र)	
	हल चिह्न- ् (ड्)	
	गृहीत स्वर- ऑ (ॉ)	(अंग्रेजी से)
	गृहीत व्यंजन- ख़ ज़ फ़	(अरबी-फारसी से)

वर्णमाला में अं अः तथा ऋ को स्वरों के साथ रखा गया है क्योंकि ये स्वरों के योग से ही बोले जाते हैं। **'ऋ'** स्वर का प्रयोग केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में ही होता है, जैसे -- कृष्ण, घृत, दृश्य, ऋतु आदि।

फिलहाल 'ऋ' का उच्चारण उत्तर भारत में प्राय: 'रि' की तरह होता है, जब कि महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण के राज्यों में 'ऋ' का उच्चारण 'रु' की तरह होता है। ऋ की मात्रा (ृ) होती है, इस कारण इसे स्वर के साथ रखा गया है। अं, अः, ये क्रमश: अनुस्वार (-ं-) और विसर्ग (:) के रूप में वर्ण से जुड़ते हैं। इनका उच्चारण भी व्यंजन की भाँति होता है।

अनुस्वार (-ं-) जिस व्यंजन से पहले आता है उसी वर्ग के अंतिम वर्ण (नासिक्य) के रूप में उच्चरित होता है। जैसे - गंगा (गङ्गा) : मंजिल (मञ्जिल) , दंड (दण्ड), बंद (बन्द), चंपा (चम्पा)।

य, र, ल, व, श, ष, स और ह के साथ अनुस्वार का उच्चारण किसी भी नासिक्य व्यंजन (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) की तरह हो सकता है।

विसर्ग (:) का उच्चारण 'ह्' की तरह होता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वर्णों के भेद : वर्णमाला में वर्णों के दो भेद किये गए हैं – स्वर तथा व्यंजन।
स्वरों की संख्या अब 12 हो गई है। (अ,आ, इ, इ, उ, उ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ)
मानक व्यंजनों की संख्या अब कुल 35 है। इनमें (ख़, ज़, फ़ शामिल हैं।) क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र संयुक्त व्यंजन हैं। इन्हें स्वतंत्र रूप से लिखते अवश्य हैं, फ् ये अलग से व्यंजन नहीं गिन जा सकते। 'ळ' वर्ण का उच्चारण 'ल' और 'ढ' के बीच होता है, जो हिंदी में लुप्त प्राय है।

स्वर वर्णों के भेद : हिन्दी स्वर वर्णों के मूलत: दो भेद हैं –
(1) अनुनासिक
(2) निरनुनासिक

अनुनासिक स्वर : इनके उच्चारण में वायु की कुछ मात्रा नाक से बाहर निकलती है। जैसे अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं। यानी सभी स्वरों के अनुनासिक उच्चारण हो सकते हैं।

निरनुनासिक स्वर: इनके उच्चारण में हवा मुख विवर से सीधे बाहर निकल जाती है। उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर(मात्रा की दृष्टि से) स्वरों को दो भागों में बाँटा जाता है – ह्स्व स्वर तथा दीर्घ स्वर ।

ह्स्व स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय (एक मात्रा) लगता है, वे ह्स्व स्वर कहलाते हैं , जैसे – अ, इ, उ और ऋ।

दीर्घ स्वर : जिन स्वरों के उच्चारण में ह्स्व की तुलना में लगभग दुगुना समय लगता है। उन्हे दीर्घ स्वर कहते हैं : जैसे आ, ई, ऊ, एं, ऐ,ओ, औ, तथा ऑ ।'ऋ' के दीर्घ स्वर का प्रयोग केवल संस्कृत में होता है, हिन्दी में नहीं। दीर्घ स्वर स्वतंत्र स्वर हैं, ह्स्व स्वरों के दीर्घ रूप नही। 'ऐ' तथा 'औ' संस्कृत में संयुक्त स्वर हैं।

पारंपरिक रूप से 'य' के पहले आनेवाले 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' तथा 'व' के पहले आनेवाले 'औ' का उच्चारण 'अउ' हो जाता है। जैसे- गैया – गइया, भैया – भइया, कौवा – कउवा, हौवा – हउवा। आ, ई, ऊ, ऐ, और औ संधि स्वर भी हैं।

व्यंजन : हिन्दी में क वर्ग (5), च वर्ग (5), ट वर्ग (7), ततवर्ग (5), प वर्ग (5), अंतस्थ य, र, ल, व और ऊष्म श, ष स, ह, ह को मिलाकर कुल 36 व्यंजन थे। इनमें ख़, ज़, फ़ को मिला देने पर अब मानक हिन्दी में 39 व्यंजन हो गए हैं। वर्णमाला के व्यंजनों में 'अ' जुड़ा है। क्+अ=क, प्+अ=प, य्+अ=य, यानी क=क्+अ, प= प्+अ, य=य्+र इत्यादि।

व्यंजनों का वर्गीकरण – व्यंजनों का वर्गीकरण उनके उच्चारण तथा प्रयत्न (श्वास की मात्रा, स्वरतंत्री का कंपन, जीभ या अन्य अवयवों द्वारा वायु में अवरोध)के आधार पर किया जाता है।

(क) उच्चारण स्थान के आधार पर :

व्यंजनों का उच्चारण करते समय हमारी जीभ मुख्य विवर के विभिन्न स्थानों;
जैसे- कंठ, तालु, दाँत आदि को छूती है। इस आधार पर वर्णों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार होता है–

(1) कंठ्य (गले से)–क, ख, ग, घ, ङ; ह और ख़
(2) तालव्य (तालु से)– च, छ, ज, झ, ञ , य और श ।
(3) मूर्धन्य (तालु के मूर्धा भाग से) ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़ तथा ष।
(4) दंत्य- (दाँतों से) त, थ, द, ध, न।
(5) ओष्ठ्य (दोनों ओठों से) प, फ, ब, भ, म ।
(6) दंत्योष्ठ्य (निचले ओठ, ऊपरी दाँत से) व, फ़

(ख) उच्चारण प्रयत्न के आधार पर :

(1) **श्वास की मात्रा के आधार पर**

अल्प प्राण – इनके उच्चारण में मुख से कम हवा निकलती है; जैसे – क, ग, ङ,च, ज, ञ, ट, ड, ण, त द, न, प, ब म (प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा पाँचवाँ वर्ण)तथा य, र, ल, व ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

महाप्राण – इनके उच्चारण में मुख से निकलती हवा की मात्रा अधिक होती है; जैसे .ख, ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, घ, ध, फ, फ़, (प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण) तथा श, ष, स, और ह ।

(2) **स्वरतंत्री के कंपन के आधार पर** – जिन ध्वनियों के उच्चारण के समय स्वर तंत्री में कंपन होता है, उन्हें सघोष ध्वनियाँ कहते हैं और जब कंपन नहीं होता तब अघोष ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, जैसे –

सघोष – सभी स्वर, प्रत्येक वर्ग के अंतिम तीन वर्ण (तीसरा, चौथा, पाँचवाँ) तथा ड़, ढ़ ज़, य, र, ल, व, स और ह।

अघोष – प्रत्येक वर्ग के पहले दो व्यंजन तथा फ़, श, ष, स और ख़ ।

(3) **उच्चारण अवयवों द्वारा श्वास में अवरोध के आधार पर**-– व्यंजनों का उच्चारण करते समय उच्चारण अवयव मुख विवर में किसी स्थान विशेष को स्पर्श करते हैं, ऐसे व्यंजनों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं। जैसे –

क ख ग घ ङ ; च छ ज झ ञ ; ट, ठ, ड, ढ, ण ; त थ द ध न ; प फ ब भ म । श

इसी तरह जिन व्यंजनों का उच्चारण करता समय वायु स्थान विशेष पर घर्षण करते हुए निकलती है, संघर्षी व्यंजन कहते हैं जैसे – ख़ ज़ फ़, श ष स ह।

अंतस्थ व्यंजन : इनके उच्चारण में वायु में कम अपरोध होता है; जैसे–य र ल व । य और व को अर्ध स्वर भी कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त बाकी बचे व्यंजनों की स्थिति इस प्रकार है –

'र' जीभ की नोक वर्त्स्य (मसूढ़े) से टकराती है, इसे 'लुंठित' कहते हैं।

'ल' हवा जीभ के दोनों किनारों को छूकर-बाहर निकलती है, इसे 'पार्श्विक' कहते हैं। 'ळ' 'ड़ तथा ढ़,-जीभ ऊपर उठकर झटके के साथ नीचे आती है ; इन्हें 'उत्क्षिप्त' व्यंजन कहते हैं।

कुछ विद्वान च छ ज झ को संघर्षी व्यंजन मानते हैं।

विशेष : प्रत्येक वर्ग का पाँचवाँ वर्ण नासिक्य है। इसके उच्चारण में थोडी हवा हवा नाक से निकलती है जैसे – ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

3. हिन्दी की लिपि और वर्तनी

आप जानते ही हैं कि हिन्दी की लिपि देवनागरी है। वर्णमाला के संदर्भ में यह लिपि इससे पहले के प्रकरण में दी गई है। मानक हिन्दी में पुराने अ्र (अ)भ (झ) घ (ध) और म (भ) ळ (ल) वर्णो का रूप बदला गया है। यद्यपि प्राचीन पुस्तकों में ये वर्ण अभी भी दिखाई देंगे। देवनागरी लिपि में दीर्घ ॠ (ॠ) ऌ तथा (ॡ) भी सम्मिलित हैं। किन्तु इनका प्रयोग हिन्दी में नहीं होता अत: इन्हें मानक हिन्दी में शामिल नहीं किया गया है।

वर्तनी : शब्दों में प्रयोग होनेवाले वर्णों की क्रमिकता को वर्तनी कहा जाता है। अंग्रेजी शब्द स्पेलिंग का यह पर्याय है। हिज्जे वर्तनी का ही दूसरा नाम है। वर्तनी प्रयोग की शुद्धता केवल शब्द स्तर पर ही नहीं अपितु वाक्य और अनुच्छेद स्तर पर समझना होता है। विराम चिह्न वर्तनी व्यवस्था के ही अंग हैं। मानक हिन्दी वर्तनी संबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार हैं :

(1) **संयुक्त वर्ण :**

(क) खड़ी पाई वाले व्यंजन :

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का ,संयुक्त रूप ख़ड़ीपाई को हटाकर ही बनाना चाहिए ; जैसे–-

ख्याति, लग्न, विघ्न, स्वच्छ, छज्जा, नगण्य, कुत्ता, पथ्य, ध्वनि, न्याय, प्यास, धब्बा, अलभ्य, सुरम्य, शय्या, उल्लू, व्यास, शस्य, पुष्प।

(ख) अन्य व्यंजन : (अ) क और फ के संयुक्ताक्षर :

संयुक्त, पक्का, और दफ्तर की तरह बनाए जाएँ न कि संयुक्त पक्का दफ्तर की तरह।

(आ) ड़, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर बनाए जाएँ , जैसे ––

वाङ्मय पट्‌टी, बुड्‌ढा, विद्‌या, ब्राह्मण, आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(वाङ्मय, पट्टी, बुड्ढां, विद्या, ब्राह्मण नहीं)

(इ) संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे ; जैसे :

प्रकाश, धर्म, राष्ट्र।

(ई) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। त् + र के दोनों संयुक्त रूप त्र तथा ल मान्य रहेंगे।

(उ) हलंत चिह्न से बननेवाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' के मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व किया जाए न कि पूरे युग्म के पूर्व ; जैसे-- कुट्टिम, द्‌वितीय, बुद्‌धिमान, चिह्‌नित आदि। (कुट्टिम, द्वितीय, बुद्‌धिमान, चिह्नि नहीं। साथ ही संस्कृत के संयुक्ताक्षरों को पुरानी शैली में लिखा जा सकेगा ; जैसे -- चिह्न , विद्या, चच्चल, विद्वान, द्वितीय, बुद्धि, अङ्क आदि ।

(2) **विभक्ति-चिह्न** :

(क) हिन्दी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में शब्द से अलग लिखे जाएँ , जैसे- बालक ने, बालिका को , माता से, आदि। सर्वनाम शब्दों में विभक्ति-चिह्न प्रतिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ ; जैसे-- मैंने, उसने, उसको आदि।
(ख) सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति-चिह्न हों तो उनमें से पहला, सर्वनाम के साथ और दूसरा पृथक लिखा जाए: जैसे - उसके लिए, इनमें से आदि।
(ग) यदि सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही' या 'तक' का निपात हो तो विभक्ति चिह्न पृथक लिखा जाएगा: जैसे आप ही के लिए , मुझ तक को आदि।

(3) क्रियापद :

संयुक्त क्रियाओ में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक - पृथक लिखी जाएँ : जैसे- पढ़ा करता है, जा रहा था, आ सकता है आदि।

(4) हाइफन : हाइफ़न का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

(क) द्‌वंद्‌व (द्वंद्व) समास के पदों के बीच हाइफन रखा जाए: जैसे राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती-संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, लेन-देन आदि।
(ख) सा, जैसा आदि के पूर्व हाइफन रखा जाए : जैसे- तुम-सा, राम-जैसे, चाकू-से तीखे आदि।
(ग) कठिन संधियों से बचने के लिए हाइफ़न का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे - द्‌वि अक्षर, द्‌वि -अर्थक आदि।

(घ) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं,: जैसे - भू-तत्व। सामान्यत: तत्पुरुष में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे रामराज्य, राजकुमार, ग्रामवासी, गंगाजल आदि।

इसी तरह यदि अ-नख (बिना नखका) जैसे समस्त पद में हाइफ़न न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ निकल सकता है। अ-नति (नम्रता का भाव), अनति (थोड़ा) : अ-परस (जिसे किसी ने छुआ न हो, अपरस (एक चर्म रोग) : भू-तत्व (पृथ्वी-तत्व), भूतत्त्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की यही स्थिति है।

(5) अव्यय : 'तक' और 'साथ' अव्यय हमेशा पृथक् लिखे जाएँ: जैसे यहाँ तक, आपके साथ। हिंदी में आह, ओह , अहा, सो, भी, न, जब, तब, कब, वहाँ, कहाँ सदा इत्यादि अव्यय तथा जिन अव्ययों के साथ विभक्ति चिह्न आते हैं : जैसे- यहाँ से , वहाँ से , कब से, आदि में अव्यय पृथक ही लिखे जाएँ। सम्मानार्थक श्री और जी अव्यय भी पृथक लिखे जाएँ: जैसे श्री श्रीराम, श्री महात्मा जी, कन्हैयालालजी आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(6) श्रुतिमूलक 'य', व :
जहाँ विकल्प के रूप में श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग होता है, वहाँ उसे न किया जाए: यानी किए-किये, नई-नयी, हुआ-हुवा आदि में पहले स्वरात्मक रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण तथा अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए जैसे - दिखाए गए नई दिल्ली, पुस्तक लिए हूए आदि। किन्तु जहाँ 'ये' शब्द का ही तत्व हो वहाँ परिवर्तित नहीं होगा : जैस स्थायी : दायित्व, स्थायीभाव आदि।

(7) अनुस्वार : (ं) तथा अनुनासिकता चिह्न (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे। (क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ वर्ग के पाँचवें अक्षर के बाद उसी वर्ग के शेष चार वर्णो में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण। लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए : जैसे गंगा, चंचल, घंटा, संपादक आदि में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आता है। अत: यहाँ अनुस्वार का प्रयोग होगा (ग़ङ्गा, चञ्चल, घण्टा, सम्पादक नहीं) । यदि पाँचवें अक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आये, तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में नहीं बदलेगा, जैसे वाङमय, अन्य, अन्न, सम्मान, चिन्मय आदि।
(ख) चंद्रबिंदु के बिना प्राय: अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, हंस-हँस,अँगना-अंगना आदि में। अत: ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। किन्तु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़नेवाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से मुद्रण आदि में बहुत कठिनाई हो वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर विन्दु के प्रयोग की छूट दी गई है, जैसे - में,नहीं मैं आदि। कविता के संदर्भ में चंद्रबिन्दु का प्रयोग यथास्थान अवश्य किया जाना चाहिए। इसी तरह छोटे बच्चों को आरंभिक कक्षाओं में जहाँ चंद्रबिन्दु का उच्चारण सीखना अभीष्ट हो, वहाँ सर्वत्र इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे - कहाँ, हँसना, आँगन, सँवारना, में, मैं, नहीं इत्यादि।
विशेष : हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत समाज में दोनों रुपों की एक-सी मान्यता है। फिलहाल इनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई है। कुछ उदाहरण हैं-गरदन-गर्दन, गरमी-गर्मी, बरफ-बर्फ, बिलकुल-बिल्कुल, सरदी-सर्दी, कुरसी- कुर्सी, भरती-भर्ती, फुरसत - फुर्सत, बरदाश्त - बर्दास्त, वापस - वापिस, आखीर-आखिर, बरतन-बर्तन, दोबारा - दुबारा, दुकान - दूकान, बीमारी - बिमारी आदि।

(8) हलंत चिह्न : संस्कृत मूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यत: संस्कृत रूप ही रखा जाना जाए, किन्तु जिन शब्दों के प्रयोग में हिन्दी में हलंत चिह्न लुप्त हो चुका है, उसमें उसको फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए, जैसे - महान, विद्वान आदि।

(9) पूर्वकालिक प्रत्यय : पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' को क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे - रोकर, देखकर, पढ़कर आदि ।

(10) विसर्ग : संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है और यदि वे तत्सम रुप में प्रयुक्त हो रहे हों तब उनमें विसर्ग लगाना जरुरी है, जैसे - दु:खानुभूति। किन्तु यदि शब्द के तदभव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका है तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा,जैस -'सुख-दुख के साथी'।

(11) ध्वनि परिवर्तन : संस्कृत मूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों का त्यों ग्रहण किया जाए। ब्रह्मा, चिह्न, उऋण को ब्रम्हा, चिन्ह, उरिण में बदलना उचित नहीं है। इसी तरह ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनाधिकार जैसे अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इन्हें क्रमश: गृहीत,द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक अनधिकार ही लिखना चाहिए। तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है, उसे न लिखने की छूट है, जैसे अद्‌र्ध/अर्ध, उज्ज्वल/उज्वल तत्त्व/तत्व आदि।

(12) 'ऐ','औ' का प्रयोग : हिन्दी में 'ऐ'और 'औ' का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है।'है' तथा 'और' में पहला रूप है जब कि गवैया और 'कौवा'आदि में दूसरा रूप 'ऐ' और 'औ' का ही प्रयोग दोनों के लिए किया जाए, गवय्या या कव्वा नहीं।

(13) विदेशी ध्वनियाँ : अरबी-फारसी या अंग्रेजी मूलक के शब्द जो हिन्दी के अंग बन चुके हैं। और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिन्दी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिन्दी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं; जैसे कलम, किलो, दाग आदि।(क़लम क़िला, दाग़ नहीं)पर जहाँ शुद्ध विदेशी रूप का उच्चारणगन अंतर बताना जरूरी हो वहाँ हिन्दी के प्रचलित रूपों यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ; जैसे- खाना-ख़ाना, राज-राज़, फन-फ़न। सारांशत: पाँच मुख्य विदेशी ध्वनियाँ (क़, ग़, ख़, ज़, और फ़) हिन्दी में आई हैं। जिनमें से दो (क़ और ग़)तो हिन्दी उच्चारण (क, ग) में बदल गई हैं; एक (ख़) लगभग हिन्दी **'ख'** में खपने की प्रक्रिया में है। शेष दो अभी भी अपना अस्तित्व बनाए रखने लिए संघर्षरत हैं ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 संधि

संधि यानी जोड़। भाषा में दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे संधि कहते हैं। हिन्दी में अधिकांश संधियाँ संस्कृत से आए तत्सम शब्दों में होती हैं। संधि में पहले पद का अंतिम वर्ण बादवाले पद के प्रथम वर्ण के मेल से संधि होती है। जैसे-- विद्यालय- विद्या+आलय (आ+आ)

वेद+अंग (वेद्+अ+अंग)=वेदांग (अ+अ=आ)

संधियाँ तीन प्रकार की होती हैं – स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।

स्वर संधि : दो स्वरों के आपसी मेल के कारण जब स्वरों में परिवर्तन होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं। संस्कृत में स्वर संधि के निम्नलिखित पांच भेद माने गए हैं :

(1) दीर्घ संघि, (2) गुण संधि, (3)वृद्धि संधि, (4) यण संधि और (5) अयादि संधि।

(1) दीर्घ संधि : जब अ,इ,उ या आ, ई, उ के साथ क्रमश: अ या आ, इ या ई, उ या ऊ आते हैं तो वे ध्वनियाँ मिलकर क्रमश: आ, ई, ऊ हो जाती हैं। ये ध्वनियाँ ह्स्व + ह्स्व, ह्स्व + दीर्घ, दीर्घ + ह्स्व या दीर्घ + दीर्घ हो सकती हैं। जैसे

समय + अनुकूल	(अ + अ = आ)	= समयानुकूल
परम + आनंद	(अ + आ = आ)	= परमानंद
रेखा + अंश	(आ + अ = आ)	= रेखांश
प्रभा + आकर	(आ + आ = आ)	= प्रभाकर
रवि + इन्द्र	(इ + इ = ई)	= रवीन्द्र
कपि + ईश	(इ + ई = ई)	= कपीश
योगी + इन्द्र	(ई + इ = ई)	= योगीन्द्र
नदी + ईश	(ई + ई = ई)	= नदीश
सु + उक्ति	(उ + उ = ऊ)	= सूक्ति

(2) गुण संधि : जब अ या या के बाद इ या ई हो तो दोनो मिलकर 'ए', उ या ऊ हो तो 'ओ' तथा 'ऋ' हो तो 'अर् हो जाता हैं। जैसे :-

सुर + इन्द्र	(अ + इ = ए)	= सुरेन्द्र
सुर + ईश	(अ + ई = ए)	= सुरेश
महा + इन्द्र	(आ + ई = ए)	= महेन्द्र
महा + ईश	(आ + ई = ए)	= महेश
पर + उपकार	(अ + उ = ओ)	= परोपकार
महा + उदय	(आ + उ = ओ)	= महोदय
गंगा + ऊर्मि	(आ + ऊ = ओ)	= गंगोर्मि
देव + ऋषि	(अ + ऋ = अर्)	= देवर्षि
महा + ऋषि	(आ + ऋ = अर्)	= महर्षि
राजा + ऋषि	(आ + ऋ = अर्)	= राजर्षि

(3) वृद्धि संधि : यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो तो दोनों मिलकर 'ऐ' तथा 'ओ' या 'औ' हो तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं : जैसे–

एक + एक	(अ + ए = ऐ)	= एकैक
मत + ऐक्य	(अ + ऐ = ऐ)	= मतैक्य
सदा + एव	(आ + ए = ऐ)	= सदैव
महा + ऐश्वर्य	(आ + ऐ = ऐ)	= महैश्वर्य

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वन + औषधि (अ + ओ = औ) = वनौषधि
परम + औदार्य (अ + औ = औ) = परमोदार्य
महा + ओषध (अ + ओ = औ) = महौषध

(4) यण संधि : जब ह्स्व या दीर्घ इ, उ या ऋ के बाद कोई असवर्ण हो तो वह क्रमश: य् , व् , और र् हो जाता है। जैसे-

यदि + अपि (इ + अ = य्) = यद्यपि
इति + आदि (इ + आ = या) = इत्यादि
अति + उत्तम (इ + उ = यु) = अत्युत्तम
नि + ऊन (इ + ऊ = यू) = न्यून
प्रति + एक (इ + ए = ये) = प्रत्येक
दधि + ओदन (इ + ओ = यो) = दध्योदन
सखी + ऐक्य (ई + ऐ = यै) = सख्यैक्य
वाणी + औचित्य (ई + औ = यौ) = वाण्यौचित्य

मनु + अंतर (उ + अ = व) = मन्वंतर
सु + आगत (उ + आ = वा) = स्वागत
अनु + ईक्षण (उ + ई = वी) = अन्वीक्षण
अनु + एषण (उ + ए = वे) = अन्वेषण
लघु + ओष्ठ (उ + ओ = वो) = लघ्वोष्ठ
गुरु + औदार्य (उ + औ = वौ) = गुर्वौदार्य
वधु + ऐषणा (ऊ + ऐ = वै) = वध्वैषणा

पितृ + अनुमति (ऋ + अ = र्) = पित्रनुमति
मातृ + आज्ञा (ऋ + आ = रा) = मात्राज्ञा
मातृ + इच्छा (ऋ + इ = रि) = मात्रिक्षा
मातृ + उपदेश (ऋ + उ = रु) = मात्रुपदेश

विशेष : संस्कृत में स्वर संधि का एक भेद 'अयादि संधि' भी है। किन्तु हिन्दी में इस संधि से बने शब्दों (ने + अन्- नयन, पो + अक़ = पावक तथा ने + अक = नायक) को मूल शब्द माना जाता है। अत: उसका विवरण यहाँ नहीं दिया गया है।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 हिन्दी : शब्द - संपदा

(अ) स्रोत के आधार पर हिन्दी शब्दों के प्रकार

हिन्दी के अंधिकांश मूल शब्द संस्कृत से सीधे आए हैं या संस्कृत से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से विकसित होकर। हिन्दी भाषा की विकास यात्रा में उसने अपनी समकालीन भारतीय तथा विदेशी भाषा के कुछ शब्दों को भी अपनाया है। कुछ शब्द तो इतने घुल मिल गए हैं कि वे विदेशी लगते ही नहीं। इनके अलावा हिन्दी भाषा में लोक बोलियों या जनभाषाओ के बहुत शब्द प्रचलित हैं। जरुरत के मुताबिक हम नए शब्द गढ़ भी रहे है। इस तरह हिन्दी की शब्द संपदा को इतिहास या स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रकारो में विभाजित कर सकते हैं :

(1) तत्सम शब्द (2) तद्‍भव शब्द (3) देशज शब्द (4) विदेशी(आगत) शब्द तथा (5) संकर शब्द।

(1) स्रोत की दृष्टि से शब्द के प्रकार :

तत्सम शब्द : संस्कृत के जो शब्द हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयोग किये जाते हैं, उन्हे तत्सम शब्द कहा जाता है। कुछ तत्सम शब्द - अभिमान, अतिरिक्त, निर्देश, निर्मम, रात्रि, अश्व

तद्‍भव शब्द : तद्‍भव शब्द का अर्थ है जैसा हो गया हैं। उससे उत्पन्न संस्कृत के जिन शब्दो का रूप हिन्दी में कुछ न कुछ परिवर्तन हो गया है, उन्हें तद्‍भव शब्द कहा जाता है।

तत्सम शब्द	**तद्‍भव शब्द**	**तत्सम शब्द**	**तद्‍भव शब्द**
गृह	घर	निष्ठुर	निठुर
आश्चर्य	अचरज	ज्येष्ठ	जेठ
हस्ति	हाथी	कूप	कुआँ
दुर्बल	दुबला	बिन्दु	बूंद
भ्रमर	भौंरा	ग्राम	गाँव
भिक्षा	भीख	मक्षिका	मक्खी
रात्रि	रात	अश्रु	आँसू
कर्ण	कान	छिद्र	छेद
प्रस्तर	पत्थर	चर्म	चमड़ा

तत्सम शब्द :

अखंड	निस्संकोच	विद्रोह	कुख्यात
अहिंसा	प्रदूषण	अभिषेक	उत्कंठा
अवगुण	सक्रिय	अलंकृत	विकल्प
अध:पतन	कुप्रथा	सुपात्र	अंतर्धान
अभिनय	परामर्श	बहिष्कृत	विक्रय

तद्‍भव शब्द :

चोंच	दुपहिया	दूध	मोर
अनपढ़	अधजला	अनाज	निकम्मा
कपूत	चौपाई	अधपका	बिनमाँगा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निम्नलिखित शब्दों के सामने उनके तत्सम या तद्भव रूप लिखिए।

हाथ –________ दुग्ध– ________ रात्रि– ________ घोटक– ________

मयूर–________ भौंरा– ________ कुंभकार–________ मूरत– ________ साधन– ________

देशज शब्द : जो शब्द न तो तत्सम है, न तद्भव हैं और न ही बाहर की किसी भाषा से लिये गये हैं उन्हें 'देशज' शब्द कहा जाता है। उनकी उत्पत्ति ठीक से ज्ञात नहीं है। जैसे –

भड़भड़ाना, चमचमाना, जगमगाना, झाडू, पेड़, झाड़, लोटा, टाँग, ठेठ, खटखटाना, ठसक, फुफकार

विदेशी शब्द : (आगत शब्द) जो शब्द भारत के बाहर के देशों की भाषाओं मुख्यत: अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी से आये हैं उन्हें (विदेशी) आगत शब्द कहा जाता है ।

अरबी–फारसी	:	अल्लाह	फौज	आका	कागज	खजाना	बेगम
		बगीचा	बर्फ	खत	औरत	कालीन	फकीर
		कत्ल	खर्च	कानून	जालिम	बारुद	सजा
अंग्रेजी	:	अफसर	डॉक्टर	स्कूल	बटन	मास्टर	पैंट
		मशीन	हैट	डायरी	पुलिस	नर्स	यूनियन
		मिल	कॉलोनी	सोसायटी	कमीशन	इंजन	पॉलिसी
अन्य भाषाओं से	:	रिक्शा	चाय	बाल्टी	अल्मारी	तौलिया	पादरी
		कारतूस	आलपिन	गोदाम	फीता	तंबाकू	चाबी

संकर शब्द : जो शब्द दो अलग–अलग भाषाओं से निर्मित हुए हैं उन्हें संकर शब्द कहा जाता है। जैसे –

किताबघर	जिलाधीश	घड़ीसाज	थानेदार	रेलगाड़ी
डाकखाना	रेलयात्रा	योजना कमीशन	बेसमझ	अफसरशाही
पार्टीबाजी	फूलदान	बंदूकची		

(2) अर्थ की दृष्टि से शब्द के प्रकार

अनेकार्थी शब्द : जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हे अनेकार्थी शब्द कहा जाता है।

प्राण – जीवन, श्वास, बल, वायु

फल – लाभ, परिणाम, खाद्य–पदार्थ

शून्य – आकाश, निर्जन, ब्रह्म, अभावसूचक

वर्ण – अक्षर, जाति, रंग

कर – किरण, टैक्स, हाथ, करने की क्रिया

जड़ – मूर्ख, निर्जीव, मूल, अचेतनता

मत – नहीं, वोट, विचार

समानार्थी शब्द : एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले एक से अधिक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है। परन्तु प्रत्येक शब्द की अपनी अर्थगत विशेषता होती है।

सूर्य – भास्कर, दिनकर, प्रभाकर, दिनेश, रवि, भानु

कमल – जलज, पंकज, सरोज, नलिन, राजीव

अग्नि – आग, पावक, अनल,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कृष्ण	–	मोहन, गोपाल, कान्हा, घनश्याम, श्याम, वासुदेव
इच्छा	–	अभिलाषा, लालसा, कामना, मनोरथ
ईश्वर	–	प्रभु, परमेश्वर, ईश, भगवान
नदी	–	सरिता, तटिनी, तरंगिणी, सरित
प्रेम	–	प्यार, स्नेह, अनुराग, राग, प्रणय
पक्षी	–	खग, विहग, नभचर, पंछी
पृथ्वी	–	भूमि, धरा, अवनि, वसुंधरा, धरती, धरणी

विपरीतार्थक शब्द : ऐसे दो शब्द जो अर्थ की दृष्टि से परस्पर विरोधी हों उन्हे विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहा जाता है।

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
अर्थ	अनर्थ	विष	अमृत
अग्रज	अनुज	शोक	हर्ष
अंगीकार	बहिष्कार	निश्चित	अनिश्चित
अनिवार्य	वैकल्पिक(ऐच्छिक)	वरदान	अभिशाप
आलस्य	स्फूर्ति	विधवा	सधवा
आधुनिक	प्राचीन	अस्त	उदय
अवनि	अम्बर	तरल	ठोस
गुप्त	प्रकट	बंजर	उपजाऊ
आस्था	अनास्था	वियोग	संयोग
आयात	निर्यात	पुरस्कार	दंड

अभ्यास

- **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :**
  आकाश, राजा, गंगा, मनुष्य, स्त्री, जंगल, मेघ

- **विलोम शब्द लिखिए :**
  कृत्रिम, सधवा, ज्येष्ठ, आलस्य, स्मरण, सशक्त, वियोग, नास्तिक, पवित्र, आरंभ

- **निम्नलिखित शब्दों में से देशज शब्द छाँटकर लिखिए :**
  फौज, भड़भड़ाना, शैलजा, लोटा, थरिया, अफसरशाही

- **पाँच विदेशी तथा पाँच संकर शब्दों की सूची बनाइए ।**

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 पद रचना

उपसर्ग-प्रत्यय तथा समास :

शब्द भाषा की सबसे छोटी अर्थवान इकाई है। जब यह शब्द वाक्य के बाहर होता है तो शब्द कहलाता है, किन्तु जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब इसे 'पद' कहा जाता है: जैसे – पेड़, आम, लगना, तीन शब्द हैं। इनके मेल से वाक्य बनता है – पेड़ पर आम,लगे हैं' यहाँ तीनों शब्दों **'पेड़', 'आम'** और लगे हैं को पद कहा जाएगा। अर्थात शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब पद कहलाता है।

वाक्य में प्रयोग को योग्यता के लिए कभी-कभी शब्द में कुछ जोड़ना या घटाना पड़ता है, तो कभी शब्द का रूप बदलना पड़ता है। इस तरह पद रचना की निम्नलिखित विधियाँ हैं :

(1) **उपसर्ग या प्रत्यय जोड़ना :**	जैसे – अनुपस्थित, भारतीय
(2) **स्वतंत्र शब्द जोड़ना :**	जैसे – प्रजातंत्र, जनगण, विद्यालय (समास – संधि)
(3) **ध्वनि परिवर्तन :**	पीटना – पिटवाना, लूटना – लुटाना
(4) **अनुनासिक चिह्न लगाना :**	बहुवचन बनाने में (लड़कियाँ, लड़के)

उपसर्ग : वे शब्दांश जिनका अपना कोई अर्थ नहीं होता किन्तु किसी शब्द के पूर्व जुड़कर एक नये शब्द का निर्माण करते हैं या शब्द के अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाते हैं। उन्हे उपसर्ग कहते हैं।

उपसर्ग :

अ	– अचल	आ	– आजन्म
अति	– अतिशय	अधि	– अधिनायक
अप	– अपमान	दुस	– दुस्साहस
नि	– निवारण	निस्	– निश्चल
प्रति	– प्रतिकार	वि	– विशेष
अभि	– अभिमान	निर	– निराकार
दर	– दरअसल	अन्	– अनावश्यक

संस्कृत के उपसर्ग :

अति, अ, अधि, अन्, अनु, अप, आंभ, अव, आ, उत्, उप, दुर, दुस, नि, निर्, निस, परा, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, स्व, कु, तत्

हिन्दी के उपसर्ग :

अ – अमर, कु – कुटिल, अध – अधखिला, अन – अनपढ़, उ – उजडा,
भर – भरपेट, क – कपूत, बिन – बिनब्याहा

उर्दू के उपसर्ग :

अल – अलमस्त, ला – लाइलाज, बे – बेकसूर, गैर – गैरहाजिर
ब – बदबू, खुश – खुशमिजाज

नीचे लिखे उपसर्गो की सहायता से शब्द बनाइए ।

अति, गैर, बे, बद, नि, कु, अधि, उत, प्र, खुश

उपसर्ग अलग कीजिए :

लावारिस, दुभाषिया, कुकर्म, नामुमकिन, बेनकाब, विनाश, प्रचार, निदान, आगमन, अधिपति, अचल

प्रत्यय : वे शब्दांश जो मूल शब्द के पश्चात जोड़े जाते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। उपसर्ग की भाँति प्रत्यय का प्रयोग अलग से नहीं किया जाता, वे शब्द के साथ जुड़कर ही आते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रत्यय दो प्रकार के होते है।

(1) कृत प्रत्यय(2) तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय : वे शब्दांश जो कियाओं (धातुओं) के अन्त में जुड़कर शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहा जाता है।

उदाहरण :

अंत	- भिड़ंत	ई	- धमकी	कर	- गिनकर
आ	- भूला	आव	- छिड़काव	अनीय	- दयनीय
आवा	- दिखावा	एरा	- लुटेरा	अना	- कामना
इयल	- मरियल	आक	- तैराक	हार	- पालनहार
नी	- चटनी	न	- बेलन	अन	- भवन
उक	- भिक्षुक	त्व	- गुरुत्व	तव्य	- कर्तव्य

तद्धित प्रत्यय : जो शब्दांश संज्ञा, विशेषण, के अन्त में जुड़ते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहा जाता है ।

उदाहरण :

ता	- प्रभुता, वीरता	ईय	- राष्ट्रीय	पूर्वक	- प्रेमपूर्वक
त्व	- पुरुषत्व, व्यक्तित्व	तया	- साधारणतया	इमा	- नीलिमा
क	- गायक	था	- अन्यथा	आइन	- पंडिताइन
पन	- बचपन	मती	- श्रीमती	ईन	- कुलीन
पा	- मोटापा	ऊ	- बाजारू	आनी	- देवरानी

उपसर्ग की भांति प्रत्यय संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी के हो सकते है ।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 समास

'समास' का अर्थ है 'संक्षेप'। पंडित कामता प्रसाद गुरु के अनुसार 'दो या अधिक शब्दों (पदों) का परस्पर सम्बन्ध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है उसे समास कहा जाता है।'

- समास में कम से कम दो पदों का योग होता है।
- समस्त पद में (विभक्ति प्रत्ययों) कारक चिह्नों का लोप हो जाता है।
- समस्त पदों को खंडों में विभाजित करके सम्बन्ध को स्पष्ट करना 'विग्रह' कहलाता है।

सामासिक शब्द - नभचर

समास विग्रह - नभ में विचरण करने वाला

- समास के कई भेद हैं। हिन्दी के मुख्य समास इस प्रकार है :

समास

अव्ययीभाव समास	तत्पुरुष समास	कर्मधारय समास	द्विगु समास	द्वन्द्व समास	बहुव्रीहि समास

हम यहाँ मात्र अव्ययीभाव, द्वन्द तथा बहुव्रीहि समास से आपको परिचित करवाने जा रहे हैं।

अव्ययीभाव समास : अव्ययीभाव समास में पहला पद अव्यय और दूसरा पद संज्ञा होता है । दोनों को मिलाकर पूरा शब्द अव्यय के समान हो जाता है। अव्ययीभाव समास लिंग, वचन, कारक, पुरुष आदि की दृष्टि से परिवर्तित नहीं होते हैं। उदाहरण : -

समस्त पद	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
आजीवन	जीवनभर
यथासमय	समय के अनुसार
सपरिवार	परिवार के साथ
प्रत्यक्ष	आँखों के सामने

द्वन्द्व समास : जहाँ दोनों पद प्रधान हों वहाँ द्वन्द समास होता है। विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'या' आदि योजक शब्द लगते हैं। उदाहरण :-

समस्त पद	**विग्रह**
रामकृष्ण	राम और कृष्ण
माता-पिता	माता और पिता
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
सुख-दु:ख	सुख और दु:ख
नर-नारी	नर और नारी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बहुब्रीहि समास : जिस समास का कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि अन्य पद प्रधान होता है, उसे बहुब्रीहि समास कहते है। समास होने पर पूरा पद विशेषण की तरह काम करता है। वह किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान आदि विशेष्य की अपेक्षा रखता है। उदाहरण : –

समस्त पद	**विग्रह**
चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके अर्थात् विष्णु
लम्बोदर	लंबा(बडा) है उदर जिसका अर्थात् गणेश
अजातशत्रु	नहीं पैदा हुआ है जिसका शत्रु अर्थात् वह
तिरंगा	तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्र ध्वज
निशाचर	रात में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस

– बाकी समासो का परिचय दशवी कक्षा में करवाया जाएगा।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 अलंकार

अलंकार का सामान्य अर्थ है – आभूषण या गहना। जिस प्रकार नारी की शोभा आभूषणों से बढ़ती है ठीक उसी प्रकार काव्य में प्रयुक्त शब्द और अर्थ की शोभा उनके अलंकारों से बढ़ती है।

काव्य के शब्दों, अर्थोंकी शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं। अलंकार के दो प्रकार हैं।

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

1. शब्दालंकार : जब काव्य में शब्दों के कारण चमत्कार या सौन्दर्य उत्पन्न हो तथा उन्हें अपने स्थान से हटा देने पर सौन्दर्य नष्ट हो जाये तो उसे शब्दालंकार कहा जाता है। शब्दालंकार के कई प्रकार हैं, जैसे –
अनुप्रास, यमक, श्लष आदि

अनुप्रास : वर्णों की आवृति को अनुप्रास अलंकार कहा जाता है। आवृति अर्थात् एक ही वर्ण का एक से अधिक बार आना।
'कठिन कलाह आई है करत करत अभ्यास' में 'क' वर्ण की आवृति से अनुप्रास अलंकार है।

यमक अलंकार : जब काव्य में एक ही शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन उनके अर्थ अलग-अलग हों तो वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे –
कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
या पाये बौराय जग, वा खाये बौराय ॥

यहाँ कनक शब्द दो बार आया है। पहले कनक का अर्थ सोना तथा दूसरे कनक का अर्थ धतूरा है।

श्लेष अलंकार : श्लेष अर्थात् चिपका हुआ। जहाँ एक शब्द का एक से अधिक अर्थ प्राप्त हो वहाँ श्लेष अलंकार होता है, जैसे –
चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर ॥

यहाँ वृषभानुजा तथा हलधर शब्दों के एक से अधिक अर्थ हैं। वृषभानु + जा – वृषभानु की पुत्री राधा, वृषभ की बहन गाय। हलधर के वीर – बलदेव के भाई कृष्ण (वृषभ + अनुजा) बैल के भाई

वक्रोक्ति अलंकार : वक्र + उक्ति अर्थात् टेढ़ा कथन। जहाँ (वाक्य) वक्ता के कथन का भिन्न अर्थ लिया जाए वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण :-
भूषन भारि सँभारि है, क्यों इहिं तन सुकुमार ।
सूधे पाइ न धर परै, सोभा ही कै भार ॥

शोभा के भार के मारे पैर सीधे नहीं पड़ रहे हों तो आभूषणों का बोझ कैसे संभलेगा। (काकु वक्रोक्ति)

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7 संवाद-लेखन

नाटक, एकांकी, कहानी तथा उपन्यास आदि में पात्रों के पारस्परिक औपचारिक वार्तालाप को संवाद कहते हैं। संवाद का सामान्य अर्थ है-बातचीत।

संवाद, नाटक और एकांकी का मूल तत्त्व है। अच्छे संवाद-लेखन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) संवाद की भाषा सरल होनी चाहिए ताकि आसानी से संप्रेषित हो सके।
(2) संवाद छोटे-छोटे और स्पष्ट होने चाहिए। तभी आकर्षण बढ़ेगा।
(3) संवाद परिवेश और विषय के अनुरूप होने चाहिए।
(4) संवाद व्यक्ति के अनरूप होने चाहिए।
(5) संवाद में जितनी ज्यादा स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही रोचक, सजीव और मनोरंजक होगा।
(6) संवाद का आरंभ कुतूहल जगानेवाला होना चाहिए।
(7) संवाद का अंत स्वाभाविक और रोचक होना चाहिए।
(8) पात्रों के चरित्र, स्वभाव तथा संस्कृति के अनुरूप भाषा होनी चाहिए।

उदाहरण : अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी अपना अपना भाग्य के संवादों को अलग छाँटकर देखिए। आप प्रेमचंद के नाम से परिचित हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी ईदगाह के संवाद देखिए :

हामिद - यह चिमटा कितने का है ?
दुकानदार - यह तुम्हारे काम का नहीं है जी
हामिद - बिकाउ है कि नहीं ?
दुकानदार - बिकाउ नहीं है और यहाँ क्यों लाद लाये हैं ?
हामिद - तो बताते क्यों नहीं कि कै पैसे का है ?
दुकानदार - छे पैसे लगेंगे।
हामिद - ठीक बताओ।
दुकानदार - ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो।
हामिद - तीन पैसे लोगे ?

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। आपने अखबारों में सरकारी, गैर सरकारी और व्यक्तिगत विज्ञापनों के साथ-साथ तरह-तरह के व्यावसायिक विज्ञापन देखे होंगे। विज्ञापन की भाषा संक्षिप्त सटीक होनी चाहिए। कुछ सामान्य विज्ञापनों का प्रारूप नीचे दिया गया है।

वर्गीकृत विज्ञापन नौकरी हेतु :

आवश्यकता है 50 टेलीकालर्स की जो हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती अच्छी तरह बोल सकते हैं। आकर्षक वेतन दिन पाली के लिए महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। संपर्क करें : श्रद्धा इंफोटेक, अरविन्द भवन, आश्रमरोड, अहमदाबाद-380006.

वैवाहिक विज्ञापन :

वणकर 30 / 5,2'' बी. को, प्राइवेट संस्थान में कार्यरत सुशील, गृहकार्य मे कुशल सुंदर कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए । जातिबंधन नहीं। संपर्क करें : seem.**@gmail.com. M. 987654321

नाम परिवर्तन :

मैं भूराराम बालमराम पसरीचा, निवास 140/842 गुज. हाउ. कॉलोनी, गोमतीपुर, अहमदाबाद घोषित करता हूँ कि अब मेरा नाम विवेक बालमराम पसरीचा हो गया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए ।

व्यावसायिक विज्ञापन :

विभिन्न प्रकार के रंगों के केमिकल्स, डाइज़ और इंटरमीडिएट्स के लिए संपर्क करें सुधाकें, विशाला मार्केट, रिंगरोड, सूरत :M. 0987654321

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8 पत्र

पत्र के माध्यम से सूचना, संदेश और ह्दयगत भावों को शब्द रूप में सहजता से व्यक्त किया जाता है। पत्रों के माध्यम से सम्बन्ध दृढ़ होते हैं।

पत्र लेखन एक कला है। अच्चे पत्र की कुछ विशेषताएँ----

(1) पत्र की भाषा सरल,सहज एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।
(2) पत्र में विचारों, भावों की स्पष्टता होनी चाहिए। विषयान्तर नहीं होना चाहिए।
(3) पत्र में कम से कम शब्दों में अधिक विचार व्यक्त करने चाहिए।
(4) साहित्यिक पत्र में, रोचकता तथा उत्सुकता का भाव निहित होना चाहिए।
(5) पत्र लिखने का एक क्रमबद्ध तरीका होता है। सम्बन्धों के आधार पर भाषा का चयन करना चाहिए।

मुख्यत: पत्र दो प्रकार के होते हैं।

(1) अनौपचारिक-पत्र
(2) औपचारिक-पत्र

औपचारिक-पत्र :-औपचारिक पत्र के अन्तर्गत सरकारी-पत्र व्यावसायिक-पत्र, अर्ध-सरकारी-पत्र, प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, शिकायती-पत्र आदि आते हैं।

अनौपचारिक-पत्र:-व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पारिवारिक सम्बन्धों के सिलसिले में लिखे गये पत्र अनौपचारिक-पत्र कहे जाते हैं। जैसे माता-पिता भाई-बहन, मित्र, परिवार के अन्य सदस्यों को लिखे जाने वाले पत्र

पत्र के अंग : पत्र चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक सामान्यत: उसके निम्नलिखित अंग होते हैं :

. पता और दिनांक
. संबोधन तथा अभिवादन शब्दावली का प्रयोग
. पत्र की सामग्री
. पत्र की समाप्ति, स्वनिर्देश, हस्ताक्षर

औपचारिक पत्र के लिए-

पता और दिनांक

पत्र के बाईं ओर कोने में लेखक का पता लिखा जाता है और उसके नीचे तारीख लिखी जाती है।
संबोधन तथा अभिवादन-
औपचारिक स्थिति में निम्नलिखित संबोधन प्रयोग किए जाते है।
मान्यवर / प्रिय महोदय / महोदया
प्रियश्री / श्रीमती / सुश्री (नाम या उपनाम)
अभिवादन: नमस्ते प्रिय (नाम) जी या कुछ भी नही
पत्र की सामग्री : विषय के अनुरूप सामग्री
पत्र **की समाप्ति, स्वनिर्देश , हस्ताक्षर**
अंत में औपचारिक वाक्य, प्रेषक या उसके स्थानापन्न व्यक्ति के हस्ताक्षर, पूरा नाम, पद, और संलग्न पत्र / पत्रक या सामग्री

कतिपय नमूने - नव वर्ष में मित्र को शुभ कामना पत्र बी-128, सेक्टर--7, गांधीनगर-380 007

प्रिय तबस्सुम,
नमस्ते।

मेरी ओर से नव वर्ष की अनेक शुभकामनाएँ । तुम्हारा नव वर्ष मंगलमय और उपलब्धियों से भरा हो, ऐसी शुभकामना।

अनेक शुभकामनाओं सहित
तुम्हारी सखी,
स्मृति ठक्कर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रार्थना पत्र

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य,
नवसर्जन हाईस्कूल, देवनगर..

मान्यवर,

सविनय निवेदन हैं कि मेरे नव निर्मित घर पर 20 नवम्बर 2015 को गृहप्रवेश का आयोजन किया गया है। अत : उक्त तारीख को मैं वर्ग में उपस्थित नहीं रह पाऊँगा।

सादर प्रार्थना है कि आप उस दिन की अनुपस्थिति क्षमा कर देने की कृपा करें। इसके लिए कृतज्ञ रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
विपिन वैद
कक्षा 9 B, रो. नं. 53

देवनगर
18-11-2015

शिकायती पत्र

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर महापालिका,
अहमदाबाद,

महोदय,

निवेदन है कि आजकल हमारे मुहल्ले में नियमित रूप से सफाई नहीं हो रही है। सड़कों पर कूड़ा कई दिनों तक पड़ा रहता है। इससे मुहल्ले में बीमारियों के फैलने की आशंका है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि उचित निर्देश देकर इस अव्यवस्था को दूर करने की कृपा करें।

भवदीय,
इकबाल अहमद
ब्लॉक हितकारिणी समिति
15, संजयनगर
अमराईवाडी, अहमदाबाद-26
ता. 15-7-2015

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्यावसायिक पत्र

सेवा में
व्यवस्थापक
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5, ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-110016

महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकों की एक-एक प्रति वी.पी.पी. द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजने का कष्ट करें।

(1)सरदार वल्लभाई पटेल - ले.विष्णु प्रभाकर
(2) हमारे त्योहार
(3) भारत : अल बरुनी - अनु. नूरनबी अब्बासी
(4) राजेन्द्र प्रसाद : आत्मकथा
(5) उपनिषदों की कहानियाँ - भगवानसिंह

भवदीया,

नरेन्द्र कौर,
A-3 / 212 जवाहर कॉलोनी
सरदारनगर, अहमदाबाद.
ता. 16-02-2016

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विज्ञापित पद के लिए आवेदन पत्र

प्रेषक:
जयदीप परमार
बी-27 सर्वोत्तमनगर,
ओ.एन.जी.सी. के पास, साबरमती,
अहमदाबाद-380 005

सेवामें
निदेशक, शिक्षक प्रशिक्षण परिषद
सेक्टर 10 ए, गांधीनगर - 382010

विषय : 'कंम्प्यूटर ओपरेटर' पद हेतु आवेदन

महोदय,

दैनिक 'राजस्थान पत्रिका' दिनांक 11 जनवरी 2016 में प्रकाशित आपके विज्ञापन के संदर्भ में 'कंम्प्यूटर ऑपरेटर' पद के लिए मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। शैक्षिक एवं अन्य विवरण संलग्न हैं।

प्रार्थना है कि इस पद पर सेवा का अवसर प्रदानकर अनुगृहीत करें।

भवदीय
जयदीप परमार

दिनांक 12 जनवरी 2016
संलग्न (1) विस्तृत बायोडाटा (स्व वृत्र)
(2) प्रमाणपत्रों की प्रतिलिपियाँ

स्व-वृत (बायो डेटा)

नाम	:	जयदीप परमार
जन्मतारीख	:	5 जनवरी 1994
पता	:	बी / 27सर्वोत्तम नगर ओ. एन. जी. सी. के पास साबरमती, अहमदाबाद-380005

शैक्षिणक वितरण :

उत्तीर्ण परीक्षा	:	बोर्ड / विश्वविद्यालय	वर्ष	अंक प्रतिशत
हाईस्कूल	:	माध्यमिक शिक्षा परिषद गुजरात, वडोदरा.	2004	79
हायर सेकंडरी	:	उच्चत्तर माध्यमिक शिक्षा परिषद गांधीनगर, गुजरात.	2006	68
बी.ए.	:	गुजरात विश्व विद्यालय अहमदाबाद	2009	62
कंम्प्यूटर	:	CCC, CCC+	2011	83
अनुभव	:	ग्रामीण प्रायोगिकी परिषद में वर्ष 2012-13 में कम्प्युटर ऑपरेटर (1 वर्ष)		
इतर रुचियाँ	:	समाज सेवा और रेडक्रोस, चित्रकला, पेन्टिंग		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निमंत्रण पत्र

वार्षिकोत्सव समारोह
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
कुकरवाडा, महेसाणा 382830

प्रिय महोदय,

विद्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह में आप सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य अतिथि : श्री..............................अध्यक्ष, गुजरात साहित्य अकादमी
अध्यक्ष : श्री.............................निदेशक, माध्यमिक शिक्षा परिषद, गुजरात

कार्यक्रम :

विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन
सांस्कृतिक कार्यक्रम
पारितोषिक विवरण
मुख्य अतिथि के दो शब्द
अध्यक्षीय प्रवचन
आभार दर्शन

कार्यक्रम की तारीख : 15 फरवरी 2016
समय : अपराह्न 4:30 बजे
स्थल : विद्यालय सभागार

कृपया समय पर पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने की कृपा करें ।

उत्तरापेक्षी,
सचिव,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
कुकरवाडा, महेसाणा

निवेदक,
आचार्य

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रेलवे आरक्षण पत्र

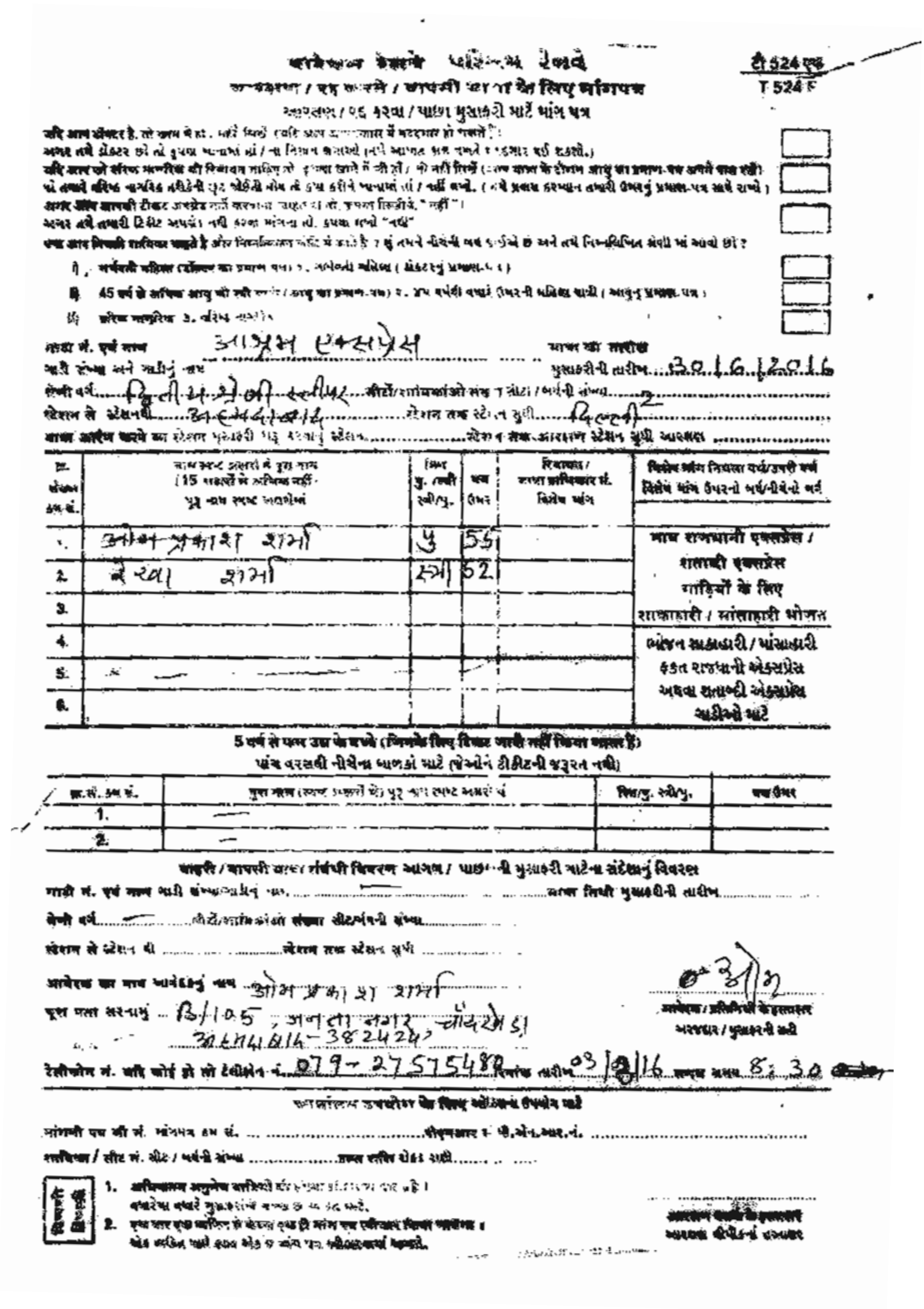

टी 524 एफ

T 524 F

आरक्षण / रद्द करने / वापसी ... के लिए मांगपत्र

गाड़ी सं. एवं नाम: आश्रम एक्सप्रेस

यात्रा की तारीख: 30.6.2016

श्रेणी: द्वितीय श्रेणी स्लीपर

सीटों/शायिकाओं की संख्या: 2

स्टेशन से: अहमदाबाद

स्टेशन तक: दिल्ली

क्र. सं.	नाम (15 अक्षरों से अधिक नहीं)	लिंग पु./स्त्री	आयु	रियायत / यात्रा प्राधिकार सं.	विशेष मांग
1.	ओम प्रकाश शर्मा	पु	55		
2.	रेखा शर्मा	स्त्री	52		
3.					
4.					
5.					
6.					

केवल राजधानी एक्सप्रेस / शताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए शाकाहारी / मांसाहारी भोजन

5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे (जिनके लिए टिकट जारी नहीं किया जाता है)

क्र.सं.	पूरा नाम	लिंग पु./स्त्री	आयु
1.	—		
2.	—		

आवेदक का नाम: ओम प्रकाश शर्मा

पूरा पता: B/105, अनन्ता नगर, चाँदखेड़ा, अहमदाबाद-382424

टेलीफोन नं.: 079-27575480

तारीख: 03/6/16

समय: 8:30

आवेदक / प्रतिनिधि के हस्ताक्षर: ओम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9 निबंध लेखन

निबंध गद्य रचना का उत्कृष्ट रूप है। विषय का भलीभ्रांति प्रदान, लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और भाषा का चुस्त प्रांजल रूप-ये तीनों ही अच्छे निबंध की विशेषताएँ हैं।

हमारे अनुभव या ज्ञान का कोई भी क्षेत्र अथवा हमारी कल्पना निबंध का विषय हो सकती है: जैसे - विज्ञान, दीपावली, चाँदनीरात, प्रात:काल, सत्संगति, मित्रता, भिखारी, हिमालय, इत्यादि। रचनाके रूप में निबंधकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

1. निबंध के वाक्य परस्पर संबद्ध होते हैं। विचारों में कार्य-कारण संबंध बना रहता है।
2. भाषा विषय के अनुरूप होती है। गंभीर, चिंतन प्रधान, साहित्यिक विषयों के निबधो में प्राय: तत्सम शब्दावली रहती है जब कि सहज-सामान्य विषयों के निबंधो में सरल, बोलचाल की भाषा होती है।
3. निबंध को प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए यथास्थान उपयुक्त उद्धरणों, लोकोक्तियों, मुहावरों तथा सूक्तियों का प्रयोग किया जाना चाहिए। प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से निबंध के निम्नलिखित प्रकार हैं -

   (1) वर्णनात्मक (किसी त्योहार का वर्णन, मेले का वर्णन, क्रिकेट मैच का वर्णन आदि)
   (2) विवरणात्मक (ताजमहल, मेरी पाठशाला आदि।)
   (3) भाव प्रधान (मेरी माँ, मेरा प्रिय मित्र आदि।)
   (4) विचार प्रधान (स्वदेशप्रेम, अध्ययन, अनुशासन, समय-आयोजन)

निबंधलेखन की पूर्व तैयारी

निबंध लिखने से पहले विषय के विभिन्न मुद्दों पर विचार करना अपेक्षित है। शिक्षक या सहपाठियों के साथ चर्चा करन से पहले निबंध की रूपरेखा बना लेनी चाहिए, ताकि कोई मुद्दा या बिन्दु छूट न जाए ।

रूपरेखा तैयार कर लेने के बाद तत्संबंधी सामग्री का विभिन्न स्त्रोतों से संचय करना उपयोगी होता है। (विषयानुकूल उदाहरणो, उद्धरणों, सूक्तियों, तर्कों, प्रमाणों का)

रुपरेखा के आधार पर निबंध लिखते समय छात्रो द्वारा प्रसंगानुसार निजी अनुभवों का उल्लेख किया जाना चाहिए । निबंध की रूपरेखा को तीन अंगों में बाँटा जा सकता है- प्रस्तावना या भूमिका, मुख्यअंश ओर उपसंहार।

प्रस्तावना : निबंध की आधारशिला है, इसलिए इसका संक्षिप्त तथा प्रभावी होना आवश्यक है। प्रस्तावना ऐसी होनी चाहिए कि उसे पढ़ने पर पाठक के मन आगे पढ़ने का कुतूहल उत्पन्न हो। निबंध का पहला अनुच्छेद ही उसकी प्रस्तावना होती है। इसमें निबंध के विषय के प्रमुख बिंदुओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

मुख्य अंश : प्रस्तावना के बाद और उपसंहार के पहले तक का निबंध का कलेवर मुख्य अंश माना जाता है। विषयवस्तु को अलग-अलग अनुच्छेदों में बाँटकर अपनी बात कहनी चाहिए। ये अनुच्छेद परस्पर सम्बद्ध होने चाहिए। मुख्य अंश में चार-पाँच छोटे अनुच्छेद में मात्र एक ही भाव या विचार रहना चाहिए। यह विभाजन तर्कसंगत होना चाहिए।

उपसंहार : यह निबंध का अंतिम भाग है। यह भी प्राय: एक अनुच्छेद का होता है। इसमें विषयवस्तु के विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। निष्कर्ष में लेखकीय विचार या प्रतिक्रिया हो सकती है। उपसंहार स्पष्ट, सुगठित और तर्कसंगत होना चाहिए जिससे पाठक पर स्थायी प्रभाव पड़ सके।

उदाहरण : अपनी पाठ्यपुस्तक का 'तर्क और विश्वास' शीर्षक पाठ देखिए।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10 अनुच्छेद-लेखन

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने हेतु लिखे गए संबद्ध और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं। इसमें एक विचार बिन्दु होता है। अनुच्छेद स्वयं में एक स्वतंत्र और स्वत:पूर्ण रचना हो सकती है। कोई भी विषय देकर अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जा सकता है। विषय का परिचय, विषय का संक्षिप्त वर्णन और निष्कर्ष वाक्य, सभी कुछ एक ही अनुच्छेद में समाहित होता है। हालांकि अनुच्छेद के लिए वाक्य संख्या का निर्धारण नहीं किया जाता फिर भी संक्षिप्तता इसका एक अनिवार्य गुण है। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि –

1. एक अनुच्छेद में एक ही विचार व्यक्त हो।
2. अनुच्छेद के सभी वाक्य विचार की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हों।
3. अनुच्छेद का निष्कर्ष। केन्द्रीय भाव अनुच्छेद के आरंभ में या अंत के वाक्य में अवश्य आना चाहिए।

उदाहरण :

प्रकाश स्तंभ :

समुद्र में बहुत सी जगहों पर ऐसी चट्टाने या छोटे पर्वत होते हैं, जो जल की सतह के ऊपर दिखाई नहीं पड़ते। पानी में चलनेवाले जहाज इनसे टकरा जाएँ, तो टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ। ऐसी चट्टानो पर बहुत ऊँचा मीनारनुमा खंभा बना दिया जाता है। रात के अँधेरे में भी जहाज यह जान सके कि चट्टान कहाँ है और उससे बचे रहें, इसके लिए खंभे के ऊपरी भाग पर तीव्र प्रकाश किया जाता है। ऐसे खम्भो को प्रकाश-स्तम्भ कहते हैं। खंभे के निचले भाग में रहने के लिए कोठरियाँ बनी होती हैं, जिनमें प्रकाश स्तंभ के कर्मचारी रहा करते हैं।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रेल समय सारणी देखना

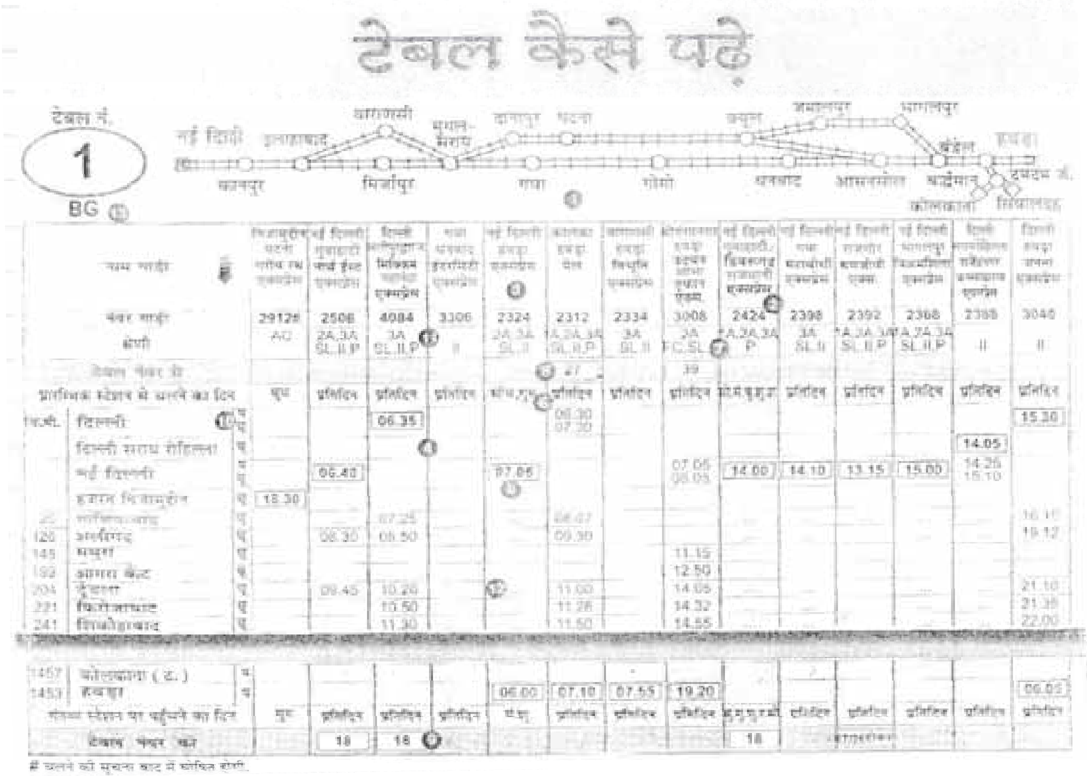

1. यह संक्षेप में गाड़ी का मार्ग दर्शाता है, जो टेबल में सूचीबद्ध है।
2. राजधानी, शताब्दी, जनशताब्दी, एवं गरीबरथ लाल रंग से दिखाई गई हैं।
3. सुपर फास्ट गाड़ियां पीले रंग से दिखाई गई है।
4. मेल /एक्सप्रेस गाड़ियां नीले व सफेद से दिखाई गई है।
5. 07 .5 गाड़ी का आरंभिक स्टेशन अथवा गंतव्य. स्टेशन दर्शाता है।
6. चलने के दिन : सो.-सोमवार, मं.-मंगलवार, बु.-बुधवार।
   गु.-गुरुवार, शु.-शुक्रवार, श.-शनिवार, र.-रविवार, दिए गए दिन
   गाड़ी चलने वाले प्रारम्भिक स्टेशनों एवं गंतव्य स्टेशनों के है।
7. श्रेणी : 1A-प्रथम एसी, 2A-2 टायर एसी शयन,3A-3 टायर एसी।
   EC-कार्यपालक कुर्सीयान, CC-एसी कुर्सीयान, FC-प्रथम श्रेणी।
   SL-शयनयान श्रेणी, 2S- द्वितीय श्रेणी सीट (आरक्षित),
   II- द्वितीय श्रेणी सीट (अनरक्षित),
8. टेबल नंबर से : अगर कोई गाड़ी पिछले टेबल से आ रही है तो उसका नंबर यहां दिखाया गया है।
9. टेबल नंबर को : अगर कोई गाड़ी आगे दूसरे टेबल मैं आती है तो उसका नंबर यहां दिखाया गया है।
10. प. एवं छू : गाड़ियों के आगमन एवं प्रस्थान को क्रमश: प. एव. छू से दर्शाया गया है।
11. P-गाड़ी में भोजनालय का होना दर्शाता है।
12. ... दर्शाता है कि गाड़ी उस स्टेशन पर नहीं रुकती है, खाली स्थान यह दर्शाता है गाड़ी दूसरे मार्ग से चलती है।
13. टेबल नंबर के नीचे BG-बड़ी लाइन (ब्रोड गेज) MG-छोटी लाइन (मीटर गेज),NG-सकरी लाइन (नैरो गेज), दर्शाता है।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यातायात के संकेत

शहर की सड़कों के चौराहों पर आपने तीन बत्ती लाल, नारंगी(पीली), हरी, वाले सिग्नलों के खंभे देखे ही होंगे। ये बत्तियाँ हमें क्रमश: रुकने, देखने और जाने का संकेत देती हैं। इसके अलावा सड़क पर अन्य संकेत भी बने होते हैं। वाहन चालकों को यातायात के नियमों और मुख्य संकेतों की जानकारी न होने से दुर्घटना होने की संभावना बढ़ जाती है। आइए, सुरक्षित यात्रा के लिए इन प्रमुख सड़क चिह्नों की जानकारी प्राप्त करें।

लाल रुको : स्टॉप लाइन से कुछ पहले ही रुक जाएँ। दो वाहनों के बीच अंतर बनाए रखें ताकि आगे की सड़क साफ दिखाई दे। लालबत्ती पर आप बाएँ मुड़ सकते हैं बशर्ते ऐसा करने की मनाहीवाला बोर्ड न लगा हो।

नारंगी सावधान : नारंगी (पीली) बत्ती का मतलब है चौराहा खाली करो। इस दौरान आप यदि सड़क के बीच में फँस जाएँ तो बिना घबराए शांति से चौराह पार कर लें।

हरी चलो : हरी (नीली) बत्ती होने पर आप बिना इधर-उधर देखे ही न निकल पड़े, बल्कि यह देख लें कि दूसरी तरफ की सभी गाड़ियाँ निकल गई हैं न।

सड़क पर दाएँ या बाएँ मुड़ते समय पैदल यात्रियों और दूसरी तरफ से आ रहे वाहनों के लिए मुड़ने का संकेत देना याद रखें।

नीचे अनिवार्य सड़क चिह्न दिए गए हैं, जिनका पालन न करना कानूनन अपराध है।

प्रवेश निषेध

एकतरफा यातायात

दोनों तरफ वाहन निषेध

सभी मोटर वाहन निषेध

ट्रक निषेध

बैलगाड़ी निषेध

तांगा निषेध

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हाथगाड़ी निषेध साइकिल निषेध पैदल निषेध दाहिने मुड़ना निषेध

बाएं मुड़ना निषेध मुड़ना निषेध ओवरटेक निषेध हॉर्न बजाना निषेध

इसी तरह कुछ सड़क चिह्न चेतावनी या सुरक्षा के लिए जो वाहन चालकों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। इनमें से प्रमुख सूचना चिह्न नीचे दिए गए हैं।

पैदल पार करना आगे स्कूल है

टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता दाई ओर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बाई ओर

कौन-सी यातायात के इन चिह्नों के अलावा राष्ट्रीय राजमार्गो, एक्सप्रेस वे तथा स्टेट हाइवे पर यात्रियों को सुविधा कहाँ मिलेगी, इसके प्रतीक चिह्न भी लगे होते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दकोश देखना

कोश हमें मुख्य रूप से शब्दों के अर्थ तथा उनके विभिन्न प्रयोगों की जानकारी देते हैं।शब्दकोश में शब्दों से जुड़ी व्याकरणिक कोटियों की (संज्ञा, विशेषण, क्रिया) उनके लिंग, उच्चारण, उनकी व्युत्पत्ति, उनसे व्युत्पन्न विभिन्न रूप, वर्तनी, मुहावरे तथा प्रयोग के दृष्टांत आदि की जानकारी मिलती है। शब्दकोश के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

(1) एक भाषी कोश-(हिंदी-हिंदी, अंग्रेजी-अंग्रेजी, गुजराती-गुजराती आदि)
(2) द्विभाषी कोश - (हिन्दी-अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिन्दी, गुजराती-हिन्दी, गुजराती-अंग्रेजी इत्यादि)
(3) बहुभाषी कोश - त्रिभाषी या तीन से अधिक भाषाओं के कोश
(4) विश्व कोश - (इंसाइक्लोपीडिया) विभिन्नशीर्षकों, विषयों से संबंधित ज्ञानात्मक जानकारी)
(5) फिसॉरस - (एक ही भाषा के शब्दों के पर्यायों, संबंद्ध शब्दों तथा रूपों की सूचना।)
(6) विशिष्ट विषयों के स्वतंत्र कोश - (गणित कोश, अर्थशास्त्र कोश, भौतिकशास्त्र कोश... इत्यादि।)

शब्दकोश देखना : कोश चाहे जिस भाषा या विषय के हों , सभी में शब्दों को अकारादिक्रम में ही प्रस्तुत किया जाता है। अंग्रेजी में यह क्रम a,b,c,d,e,f..है तो हिन्दी का वर्णक्रम इस प्रकार है ।

स्वर : अँ /अं अ: आँ /आं आ ऑ इं इ ईं ई उँ/उं / उ / ऊँ/ऊ ऋ
एँ /एं ए ऐं ऐ ओं ओ औं औ ।

व्यंजन : क क्ष ख ग घ च छ ज/ज़ ज्ञ झ ट ठ ड /ड़ ढ/ढ़ ण त त्र थ द ध न प फ/फ़ ब भ म य र ल व श श्र ष स ह।

उदाहरण : कँ/कं क: क काँ/कां का किं कि कीं की कुँ/ कुं कु कूँ/कूं कू कृंकृ कें के कैं कै कों को कौं कौ

सामान्य नियम :(1) कोश के वर्ण क्रम में पूर्व अक्षर के पहले अनुनासिक व अनुस्वार चिह्न रँ, रं युक्त वर्ण आएँगे: जैसे- हँस, हंस, हस, हाँस, हास।

(2) आधे वर्ण पूर्ण वर्ण के बाद आएँगे :जैसे - कर, कर्कट, कौन, क्या।

(3) संयुक्ताक्षरों का वर्णक्रम उनके घटकों के क्रम से निर्धारित होता है : जैसे --
क्ष (क्+ष), त्र (त् +र), ज्ञ (ज् +), श्र (श् +र), क्रम (क्+्+म), कर्म (क् +र्+म) द्ध (द्+ध), द्व (द्+व), द्य (द+य)।

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूरक वाचन

1 सच्चा प्रेम

रामनरेश त्रिपाठी

(जन्म:सन 1881 ई.; मृत्यु : सन 1962 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी छायावाद पूर्व की खड़ीवोली हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। उनका जन्म कोइरीपुरी, जिला-जौनपुर (उ. प्र.)में हुआ था। आरंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद स्वाध्याय से हिन्दी, अंग्रेजी,बांग्ला और उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने उस समय के कवियों के प्रिय विषय समाजसुधार के स्थान पर रोमांटिक प्रेम को कविता का विषय बनाया। उनकी कविताओं में देशप्रेम और वैयक्तिक प्रेम दोनों मौजूद हैं, लेकिन देशप्रेम को ही विशेष स्थान दिया है। 'मिलन,' 'पथिक' 'स्वप्न,' खंडकाव्य तथा 'मानसी' काव्य संग्रह इनकी अमर कृतियाँ हैं।

'कविता कौमुदी'(आठ भाग)में उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और बांग्ला की लोकप्रिय कविताओं का संकलन किया है। इसी के एक खंड में ग्रामगीत (लोकगीत) संकलित है जो हिन्दी में पहला मौलिक कार्य है। कविता के अलावा उन्होंने नाटक, उपन्यास, संस्मरण, तथा आलोचना आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने कई वर्षों तक 'बानर' नामक बाल पत्रिका का संपादन भी किया जिसमें मौलिक एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ, प्रेरक प्रसंग आदि प्रकाशित होते थे।

यहाँ संकलित काव्यांश उनके खंड काव्य 'स्वप्न' के पाँचवें सर्ग से उद्धृत है जिसमें कवि ने व्यक्तिगत प्रेम के साथ-साथ देशप्रेम का चित्रण करते हुए देशप्रेम को उत्तम बताया है।

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है
करो प्रेम पर प्राण निछावर ।
देशप्रेम वह पुण्य-क्षेत्र है
अमल असीम त्याग से विलसित
आत्मा के विकास से जिसमें
मनुष्यता होती है विकसित ॥ 1 ॥

जितनी हैं शक्तियाँ मनुज को
प्राप्त हुई इस जग के भीतर
उन्हें दान करते रहना ही
है मनुष्य का धर्म यहाँ पर ।
त्रिगुणात्मक है जगत, यहाँ है
कोई नहीं पदार्थ हानिकर
भला-बुरा उनका प्रयोग ही
है सुख दु:ख का हेतु यहाँ पर ॥ 2 ॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

किसी समय जग बहुत सुखी था
शांत पवित्र प्रेम से सुंदर
मूढ़ जनों के दुरुपयोग से
यह बन गया घोर दुःख का घर ।
सदुपयोग से विष पावक भी
हो जाते हैं सुख उत्पादक
किन्तु अबुध अनुचित प्रयोग से
कर लेते हैं उन्हें विघातक ॥ 3 ॥

शब्दार्थ--टिप्पण

आत्मबलि अपना बलिदान **त्रिगुणात्मक** तीन गुण वाली तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण **पावक** आग **अबुध** बुद्धिहीन, मूर्ख **विघातक** हानिकारक, विनाशकारी

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 प्रतिदिन तीन मिनिट दौड़िए

संकलित

प्रस्तुत लेख में बताया गया है कि प्रात:काल में टहलने का आन्नद ही कुछ और होता है, और यदि हम नित्य तीन मिनट दौड़े तो क्या कहना ?इससे न केवल हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है अपितु मन भी प्रफुल्लित रहता है। शरीर में स्फूर्ति रहती है। अत: यदि आप नित्य टहलते हो तो उसके साथ-साथ तीन मिनट नित्य दौड़ना शुरु कीजिए। यदि न टहलते हो तो कम से कम टहलना शुरु कीजिए।

मै प्रतिदिन प्रात:काल डेढ़ घंटे टहलता हूँ। कब से टहलता हूँ यह बता सकना कठिन है पर इतना कह सकता हूँ कि टहलना प्रारंम्भ किए बीस वर्ष अवश्य हुए होंगे । तब से टहलने में कभी व्याघात नहीं पड़ा। जाड़ा तो कभी मेरा टहलना रोक ही नहीं पाया। वर्षा के दिनों में भी यदि हल्की वर्षा हो रही हो तो अवश्य टहलने निकल जाता हूँ। यदि बादल घिरे हों और तेज वर्षा की सम्भावना हो तो भी नहीं रुकता चाहे खूब भीगकर या भीगते-भीगते ही क्यों न घर लौटना पड़े। कभी बाहर जाता हूँ तो अपने मेजबान (अतिथेय) को भी साथ लेता हूँ। सन्ध्या को टहलना वैसे मुझे पसंद नहीं है, परन्तु यदि कभी सबेरे नहीं टहल सका हूँ तो उस दिन मैने यह कमी सन्ध्या को टहल कर अवश्य पूरी की है पर एसा समय वर्ष में पाँच-दस बार ही आता होगा।

अकेले टहलने का मेरा आनन्द अपना है। उसी समय लगता है कि यह समय मेरा है। पढ़ी हुई चीज पर विचार करता हूँ। पढ़ते समय उससे कितना आनन्द प्राप्त होता है। किसी मित्र को मधुर-सा पत्र लिखना हुआ तो उसका मजमून मैं इसी समय स्थिर करता हूँ। मेरे प्राय: सभी लेख प्राप्त टहलते समय ही सोचे गए हैं। लिखते समय तो कागज पर लिखना भर रह जाता है। फिर भी टहलने में मेरा साथ चाहने वालों को मैं अपना साथ देता अवश्य हूँ।

इधर मेरे साथ मेरे एक मित्र श्री उमापतिजी टहलने जाने लगे थे। वह अपना वजन घटा रहे थे क्योंकि उन्हें किसी ने बता दिया था कि टहलने से वजन घटता है। वजन से अधिक वह अपनी तोंद घटाने के लिए उत्सुक थे, जिसका घेरा उनकी छाती से तीन इंच अधिक था। महीने भर टहलने के बाद जब उन्होंने नाप लिया तो उनकी तोंद तीन इंच घटी ही पर साथ ही साथ छाती भी दो इंच घट गई। इस फल से वह बहुत ही खिन्न हुए । पेट का तीन इंच घटना तो उन्हे पसन्द था, पर इसके साथ छाती का घटना उन्हें स्वीकार नहीं था।

उनकी इस खिनन्ता को देखकर उनके बड़े भाई ने उन्हें दौड़ने की सलाह दी। पर उमापतिजी दौड़ना चाहते ही न थे। एक दिन उनके भाई मुझे अपने घर के दरवाजे पर मिले तो मुझसे बोले-उमा को दौड़ने को कहता हूँ, पर यह दौड़ ही नहीं रहा है। कुल तीन मिनिट दौड़े तो इसका पेट बहुत घट सकता है। दौड़ते समय आदमी पंजे पर दौड़ता है, जिसका सीधा असर तोंद पर पड़ता है और, वह तेजी से घटती है।

आप घबरायें नहीं, मैं कल से उन्हें तीन मिनिट दौड़ा दूँगा।

मैंने उन्हें यह आश्वासन दिया और चला गया।

दूसरे दिन सुबह मैं उमापतिजी को साथ लेने उनके घर की ओर चला तो उनके बड़े भाई रास्ते ही में मिल गये। वह कुछ हाँफ-से रहे थे। मुझे देखकर बोले---

देखिए, तीन मिनिट नहीं, एक मिनिट ही आज उमा को दौड़ाइये और धीरे-धीरे एक सप्ताह में तीन मिनिट पूरे कीजिए। मै आज अभी एक मिनिट दौड़कर आ रहा हूँ। पहले दिन एक मिनिट दौड़ना काफी है।

उनकी कथनी और करनी की यह एकता देखकर मुझे उन पर श्रद्धा हो आई। मैंने उमापतिजी को एक मिनिट से ही दौड़ाना शुरु कराने का आश्वासन दिया। फिर उमापतिजी को साथ लेकर टहलने निकला। आगे एक इमली का बड़ा सा पेड़ था, वहीं से हमने दौड़ना शुरु किया और एक मिनिट पूरा होते ही बन्द कर दिया। धीरे-धीरे एक सप्ताह में हम तीन मिनिट नित्य दौड़ने लगे। इमली का पेड़ आते ही हम चलते-चलते अनायास दौड़ने लगते और आगे बबूल आता था, वहाँ तक पहुँचते ही रुक जाते। वहीं तीन मिनिट पूरे होते।

मैं दौड़ते समय नित्य ही यह सोचता कि आज इस दौड़ने के कारण शरीर में अवश्य ही दर्द होगा, पर ऐसा कभी नहीं हुआ। शुरु में ही नहीं हुआ, तो फिर आगे क्या होता। अब तो तीन मिनिट दौड़ने की हमारी आदत बन गई थी। दौड़ना शुरु होते ही साँस गहरी हो जाती, फेफड़े पूरे भरने लगते, गले से कुछ कफ निकलता, गला और नाक साफ हो जाते, कभी-कभी मुँह पर थोड़ा पसीना भी चिलचिला आता और आगे का टहलना अधिक आसान और सुखदायक हो जाता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दौड़ना प्रारंम्भ करने पर मैंने स्पष्ट देखा कि शरीर में स्फूर्ति बढ़ गई है। यद्यपि मैंने कभी उस पर विशेष रूप से ध्यान नहीं दिया, पर बढ़ी हुई चीज तो दिखाई दे ही जाती है। मन भी अधिक प्रसन्न रहने लगा और दो बजे के लगभग जो थोड़ा आराम करने की तबीयत होती थी, काम में थोड़ी टालमटुल पैदा हो जाती थी, वह प्रवृति भी चली गई। टहल कर घर लौटने पर ठंडे पानी से नहाने में अधिक आनन्द आने लगा। इस प्रकार दौड़ने का लाभ मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट है। श्री उमापतिजी की तो एक महीने के बाद ही बदली हो गई और वह बम्बई चले गये, पर यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दौड़ने से उन्हें बड़ा लाभ हुआ। उनकी तोंद भी घटी और उनका स्वास्थ्य भी पहले से अच्छा रहने लगा।

उमापतिजी अब दौड़ रहे हैं, या नहीं, मैं नहीं जानता, पर मेरा दौड़ना जारी है। मैं आपको भी नित्य तीन मिनिट दौड़ने की राय देना चाहता हूँ। आप टहलते हों तो उसके साथ-साथ तीन मिनिट नित्य दौड़ना शुरु कीजिए। यदि न टहलते हो तो पहले टहलना शुरु कीजिए। दौड़ने की सलाह मैं आपको बाद में दूँगा।

शब्दार्थ-टिप्पण

व्याघात चोट **मजमून** विषयवस्तु **खिन्नता** दुःखी **स्फूर्ति** फुर्ती

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 ठुकरा दो या प्यार करो

सुभद्राकुमारी चौहान

(जन्म : सन् 1904 ई, निधन : सन् 1947 ई.)

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। बचपन से ही इनको हिन्दी से विशेष प्रेम था। इनका विवाह मध्यप्रदेश के खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान के साथ हुआ। विवाह के साथ ही इनके जीवन-क्रम में एक नया मोड़ आ गया। महात्मा गांधी के आन्दोलन का सुभद्राजी पर गहरा प्रभाव पड़ा और ये राष्ट्र-प्रेम पर कविताएँ लिखने लगीं। सुभद्राकुमारी चौहान की काव्य-साधना के पीछे उत्कट देश-प्रेम, साहस और बलिदान की भावना है। देश को स्वतंत्र कराने के लिए जेल-जीवन की यातनाएँ सहने में इन्हें जितना सुख मिलता था, उतना ही उन सात्विक अनुभूतियों को कविता द्वारा व्यक्त करने में भी प्राप्त होता था।

इन्होंने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र अंकित किए हैं, जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। इनके काव्य में एक ओर नारी सुलभ ममता और सुकुमारता है वहीं दूसरी ओर वीरांगना का शौर्य एवं ओज भी है। अलंकारों या कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़कर अनुभूति को सहज रूप से प्रकट करने में ही इनकी कला की सफलता है। **'मुकुल'** इनका प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है। 'सीधे-सादे चित्र,' 'बिखरे मोती' और 'उन्मादिनी' इनकी कहानियों के संकलन हैं।

प्रस्तुत कविता 'ठुकरा दो या प्यार करो' में सुभद्राकुमारी चौहान सरल भाषा में अपने ईष्ट के प्रति अपने मनोभावों को प्रकट करती हैं। किसी भी प्रकार के बाह्याडम्बर और दिखाने के बगैर वे अपने आपको प्रभु के श्रीचरणों में पूर्णरूप से समर्पित करती हैं और कहती हैं कि मैं तो आपकी ही हूँ चाहो तो प्यार करो चाहो तो ठुकरो दो।

देव! तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे, कई रंग की लाते हैं।
धूमधाम से साजबाज से, वे मंदिर में आते हैं।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ, लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।
मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी, जो कुछ साथ नहीं लाई।
फिर भी साहस कर मंदिर में, पूजा करने को आई।
धूप दीप नैवेद्य नहीं है, झांकी का शृंगार नहीं।
हाय गले में पहिनाने को, फूलों का भी हार नहीं।
स्तुति मैं कैसे करूँ कि स्वर में मेरे हैं, माधुरी नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को, मुझमें है चातुरी नहीं।
नहीं दान है नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई।
पूजा की भी विधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आई।
पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारिन को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारन को समझो।
मैं उन्मत्त प्रेम का लोभी, हृदय दिखाने आई हूँ।
जो कुछ है बस यही पास है इसे चढ़ाने आई हूँ।

चरणों पर अर्पण है, इसको चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो॥

शब्दार्थ-टिप्पण

उपासक उपासना (पूजा) करने वाला **मुक्ता** मोती **मणि** बहुमूल्य रत्न **नैवेद्य** नेवज, देवयजन, चढ़ावा **पुजापा** पूजा की सामग्री **उन्मत्त** अनिषिद्ध, अपराधमुक्त **अर्पण** बलिवस्तु, चढ़ावा, प्रदान

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 भूकम्प

रामवृक्ष बेनीपुरी

(जन्म : सन् 1899 ई, निधन : सन् 1968 ई.)

प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था। स्वातंत्र्य संग्राम, महात्मा गांधीजी का आगमन जैसी अनेक घटनाओं का असर बेनीपुरीजी के जीवन और कृतित्व पर स्पष्ट परिलिक्षित होता है। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण इनकी पढ़ाई रुक गई, बाद में स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन किया। पत्रकारित्व, साहित्य सर्जन इनकी रुचि के क्षेत्र रहे है। 'रामचरितमानस' तथा 'जनता' जैसी साप्ताहिक पत्रिकाओं का संपादन इन्होंने किया था। नाटक, एकांकी, प्रहसन, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, आदि साहित्य प्रकारों में रामवृक्ष बेनीपुरीजी का विशेष योगदान रहा है।

गेहूँ और गुलाब, मील के पत्थर, बन्दे वाणी विनायको आदि बेनीपुरीजी के प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं। तथागत, आम्रपाली तथा सीता की माँ इनके नाटक है, माटी की मूरतें (रेखाचित्र-संस्मरण)तथा कैदी की पत्नी और पतितों के देश में बेनीपुरीजी की औपन्यासिक कृतियाँ हैं। बेनीपुरीजी की रचनाओं में कला और संस्कृति को उतना ही महत्वपूर्ण स्थान मिला है, जितना अनिवार्य मानवीय अनिवार्यताओं को। उनकी भाषा में एक ओर आवेगमयता है तो दूसरी ओर प्रशांति है। उसमें जटिलता कहीं भी नहीं है।

इस संस्मरण में 1934 में बिहार में आए भयानक भूकंप के दुष्प्रभावों का चित्रण है। प्राकृतिक आपदा के समय देश-विदेश से मिलनेवाली सहायता, देशवासियों के सहयोग का महत्व इस से समझमें आता है।

कबीर ने कहा है-'पल में परलय होएगी, बहुरि करोगो कब।' पल में प्रलय ! किंतु पल में प्रलय कैसे होता है, उस दिन हमने जो देखा, हमें इत्मीनान हो गया, पल में प्रलय हो सकता है, और वह यों होगा। वह दिन था 1934 की 15 जनवरी।

पटना कॅम्प जेल से लौटने के बाद मैं मुजफ्फरपुर के 'लोकसंग्रह' में काम करने लगा।

उस समय मैं मुजफ्फरपुर में लोकसंग्रह कार्यालय में था, कि एक सज्जन एक काम से बुलाकर मुझे कचहरी ले गए। यदि मैं कचहरी नहीं गया होता, तो शायद उस दिन मलबे के नीचे दब गया होता, क्योंकि वह घर ध्वस्त-पस्त हो गया था और वहाँ कई मौतें हुई थीं।

मैं कचहरी में एक पेड़ के निकट खड़ा था। अचानक पेड़ के पत्ते खड़बड़ा उठे। चौंककर ऊपर की ओर देखने लगा कि पैर तलमलाने लगे। जब नीचे देखता हूँ तो अरे, यह तो पृथ्वी काँप रही है। जिस तरह समुद्र की तरंगें एक-पर-एक आती हैं, लगता था, पृथ्वी की सतह उसी प्रकार तरल बन गई है और उस पर ढूह-पर-ढूह उठ रहे हैं। अब खड़ा नहीं रहा गया। हम दोनों तलमलाकर लुढ़क गए। चारों ओर 'भूकंप-भूकंप' का शोर मच रहा था और जहाँ-तहाँ लोग भागते हुए, गिरते हुए, लुढ़कते हुए दीख रहे थे। सामने ही एक घोड़ा था। अपने पैरों के नीचे की जमीन को खिसकते हुए देखकर वह बेचारा जानवर ऐसा बदहवास हुआ कि हमारी ही ओर दौड़ा। हमने समझा अब कुचले।

अचानक घड़ाम-घड़ाम की आवाजें आने लगीं और कचहरी की इमारते इधर-उधर गिरने लगीं, जमीन में चौड़ी दरारें फटने लगीं। चारों ओर हाय-तोबा मचा था और ज्यों ही जमीन पैर पर खड़ा होने लायक बनी, लोग अपने-अपने घरों की ओर भागे। हम इधर से भागे जा रहे थे, उधर से लोग भागे आ रहे थे। वे चिल्ला रहे थे- पानी-पानी बाढ़-बाढ़। जमीन फोड़कर पानी के फव्वारे ऊपर आ रहे थे। सड़कों पर घुटने भर पानी आ गया था, किंतु कहा गया, छाती भर पानी चढ़ा आ रहा है। क्या जलप्रलय होगा? मैं एक शीशम के पेड़ के निकट खड़ा हो गया, सोचा, इस लंबे पेड़ पर चढ़कर उस प्रलय से अपने को बचा लूँगा। मानो वह शीशम का पेड़ नहीं हुआ, अक्षयवट था और शायद मैंने उस प्रलयबेला में अपने को उसके पत्तों के दोनों में लिपटने वाला शिशु भगवान मान लिया था।

थोड़ी देर प्रतीक्षा की, बाढ़ नहीं आई। आगे बढ़ा, अस्पताल आया। वहाँ देखा घायलों को लोग ला रहे हैं, जिनमें अधिकतर बच्चे हैं। एक माँ एक बच्चे को चिपकाए हुई आई। बेचारा बच्चा, मलबे के नीचे दब मरा था- कोई चोट नहीं, किंतु निष्पंद और निष्प्राण। आँखें उमड़ आईं। बेचारे डाक्टर भी परेशान। इस अप्रत्याशित भीषण घटना के लिए वे भी तैयार नहीं थे। वहाँ से शहर में घुसा। तब समझ में आया कितनी बड़ी घटना इन चंद मिनटों के अंदर घटित हो चुकी है। सारे मकान गिर गए थे अपनो को लोग खोज रहे हैं, अस्त-व्यस्त यहाँ-वहाँ मिट्टी कुरेद रहे हैं। कहीं-कहीं से दबे हुए घायलों की कराह भी निकल रही है। एक जगह एक आदमी को देखा, जिसका आधा शरीर मलबे के नीचे था, आधा बाहर। वह पानी-पानी चिल्ला रहा था,उसका शरीर खून में डूबा हुआ था। झट कमर कसकर मैं मलबे को हटाने में लगा, किंतु ज्यों-ज्यों मलबा हटाता, वह बेचारा और दबता जाता, क्योंकि मलबे के बीच एक शहतीर था। उसकी कराह सही नहीं गई, अपनी शक्तिहीनता पर खेद हुआ और मित्रों की याद आई! न जाने उनमें से किसकी क्या गत हुई हो। आगे बढ़ा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बीस साल बीत चुके हैं, किंतु लिखते समय सारी बातें सिनेमा-रील की तरह आँखों के सामने स्पष्ट आती जा रही हैं, किसे लिखूँ, क्या छोड़ूँ?

पानी हेलते, मलबे को पार करते, मित्रों के घर जा-जाकर उनकी खोज-खबर लेने लगा। अपने आफिस में आया तो देखा, इमारत का कहीं पता नहीं, ढूह-ढूह है। और उसके नीचे तीन-चार आदमी दबे पड़े हैं। इतनी बड़ी इमारत, कहाँ उनकी खोज की जाए, किसमें ऐसी ताकत कि इस ढूह को अलग करने की जुर्रत करें। वहीं पता चला, शहर में कई जगह आग भी लग गई है। फूस के घर गिरे, नीचे आग थी, धधक गई। लोगों ने समझा, शायद पानी के साथ -जमीन फोड़कर आग भी निकल आई है।

शहर में चारों ओर कोहराम मचा था, जो कोई परिचित मिलता, पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगता और किसी प्रियजन की मृत्यु का संवाद सुनाता। एकमित्र के घर पहुँचा, तो देखा, सभी एक जगह से मलबे को हटाने पर तुले हैं-काफी सुखी, संपन्न आदमी। कभी कुदाल छुई भी नहीं होगी, अब ढेले ढो रहे थे। मर्द ही नहीं, औरतें भी मलबे हटा रही थीं। जिनके नीचे दो प्राणियों के दम टूट रहे होंगे। किंतु उनके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो रहे थे। एक मित्र के घर में काफी आदमी घायल हुए थे, सब एक जगह इकट्ठे किए गए थे, वे चिल्ला रहे थे। उनमें दो लड़कियाँ थीं, जिनके हाथों कल ही आतिथ्य ग्रहण किया था। उन्हें इस अवस्था में देखकर लगा, जैसे कलेजा फटा जा रहा हो। एक तो प्राणहीन हो चुकी थी, गोरा चेहरा पीला पड़ गया था, बाहर से कोई चोट नहीं सिर्फ नाक से खून की कुछ बूँदे नेटे के साथ चू गई थीं, जो अब काली पड़ गई थीं, एक की कमर टूट गई थी। 'डाक्टर बुलाइए,' मैं डाक्टर के घर की ओर दौड़ा। किंतु वहाँ भी वही कोहराम।

जब आगे बढ़ा, पता चला, हम लोगों के एक मित्र मृतप्राय हैं, अपने घर से निकलकर भाग रहे थे, अपना घर नहीं गिरा ,दूसरे घर की दीवार के नीचे दब रहे। उधर दौड़ा। रास्ते में कोलाहल, कोलाहल। कहीं टमटम चूर है, उससे लगा घोडा रक्त की ललैया में टांगें फटकार रहा है। और उससे थोड़ी दूर पर उसके तीनों सवार दम तोड़ रहे हैं- किसी का सिर भुरता हैं, किसी के पैर की हड्डियाँ चूर-चूर हैं, किसीकी पसलियाँ टूट गई हैं। कहाँ तक देखा जाए, किसे-किसे देखा जाए। देखा जाता कहाँ था? जब आधी बेहोशी में अपने घर की ओर लौट रहा था, शहर के मुख्य चौराहे पर देखा, टावर टूटकर गिर गया है, बेचारा संतरी खून से लथपथ मरा पड़ा है और एक कुत्ता उसका खून चाट रहा है। आह! उफ!

बुरी-से बुरी संध्याएँ व्यक्तिगत जीवन में आती-जाती रहती है, किंतु उस दिन जो संध्या आई, वैसी डरावनी, दहशतनाक, रक्तरंजित संध्या, उत्तर बिहार में शायद ही कभी आई हो। सही अर्थ में वह रक्तरंजित संध्या थी। रक्त और मृत्यु की विभीषिका चारों ओर छा रही थी। अपने घरों के मलबे पर बैठे, मृतकों की लाशों को कुत्तों और सियारों से रक्षा करते घायलों की कराहों में अपनी रूदन ध्वनि जोड़ते, कल से कहाँ जाएँगे, क्या करेंगे, आदि की दुश्चिंताओं में एक-एक क्षण आँखों में गुजारते लोगों ने रात कैसे काटी-उसकी कल्पना आज भी रोमांचित कर रही है। जाड़े का मौसम, आसमान बादलों से घिर आया था, कभी-कभी टप-टप बूँदे गिर जातीं, तेजी से हवा बहती हुई कलेजे को नहीं, पसली-पसली को कँपा जाती। तिसपर रह-रहकर पृथ्वी हिल उठती। जरा भी हिली कि खलबली-चीस. पुकार, हाहाकार, त्राहि-त्राहि मुल्ले अजान देने लगते, पंडित घड़ी-घंटे बजाने और शंख फूँकने लगते। किंतु जो भगवान दिन में सो गया था, क्या वह रात में जग सकता था!

देहात की हालत और भी विचित्र रही। जो नदीकिनारे थे, उन्होंने बताया, किस तरह नदी का पानी एकाएक सूख गया और नीचे से मछली-मगर दिखाई देने लगे। फिर थोड़ी देर में ऊपर ऐसा पानी आया कि बाढ़ आ गई। नदियाँ उथली पड़ गईं, किनारों के बंधन टूट गए। देहात में जब जमीन फटी, तो उससे पानी के फव्वारे ऐसे उठे कि मेरी मामीजी कहती थी, लगता था, हजारों बिलों से काले नाग निकलकर फन फैलाए फुफकार रहे हों। एक आदमी आ रहा था कि वह देखता है, अचानक उसके पैर के नीचे की जमीन ऊपर उठ रही है और वह ऊपर उठता जा रहा है। वह भौंचक ही था कि अचानक फूली हुई रोटी की तरह उस ऊपर उठी जमीन के भीतर से पानी का सोता एक शब्द के साथ फूटा और फिर वह जमीन हवा निकली हुई फूली रोटी की तरह पचककर पहले-सी समतल बन गई। ऐसी भी दरारें फूटीं कि उनमें कितने पशु और मनुष्य समा गए और फिर उन दरारों ने आप-ही-आप अपने मुँह बंद कर लिए। तालाबों और कुओं की दुर्गत की बात मत पूछिए। तालाब का पानी सूख गया, वहाँ रेतों का अंबार लग गया। कुछ कुएँ नीचे इस कदर धँस गए कि आठ-दस फीट खोदे जाने पर भी उनका पता नहीं लगाया जा सका, कुछ पूरी जगत के साथ ऊपर उभड़ आए। किंतु अधिकांश बालू से भर गए। पीनेके पानी का घोर अभाव हो गया, जब कि भूकंप के बाद ही एक बड़ी बाढ़ भी आ गई और जहाँ देखिए, पानी-ही पानी था। मेरे गाँव का एक आदमी बंगाल में था, वहाँ अखबारों में उसने पढ़ा, मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी के बीच पानी-ही-पानी है, तो उसने समझा, बीच के सारे गाँव नष्ट हो गए होंगे और वह बेचारा रोते-रोते जो वहाँ से चला तो गाँव में आने पर ही उसे विश्वास हो सका कि उसके अपने लोग अभी बच रहे हैं।

सड़कों और रेलवे लाइनों की तो पूरी सूरत ही बिगड़ गई थी। वे टेढ़े-मेढ़े हो गए थे, जैसे किसीने पकड़कर ऐंठ दिया हो। पुल कहीं ऊँट की पीठ की तरह और कहीं भैंस की गरदन की तरह हो गए थे। उनपर चलना ही मुश्किल था, सवारियों के लाने-ले जाने की क्या बात?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सरकार का सारा शासन ठप्प पड़ गया था। जेल की दीवारें गिर गई, सिपाही भाग चले। कैदियों ने घर की राह ली। कचहरी के मकान गिर गिए, हाकिम अदालत कहाँ लगाएँ।

जब बाढ़ खत्म हुई, लोगों ने देखा, उनके खेत बालू से पटे है। अब खेती कैसे होगी ? लोगों के दु:खों का आर-पार नहीं था। यद्यपि देहात में कम मौतें हुई थीं, किंतु वहाँ ज्यादा घर फूस के थे, मिट्टी के घर गिरे, तो भी इफरात जगह होने के कारण आँगन में या बाहर भागकर जान बचाई।

जैसी बाढ़ घटना हुई, देश ने उसी प्रकार दिल खोलकर सहायता दी। संयोग से गांधीजी बाहर थे। वह दौड़े-दौड़े पहुँचे। सभी नेता पहुँचे। पटना और दिल्ली के देवता भी मिले। लंदन से भी सहायता आने लगी। पुनर्निर्माण का काम जोरों से चलने लगा और एक साल के अंदर ही क्षतिपूर्ति हो गई।

शब्दार्थ-टिप्पण

बहुरि फिर से **इत्मीनान** विश्वास **निष्पंद** जिसमें कोई हलचल न हो **अक्षयवट** कबीरवड़, गयावट, प्रयागवट **निष्प्राण** मृत **अप्रत्याशित** अनपेक्षित **शहतीर** काड़ी, थूनी **इफरात** अधिकता **बदहवास** घबराना, व्याकुल होना **नेटी** शरदी-जुकाम में नाक से निकलनेवाला अर्धतरल पदार्थ **प्रत्यासा** आशा **गत** दशा, समाप्त **दुर्गत** दुर्दशा **अंबार** ढेर

मुहावरे

फूट-फूट कर रोना-जोर जोर से रोना **कलेजा फटना**-दु:खी होना

• • •

Downloaded from https:// www.studiestoday.com